

वार्षिक प्रतिवेदन
ANNUAL REPORT
2014 – 2015



भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान

राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
	प्राक्कथन	5
	निदेशक की टिप्पणी	7
	पृष्ठभूमि	9
1	प्रशासन	10
2	शोधरत अध्येता	10–12
3	अकादमिक गतिविधियां	12
	क. टैगोर स्मृति व्याख्यान	12
	ख. डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन स्मृति व्याख्यान	13
	ग. संगोष्ठियां, सम्मेलन, कार्यशालाएं तथा गोलमेज	13–61
	घ. अध्येताओं द्वारा प्रस्तुत साप्ताहिक संगोष्ठियां	61–64
	ङ. अध्येताओं से प्राप्त पाण्डुलिपियां	64
	च. आगंतुक प्राध्यापक	64–65
	छ. आगंतुक विद्वान	65–66
	ज. अतिथि अध्येता	66–67
	झ. आईयूसी के अंतर्गत संगोष्ठियां	67–74
	ञ. सह-अध्येता द्वारा प्रस्तुत संगोष्ठियां	74–80
	ट. अन्य कार्यक्रम	80
4	प्रकाशन	80–82
5	बिक्री एवं जनसंपर्क अनुभाग	82–83
6	पुस्तकालय	83
7	औषधालय	84
8	यौन उत्पीड़न समिति	84
9	राजभाषा	84
10	सम्पदा का रखरखाव	85–86
11	लेखा एवं बजट	87
12	उद्यान	87–89
	प्रशासनिक व अन्य सूत्रपात	89–90
	संस्थान के वर्ष 2014–15 के लेखों का ऑडिट विवरण	91–120
	मानविकी एवं सामाजिक अध्ययनों के लिए अंतरविश्वविद्यालय केन्द्र के लेखों के ऑडिट विवरण	121–126
	भा.उ.अ.सं. की वित्त समिति, शासी निकाय तथा सोसायटी की सूची	127–139

प्राक्कथन

संस्थान के स्वर्ण जयंती वर्ष 2014-15 के वार्षिक प्रतिवेदन के प्राक्कथन को लिखते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है और मैं स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रही हूँ। वास्तव में वार्षिक प्रतिवेदन किसी संस्था का अभिमुख होता है जिससे उस संस्थान द्वारा संचालित अकादमिक गतिविधियों का स्पष्ट पता चलता है। वर्ष भर में आयोजित शोध-परियोजनाओं, संगोष्ठियों तथा कार्यशालाओं की महज एक झलक विविध विषयों पर हुए उत्कृष्ट शोध-कार्यों के बारे में बहुत कुछ बता देती है। इस प्रतिवेदन में संस्थान की मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान के क्षेत्रों में उच्च स्तरीय शोध की ख्याति सार्थक होती है।

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय की उदारचरित सहायता के अभाव में यह सभी उपलब्धियाँ असंभव थीं। हम उच्चतर शिक्षा विभाग के सचिव, तथा अन्य अधिकारियों द्वारा दिए गए सक्रिय समर्थन, बहुमूल्य परामर्श तथा सहयोग के लिए उनके आभारी हैं, जिसने एक रचनात्मक तथा सर्जनात्मक सहभागिता का मार्ग प्रशस्त किया।

मैं संस्थान के निदेशक प्रोफेसर चेतन सिंह तथा संस्थान के अन्य अधिकारियों का संस्थान के संस्थापक महान दार्शनिक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के सपनों को साकार करने हेतु अपनी प्रतिबद्ध सेवाएँ अर्पित करने के लिए उनका आभार प्रकट करती हूँ।

आगामी वर्षों में किये जाने वाले समस्त प्रयासों के लिए संस्थान की सोसायटी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

चन्द्रकला पाडिया

प्रधान, सोसायटी

एवं

अध्यक्षा, शासी निकास

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान

राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

निदेशक की टिप्पणी

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान को अक्टूबर 2014 में अस्तित्व में आये हुये उनचास वर्ष हो गये और संस्थान ने अपने सफर के 50वें वर्ष में कदम रखा है। लम्बे अरसे से हासिल की गई शानदार सफलता का जश्न मनाने के लिए स्वर्ण जयंती वर्ष का आगमन एक खुशी का अवसर है। जिस मूल उद्देश्य से डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने संस्थान की स्थापना की थी उस वचनबद्धता को दोहराने का यह एक मौका है। बावजूद इसके यह एक ऐसा समय भी है कि तेजी से बदलती परिस्थितियों में देश के इस इकलौते संस्थान की भूमिका का सृजनात्मक विश्लेषण करें। विगत आधी शताब्दी के दौरान पेश आई प्रतिकूल स्थितियों के बावजूद संस्थान अपने उन आदर्शों पर चलते हुए नहीं डगमगाया जिनके मद्देनजर संस्थान की स्थापना की थी। जिस संकल्प के आधार पर संस्थान की शुरुआत की गई थी उस अकादमिक श्रेष्ठता की ख्याति अभी भी बरकरार है। हालांकि यह सब आसान नहीं था। कई लब्धप्रतिष्ठित विद्वानों की कठिन मेहनत तथा वचनबद्धता के कारण यह सफलता प्राप्त हुई है। इस सफलता का अधिकतर श्रेय वास्तव में उन विद्वानों को ही जाता है।

विगत वर्ष की प्रमुख गतिविधियों में माह सितंबर 2014 में गुलज़ार साहब द्वारा दिया गया द्वितीय रवीन्द्रनाथ टैगोर स्मृति व्याख्यान था। इस अवसर पर उन्होंने राष्ट्रपति निवास में बनी नई फोटो गैलरी का भी उद्घाटन किया। ये दो घटनाएं दो-वर्ष की लंबी स्वर्ण जयंती की शुरुआत थी। इस प्रतिवेदन में वर्ष के दौरान आयोजित अन्य महत्वपूर्ण अकादमिक गतिविधियों को भी सूचीबद्ध किया गया है। मुझे विश्वास है कि ये अकादमिक गतिविधियां विभिन्न संकायों से जुड़े विद्वानों की अपेक्षाओं पर खरी उतरेंगी।

यह विशेषकर उस मूलभूत अध्येतावृत्ति कार्यक्रम की सफलता है जिसने मानविकी एवं सामाजिक विज्ञानों के क्षेत्र में उच्च शोध के लिए संस्थान को एक आदर्श स्थान बनाने में अपना अत्याधिक योगदान दिया है। संस्थान में चयनित आवासी अध्येता-समूह किसी भी समय अन्य शोध संस्थानों के बीच अपनी अकादमिक प्रतिष्ठा को पुरजोर से सिद्ध कर सकता है। हमारा लगातार यह प्रयास रहता है कि संस्थान में ऐसे अध्येताओं को चयनित किया जाये जिनकी शोध परियोजनाएं नई और मौलिक हों तथा जिन्हें अपने क्षेत्र में महारत हासिल हो और जिनमें उल्लेखनीय शोध-कार्य करने का समर्पित भाव हो। समीक्षा अवधि के दौरान अध्येताओं द्वारा जिन शोध-परियोजनाओं पर कार्य किया जा रहा था उसे अधिकांशतः पूर्ण कर लिया गया है तथा संस्थान के पास उनकी पाण्डुलिपियां अंतिम रूप में प्रकाशन के लिए प्राप्त हो गई हैं। इसके अतिरिक्त विविध विषयों में पारंगत अतिथि प्राध्यापकों, अतिथि विद्वानों तथा अतिथि अध्येताओं के समय-समय पर आगमन से वर्ष की अकादमिक अंतःक्रियाओं में संवृद्धि हुई है।

अपने अधिदेश (Mandate) के अनुरूप संस्थान में काफी संख्या में संगोष्ठियां, सम्मेलन, कार्यशालाएं तथा अध्ययन सप्ताह आयोजित किये गये। हम आशान्वित हैं कि शीघ्र ही उत्कृष्ट प्रकाशनों के रूप में इन आयोजनों का परिणाम सबके सामने आएगा। इन उनचास या पचास वर्षों के दौरान आयोजित संगोष्ठियों की कार्यवाहियां तथा अध्येताओं से प्राप्त पाण्डुलिपियां स्वर्ण जयंती श्रृंखला के अंतर्गत प्रकाशित की जाएंगी, उसके पश्चात उनकी बड़ी सावधानी से समीक्षा भी की जायेगी। इस श्रृंखला के अंतर्गत कुछ पाण्डुलिपियां पुस्तकों के रूप में छप चुकी हैं और उनका माह अक्टूबर 2015 में संस्थान की स्थापना के पचास वर्ष पूरे होने के अवसर पर आधिकारिक तौर पर लोकार्पण किया जायेगा।

आलीशान राष्ट्रपति निवास, उसके विस्तृत उद्यान तथा सम्पदा भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान की महत्वपूर्ण विशेषताएं हैं। अतः उनका सही रखरखाव तथा जीर्णोद्धार करना संस्थान का मौलिक कर्तव्य है। इस प्रतिवेदन की अवधि के दौरान इस दिशा में अनेक कदम उठाए गए हैं। राष्ट्रपति निवास से बिल्कुल लगते हुए मैदानों तथा

पहाड़ी ढलान को डंगे लगाकर मजबूती तथा स्थिरता प्रदान की गई है। सम्पदा में स्थित कुछ रिहायशी भवनों का जीर्णोद्धार कर उन्हें अध्येताओं को आवंटित कर आवास सुविधा में वृद्धि हुई। मुझे बताते हुये प्रसन्नता हो रही है कि अनेक आगंतुकों विशेषकर विशिष्ट पदाधिकारियों ने हमारे इस कार्य की भरपूर सराहना की है। अभी बहुत कुछ करने को बाकि रह गया है। संस्थान के मुख्य भवन के सबसे कमजोर हिस्से जो कभी वाइसरीगल सेवा-केन्द्र हुआ करता था, के जीर्णोद्धार करने के लिए प्रयास आरम्भ किये जा रहे हैं।

संस्थान का पुस्तकालय संस्थान अध्येताओं तथा अन्य अकादमिक आगंतुकों को आवश्यक संसाधन उपलब्ध करवा रहा है। अतिथि गृह, भण्डार एवं आपूर्ति तथा औषधालय आदि सहायक निकाय सराहनीय कार्य कर रहे हैं। मैं संस्थान की शासी निकाय की अध्यक्षता तथा सोसायटी की प्रधान प्रोफेसर चंद्रकला पाडिया का भी विशेष उल्लेख करना चाहूंगा कि उनके सहयोग से कई महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये। एक अकादमिक संस्थान की प्रमुख पदाधिकारी होने के बावजूद उन्होंने भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान में आयोजित कई अकादमिक गतिविधियों में खुशी से परामर्श देकर अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

संस्थान के सुचारु संचालन के लिए संसाधन उपलब्ध करवाने तथा प्रशासनिक सुझाव देने में मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सचिव तथा अन्य अधिकारियों ने बड़ी उदारता दिखाई है। संस्थान के लिए उनका सहयोग और उनकी सहायता अति महत्वपूर्ण हैं और आशा है कि आगे भी यथावत बने रहेंगे। मैं विगत वर्ष की भांति दोहराना चाहता हूं कि मानव संसाधन विकास मंत्रालय के साथ भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान के जो परस्पर सौहार्दपूर्ण संबंध रहे हैं वे हमेशा के लिए यथावत बने रहेंगे।

चेतन सिंह
निदेशक

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान राष्ट्रपति निवास शिमला-171005

वर्ष 2014–2015 का प्रतिवेदन

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान की स्थापना वर्ष 1860 के समिति पंजीकरण अधिनियम-21 (पंजाब संशोधित अधिनियम 1957) के अन्तर्गत 6 अक्टूबर 1964 में की गई थी। शिमला के राष्ट्रपति निवास में स्थित यह संस्थान मूलतः मानवीय महत्त्व और सामाजिक विद्वानों के गहन सैद्धान्तिक शोध में समर्पित है। संस्थान के शैक्षणिक निकाय में मुख्यतः शोध अध्येता समुदाय यहां रहते हैं जो अपना शोध-कार्य करने के अतिरिक्त परस्पर औपचारिक व अनौपचारिक विचार-विनिमय भी करते हैं। राष्ट्रपति निवास तथा इसकी परिसम्पदा प्रकृति के सुरम्य वातावरण में चिन्तनशील उच्च अध्ययन तथा मानवीय दशा के विभिन्न पहलुओं के अन्वेषण हेतु प्रेरक हैं।

संस्थान का संगम-ज्ञापन विभिन्न क्षेत्रों में शोध का मार्ग प्रशस्त करता है, जो इस प्रकार है—

(क) शोध के क्षेत्र ऐसे होने चाहिए जो अंतर्विधात्मक अनुसंधान का उन्नयन करें।

(ख) अनुसंधान की विषय-वस्तु गहन मानवीय महत्त्व की होनी चाहिए।

संगम-ज्ञापन में अध्ययन के विभिन्न क्षेत्र भी दर्शाए गए हैं जो इस प्रकार हैं—

(क) सामाजिक राजनैतिक और आर्थिक दर्शन;

(ख) तुलनात्मक भारतीय साहित्य (जिसमें प्राचीन मध्यकालीन, आधुनिक, लोक और आदिवासी-साहित्य भी हो);

(ग) दर्शन और धर्म का तुलनात्मक अध्ययन;

(घ) शिक्षा, संस्कृति और कला, जिसमें निष्पादन कलाएँ और हस्तशिल्प भी हों;

(ङ) तर्क और गणित की मौलिक अवधारणाएँ और समस्याएँ;

(च) प्राकृतिक और जीवन विज्ञानों की मौलिक अवधारणाएँ और समस्याएँ,

(छ) प्राकृतिक और सामाजिक पर्यावरण का अध्ययन,

(ज) एशियाई पड़ोसी देशों तथा विश्व के संदर्भ में भारतीय सभ्यता, और

(झ) राष्ट्रीय एकता और राष्ट्र निर्माण के संदर्भ में समसामायिक भारत की समस्याएँ।

ज्ञापन के अनुसार निम्न विषयों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए:—

(क) अनेकता में भारतीय एकता का विषय,

(ख) भारतीय चेतना का एकीकरण,

(ग) भारतीय प्ररिप्रेक्ष्य में शिक्षा का दर्शन,

(घ) प्राकृतिक विज्ञानों में उच्च अवधारणाएँ और उनकी दार्शनिक विवक्षाएँ,

- (ड) विज्ञान और अध्यात्म के संश्लेषण में भारत और एशिया का योगदान,
- (च) भारतीय मानव एकता,
- (छ) भारतीय साहित्य की सहचर,
- (ज) भारतीय महाकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन,
- (झ) मानव पर्यावरण।

1. प्रशासन

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान 4 सितंबर 2014 तक श्री गोपालकृष्ण गांधी, सेवानिवृत्त प्रशासनिक अधिकारी, राजनयिक पश्चिम बंगाल के पूर्व राज्यपाल, लेखक ने भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान सोसायटी तथा प्रबन्ध समिति का नेतृत्व किया तत्पश्चात महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर की उपकुलपति प्रोफेसर चन्द्रकला पाडिया संस्थान की शासी निकाय की अध्यक्षता तथा सोसायटी की प्रधान मनोनीत हुई। आईआईएस सोसायटी के प्रधान लब्धप्रतिष्ठित व्यक्ति होते हैं जिन्हें विभिन्न क्षेत्रों से चयनित किया जाता है। संस्थान की एक वित्त समिति है जिसमें मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सदस्यों के अतिरिक्त संस्थान की प्रबन्ध समिति के सदस्य भी होते हैं जो प्रबन्ध समिति को वित्तीय मामलों में परामर्श देते हैं।

संस्थान का नेतृत्व निदेशक करते हैं जिन्हें सचिव तथा अन्य अधिकारी अपना सहयोग देते हैं। समीक्षा अवधि के दौरान प्रोफेसर चेतन सिंह ने संस्थान के निदेशक का कार्यभार संभाला।

2. शोधरत अध्येता

संस्थान के आधार इसके अध्येता हैं। राष्ट्रीय अध्येता/अध्येता/टैगोर अध्येता यहाँ रहकर अपनी शोध परियोजनाओं पर कार्य करते हैं। इसकी अवधि दो वर्ष तक है। अध्येता अपनी अवधि के समाप्त होने पर पाण्डुलिपि प्रस्तुत करते हैं, यदि यह प्रकाशन के लिये उचित पाई जाती है तो संस्थान इसका प्रकाशन करता है। इन्हें संगोष्ठियों में सहभागिता, विचार विमर्श तथा व्याख्यानों में सहभागिता करनी होती है। वर्ष 2014-2015 के दौरान निम्नलिखित राष्ट्रीय अध्येता/अध्येता/टैगोर अध्येता कार्यरत थे:

क्रमांक	अध्येता का नाम	शोध परियोजना
1.	प्रोफेसर डी.एन. धनाग्रे राष्ट्रीय अध्येता	पॉपुलिज्म एण्ड पावर : दी फार्मरस मूवमेंट इन महाराष्ट्र, 1779-2010
2.	श्री राजेश जोशी राष्ट्रीय अध्येता	हिन्दी कविता में आधुनिक शहर की स्थानीयता का प्रवेश
3.	प्रोफेसर बी.डी. चट्टोपाध्याय राष्ट्रीय अध्येता	स्पेस, पीपल एण्ड कल्चरस : अर्ली इण्डियन
4.	प्रोफेसर मीना अलैकजेंडरा राष्ट्रीय अध्येता	ए साइकल ऑफ पोयमस एनटाइटलड फ्रैगमेंट्स इन अगस्त
5.	डॉ. प्रियम्बदा सरकार	ए रिलिजस प्वाइंट अव व्यू: विट्टेगस्टेन एण्ड रवीन्द्रनाथ

6. डॉ. प्रदीप फैन्जोबम *दी नार्थइस्ट क्वेश्चन*
7. प्रो. वृन्दा डालमिया *केयरिंग टू नो: टूवर्डस ए कम्पेरेटिव केयर बेसड एपिस्टमोलॉजी*
8. डॉ. सुनीता रैना *मेकिंग ए बायमपायर: द इण्डियन एनकाउंटर विद बट टैक्नोलॉजी*
9. डॉ. के.जी. पॉलस *टैक्सट एण्ड प्रफॉर्मेंस-स्टडी विद स्पेशल रिफ्रेंस टू कुटिटयाटम*
10. डॉ. अरुणा बोमरेड्डी *दी नेरेटिव ट्रेडिशनस अव ए तेलगु एपिक पलनेटिविरुला कथा*
11. डॉ. शिवानी चोपड़ा *फेमिनिज्म एण्ड लिट्रेरी क्रिटिसिज्म; स्कोप एण्ड लिमिटेशन, इन कांटेस्ट अव वूमेन ऑटोबायोग्राफी*
12. डॉ. एकान्सी मित्रा *ऑन दी क्वेस्ट फार रिफ्रेंस*
13. डॉ. अनिरुद्धा चौधरी *सिंगुलर हिस्ट्री –टूवर्डस ए पोस्ट मैटाफिजिकल फिलॉस्फी अव हिस्ट्री*
14. श्री अर्णब चटर्जी *ऐथिक्स एण्ड पर्सनलिस्ट ऐथिक्स इन सोशल वर्क एण्ड अदर स्ट्रक्चरस अव हैल्लिंग इन (बियोड प्राइवेट एण्ड पब्लिक: न्यू परस्पेक्टिवस ऑन दी पर्सनल, पर्सनलिस्ट सोशल वर्क एण्ड अदर स्ट्रक्चरस अव हैल्लिंग)*
15. ईशा शाह *सोशल एण्ड कल्चरल हिस्ट्री अव साइंस: अफैक्टिव हिस्ट्री अव दी गेने*
16. डॉ. सर्वचेतन कटोच *रिइमेजनिंग दी नेशन: ए स्टडी अव दी रिप्रेजेंटेशनस अव दी नेशन इन 21स्ट सेंचुरी हिन्दी सिनेमा*
17. डॉ. अल्वीना शकील *नियोलिबरेलिज्म, मिडल क्लासिस एण्ड दी इंग्लिश नॉवेल इन इण्डिया*
18. डॉ. राजीव कुमारम *सोशल (पावर) हिस्ट्री (नॉलेज) एण्ड पापुलर मेमोरीज : दी फ्रैक्चरड हिस्ट्री*
कंडथ *अव थथरिकुट्टी*
19. प्रोफेसर राधावल्लभ *थियरी एण्ड प्रैक्टिस अव वेदा (डिवेट) इन इण्डियन ट्रेडिशनस अव*
त्रिपाठी *साइंटिफिक एण्ड फिलॉसफिकल डिस्कोर्स एण्ड इट्स रिलेवेंस टूडे*
20. डॉ. योगेश स्नेही *पपुलर सूफी शराइनस इन कंटैम्परेरी पंजाब : मार्जिनीलिटी, आइडेंटिटीज*
एण्ड डिसेंट
21. डॉ. प्रवेश जंग गोले *रीजन एण्ड ऑटोनमी : डिस्कॉरडेंट हारमोनी*
22. डॉ. आर. उमा महेश्वरी *रीडिंग हिस्ट्री विद द तमिल जैनस: लोकेटिंग आईडेंटिटी, मेमोरी एण्ड*
मार्जिनलाइजेशन इन हिस्ट्रोओग्राफी
23. श्री सुकुमार मुरलीधरन *डिवेलप्मेंट एण्ड डिस्प्रोपोरशनेलिटी : रिविजिटिंग दी च्वाइस ऑफ टैक्नॉलजी*
क्वेश्चन
24. डॉ. अरयक गुहा *मइनर मैटरस : कल्चरस ऑफ चाइल्डहुड इन पोस्ट-इंडीपेंडेंस इण्डिया*
25. डॉ. एन. मालेमंगान्बा *आमंड फोरसिस स्पेशल पावरस एक्ट एण्ड दी प्रोटेस्ट इन मणिपुर*
मितयी
26. प्रोफेसर ए. अच्युतन *ए स्टडी ऑफ दी फोक ड्रामाटिक ट्रेडिशन ऑफ इण्डिया एण्ड दलित*
कन्सिडनेस
27. प्रोफेसर एम.टी. अंसारी *कम्पेरेटिव लिटरेचर इन इण्डिया : ए स्टडी ऑफ दी स्टेट ऑफ दी*
डिस्प्लिन
28. प्रोफेसर सौम्य शर्मा *अप्रोच टू कंजरवेशन एण्ड रिसटोreshन : स्पेशल फोक्स ऑन कल्चरल*
हैरिटेज ऑफ हिमाचल

29.	डॉ. आशुतोष कुमार	दी वर्ल्ड ऑफ इण्डियन आइडेंचरड माइग्रेंटस : एक्सपीरिअस एण्ड रिप्रेजेंटेशन
30.	प्रोफेसर महेश चंपकलाल	लैंग्वेज इन थियेटर, लैंग्वेज ऑफ थियेटर (ड्रामाटिक टैक्सट ऑफ भाषा नाटक चक्र— एन एनालिटिकल एण्ड कम्पैरेटिव स्टडी)
31.	डॉ. कौस्तव चक्रवर्ती	सेसिआ—कल्चरल स्टडी ऑफ दी नॉन—नार्मेटिव एक्प्रेशन इन सिलेक्ट ट्राइबल फोक—लिटरेचर ऑफ नॉर्थ बंगाल
32.	डॉ. आनंदिता मुखोपध्याय	चिल्ड्रन गेमस, एडल्टस गैम्बिटस : ए मॉडरन कल्चरल प्रोग्राम इन बंगाल
33.	प्रोफेसर भारद देशपाण्डेय (टेगोर अध्येता)	कनवर्जिंग विद टैगोर: टूवर्डस ए रिकान्साइल्ड यूनिवर्सल एण्ड ह्यूमन फ्लोरशिंग
34.	प्रोफेसर के.एल. टुटेजा (टेगोर अध्येता)	कम्यूनिटी एण्ड नेशन इन कलोनियल इण्डिया विद स्पेशल रेफरेंस टू दी पंजाब
35.	प्रोफेसर अनिकेत जावड़े (टेगोर अध्येता)	ऑन ट्रांजिशन, इग्नोरेंस एण्ड इनकम्परिहेन्शन

3. अकादमिक गतिविधियां

क. रवीन्द्रनाथ टैगोर—स्मृति व्याख्यान

संस्थान में संस्कृति एवं सभ्यता के अध्ययन के उद्देश्य से वर्ष 2013 में टैगोर सेंटर स्थापित किया गया है। जिस बौद्धिक वचनबद्धता को लेकर टैगोर सेंटर की स्थापना की गई है उन अकादमिक गतिविधियों में किसी प्रख्यात विद्वान अथवा आम प्रज्ञावान व्यक्ति द्वारा वर्ष में किसी ऐसे महत्वपूर्ण विषय पर एक टैगोर—स्मृति व्याख्यान दिलवाना भी इस केन्द्र का प्रमुख कार्य है। संस्कृति, समाज, तथा मानवीय दशाओं से संबद्ध सभ्यतात्मक मुद्दे जो टैगोर के अतिसाधक रुचि विषय रहे हैं, इस व्याख्यान की विषय—वस्तु हो सकते हैं।

द्वितीय टैगोर स्मृति व्याख्यान 20 अक्टूबर 2014 को गुलज़ार साहिबद्वारा प्रस्तुत किया गया। वक्ता ने एक नये प्रारूप के प्रयोग का चयन किया। सर्वप्रथम उन्होंने टैगोर की रचनाओं के बारे में अपने ज्ञान तथा उन रचनाओं के प्रति अपनी व्यक्तिगत प्रतिक्रियाओं से अवगत करवाया। उसके पश्चात यह व्याख्यान एक वार्तालाप के साथ आगे बढ़ा जिसके अंतर्गत प्रोफेसर सुक्रीता कुमार पॉल तथा गुलज़ार साहिब ने सभासदों के समक्ष परस्पर परिचर्चा—प्रस्तुतिकरण किया। इस कार्यक्रम के तीसरे सत्र में दिल्ली से आए प्रख्यात कलाकार तथा स्वतंत्र विद्वान श्री अशोक भौमिक ने रवीन्द्रनाथ टैगोर की चित्रकला के बारे में अपने विचार प्रस्तुत किये। तदोपरांत अशोक भौमिक तथा गुलज़ार साहिब ने परस्पर एक परिचर्चा की। इस अवसर पर संस्थान कीभासी निकाय की अध्यक्ष प्रोफेसर चंद्रकला पाडिया ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर चेतन सिंह ने इस आयोजन में उपस्थित सभी सभासदों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

नोट :- भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान में स्वर्ण जयंती वर्ष का शुभारंभ तथा जीर्णोद्धार तथा विस्तृत फोटो गैलरी का उद्घाटन।

20 अक्टूबर 2014 को रवीन्द्रनाथ टैगोर स्मृति व्याख्यान के अवसर पर संस्थान में स्वर्ण जयंती मनाये जाने की घोषणा भी की गई। गुलज़ार साहिब ने इस अवसर पर नई जीर्णोद्धार तथा विस्तृत की गई फोटो गैलरी का उद्घाटन किया। माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री ने भी इस अवसर पर उपस्थित होने की आशा व्यक्त की थी मगर किन्हीं अन्य आवश्यक कार्यों की वजह से वे संस्थान में नहीं पधार सकीं।

ख. डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् स्मृति व्याख्यान

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् स्मृति व्याख्यान संस्थान की एक बहुत ही महत्वपूर्ण अकादमिक गतिविधि है। 03 नवम्बर 2014 को प्रोफेसर रामचंद्रा गुहा द्वारा 'इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली' में 'गाँधी एण्ड बनारस' विषय पर 19वां राधाकृष्णन् स्मृति व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर चेतन सिंह ने अध्यक्ष का परिचय करवाया तथा उपस्थित सभासदों का अभिवादन किया। संस्थान की शासी निकाय की अध्यक्ष प्रोफेसर चंद्रकला पाडिया ने अध्यक्षीय भाषण प्रस्तुत किया जबकि संस्थान के निदेशक प्रोफेसर चेतन सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

ग. संगोष्ठियां, सम्मेलन, कार्यशालाएं तथा गोलमेज

समीक्षा वर्षावधि के दौरान संस्थान में कई संगोष्ठियां तथा सम्मेलन आयोजित किये गये। जिन्हें संबंधित संयोजकों/सह-संयोजकों द्वारा तैयार अवधारणा नोट में व्याख्यायित शैक्षिक औचित्य सहित सूचीबद्ध किया गया है। इन संगोष्ठियों की रिपोर्ट में प्रत्येक संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों तथा प्रतिभागियों के नाम दर्शाए गए हैं।

प्रत्येक संगोष्ठी का अवधारणा नोट संस्थान की वेबसाइट पर डाल दिया गया है तथा वेबसाइट पर ही शोध-पत्र आमंत्रित किए गए हैं। आमंत्रित प्रख्यात विद्वानों जो पहले भी प्रस्तावित संगोष्ठी की विषय-वस्तु में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे चुके हैं, के अलावा भी संबंधित विषय में रुचि रखने वाले अन्य विद्वानों को भी आमंत्रित किया जाता है। इस आमंत्रण के प्रत्युत्तर में कई युवा शोधार्थी अपने शोध-पत्र प्रस्तुत करने के लिए अपनी इच्छा जाहिर करते हैं मगर यह उम्मीद की जाती है कि गुणात्मकता में वृद्धि होगी।

आलोच्य वर्ष के दौरान निम्नलिखित अकादमिक गतिविधियां आयोजित की गईं—

1. 'वर्तमान संदर्भ में दलित अस्मिता से जुड़े सवाल और साहित्य लेखन' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी (श्री ओम प्रकार वाल्मीकि की स्मृति में) (14-15 अप्रैल 2014)

मूलाधार— वर्तमान में दलित चेतना तथा दलित अस्मिता का प्रश्न विद्वानों के तर्क-वितर्क का अहम केन्द्र रहा है। इन मुद्दों पर विचार-विमर्श तथा तर्क-वितर्कों से उभरकर सामने आये साहित्य को हम दलित साहित्य की संज्ञा देते हैं। यह साहित्य समाज के एक वर्ग से संबद्ध है जो दीर्घकाल से आधारभूत अधिकारों से वंचित रहा। भारत में आधुनिक शिक्षा के आगमन से अनेक दलितों ने शिक्षा ग्रहण कर उच्च जातीय वर्ग तथा ब्राह्मणवाद के प्रभुत्व का चुनौती देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। श्री ओम प्रकाश वाल्मीकि उनमें एक भास्त्रियत हैं जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से दलित-विमर्श को नया आयाम दिया है।

इन मुद्दों पर विमर्श करने तथा श्री ओम प्रकाश वाल्मीकि के योगदान का पुनार्ध्ययन करने के उद्देश्य से 14-15 अप्रैल, 2014 के दौरान 'वर्तमान संदर्भ में दलित अस्मिता से जुड़े सवाल और साहित्य लेखन' विषय पर संस्थान में एक राष्ट्रीय संगोष्ठी (श्री ओम प्रकार वाल्मीकि की स्मृति में) आयोजित की गई। संस्थान की अध्यक्षता डॉ. शिवानी चोपड़ा इस संगोष्ठी की संयोजक थीं। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर चेतन सिंह ने संगोष्ठी में आए प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा संयोजक डॉ. शिवानी चोपड़ा ने संगोष्ठी की मूल विषय-वस्तु से अवगत करवाया।

प्रतिभागी

- श्री राजेश जोशी, राष्ट्रीय अध्यक्षता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- श्री लीलाधर मंदलोई, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली

- सुश्री प्रियंका सोनकर, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. अश्वनी कुमार, मोतीलाल नेहरू संध्याकालीन महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- श्रीमती चंद्रकला वाल्मीकि, देहरादून
- डॉ. शिवानी चोपड़ा, अध्येता भा.उ.अ.सं., शिमल
- सुश्री अनिता भारती, दिल्ली
- प्रोफेसर दुर्गा प्रसाद गुप्ता, हिन्दी विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली
- डॉ. काली चरण स्नेही, हिन्दी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय
- डॉ. देवेन्द्र चौबे, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. सुभाष गतादे, दिल्ली
- श्री एस.आर. हरनोट, शिमला
- डॉ. कवल भारती, रामपुर
- प्रोफेसर चमन लाल, केन्द्रीय विश्वविद्यालय पंजाब, भटिंडा
- डॉ. अविनाश पाण्डे, आईयूसी सह-अध्येता, भा.उ.अ.सं.
- डॉ. विक्रम हरिजन मध्यकालीन/आधुनिक इतिहास विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
- श्री वीरेन्द्र यादव, लखनऊ
- डॉ. हरीश मंगलम, अहमदाबाद

संगोष्ठी के दौरान प्रतिभागियों ने निम्नलिखित शोध-पत्र प्रस्तुत किये—

सत्र-1

दलित लेखक श्री ओम प्रकाश वाल्मीकि जी का जीवन संघर्ष और आत्मकथा 'जूठन' की यात्रा

डॉ. कवल भारती : ओम प्रकाश वाल्मीकि और दलित साहित्य

प्रोफेसर चमन लाल : दलित आत्मकथा की परम्परा और 'जूठन'

सत्र-2

दलित साहित्य का समाजशास्त्र और इतिहास में अभिव्यक्ति

प्रोफेसर दुर्गा प्रसाद : विचारधारा, विमर्श और राजनीतिक संघर्ष

डॉ. विक्रम हरिजन : इतिहास और साहित्य में दलित चेतना की अभिव्यक्ति

डॉ. अविनाश पाण्डे : दलित साहित्य की भाषा और अंग्रेजी

सत्र-3

दलित कहानियां—गप्प और किस्सों से अलग

प्रोफेसर काली चरण स्नेही : वाल्मीकि की कहानियों में सामाजिक यथार्थ

प्रोफेसर देवेन्द्र चौबे : दलित पात्रों का सच और लेखक का सच

सुश्री प्रियंका सोनकर : वाल्मीकि की कहानियों में सामाजिक प्रतिबद्धता

सत्र-4

कवि जीवन का सच

श्री लीलाधर मंदलोई : दलित कविता का सच

डॉ. हरीश मंगलम : ओम प्रकाश वाल्मीकि की कविताओं में दलित चेतना और प्रतिबद्धता

डॉ. अश्वनी कुमार : दलित कविता में कल्पना और यथार्थ

सत्र-5

दलित लेखन और अस्मिता के समक्ष चुनौतियां

श्री वीरेन्द्र यादव : दलित सौंदर्यशास्त्र और साहित्य का पुनर्पाठ

डॉ. अनिता भारती : दलित स्त्री की चुनौतियां

डॉ. सुभाष गतागे : दलित सामाज का यथार्थ व राजनीतिक भागीदारी

2. 'बॉर्डर क्वेश्चनस इन इण्डियाज नॉर्थ ईस्ट : इंटरा एण्ड इंटरनेशनल डाइमेंशनस' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी (22-23 अप्रैल, 2014)

मूलाधार— आज भारत को स्वतंत्रत प्रभुसत्ता संपन्न राष्ट्र बने हुए 66 वर्ष हो गये हैं मगर बंगाल से आगे का भू-भाग—सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश, असम, मेघालय, मिजोरम, नागालैण्ड, मणिपुर तथा त्रिपुरा जिसे पूर्वोत्तर के नाम से जाना जाता है आज भी समस्याओं से जूझ रहा है। काफी हद तक इस क्षेत्र का विलक्षण राजनैतिक भूगोल इस बात को सुनिश्चित करता है। भारतीय उपमहाद्वीपीय भू-क्षेत्र को सांझा करने वाले तकरीबन 2 प्रतिशत सीमा क्षेत्र को छोड़कर यह क्षेत्र हर तरफ से अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं से घिरा हुआ है। संकीर्ण पट्टी की भांति है यह क्षेत्र बंगलादेश और भूटान के बीच का है जो उन्हें परस्पर जोड़ने का काम करता है और जिसे मुर्गी की गर्दन या सिलीगुड़ी गलियारे के नाम से जाना जाता है। इस गलियारे की चौड़ाई बहुत ही कम है। अन्दाजन यह क्षेत्र 22 किलोमीटर है जो उत्तर की ओर पूर्वोत्तर सीमा चीन और भूटान, पूर्व की ओर म्यांमार तथा दक्षिण की ओर बंगलादेश के साथ सटा हुआ है।

19वीं सदी के अंत तथा 20वीं सदी के दौरान यह राजनीतिक भूगोल सामने आया, जिससे भू-राजनीति में पहेलीनुमा अध्ययन का प्रारंभ हुआ। एक तरफ ब्रिटेन और एकाधिपत्य रूस के मध्य अपरोक्ष मगर अत्याधिक दुश्मनी व्याप्त थी जिसे एक बड़े खेल के रूप में परिभाषित किया गया है। फलस्वरूप तिब्बत के दर्जे तथा पूर्वोत्तर की उत्तरी सीमा को लेकर एक लम्बी अनिश्चितता बरकरार है। अब यह सीमा विवादास्पद मैकमोहन लाइन से विभाजित की गई है जिसके चलते सन 1962 में भारत और चीन के बीच युद्ध भी हुआ।

इसी तरह 1826 में जब असम को राज्य का दर्जा दिया गया तो वहां ब्रिटिश औपनिवेशिक नीति के कारण स्थानीय असमिया बोलने वालों तथा मध्यवर्गीय पाश्चात्य शिक्षित बंगला भाषियों में नसलीय वैमनस्य उत्पन्न हो गया। बंगला भाषी लोगों को अंग्रेजों ने पूर्वी बंगाल के सिलहट प्रांत से प्रशासनिक कार्यों के संचालन हेतु स्थानांतरित किया था। अंततः विभाजन के समय इस वैमनस्य के विनाशकारी परिणाम सामने आये। यह पीड़ा देश के अन्य भागों में थोड़ी ज्यादा थी, जहां कि 1947 के विभाजन की चिंगारी भड़की थी, जिसके फलस्वरूप भारत-पाक सीमा के पश्चिम सैक्टर

में बहुत नरसंहार हुआ। पूर्व में विभाजन के अभिघात के कारण भारत ने सिलहट भू-भाग तथा चटगाँव पहाड़ी क्षेत्र को खो दिया, जिसका आधुनिक भारतीय इतिहासकारों ने शायद ही कभी जिक्र किया हो। दुर्भाग्यवश सबसे अप्रिय समस्या सिर्फ आसम ही नहीं अपितु सम्पूर्ण पूर्वोत्तर प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से इसकी चपेट में है।

असम में भाषायी राष्ट्रवाद के विरोध के अनेक स्वतंत्रोत्तर दुष्परिणाम सामने आये हैं। असमिया बोलने वालों द्वारा असमिया भाषायी राष्ट्रवाद के अक्रामक दावे के कारण बंगला प्रभुत्व तथा असम के कई अन्य जातीय समूह अपनी सुरक्षा को लेकर चिंतित हो गए। असमिया भाषा की प्रधानता को उन्होंने अपनी अस्मिता के लिए खतरा माना। इससे असम में अलगाव का बीजारोपण हुआ तथा असम के जनजातीय पहाड़ी राज्यों की स्वायत्ता के प्रश्न का भी अविर्भाव हुआ। विभाजक शक्तियों को वक्त की राजनीति ने खुला छोड़कर मुक्त कर रखा है तथा असम के अलावा पूर्वोत्तर के अन्य भागों में नस्लीय कशाकशी के पीछे अभी भी इसकी अहम् भूमिका है। वर्तमान में पूर्वोत्तर वास्तव में बुरी तरह खण्डित भू-भाग है।

मगर पूर्वोत्तर में सभी प्रकार के जातीय विभाजन के लिए अकेले औपनिवेशिक राजनीति ही जिम्मेवार नहीं है। वर्तमान में विद्वानों के मध्य न सिर्फ पूर्वोत्तर नस्लीय युद्धस्थिति का केन्द्रीय मुद्दा है अपितु समस्त दक्षिण एशियाई गिरि-पिण्ड उनके विमर्श की विषय-वस्तु है, जिसके अंतर्गत पूर्वोत्तर क्षेत्र आता है। विलेम वान स्कैण्डल द्वारा इस क्षेत्र को जोमिया के नाम से नवाजा गया है। जेम्स सी. स्कॉट ने जोमिया की अवधारणा को *दी आर्ट ऑफ नॉट बींग गवर्नड : एन एनार्किस्ट हिस्ट्री ऑफ उपलैण्ड साउथ-ईस्ट एशिया* के रूप में प्रयोग किया है ताकि वहां स्थित नस्लीय संस्कृतियों की सतता के बारे में तर्क प्रस्तुत किया जा सके। इससे आधुनिकता के बारे में परम्परागत कहानी— मसलन, एक बार जब लोग आधुनिक प्रौद्योगिकी तथा आधुनिक राज्य की सुविधाओं के प्रति अनाश्रित हो जाते हैं तो वे समावेश कर लेते हैं, के बारे में प्रति-विवरणात्मकता उपलब्ध करवाते हैं।

जोमिया की जनजातियां अधिक मौलिक तथा स्थानीय-निर्भरता की अर्थव्यवस्था में गुजर-बसर का चुनाव कर अपने आप को आधुनिकता से जागरूक भारणार्थी मानते हैं।

इस सिद्धांत का एक पहलु यह भी है कि उपजाऊ घाटी में कृषि उत्पादकता की आधिक्य के लिए वहां की अनुकूल परिस्थितियां हैं। वहां राज्य निर्माण सामंती प्रकृति की नौकरशाही के केन्द्रीयकरण के कारण हुआ है। वे आसपास के पर्वतीय राज्य के विचार से विमुख रहते हैं। अतः उनमें राज्य से अलग होने की प्रवृत्ति मौजूद रहती है। यह सिद्धांत आसपास के पर्वतीय क्षेत्रों में घाटी के निवासियों तथा दूसरे भू-भाग में रहने वालों के बीच अंतर और प्रतिरोध को उद्घाटित करता है। विद्वानों ने इस अभिधारणा को यह तर्क देकर चुनौती दी है कि ऐसे कई उदाहरण हैं कि पहाड़ी लोग घाटी में आ जाते हैं तथा कई बार वहां आकर बस जाते हैं। जोमिया के लोगों की इस प्रकार की लापरवाह गतिविधि के कारण पर्वत-घाटी हमेशा तनावपूर्ण स्थिति रही है।

सामान्यतः इस क्षेत्र में गैर-राज्य समितियों द्वारा राष्ट्र राज्य की विचारधारा में शामिल होकर अपनी 'राष्ट्रीय हीनता' की जानकारी होने का भी एक प्रश्न है। उनमें समेकित अस्मिता की तीव्र इच्छा होती है और अंततः अपना एक अलग राज्य बनाने की मांग पैदा हो जाती है। औपनिवेशिक सरकार के आगमन तथा उनकी समीपता इस उद्बोधन की जल्दी करते हैं। विशेषकर परोपनिवेशिक युग में विभिन्न जातीय समूहों द्वारा मातृभूमि की मांग चिर-परिचित रिवायत बन गई। टकराव के रास्ते के अतिरिक्त राष्ट्र राज्य के विरुद्ध यह मुहिम के रहते नए उभरते नस्लीय समूहों ने पाया कि मातृभूमि के प्रति उनका ख्याल प्रायः एक दूसरे भू-भाग से आच्छादित रहा है। घुमंतु शिकार समूह, निष्क्रिय कृषि समुदाय, अस्थायी काश्तकार आदि सभी के भूमि के साथ अलग-अलग संबंध हैं, जो उनका पालन-पोषण करती है। यह, नितांत अपेक्षित, अंतर-नस्लीय विवादों के परिदृश्य की ओर संकेत करता है। पूर्वोत्तर इस प्रकार की घटनाओं से परिचित रहा है, और कभी-कभी तो बहुत ही दुःखदपूर्ण रूप भी सामने आया है।

इस संगोष्ठी में सीमाओं के इन कारणों तथा गतिकी को नितांत द्वंदों के लिए सामर्थ्य के साथ व्याख्यायित करने का प्रयास किया गया तथा आगे का रास्ता प्रशस्त किया। कुछ मुख्य मुद्दे जिन पर विमर्श किया गया वो इस प्रकार हैं— क्या इन सीमाओं को हटाया या कम किया जा सकता है? क्या सहभाजित अस्मिताएं हैं? क्या मातृभूमि को बिना किसी द्वंद के आच्छादित किया जा सकता है? क्या विशाल राज्य इन समस्त अस्मिताओं को बिना क्षति पहुंचाए नए रूप में सामने ला सकता है?

अधिक सुस्पष्ट ढंग से कहा जाये तो इस संगोष्ठी में उन समसामायिक मुद्दों पर शोध-पत्र आमंत्रित किये गये थे जो पूर्वोत्तर में सीमाओं तथा विभाजन की दृष्टि से आवश्यक थे। शोध-पत्रों हेतु सुझाए गए कुछ विषय इस प्रकार हैं—

1. असम में नस्लीय निवारक मातृभूमि विशेषकर बोडोलैण्ड के लिए संघर्ष जैसे मुद्दे। क्या मातृभूमि का मुद्दा न सिर्फ परस्पर अपितु आधुनिक राज्य जिसमें वे जीवनयापन करते हैं के साथ घिर सकता है।
2. मेघालय तथा मणिपुर में ब्रिटिशकालीन प्रशासकीय मशीनरी की पुनर्स्थापना की मांग की पृष्ठभूमि तथा मनोविज्ञान, जिस कारण बाहरी प्रवेश तथा बाहरी राज्यों के लोगों द्वारा इन राज्यों में भूमि खरीदने की मनाही के लिए पहाड़ी तथा मैदानी इलाकों को पृथक किया गया है।
3. पहाड़ी लोगों को मैदानी इलाकों के निवासियों पर सामान्यतः भरोसा न किया जाना, जिससे इनके बीच भेदभाव पैदा हुआ है। मणिपुर में पहाड़ी घाटी के विभाजन की क्या विशेषताएं हैं? क्या यह सिर्फ विकास विभेद मात्र है? इस समीकरण के लिए कौन दोषी है?
4. जबकि नागा और मिजो की उनके क्षेत्रों में व्यापक स्तर पर जातीय पहचान है तो फिर वे मणिपुर, असम तथा अन्य पूर्वोत्तर राज्यों में क्यों नहीं रहते?
5. मिजोरम ने नस्लीय अस्मिता की समस्या को हल करने के लिए प्रायः बढ़-चढ़कर भूमिका अदा की है और पूर्वोत्तरीय राज्य होने के बावजूद वहां हिंसात्मक घटनाओं पर नियंत्रण रहा है। इस परिप्रेक्ष्य में हमारस, ब्रूस, चकमस, लाखेर, पावी साथ ही इस प्रांत में आये चिन भारणार्थियों के मुद्दों को किस प्रकार उद्घाटित किया जाएगा?
6. क्या छठी अनुसूची के आने से त्रिपुरा जनजातीय समस्या का हल हो पाएगी? क्या हिंसा में कमी शांति का प्रतीक है?
7. नस्लीय विविधता की दृष्टि से अरुणाचल प्रदेश से अधिक विविधता वाला कोई राज्य नहीं है। तथापि पूर्वोत्तर राज्यों में अरुणाचल प्रदेश सबसे शांत राज्य है। क्या यह इसलिए है कि जनजातियां एक दूसरे से अलग-अलग स्थानों में रह रहती हैं। ये जनजातियां मैदानों में स्थित प्रशासकीय तंत्र से भी विलग रही हैं, शायद ब्रतानवी औपनिवेशिक नीति के तहत *बंगाल इन्टर लाइन रेगुलेशन ऑफ 1873* का समर्थन किया गया था।
8. पृथक पहचान की भाँति क्या कुछ और हो सकता है? लोकतांत्रिक व्यवस्था में जहां अधिकार और कर्तव्य स्पष्ट निर्धारित किये गये हैं क्या वे इस अलग पहचान वाले समुदाय के लिए विकल्प हो सकते हैं या फिर इस इतिहास और अंतिम मनुष्य की कहानी यहीं समाप्त हो जायेगी।

संस्थान में 22-23 अप्रैल 2014 को 'बॉर्डर क्वेश्चनस इन इण्डियाज नॉर्थ ईस्ट : इंटरा एण्ड इंटरनेशनल डाइमेंशनस' विषय पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई। संस्थान के अध्यक्ष डॉ. प्रदीप फैंजोमन इस संगोष्ठी के संयोजक थे। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर चेतन सिंह ने प्रतिभागियों का स्वागत किया। संगोष्ठी के संयोजक डॉ. प्रदीप फैंजोमन ने मूल-विषय तथा विभिन्न सत्रों में प्रस्तुत की जाने वाली विषय-वस्तु से अवगत करवाया।

प्रतिभागी

- डॉ. होमेन थंगजम, एम.बी. कॉलेज, इम्फाल, मणिपुर
- डॉ. नम्रता गोस्वामी, शोध अध्येता, रक्षा अध्ययन तथा विश्लेषण संस्थान, नई दिल्ली
- श्री अनन्द्रूप सेन, ऐतिहासिक अध्ययन केन्द्र, सामाजिक विज्ञान स्कूल, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. जयता भट्टाचार्य ब्यूरो प्रमुख, प्रेस ट्रस्ट ऑफ इण्डिया लि., अग्रतला
- प्रोफेसर ए.के. अग्रवाल, अर्थशास्त्र, मिजोरम विश्वविद्यालय, मिजोरम
- सुश्री सोइबम हरिप्रिय, समाजशास्त्र विभाग, दिल्ली अर्थशास्त्र स्कूल, दिल्ली विश्वविद्यालय
- डॉ. थंगखनियल नगैहते, स्वतंत्र शोधकर्ता, नई दिल्ली
- श्री झूटो तुनयी, नॉर्थ ईस्टर्न हिल विश्वविद्यालय, शिलांग
- प्रोफेसर अमर युमनाम, अर्थशास्त्र विभाग, मणिपुर विश्वविद्यालय
- सुश्री सृष्टि पुखरम, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. अमरजीत शर्मा, नॉर्थ ईस्ट इण्डिया स्टडीज प्रोग्राम, सामाजिक विज्ञान स्कूल, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. जॉर्ग स्कैण्डल, स्वतंत्र बर्मा विद्वान, नई दिल्ली
- डॉ. लॉफरो सेलिना सपरुना, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. प्रदीप फैजामन, अध्येता, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला

संगोष्ठी के दौरान प्रतिभागियों द्वारा निम्नलिखित शोध-प्रत्र प्रस्तुत किये गये—

सत्र-1

एनइ बॉर्डरलैण्ड्स : दी फिक्शन ऑफ ट्रांजिशन फ्रॉम नॉन-हिस्ट्रोकल टू हिस्ट्रोकल टेरिटोरी

श्री झूटो तुनई एवं श्री जेल्ले जे.पी. वॉटरज : *दी बॉर्डरस विदइन : शिपिटिंग दी गेज़ इन दी नॉर्थईस्ट इण्डियन बॉर्डरलैण्ड*

डॉ. नम्रता गोस्वामी : *दी रिटर्न ऑफ हिस्ट्री : एक्सक्लूसिविस्ट एथनिक आइडेंटिटीज एण्ड/ऑर कॉस्मोपोलिट. निजम इन नॉर्थईस्ट इण्डिया*

सत्र-2

दी चेजिंग ऑफ बिल्डिंग ए फ़ैडरल एनई आइडेंटिटी : मेल्टिंग पॉट ऑर सलाद बाउल

डॉ. थंगखनियल नगैते : *इमेजिंग नॉर्थईस्ट कम्युनिटी : प्रीलिमिनरी एक्सप्लोरेशनज*

डॉ. लॉफरो सेलिना सपरुना : *स्पेस ऑफ एक्सक्लूशन : ए केस स्टडी ऑफ नॉर्थईस्ट इण्डिया विद स्पेशल रेफरेंस टू मणिपुर*

सत्र-3

ऐथनिक होमलैण्डस एण्ड दी प्रोब्लम ऑफ एडमिनिस्ट्रिंग दी फ्रन्टियरज

अमरजीत शर्मा : हैबिटेसन ऑफ एकपैक्टेसन : पालिटिक्स ऑफ गवर्निंग बॉर्डरस एण्ड हाउ पीपल रिसपाँड

श्री अनन्दुप सेन: एन एग्रेरियन फरंटियर एण्ड इट्स आउटसाइड : बाउंडरी फॉर्मेशन इन दी नॉर्थ इस्टरन फरंटियर ऑफ इण्डिया, स्टोरीज ऑफ इन्सीजन इन टिप्पेरा

सत्र-4

बाउंडरीज कन्स्ट्रक्शन एज रिसोर्स मैनेजमेंट मैकानिज्म

डॉ. जॉर्ज स्कैण्डे : बॉर्डरस, बॉर्डरलैण्ड एण्ड बॉर्डरस ट्रेड अराउंड लेट कांगबॉग बर्मा

डॉ. मृणाल गोहैन : पॉलिटिक्स ऑफ बॉर्डर एण्ड रिसोर्स मैनेजमेंट

सत्र-5

पॉलिटिक्स ऑफ डेमोग्राफी एण्ड एन्टाइटलमेंट इन नॉर्थईस्ट

डॉ. होमैन थंगजम : डिमांड फॉर इन्क्लूजन ऑफ मैतीज इन दी एसटी लिस्ट ऑफ इण्डिया : मैटेरियलिटी एण्ड दी पॉलिटिक्स

डॉ. जयता भट्टाचार्य : पॉलिटिक्स ऑफ डेमोग्राफी इन त्रिपुरा

सत्र-6

ब्लाइंड स्पॉट इन दी इन नॉर्थईस्ट डिस्कोर्स

सुश्री सोइबम हरिप्रिया : मार्जिनलाजड विदइन मार्जिनस

सुश्री सृष्टि पुखरेम : नॉर्थईस्ट बॉर्डर इश्यूज : ऐथनिक एण्ड सिक्योरिटी डाइमेंशन

3. 'रिसेंट परस्पेक्टिव ऑन हिमालयन बुद्धिज्म' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी (27-28 मई 2014)

मूलाधार— प्रथम भाताब्दी के मध्योपरांत संपूर्ण हिमालयी क्षेत्र में बौद्ध धर्म के आगमन तथा प्रसार के अनेक महत्त्वपूर्ण साक्ष्य मिलते हैं। पूरे हिमालय क्षेत्र में पत्थरों की पट्टिकाओं पर मंत्र अंकित, परतदार छोरतनें हैं तथा बौद्ध मठों में लहलहाते ध्वज देखे जा सकते हैं। प्रारंभिक काल से ही इस क्षेत्र में बौद्ध भिक्षुओं, व्यापारियों, तीर्थ यात्रियों तथा हिमालय क्षेत्रीय साम्राज्यों की सेनाओं का पारगमन रहता था, इसलिए सदियों से यह क्षेत्र ज्ञान, वस्तुओं तथा प्रौद्योगिकी के प्रसार का हमेशा साक्षी रहा है। यदि यह कहा जाये कि हिमालयी समुदायों में बावजूद उनकी भिन्न संस्कृति तथा भाषायी अस्मिताओं के रहते बौद्ध धर्म ने उनमें भावात्मक संबंध जोड़ा है, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इस संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य यह था कि विविध विषयों के विद्वान हिमालय क्षेत्र के बौद्धों के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण किन आधुनिक उपागमों तथा विधियों से करते हैं। सामाजिक विज्ञानों तथा मानविकी में विकास से अभिप्राय: हिमालयी बौद्धों के बारे में जानकारी हासिल करना तथा उनके जनजीवन को समीपता से देखना है। हिमालयी बौद्ध धर्म को विभिन्न बौद्ध मठों, सांस्कृतिक परिपाटियों, दृश्य अभिव्यंजनाओं, संस्कारों, तथा उन वाद-विवादों और तकरारों के परिदृश्य में देखा जाता है जो पिछले तीस वर्षों से विद्वानों के अन्वेषण का केन्द्र रहे हैं। यह क्षेत्र हिमालयी भू-भाग में उत्तर-पश्चिम में गिलगिट से अरुणाचल प्रदेश तथा पूर्व में लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, मंगा-रिस (पश्चिमी तिब्बत), नेपाल,

सिक्किम, भूटान तथा अरुणाचल प्रदेश तक फैला हुआ है। इस संगोष्ठी में विद्वानों ने हिमालयी बौद्ध धर्म के बारे में अपने मौलिक शोध के सार को सांझा किया। संगोष्ठी में यह उम्मीद जताई गई कि प्रतिभागी मात्र पुस्तकों में पहले से प्रकाशित आकड़ों को प्रस्तुत न करें अपितु सामाजिक विज्ञानों तथा मानविकी, धार्मिक अध्ययन, मानवशास्त्र तथा दर्शन के वर्तमान परिदृश्यों के दृष्टिगत साक्षरता, पुरातत्विक, अभिलेखीय तथा मौखिक स्रोतों पर पुनर्विचार कर अनिर्णीत समस्याओं तथा सवालों का निरूपण करेंगे।

हिमालयी बौद्ध-धर्मीय अध्ययन के कुछ वर्तमान मुद्दों पर अधिक स्पष्ट तथा विशेष प्राथमिकता देते हुए निम्नलिखित सारांश और शोध-पत्र प्रस्तुत किये गये—

- हिमालयन बुद्धिस्ट लैण्डस्केप— रिसेंट डिस्कवरीज : टैक्टस, एपिग्राफस, कल्चरल रैलिक्स
- बेनेवोलेंट पैटरॉन एण्ड मानेस्टिक इस्ताबलिस्मेंटस
- युरोडाइट बुद्धिस्ट टीचरस एण्ड देयर रीजनेबल फेथफुल प्यूपलस
- एज ऑफ ट्रांसलेशनस एण्ड लिट्रेरी स्टैण्डरडस
- इमरजेंस ऑफ स्कूलस एण्ड सब-स्कूलज
- पीरियड ऑफ इंटेस डॉक्ट्रीनल डिबेटस एण्ड डिफरेंसिस
- स्टैण्डरडस इन विजुअल एक्प्रेशनस एण्ड स्टाइलिस्टिक मैनिफेस्टेशनस
- हिमालयन बुद्धिज्म एण्ड सोशल ट्रांसफॉर्मेशन
- हिमालयन लैंगेसी इन इंटरनेशनल कल्चर ऑफ बुद्धिज्म
- अप्रोचिज, अजैण्डाज एण्ड एक्टरस : इश्यूज ऑफ प्रीजर्विंग हिमालयन बुद्धिस्ट हेरिटेज

संस्थान में 27-28 मई 2014 को 'रिसेंट परस्पेक्टिव ऑन हिमालयन बुद्धिज्म' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय से इतिहास विभाग के प्रोफेसर लक्ष्मण एस. ठाकुर इस संगोष्ठी के संयोजक थे। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर चेतन सिंह ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया और प्रोफेसर लक्ष्मण एस. ठाकुर ने संगोष्ठी के मूल विषय से अवगत करवाया।

प्रतिभागी

- प्रोफेसर बिमलेन्द्र कुमार, पाली एवं बौद्ध अध्ययन विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- प्रोफेसर रतन परिमु, कला, इतिहास एवं सौंदर्य के सेवानिवृत्त प्रोफेसर, एम.एस. विश्वविद्यालय, बरोदा, बड़ौदरा
- प्रोफेसर के.टी.एस. सराओ, बौद्ध अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- डॉ. नीकी चतुर्वेदी, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
- डॉ. विद्या सागर नेगी, बौद्ध अध्ययन केंद्र, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला
- डॉ. बंशी लाल, केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी
- प्रोफेसर हीरा पॉल गंगनेगी, बौद्ध अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- प्रोफेसर लक्ष्मण एस. ठाकुर, इतिहास विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला
- डॉ. रमेश चन्द्रा नेगी, तिब्बती अध्ययन केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सारनाथ

- डॉ. आनंद कुमार सिंह, गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश
- डॉ. शिप्रा आर. उपाध्याय, फोरम ऑन कंटम्प्रेरी थियोरी, गुजरात
- डॉ. प्रोजीत कुमार पालिट, इतिहास विभाग, असम विश्वविद्यालय, सिलचर
- डॉ. जयंती आलम, वरिष्ठ अध्येता, आईसीएसएसआर, हैदराबाद
- डॉ. अमृत वर्षा गाँधी, इतिहास विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमल

संगोष्ठी के दौरान प्रतिभागियों द्वारा निम्नलिखित शोध-प्रत्र प्रस्तुत किये गये—

सत्र-1

दीबुद्धिस्ट कान्चवैस्ट ऑफ दी हिमालया

प्रोफेसर एस.एन. दुबे : *अर्ली ट्रेसिस ऑफ बुद्धिजम इन दी हिमालयाज*

डॉ. बंशी लाल : *हिमालयी क्षेत्रों में बुद्ध धर्म की वर्तमान दशा एवं दिशा*

प्रोफेसर केटीएस सराओ : *दी इन्स्टिट्यूशन ऑफ दी दलाई लामा : एन एग्जामिनेशन ऑफ दी कन्सर्नस ऑफ स्टेक होल्डरस*

सत्र-2

ट्रांसमिशन एण्ड रीजनल अडाप्टेशन एण्ड ऑरल ट्रेडिशन

प्रोफेसर हीरा पॉल गंगनेगी : *दी बुद्धिस्ट एंटीक्वीटी ऑफ दी विपेज ऑफ कनम इन किन्नौर*

प्रोफेसर वांगचुक दोरजे नेगी : *हिमालयन बुद्धिजम इन दी कंटैक्स्ट ऑफ लद्दाख*

डॉ. विद्या सागर नेगी : *किन्नौर का रंग रिग त्से बौद्ध विहार तथा उससे जुड़ी जनश्रुतियां*

सत्र-3

नैरेशन एण्ड थीमस इन हिमालयन बुद्धिस्ट आर्ट

प्रोफेसर रतना परिमु : *क्षेमेंद्रा एण्ड दी पिक्टोरियल रिप्रेजेंटेशनज ऑफ जातक स्टोरीज इन हिमालयन बुद्धिस्ट आर्ट*

डॉ. प्रोजीत कुमार पालिट : *आर्ट एण्ड इटस आर्किटेक्चर ऑफ पैमायंगत्से मॉनेस्टरी इन सिक्कम : ए स्टडी ऑन बुद्धिस्ट आर्कियोलजी एण्ड ट्रेडिशन इन नॉर्थईस्ट इण्डिया*

सत्र-4

बुद्धिजम, इकॉलजी एण्ड सोशल चेंज

डॉ. आनंद सिंह : *इकॉलजी, एक्यूटुरेशन एण्ड ग्लोबलाइजेशन : ग्लीनिंग बुद्धिस्ट कम्युनिटीज ऑफ लद्दाख*

डॉ. रमेश चंद्र नेगी : *हिमालयी बुद्ध एवं सामाजिक परिवर्तन*

डॉ. शिप्रा आर. उपाध्याय : *हारमोनी इन साइंस : मैडिटेशन एण्ड इंटरनेशनल कल्चर ऑफ बुद्धिजम*

सत्र-5

डॉ. जयंती आलम : *दी वज्रयानीज इन तिब्बतन बुद्धिजम*

डॉ. नीकी चतुर्वेदी : दी हिमालयन ट्रॉप एण्ड नैरेटिव टू क्यूरेट बुद्धिजम

डॉ. अमृत वर्षा गाँधी : वूमेन एज कैटालिस्ट फॉर सोशली एंगेजड बुद्धिजम : ए स्टडी इन किन्नौर

सत्र-6

प्रोफेसर बिमलेन्द्र कुमार : नालंदा ट्रैडिशन ऑफ बुद्धिजम एण्ड इट्स अनइन्टरपटिड कन्टीन्यूटी इन तिब्बत, लद्दाख एण्ड हिमाचल प्रदेश

प्रोफेसर लक्ष्मण एस. ठाकुर : मेजर इश्यूज इन दी परजरवेशन ऑफ हिमालयन बुद्धिस्ट कल्चरल हैरिटेज : सम सुजैश्शनज फरॉम दी फील्ड

4. '100 ईयरस आफ्टर दी शिमला कॉन्फ्रेंस, 1913-14' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी (06-07 जून 2014)

मूलाधार— विगत सौ वर्षों के दौरान 'शिमला सम्मेलन' (06 अक्टूबर 1913-03 जुलाई 1914) का क्षेत्रीय भू-कूटनीति, इतिहास तथा समाजशास्त्र पर गहरा प्रभाव रहा है जो अब भी जारी है। यह सम्मेलन ब्रिटेन, चीन और तिब्बत के पूर्णाधिकारियों के बीच तिब्बत की तुलना में चीन और भारत के दर्जे तथा इन राष्ट्रों के बीच सीमाओं को तय करने के उद्देश्य से आयोजित किया गया था। 14 अप्रैल 1914 को भारत और तिब्बत के बीच मैकमोहन सीमा रेखा खींची गई जबकि कतर और आंतरिक तिब्बत के बीच इरावदी-साल्वी रेखा खींची गई। इस समझौते पर ब्रिटेन तथा तिब्बत के प्रतिनिधियों ने हस्ताक्षर कर दिये जबकि चीन के पदाधिकारी इवान चेन ने हस्ताक्षर नहीं किये। ब्रिटेन के कई प्रयासों के बावजूद इस मुद्दे को हल नहीं किया जा सका।

यद्यपि पिछले कई दशकों से इस क्षेत्र के राजनीति दल मजबूत स्थिति बनाए हुए हैं। कर्कश हिमालय क्षेत्र को चौड़ी घाटियां पृथक करती हैं, जिनसे होकर वहां के लोग पहले एक दूसरे से संपर्क स्थापित करते थे। परिणामस्वरूप इस हिमालय के क्षेत्र में परस्पर विभिन्न परम्परागत सम्मतियों का समिश्रण है। वर्ष 1959 में अंतर्राष्ट्रीय सीमा से सटे इस क्षेत्र में रहने वाले लोगों के राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक और सामाजिक जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव था।

हम आशान्वित हैं कि इससे जुड़े सभी मुद्दों पर विमर्श कर नए सार्थक परिणाम तथा प्रतिमान सामने आएंगे। आज हम राजनीतिक दलों के कई वर्षों के अनुभव का लाभ भी उठा सकते हैं। सीमा विवाद तथा अन्य कई पेचीदे मसलों पर विद्वान में परस्पर नए सिरे से विचार-विमर्श को बढ़ावा देना ही इस संगोष्ठी का मूल उद्देश्य था ताकि सीमा प्रभावित जनता के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक जीवन का ईमानदारी से पता लगाया जा सके। समान ऐतिहासिक अवस्थिति के मद्देनजर इस दो दिवसीय संगोष्ठी में निम्नलिखित मूल विषयों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया—

(क) विस्तार तथा सीमाएं

(ख) जनता तथा समुदाय

(ग) राज्य तथा भू-कूटनीति

06-07 जून 2014 के दौरान चीनी अध्ययन संस्थान, दिल्ली के सहयोग से '100 ईयरस आफ्टर दी शिमला कॉन्फ्रेंस, 1913-14' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय विचार-गोष्ठी का आयोजन किया गया। चीनी अध्ययन संस्थान, दिल्ली के प्रोफेसर वीरेन्द्र सहाय वर्मा इस विचार-गोष्ठी के संयोजक थे। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर चेतन सिंह ने प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा आईसीएस के निदेशक प्रोफेसर अल्का आचार्य ने संगोष्ठी में धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रतिभागी

- डॉ. विलेम एफ वान ऐकलेन, पूर्व राजनयिक तथा नीदरलैण्ड के रक्षा मंत्री
- प्रोफेसर मुमिन चैन, राजनीति विज्ञान संस्थान, राष्ट्रीय चुंग सिंग विश्वविद्यालय, ताईवान
- डॉ. हेमंत अदलखा, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली
- श्री अतुल भारद्वाज, विजिटिंग अध्येता, चीनी अध्ययन संस्थान, दिल्ली
- सुश्री सोनिया शुक्ला, सहायक अध्येता, चीनी अध्ययन संस्थान, दिल्ली
- कर्नल वीरेन्द्र सहाई वर्मा, मानद अध्येता, चीनी अध्ययन संस्थान, दिल्ली
- श्री समीर शर्मा, पीएचडी शोधार्थी, राजनीति विज्ञान केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली
- श्री गुलज़ार हुसैन, एम.फिल. शोधार्थी, ऐतिहासिक अध्ययन केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली
- डॉ. उत्तम लाल, सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक
- डॉ. धरित्री चक्रवर्ती, अम्बेडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली
- श्री रवि भूतालिंगम, मानद अध्येता, चीनी अध्ययन संस्थान, दिल्ली
- लेफ्टिनेंट जनरल (से.नि.) योगन्द्र बाम्मी, आईडीएसए सदस्य, साहित्य एवं संस्कृति केन्द्रीय विश्वविद्यालय सिक्किम, गंगटोक
- डॉ. धृति राय, चीनी भाषा विभाग, साहित्य एवं संस्कृति केन्द्रीय विश्वविद्यालय सिक्किम, गंगटोक
- प्रोफेसर अल्का आचार्य निदेशक एवं वरिष्ठ अध्येता, चीनी अध्ययन संस्थान, दिल्ली
- श्री एम.वी. रप्पाई, मानद अध्येता, चीनी अध्ययन संस्थान, दिल्ली
- श्री विनोद सी खन्ना, सेवामुक्त अध्येता, चीनी अध्ययन संस्थान, दिल्ली
- सुश्री पुनम माथुर, 8-17 श्री राम रोड़, सिविल लाइन, दिल्ली
- सुश्री जयश्री बोहरा, शोध सहायक, चीनी अध्ययन संस्थान, दिल्ली
- सुश्री निर्मोला शर्मा, शोध सहायक, चीनी अध्ययन संस्थान, दिल्ली
- प्रोफेसर लक्ष्मण एस. ठाकुर, इतिहास विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला
- डॉ. अमृत वर्षा गाँधी, इतिहास विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

संगोष्ठी के दौरान प्रतिभागियों द्वारा निम्नलिखित विषय-वस्तु पर शोध-पत्र प्रस्तुत किये गये-

सत्र 1

डॉ. विलेम एफ. वान ऐकलेन : *दी शिमल कन्वेन्शन, आलमोसअ अबोर्टिड, नेवर साइंड बट स्टिल रेलेवेंट*

श्री अतुल भारद्वाज : *शिमल कॉन्फ्रेंस, 1914 : ब्रिटिश डिप्लोमेसी एण्ड स्ट्रैटजी*

डॉ. हेमंत अदलखा : *शिमल, मैकमोहन लाइन एण्ड साउथ तिब्बत : इमर्जिंग चाइनीज डिस्कोर्स ऑन फियरस ऑफ लूसिंग टैरिटरी टू इण्डिया*

प्रोफेसर सुरेश रंगराजन : तिब्बत एण्ड इण्डिया-चाइना बॉर्डर डिस्प्यूट : टूवर्ड्स ए पीसफुल सैटलमेंट

सत्र 2

जनरल योगेन्द्र बाम्मी : ह्यूमनाइजिंग ऑफ इण्डिया-चाइना बॉर्डर- दी वे अहैड

प्रोफेसर मुमिन चैन : नेशनलिस्ट गवर्नमेंट्स रियेक्शनस टू सिनो-इण्डिया वार एण्ड दी बॉर्डर इश्यू : एन एनालसिस ऑफ आरओसी डिप्लोमैटिक आर्काइव्स 1962-1964

श्री रवि भूतालिंगम : कुड कन्फ्यूजनस रिसॉल्व दी तिब्बत क्वेश्चन?

सत्र 3

कर्नल वीरेन्द्र सहाई वर्मा : डिलिमिटेशन ऑफ सिनो-तिब्बत बाउंडरी एट शिमल कॉन्फ्रेंस एण्ड इश्यू ऑफ तिब्बत

सुश्री सोनिया शुक्ला : मैकमोहन लाइन : दी व्यू फ्रॉम दी ग्राउंड

डॉ. धृति रॉय : जेमंगजियोंग एज डिपिक्टड इन क्विंग ऑफिसियल डॉक्यूमेंट्स : एक्पलोरिंग सिकिमज कल्चरल एण्ड कमर्शियल टाइस विद तिब्बत इन लाइट ऑफ क्विंग चाइनाज परसेप्शन ऑफ दी सब-हिमालयन रीजन

प्रोफेसर वी.सी. भूटानी : व्हाट हैप्पंड टू दी मैकमोहन लाइन 1914-1947?

सत्र 4

श्री समीर शर्मा : एन इण्डिया चाइना कम्पैरेटिव परस्पेक्टिव ऑन माइनॉरिटीज : सम प्रीलिमिनरी एक्सप्लोरेशनस

श्री गुलज़ार हुसैन : लद्दाख एण्ड दी कमिंग ऑफ इण्डिया

डॉ. उत्तम लाल : रिइमेजनिंग दी हिमालयन बॉर्डरलैण्ड : ए केस स्टडी ऑफ हिमाचल सैक्टर

डॉ. धरित्री चक्रवर्ती : दी अबोरस ऑफ नेफा

पैनल चर्चा : भारत और चीन के बीच निर्धारित सीमा के लिए।

प्रोफेसर अल्का आचार्य

श्री विनोद खन्ना

प्रोफेसर मुमिन चैन

डॉ. विलेम एफ. वान ऐकलेन

कर्नल वीरेन्द्र सहाय वर्मा

श्री एम.वी. रण्डल

प्रतिवेदक

सुश्री निर्मोला शर्मा

सुश्री जयश्री बोरहा

5. 'राइट टू लैण्ड एण्ड इट्स पोटेंशियल फार सोशल ट्रांसफार्मेशन' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी (11-13 जून 2014)

मूलाधार— भूमि अधिकार तथा सामाजिक परिवर्तन।

ब्रतानवी साम्राज्य के आगमन से भारत वर्ष में भूमि के स्वामित्व में भी परिवर्तन हुआ। भूमि को सरकार की सम्पत्ति माना जाने लगा। अंग्रेजों द्वारा बनाई गई नीतियां आजादी के बाद भी जारी रहीं और भूमि, प्रशासनिक तंत्र की कार्यप्रणाली तथा भूमि विकास संबंधी कार्यक्रम जोकि सरकार का प्रमुख मुद्दे थे आदि पर अंग्रेजों द्वारा बनाई गई नीतियों का प्रभाव रहा। सरकार ने कानून के जरिये भूमि पर कब्जा करना शुरू कर दिया जिस पर वैयक्तिक मालिकाना हक होता था। सरकार ने विभिन्न राज्यों में थोड़ा-बहुत अंतर कर पूरी जैव-विविधता घोषित कर दी तथा भूमि को व्यक्तिगत नाम के स्थान पर सरकारी सम्पत्ति घोषित कर दिया।

भूमि के प्रयोग के संदर्भ में योजना और नीतियों की प्रवृत्ति को तीन चरणों में देखा जाता है। पहला चरण 1950 से 1980 के बीच का है जो बांधों तथा अन्य विकासात्मक परियोजनाओं के मद्देनजर भूमि सुधार अजैण्डे तथा भूमि अधिग्रहण पर आधारित था। भूमि सुधार, भूमि के समान वितरण तथा गरीबी उन्मूलन की दृष्टि से एक कारगर उपाय माना गया जबकि बांध निर्माण के लिए भूमि अधिग्रहण जनहित के नाम पर 'राष्ट्रीय विकास' के लिए न्यायोचित ठहराया गया। इस कड़ी में दूसरा चरण 1981 से सन 2000 के बीच का है जो भू-शक्ति तथा राजनीति के एकीकरण का साक्षी है। भूमि अधिकार का सैद्धांतिक रूप— कर संशोधन, आय, पंजीकरण शुल्क, स्टैम्प ड्यूटी, भू-अभिलेख आदि में संशोधन के कारण जमीन के लेन-देन, औद्योगीकरण के साथ ढांचागत भवन निर्माण तथा विकासात्मक कार्यों के लिए भूमि आवंटन के तरीकों में भी परिवर्तन आया। तीसरा चरण वर्ष 2001 के पश्चात शुरू होता है। इस काल में निजी क्षेत्र में लगने वाली भारी विकास परियोजनाओं के लिए बड़े पैमाने पर भूमि का अधिग्रहण किया जाने लगा तथा भूमि को अनुबंध तथा कार्पोरेट कृषि के लिए पट्टे पर दिया गया। तीन अधिनियमों— वन निवासी अधिकार (मान्यता प्राप्त) अधिनियम 2007, (एफआरए—वन अधिकार अधिनियम) विशेष आर्थिक क्षेत्र अधिनियम, 2005 (सेज—विशेष आर्थिक क्षेत्र) तथा भूमि अधिग्रहण तथा पुनर्वास एवं पुनर्वास अधिनियम 2013 तथा कुछ राज्यों में औद्योगिक इकाईयां स्थापित करने के लिए भूमि के बंटवार के लिए केन्द्रीयकृत लेन-देन व्यवस्था के रूप में प्रशासकीय कार्यप्रणाली में परिवर्तन के कारण कई बहसों को जन्म दिया। क्योंकि गैर-सरकारी क्षेत्र भूमि को एक संसाधन के रूप में मानता है जबकि सरकार तथा कार्पोरेट जगत इसे एक वस्तु के रूप में मानता है।

इन नीतियों के कारण जनता ने इधर-उधर पलायन किया। छोटे तथा हाशिये पर भूमि के मालिक (भूमि सुधार तथा कृषि अधिनियम, 1956 के अंतर्गत लाभान्वितों को मिलाकर) और जिनके पास जमीन नहीं है, मगर भूमि/कृषि पर निर्भर हैं (भूमिहीन, खेतीहर मजदूर, गडरिये तथा भेड़-बकरियां पालने वाले) सरकार की इन नीतियों को अलग ढंग से देखते हैं। उन्होंने अपनी आवश्यकताओं को स्पष्ट किया तथा भूमि आवंटन और उसके उपयोग संबंधी लघु और उच्च स्तरीय कानूनी और राजनीतिक निणर्यों की भरपूर आलोचना की, क्योंकि इनसे उनके जीवन पर विपरीत असर पड़ा। ये गतिरोध आंदोलनों और समर्थन के जरिये उभर कर सामने आए। प्रभावित लोगों ने जनाधारित योजनाओं तथा नीतियों को बनाने की मांग की जो भूमि वितरण, रोजगार, जीवनयापन, खाद्य-सुरक्षा तथा सामाजिक न्याय व्यवस्था सुनिश्चित कर सके।

इस प्रकार परिवर्तन के कारण भूमि अधिकार की राजनीति ने कई आयाम उद्घाटित किये। सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक क्षेत्रों में भूमि तथा संसाधन के रूप में उसका प्रयोग करना एक चुनौती भरा कार्य बन गया है। इस संगोष्ठी में 'भूमि अधिकार' को एक ऐसे सामाजिक परिवर्तन के रूप में केन्द्रित करने का प्रयास किया गया जो मूलभूत ढांचे तथा नीतियों के परिवर्तन के लिए सहायक है। यह सामाजिक संस्थाओं तथा उनकी कार्यप्रणाली में मूलभूत तथा

विषयात्मक परिवर्तन की ओर भी ईशारा करता है। समानता और न्याय स्थापित करने वाले ढांचे के स्वरूप तथा प्रतिमानों में भी इससे बदलाव होता है। संसाधन की बजाए भूमि अब प्रतिष्ठा, धन तथा शक्ति का प्रतीक बन गई है। सामाजिक परिवर्तन की रणनीतियां अब आपेक्षित विकास का मार्ग बन गई हैं। इनका संबंध कृषि, औद्योगिक परिवर्तन से है तथा भूमि के प्रयोग और उसके स्वामित्व की अपरिवर्तनीयता से जुड़े सवालों तथा समस्याओं के समाधान से है।

भूमि का मामला क्योंकि समवर्ती सूची के अंतर्गत आता है, अतः इसके रास्ते में कई अड़चने भी हैं। वन भूमि तथा अनुसूचित क्षेत्रों से संबंधित मुद्दों के बारे में वन प्रबंधन तथा क्रियात्मक ढांचों के अंतर्गत आलोचनात्मक विश्लेषण करने की आवश्यकता है। इस प्रकार की भूमि पर अधिकतर विशेष सांवैधानिक प्रावधानों के अंतर्गत कई जनजातियां तथा आदिवासी बसकर रह रहे हैं। विभिन्न इकाईयों में समन्वय की कमी है तथा प्रत्येक इकाई के अपने अलग-अलग आधिकारिक स्तर हैं। अतः इन क्षेत्रों के अधिकांश मसले नकारे जाते हैं और कई अन्य विवादों का कारण भी बन जाते हैं। भारत के विभिन्न राज्यों में स्थित जनजातीय क्षेत्रों में भूमि हस्तांतरण के मामले बड़ी तेजी से सामने आ रहे हैं। दूसरे वन अधिकार अधिनियम कानून के शिकंजे में कसता जा रहा है तथा व्यक्तिगत और समुदायिक तौर पर जनजातीय वन अधिकारों का उल्लंघन हो रहा है।

भूमि अधिकार सुनिश्चित करने के लिए सामाजिक परिवर्तन के दृष्टिकोण

राजनीतिक संगठन, योजना, नीति तथा कार्यक्रमों के तहत वर्तमान स्थिति में सुधार करना चाहते हैं। सामाजिक कार्यकर्ताओं ने भूमि संबंधी नियमों तथा कानूनों को संविधान के दायरे में रखकर परखना शुरू किया है। पंचवर्षीय योजनाओं को विकास तथा बजट आवंटन, उसके प्रयोग तथा प्रभाव के लिए एक रूपरेखा के रूप में प्रयोग किया है। अपनी आवश्यकता तथा प्रयोजनों को प्रतिपादित करने के लिए वे बजट विश्लेषण, समर्थन, पक्ष, आंदोलन तथा प्रचार आदि साधनों तथा पद्धतियों को अपनाते हैं। सामाजिक कार्यकर्ताओं द्वारा अपनाए गए विभिन्न तरीकों, पद्धतियों तथा संस्थागत सामाजिक परिवर्तन के बावजूद यह अत्याधिक सुधार तथा वृद्धि की गुंजाइश के साथ एक अधूरा स्वप्न बनकर रह गया।

एक तरफ तो कानून के जरिये सुधार तथा परिवर्तन की बात सामने आती है मगर वहीं उसे व्यावहारिक अंजाम देने के लिए इस प्रक्रिया में कई अड़चने हैं और मतभेद तथा विरोध के कई कारण भी सामने आ जाते हैं। इस प्रकार विधि निर्माण की नीतियों तथा उनके क्रियान्वयन और उसे योजनाओं के साथ जोड़ने की प्रक्रिया को परखने की आवश्यकता है। अभी इन संस्थाओं के कानूनी प्रभाव तथा उनकी कार्यप्रणाली को करीब से जांचने की जरूरत है।

सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में विभिन्न कार्यकर्ताओं की भूमिका ने चौकन्ना कर दिया है। उदाहरण के तौर पर लोकतांत्रिक व्यवस्था में संसद के पास विधि-निर्माण की सर्वोच्च सत्ता होती है। इसलिए अनेक सामाजिक कार्यकर्ता चुनाव जीतकर राजनीतिक नेता बन जाते हैं। मगर जब वो संसद में पहुंचते हैं तो वे वहां अपना यथोचित स्थान नहीं बना पाते। न तो वे अपने लोकाचार को प्रस्तुत कर पाते हैं और न ही अपने समाज और क्षेत्र की मांग को आगे रख पाते हैं; और न ही एक निर्वाचित जन प्रतिनिधि के तौर पर वे अपनी समस्याओं को संसद के समक्ष प्रस्तुत कर पाते हैं। संसदीय लोकतंत्र आम जनता के लिए दिवास्वप्न है क्योंकि यह दल-तंत्र बनकर रह गया है। सत्ताधारी दल को पूर्व निर्धारित अजेंडे से भटकाना तथा उसे पूंजीवादी विचारधारा का समर्थन करने से रोकना कुछ लोगों के लिए एक बहुत बड़ा काम बन गया है। अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनतियों के निर्वाचित प्रतिनिधि तथा कुछ सामाजिक कार्यकर्ता इस श्रेणी में आते हैं। बुद्धिजीवी तथा अकादमिक व्यक्ति जो नीति-निर्माण कार्यों से जुड़े हैं वे नियोजन प्रक्रिया या फिर उन योजनाओं के क्रियान्वयन की सीमाओं में बंध जाते हैं। इस प्रकार निहित हित भासन प्रणाली या फिर राजनीति की भेंट चढ़ जाते हैं।

इस संगोष्ठी में जमीन संबंधी कई नीतियों, भू-कानूनों, बजट प्रावधान, उसके आवंटन तथा प्रयोग, विकासात्मक

कार्यक्रमों तथा भूमि आधारित विकास के स्थापित संस्थाओं की आर्थिक सहायता तथा अनुदान, विभिन्न राज्यों तथा समुदायों में भूमि संबंधी मामलों पर गहन मंथन किया गया। संगोष्ठी में भू-स्वामित्व तथा अधिकारों के विभिन्न पक्षों, भूमि पर निर्भरता के मुद्दों, अपनाई गई रणनीतियों, नीतियों की सीमाओं, योजनाओं तथा उनके लागू करने तथा वर्तमान में जमीन मुद्दों की प्रासंगिकता को समझने का प्रयास किया गया।

प्रस्तावित सत्र

1. भूमि अधिकारों के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन – अवधारणा तथा रणनीतियां
 - क) प्रख्यात क्षेत्र, भूमि अधिकार तथा सामाजिक परिवर्तन
 - ख) भूमि अधिकारों को सुनिश्चित करने के लिए सामाजिक परिवर्तन की रणनीतियां
2. सामाजिक न्याय के परिदृश्य के माध्यम से भूमि सुधार की ओर पुनर्गमन
 - क) भूमि सुधार तथा भूमि अधिकारों के बारे में दुबारा जानना – समीक्षा
 - ख) भूमि सुधार की समस्याएं तथा भूमि सुधार (2013) पर राष्ट्रीय नीति का प्रारूप
 - ग) भूमि सुधार के बारे में दुबारा जानना— पंजाब
 - घ) भूमि सुधार के बारे में दुबारा जानना— केरल
 - ङ) भूमि सुधार के माध्यम से अनुसूचित जाति की गतिशीलता का अवलोकन करना
 - च) भूमि जोतने तथा जाति समीकरणों में परिवर्तना
3. भूमि भासन व्यवस्था तथा भूमि अर्थव्यवस्था के मुद्दे
 - क) भूमि अभिलेखों का अद्यतन करना
 - ख) भूमि भासन व्यवस्था को दुबारा देखना
 - ग) भूमि जोत के बारे में आंकड़ों सहित विश्लेषण, समानता के प्रश्न तथा उसका प्रयोग (लिंग, जाति पृथक्कता)
 - घ) बजट विश्लेषण तथा भूमि अधिकार
4. औद्योगिक विकास के लिए भूमि आवंटन
 - क) भूमि अधिग्रहण तथा पुनोद्धार एवं पुनर्वास अधिनियम— 2013, का भूमि अधिकार के परिदृश्य में समीक्षा
 - ख) भूमि अधिग्रहण तथा भूमि अधिकार का उल्लंघन
 - ग) भूमि अधिग्रहण की राजनीति, विस्थापन तथा पुनर्वास
 - घ) सेज का परिचालन तथा मैंगलोर/तलिनाडू पर इसके प्रभाव
 - ङ) रायगढ़ में सेज के खिलाफ आंदोलन
 - च) विस्थापन तथा भूमि अधिकारों पर इसके परिणाम
5. कृषि विकास के लिए भूमि आवंटन

क) अनुबंधीय कृषि के लिए आवंटन

ख) सांझा कृषि की अवधारणा

ग) राज्य विकास बैंक/निगमों की भूमिका तथा उनकी प्रासंगिकता

घ) किसान आंदोलन तथा भूमि अधिकार

6. जनजातीय भू-जोत तथा भूमि अधिकार

क) भारत में जनजातीय के बीच भूमि के प्रति उदासीनता – समीक्षा

ख) भूमि सुधार की दृष्टि में वन अधिकार अधिनियम

ग) वन अधिकार अधिनियम 2007 तथा विभिन्न राज्यों पर इसका प्रभाव

घ) अनुसूचित क्षेत्रों की स्थिति— भारतीय संविधान की अनुसूची छ: तथा भारत

7. भूमि निर्भरता के मुद्दे

क) भूमिहीनों का संघर्ष – भूमि पर उनका कब्जा—केरल

ख) कृषि संगठनों की भूमिका तथा उनकी प्रासंगिकता

ग) भेड़-बकरियों के पालन पर प्रभाव

घ) सामान्य भूमि आवंटन के लिए नीति निर्माण

ङ) विस्थापित जनता में भूमि विरक्कता

8. रूपांतरण की रणनीतियां

क) भूदान तथा ग्रामदान के आंदोलनों की पुनर्व्याख्या

ख) विरोध की राजनीति तथा भूमि सुधार

ग) भारतीय संविधान की अनुसूची 5 तथा छ: के अंतर्गत जनजातीय भूमि सुधार

संस्थान में 11-13 जून 2014 के दौरान राइट टू लैण्ड एण्ड इट्स पोटेंशियल फॉर सोशल ट्रांसफॉर्मेशन विषय पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई। संस्थान की अध्येता डॉ. वर्षा गांगुली इस संगोष्ठी की संयोजक थीं। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर चेतन सिंह न प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा संयोजक डॉ. वर्षा गांगुली ने संगोष्ठी की मूल विषय-वस्तु से अवगत करवया।

प्रतिभागी

- श्री बी.बी. श्रीवास्तव (से.नि. प्रशासनिक अधिकारी)
- प्रोफेसर राम सिंह, अर्थशास्त्र विद्यालय दिल्ली, दिल्ली विश्वविद्यालय
- प्रोफेसर उदयन मिश्रा, राष्ट्रीय अध्येता, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला
- डॉ. रूपम दास, अग्रगामी, काशीपुर, उड़ीसा
- सुश्री मीनल तत्पति, कल्पवृक्ष, श्री दत्ता कृपा परिसर, दक्खन जिमखाना, पुणे

- सुश्री सोमा किशोर पार्थासारथी, स्वतंत्र शोधकर्ता, नई दिल्ली
- डॉ. आर. उमा महेश्वरी, अध्येता, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला
- प्रोफेसर आनंद चक्रवर्ती, सामाजिक विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली
- श्री प्राग चोल्कर, लक्ष्मीनगर, नागपुर
- डॉ. रतन खासनबीस, व्यवसायिक प्रबंधन विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता
- डॉ. सूमा स्कारिया, अर्थशास्त्र विभाग, केन्द्रीय विश्वविद्यालय कर्नाटक, कर्नाटक
- डॉ. सी.बी. दामले, से.नि. प्राध्यापक, समाजशास्त्र, स्नेहशिला गाँधीनगर, कर्नाटक
- प्रोफेसर पीटर रॉनल्ड डिसूजा, सीएसडीएस, दिल्ली
- श्री नेसर अहमद, बजट विशेषज्ञ, राजस्थान केन्द्र, जयपुर
- डॉ. प्रशांत त्रिवेदी, गिरि विकास अध्ययन संस्थान, लखनऊ
- प्रोफेसर आर. विजय, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद
- प्रोफेसर मंगेश कुलकर्णी, पुणे विश्वविद्यालय, पुणे

संगोष्ठी के दौरान प्रतिभागियों द्वारा निम्नलिखित विषय-वस्तु पर शोध-पत्र प्रस्तुत किये गये :

सत्र 1 : भूमि निर्भरता के मामले

प्रोफेसर आनंद चक्रवर्ती : 'इफ वी हैड लैण्ड वी वुड बी ह्यूमन' : दी इम्पलिकेशन ऑफ लैण्डलेसनेस इन ए बिहार विलेज

डॉ. प्रशांत त्रिवेदी : इश्यूज एण्ड चैलेंजिस ऑफ लैण्ड डिवलपमेंटस : दी केस ऑफ दलित इन उत्तर प्रदेश

सुश्री सोमा पार्थासारथी : पॉलिसी फ्रेमवर्क फॉर कॉमन लैण्ड अलोकेशन

सत्र 2 : ट्राइबल लैण्डहोल्टिंग एण्ड लैण्ड राइट्स

सुश्री मीनत तत्पति : फॉरेस्ट राइट्स एक्ट इन इण्डिया इन दी कांटेक्सट ऑफ कॉमन प्रॉपर्टी फॉरेस्ट रिसोर्स : हिस्ट्री, स्टेटस एण्ड इम्पैक्ट

सुश्री विद्या दास : लैण्ड लॉस एण्ड ट्राइबलस' राइट टू लैण्ड एण्ड लाइवलिहुड : एक केस स्टडी ऑफ ओडिशा

डॉ. आर. उमा महेश्वरी : रिकॉन्फिगरिंग 'लैण्ड' : आइडियाज ऑफ रीवर एण्ड फॉरेस्ट एण्ड दी पोलावरम नेशनल प्रोजेक्ट ऑन गोदावरी

सत्र 3 : सोशल ट्रांसफॉर्मेशन थ्रो लैण्ड राइट्स

प्रोफेसर मंगेश कुलकर्णी : सोशल ट्रांसफॉर्मेशन थ्रो लैण्ड राइट्स : कॉन्सेप्ट्स , स्ट्रैटिजीस एण्ड आउटकमस

श्री प्राग चोल्कर : रिविजिटिंग भूदान एण्ड ग्रामदान इन दी कांटेक्सट ऑफ लैण्ड राइट्स एण्ड सोशल ट्रांसफॉर्मेशन

सत्र 4 : रिविजिटिंग लैण्ड रिफॉर्मस फॉर सोशल जस्टिस परस्पेक्टिव

डॉ. सी.बी. दामले : लैण्ड राइट्स थ्रो लैण्ड रिफॉर्मस : ए शिफ्ट इन दी विजन एण्ड सोशल ट्रांसफॉर्मेशन

प्रोफेसर सूमो स्कारिया : *रिविजिटिंग लैण्ड रिफॉर्म— केरल एक्पीरिअंस*

सत्र 5 : लैण्ड एण्ड इंडस्ट्रियल डिवेलपमेंट

डॉ. वाल्टर फर्नांडीस (स्काइप) : *एग्जामनिंग एलएआरआर 2013 एण्ड दी लैण्ड लूजर*

प्रोफेसर रामसिंह : *लैण्ड एक्विजीशन एण्ड वायलेशन ऑफ लैण्ड राइट्स*

डॉ. देवप्राण रॉय (स्काइप) : *कोरसिव लैण्ड ग्रैब्स एण्ड दी एग्रेसिव ट्रांजिशन इन इण्डिया : पोटेंशियल एण्ड लिमिटेशन ऑफ दी पीजेंट स्ट्रगलस फॉर दी 'राइट टू लैण्ड'*

सत्र 6 : लैण्ड फार एग्रीकल्चर डिवेलपमेंट

प्रोफेसर आर. विजय : *सिचुएशन ऑफ टैनेसी इन इण्डिया : कंटिन्यूटीज एण्ड चेंजिस*

प्रोफेसर रतन खसनबीस : *कन्सेप्चुअलाइजिंग भोयर-क्रॉपिंग : प्रैक्टिसिस एण्ड पॉलिसी चेंजिस फॉर इन्स्योरिंग लैण्ड राइट्स*

डॉ. रूपम सिंह : *कॉर्पोरेट फार्मिंग एण्ड चेंजिंग आइडेंटिटी ऑफ लैण्ड अंडर एग्रीकल्चर*

सत्र 7 : इश्यूज ऑफ लैण्ड गर्वनेंस एण्ड लैण्ड इकनामिक्स

डॉ. प्रदीप नायक : *दी स्टेट एण्ड लैण्ड रिकॉर्ड्स मॉडरनाइजेशन : इश्यूज एण्ड चैलेंजिस*

श्री बी.बी. श्रीवास्तवा : *लैण्ड गर्वनेंस : कंटिन्यूटीज, चेंजिस एण्ड चैलेंजिस*

श्री नेसर अहमद : *एन एनालिसिस ऑफ बजट प्रोविजनस फॉर लैण्ड राइट्स इन इण्डिया*

6. "इंटैरोगेटिंग 'स्वराज' इन आइडियाज" विषय पर विचार—गोश्टी।

मूलाधार : प्रसिद्ध दार्शनिक के.सी. भट्टाचार्य के सुप्रसिद्ध व्याख्यान 'स्वराज इन आइडिया' में हमने महसूस किया कि स्वराज के बारे में जो विचार सन 1931 में उभर कर सामने आये थे, वे 'विचारों की स्वायत्ता' तथा भारतवासियों के जहन पर उपनिवेश के प्रभाव' के रूप में आज भी दार्शनिक प्रश्न बनकर प्रासंगिक हैं। के.सी. भट्टाचार्य के लेख में कई दिलचस्प प्रश्न उजागर हुये हैं, जिनमें प्रमुख निम्न प्रकार से हैं—

1. वास्तविक बुद्धि को आच्छादित बुद्धि में परिवर्तन के लिए जो मत प्रकट किया गया है उससे सवाल पैदा होता है कि दोनों मस्तिष्कों की क्या विशेषताएं हैं तथा हम किस प्रकार जान सकते हैं कि कौन सा मस्तिष्क सक्रिय है। प्रत्येक मस्तिष्क किस प्रकार दिखाई देता है? आच्छादित मस्तिष्क हमें क्या करने के लिए बाध्य करता है? यह क्यों हानिकारक है?
2. उपनिवेशवाद से मस्तिष्क की दासता उत्पन्न होती है, इस तर्क को दासता के परिप्रेक्ष्य में विचार—विमर्श करने की आवश्यकता है। क्या दासता से मुक्ति ऐसी ऐतिहासिक घटनाओं का परिणाम नहीं है जो हमें विभिन्न यूरोपीय विचारधाराओं से जोड़ती है।
3. उनका यह दावा कि वे बाहरी मतों के विरुद्ध नहीं हैं मगर वे उनके गैर आलोचनात्मक ढंग से अंगीकरण के खिलाफ हैं, हमें सही परीक्षण तथा मूल्यांकन करने के लिए बाध्य करते हैं। क्या इस प्रकार के मूल्यांकन औपनिवेशिक अवधारणाओं या फिर कम से कम यूरोपीय विचारों के प्रभाव से बच सकते हैं?
4. हमारी बौद्धिक विरासत का उनका मूल्यवर्धन लिंगभेद और दलित के नजरिये से किस प्रकार दिखता है।

आखिरकार हम ज्ञानमीमांसा की तीव्र होड़ के युग में हैं तो कोई बाहरी प्रभावित दासता के विरोध तथा आंतरिक विरोध तथा बहिष्कार के बीच समाझौता वार्ता करेगा क्योंकि ये भी हमारी विरासत के अभिन्न अंग हैं?

5. हमारी शिक्षा की पद्धति की कार्यप्रणाली के बारे में उनका शोक, जो औपनिवेशिक मस्तिष्क को स्थायी बनाए हुये है। इस प्रकार की शिक्षण पद्धति के असर को कैसे कम किया जा सकता है।

विचारों में स्वराज—

..... यद्यपि एक संस्कृति दूसरी संस्कृति के विचार—क्षेत्र को किसी न किसी रूप में प्रभावित करती है और इस प्रभाव के गंभीर परिणाम होते हैं, मगर इसे आसानी से महसूस नहीं किया जा सकता। राजनैतिक परिप्रेक्ष्य में इसका अभिप्राय: लोगों के बाहरी जीवन पर दबाव से है। मगर धीरे—धीरे यह आध्यात्मिक आंतरिक जीवन में प्रवेश कर लेता है, जबकि लोगों को इस बारे में जानकारी होती है कि यह विपरीत स्थिति है। जब तक हम इन बाधाओं के प्रति सचेत रहेंगे तब तक उनसे बचे रहने की संभावना बनी रहेगी। इसे एक बुराई मानकर आध्यात्मिक रूप से इसके कुप्रभाव से बचा जा सकता है। दासता उस समय घर कर लेती है जब हम बुराई को सहन करते हैं और इसकी जड़ें उस समय गहरी होती हैं जब हम इसे एक अच्छाई के रूप में मानना आरंभ कर देते हैं।

रवीन्द्रनाथ टैगोर की ओर से : 'भारतीय संस्कृति का केन्द्र'

.... हमारे बीच यूरोपीय संस्कृति सिर्फ अपने ज्ञान के साथ ही नहीं आई अपितु उसने पूरे वेग के साथ प्रवेश किया है। हालांकि हम इसका सही आकलन नहीं कर पाये हैं। परिणामस्वरूप हम सच्चाई के मार्ग से भटक गये हैं। यह संस्कृति अभी भी औपचारिक अप्रवृत्ति से हमारे बौद्धिक जीवन का प्रभावित कर रही है।मेरी आपत्ति यह है कि विदेशी शिक्षा अप्राकृतिक ढंग से हमारे राष्ट्रीय मस्तिष्क पर कब्जा करने का प्रयास करती है, जिस कारण नए सत्य की खोज का हमारा मार्ग अवरुद्ध होता है और नये विचारों के सृजन में बाधाएं उत्पन्न होती हैं। अतः मेरा आग्रह है कि हमें अपनी संस्कृति के प्रत्येक पहलु को मजबूती प्रदान करनी होगी। पाश्चात्य संस्कृति को रोकना नहीं है बल्कि उसके साथ तारतम्य स्थापित करना है, उसका उपयोग आजिविका अर्जन के लिए करना है, हमें इसे अपने ऊपर नहीं लादना है और न ही इसकी सीमा में रहकर मूल ग्रंथों को नजरअंदाज करना है और न ही शिक्षा प्राप्ति के दरवाजों को बंद करना है।

संस्थान में 21 से 22 जुलाई 2014 को इंटैरगेटिंग 'स्वराज इन आइडिया' विषय पर एकविचार—गोष्ठी का आयोजन किया गया। एसडीएस केन्द्र, दिल्ली से आये प्रतिभागी प्रोफेसर पीटर रॉनल्ड डिसूजा इस संगोष्ठी के संयोजक थे। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर चेतन सिंह ने संगोष्ठी में उपस्थित प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा संगोष्ठी के संयोजक प्रोफेसर पीटर रॉनल्ड डिसूजा ने उपस्थित सभासदों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रतिभागी

- प्रोफेसर गोपाल गुरु, राजनीति अध्ययन केन्द्र, सामाजिक विज्ञान स्कूल, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रोफेसर बिजोय एच. बोरुआ, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, हॉज खास, नई दिल्ली
- श्री राजेश जोशी, राष्ट्रीय अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- प्रोफेसर भारद देशपाण्डे, टैगोर अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला

- डॉ. गांगेय मुखर्जी, अंग्रेजी विभाग, बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी, उत्तर प्रदेश
- प्रोफेसर मीना अलैकजेंडर, राष्ट्रीय अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- प्रोफेसर निर्मलांगशु मुखर्जी, प्राध्यापक, दर्शन, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- प्रोफेसर रुकमणी भाया नायर, मानविकी विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, हॉज खास, नई दिल्ली
- डॉ. मनीन्द्रा नाथ ठाकुर, राजनीति अध्ययन केन्द्र, सामाजिक विज्ञान स्कूल, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. संजय पलिशकर, राजनीति विज्ञान विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद
- प्रोफेसर प्राले कानूनगो, राजनीति अध्ययन केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. सतीश के. झा, रामलाल आनंद कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- प्रोफेसर पीटर रॉनल्ड डिसूजा, सीएसडीएस, दिल्ली
- डॉ. राकेश पाण्डेय, विकासशील समाज अध्ययन केन्द्र, राजपुर रोड़, दिल्ली
- डॉ. शिवानी चोपड़ा, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- प्रोफेसर अरिंदम चक्रवर्ती, अतिथि अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- डॉ. इनाक्शी मित्रा, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- प्रोफेसर जोसेफ प्रभूअतिथि प्राध्यापक, भा.उ.अ.सं., शिमला
- डॉ. कंचना नटराजन, अतिथि अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- श्री सुकुमार मुरलीधरन, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला

विचार-गोष्ठी के दौरान प्रतिभागियों द्वारा निम्नलिखित विषय-वस्तुओं पर प्रस्तुति दी गई—

सत्र 1

दी 'रिअल' माइंड एण्ड दी 'शैडो' माइंड

प्रस्तुतकर्ता—

प्रोफेसर अरिंदम चक्रवर्ती

परिचर्चा—

प्रोफेसर गोपाल गुरु

डॉ. एनाक्शी मित्रा

सत्र 2

थियोरिटिकल एण्ड प्रैक्टिकल कंसिसेनेस : दी मीनिंग ऑफ स्वराज इन आइडियाज

प्रस्तुतकर्ता—

डॉ. राकेश पाण्डेय

परिचर्चा—

डॉ. संजय पलिशकर

सत्र 3

दी पोयटस लैंग्वेज : कैन दी म्यूस बी कलोनाइज्ड?

कवि—

प्रोफेसर मीना अलैकजैंडर

श्री राजेश जोशी

सत्र 4

इंटरैरोगेटिंग 'स्वराज इन आइडियास'

प्रस्तुतकर्ता—

प्रोफेसर शरद देशपाण्डे

परिचर्चा—

डॉ. कंचन नटराजन

डॉ. मनिन्द्र सिंह

सत्र 5

रिकलोनाइजेशन ऑफ दी पब्लिक पॉलिसी स्फेयर

प्रस्तुतकर्ता—

प्रोफेसर पीटर रॉनल्ड डिसूजा

परिचर्चा—

श्री सुकुमार मुरलीधरन

प्रोफेसर प्रालेय कानूनगो

प्रतिवेदक—

डॉ. सतीश झा

7. 'रिमेम्बरिंग डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् : टीचर, फिलॉस्फर एण्ड इन्स्टिटूशनल बिल्डर' विषय पर स्मरणीय कार्यक्रम (5 सितंबर, 2014)

मूलाधार— संस्थान में 'रिमेम्बरिंग डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् : टीचर, फिलॉस्फर एण्ड इन्स्टिटूशनल बिल्डर' विषय पर 05 सितंबर 2014 को एक स्मरणीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर चेतन सिंह द्वारा प्रारंभिक भाषण प्रस्तुत किया गया।

प्रतिभागी

- प्रोफेसर शरद देशपाण्डे, टैगोर अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- डॉ. एनाक्सी मित्रा, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- श्री सुकुमार मुरलीधरन, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- प्रोफेसर मीना अलैकजैंडर, राष्ट्रीय अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- श्री राजेश जोशी, राष्ट्रीय अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- प्रोफेसर के.एल. टूटेजा, टैगोर अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला

प्रातिभागियों ने निम्नलिखित विषय—वस्तु पर अपनी प्रस्तुतियां दीं —

प्रोफेसर शरद देशपाण्डे ने *रिमेम्बरिंग दी अदवेतीनस*, विषय पर अपनी प्रस्तुति दी।

डॉ. एनाक्सी मित्रा ने *रीडिंग फॉर राधाकृष्णन एन आइडियलिस्ट व्यू ऑफ लाइफ*, विषय पर अपनी प्रस्तुति दी।

श्री सुकुमार मुरलीधरन ने *इस्टर्न रिलिजस एण्ड वेस्टर्न थॉट*, विषय पर अपनी प्रस्तुति दी।

प्रोफेसर मीना अलैकजेंडर ने कविता पाठ किया।

श्री राजेश जोशी ने कविता पाठ किया।

प्रोफेसर के.एल. टूटेजा ने *रिमेम्बरिंग बिपन चंद्रा*, विषय पर अपनी प्रस्तुति दी।

8. 'सेक्सुअलिटी एण्ड सोसायटी इन इण्डिया' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी (16–18 सितम्बर 2014)

मूलाधार— प्रस्तुत कार्यशाला के अंतर्गत संस्थापित अकादमिक समूह तथा युवा विद्वानों को 'लैंगिकता' के सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों को उजागर करने के लिए के एक सांझा मंच प्रदान किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य लैंगिकता के बारे में प्रचलित उन सब अवधारणाओं चाहे वे शारीरिक तर्क या ऐतिहासिक परियोजनाओं से उपजी हों। इस कार्यशाला में *काम सूत्र* तथा समसामायिक भारतीय जीवन से सीधी संबंधित अवधारणाओं से हटकर विमर्श किया गया। जैविकता यह तर्क प्रस्तुत करती है कि पहचान हमारे भीतर एक 'गहरे स्त्रोत' से उत्पन्न होती है। हांलाकि हम प्रकृति तथा लैंगिकता के बारे में जो अपनी राय व्यक्त करते हैं वास्तव में देखा जाये तो हम उसे अभीनीत करते हैं। शिक्षण तथा उसके क्रियान्वयन का व्यवस्थापक भाव एक मूलतत्त्व के रूप में अन्य कारकों सहित एक संगठित रूप में स्वतः सामने आ जाएगा। स्वयं को दुनिया पर्यंत 'जैसी लैंगिकता' की अवधारणा के बारे में सोचने का महत्वपूर्ण परिणाम यह है कि इसका रुझान बहुत संकीर्ण है जिसका बहुत ही सीमित कार्यक्षेत्र (दूसरे मामलों जैसे कि राजनीति तथा आर्थिक जगत आदि के साथ बहुत कम संबंध) है। साथ ही यह हमारे अस्तित्व के सच के लिए बहुत महत्वपूर्ण तथा मौलिक भी है। इसके अतिरिक्त क्योंकि सत्य के विचार—सत्यों के साथ प्रायः स्थिर तथा अपरिवर्तित माने जाते हैं, अतः लैंगिक पहचान अस्थिर, अपरिवर्तित तथा जैविक दिखाई पड़ती है। यद्यपि व्यापक जन संसार बनाने के लिए लैंगिकता की अहम् भूमिका होती है मगर साथ ही सामाजिक क्षेत्रों में आंतरिक तथा निजी मामलों के दृष्टिगत इसकी भूमिका को कम आंका जाता है।

इस कार्यशाला का मूल उद्देश्य लैंगिकता को बदलते सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनैतिक परिदृश्य से जानना था ताकि इसके बदलते तथा अस्थिर संदर्भों को भली-भांति समझा जा सके।

जिन विषय—वस्तुओं तथा मुद्दों का अन्वेषण हो सकता है वे निम्न प्रकार से हैं :

- ऐतिहासिक काल के माध्यम से लैंगिकता के प्रश्न को समझना
- जाति, वर्ग तथा लिंगभेद की संस्कृतियां
- संगीत, मीडिया तथा मशहूर संस्कृति में लिंगभेद
- उपभोगतावादी संस्कृति तथा लैंगिक संस्कृति
- लिंगभेद तथा युवा संस्कृति
- भारतीय साहित्य में लिंगभेद : प्राचीनकाल से आधुनिक काल तक

- लिंगभेद तथा क्षेत्रीय संस्कृतियां
- परिवार तथा लिंगभेद
- लिंगभेद, राष्ट्रीय स्वंय सेवी संस्थाएं तथा कानून
- अप्राकृतिक लैंगिकताएं

अन्य विषयों के अलावा 'मुख्यधारा' तथा उसके अन्य संबंधों के बारे में जानना भी इस कार्यशाला का एक उद्देश्य था ताकि हम लैंगिक मानकों के अनुरूप समस्याओं का समाधान कर सकें। यदि लिंगभेद की संस्कृति को देखा जाये जिसके लिए ये— अस्थिर, संघर्षरत तथा पर्याप्त है— तो विभिन्न प्रकार के लिंगभेद के दावों को करीब से समझना आवश्यक है। भारतीय समलैंगिक संस्कृति के अधिकारों पर आधारित, वैध, सांस्कृतिक आदि की उभरते वार्तालापों के दृष्टिकोण से क्या परिस्थितियां हैं? शहरी राजनीति तथा एलजीबीटीआई (समलैंगिक) मुद्दों की पद्धतियों में परस्पर क्या संबंध हैं? इसलिए यह जानना आवश्यक हो जाता है कि हम क्यों ऐसे समय इस प्रकार से लैंगिकता के मुद्दों पर विचार—विमर्श कर रहे हैं? इतना ही नहीं बल्कि लैंगिकता का इतिहास जानना वर्तमान में क्यों इतना आवश्यक हो गया है?

इस अंतरविषयक संगोष्ठी में विभिन्न विषयों से संबद्ध विद्वानों जोकि इस विषय विशेष की परिसीमा में कार्यरत हैं को अपना योगदान देने के लिए प्रोत्साहित किया गया। लैंगिकता के व्यापक क्षेत्र को समझने के लिए विभिन्न पद्धतियों का प्रयोग किया गया। भारत में दीर्घकाल तक लैंगिकता के प्रश्न को समझने के लिए एक पृष्ठभूमि का निर्माण किया गया तथा आधुनिकता के साथ इसके विविध पहलुओं के संबंधों पर भी परिचर्चा की गई।

संस्थान में 'सेक्सुअलिटी एण्ड सोसायटी इन इण्डिया' विषय पर 16 से 18 सितंबर 2014 को एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। आर्थिक विकास संस्थान, दिल्ली के प्रोफेसर संजय श्रीवास्तव तथा संस्थान के अध्यक्ष डॉ. राजीव कुमारमकण्डथ इस संगोष्ठी के संयोजक थे। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर चेतन सिंह ने संगोष्ठी में उपस्थित प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा संगोष्ठी के सह-संयोजक डॉ. राजीव कुमारमकण्डथ ने उपस्थित सभासदों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रतिभागी

- सुश्री कोलिका मित्रा, शिप्रा होस्टल, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- सुश्री सयांतनी सुर, सामाजिक विज्ञानों का अध्ययन केन्द्र, कलकत्ता
- सुश्री सुतानुका भट्टाचार्य, टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान, हैदराबाद
- सुश्री अरुणिमा चक्रवर्ती, सेंटर फॉर स्टडीज इन सोशल साइंसिस, बैष्णभगत पातुली टाउनशिप, कोलकला
- श्री अनिर्बान दास, सेंटर फॉर स्टडीज इन सोशल साइंसिस, बैष्णभगत पातुली टाउनशिप, कोलकला
- डॉ. अनूप धर, अंबेकडकर विश्वविद्यालय, दिल्ली
- प्रोफेसर संजय श्रीवास्तव, सामाजिक विकास केन्द्र, दिल्ली
- डॉ. राजीव कुमारमकण्डथ, अध्यक्ष, भा.उ.अ.सं., शिमला
- डॉ प्रदीप्ता मुखर्जी, महिला महाविद्यालय विद्यासागर, भांकर घोश लेन, कोलकाता
- डॉ. किरना केशवामूर्ति सेंटर फॉर स्टडीज इन सोशल साइंसिस, बैष्णभगत पातुली टाउनशिप, कोलकला

- सुश्री नवनीथा मोविकल मरुथुर, महिला अध्ययन केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- सुश्री केतकी चौखनी, महिला उच्च अध्ययन संस्थान, टाटा सामाजिक अध्ययन केन्द्र, मुम्बई
- डॉ. भारती अरोड़ा, अंग्रेजी विभाग, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली
- सुश्री गीतिका बाप्ता, समाजशास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय
- अरुणा डेका, ओकेडी इन्स्टिट्यूट ऑफ सोशल चेंज एण्ड डिवेलप्मेंट, गुहावटी
- डॉ. रशेदा परवीण, मानवीकि एवं सामाजिक विज्ञान विभाग, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, ओड़िशा
- प्रोफेसर सलमा अहमद फारुकी, मौलाना राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय, हैदराबाद
- डॉ. चारु गुप्ता, इतिहास विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- डॉ. बृन्दा बोस, अंग्रेजी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- डॉ. मुरलीधरन थारायिल, सेंट अलाइसिस कॉलेज, एल्थुरुथ, त्रिचुर, केरल
- डॉ. ईशा शाह, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला

संगोष्ठी के दौरान प्रतिभागियों द्वारा निम्नलिखित विषय-वस्तु पर शोध-पत्र प्रस्तुत किये गये :

सत्र 1 : नॉन-हैटरोनॉरमेटिव सैक्सुअलिटीज

बृन्दा बोस : *क्वीर मैटरियारकीज : हिजड़ा इंटीमेसीज एण्ड इनहैरिटेन्सिज*

सुतनुका भट्टाचार्य : *ऑफ जेंडरस एण्ड दी फ्लैश : ट्रांस-बॉडीज एज*

साइट ऑफ न्यू (जेंडर-सैक्सुअल) पॉसिबिलिटीज

गीतिका बाप्ता : *क्वीरिंग मैरिज : टैम्परैलिटी, इवेंटस एण्ड*

एथिको-पॉलिटिक्स

सत्र 2 : अंडरस्टैंडिंग सैक्सुअलिटी थ्रो हिस्ट्रोकल टाइम

रसीदा परवीण : *चेजिंग डाइमैन्शनस ऑफ वर्जनिटी एण्ड चेस्टिटी :रीडिंग*

वूमनज पेटिशनस इन इम्पीरिअल इण्डिया

चारु गुप्ता : *'इन्नोसेंट' विक्टिमस/गिल्टी माइग्रेंटस : सैक्सुअलिटी, कास्ट*

एण्ड इंडेंचरड वूमनज इन कलोनियल नॉर्थ इण्डिया

सलमा फारुकी : *अंडरस्टैंडिंग सैक्सुअलिटी थ्रो हिस्ट्रोकल टाइम : दी आर्ट*

ऑफ मुगल पेटिंग

सयंतनी सुर : *ट्रेसिंग बंगाली मैस्कुलैनिटी थ्रो एडवरटाइजमेंटस इन दी*

ट्वेंटीअथ सेंचुरी : क्राइसिस ऑर कंटीन्यूटी

सत्र 3 : सैक्सुअलिटी एण्ड कल्चर

अरुणिमा डेका : *वूमन एण्ड देयर बॉडीस- मैन्स्ट्र्यूशन एण्ड दी कंस्ट्रक्शन ऑफ सैक्सुअलिटी*

राजीव कुमारमकंडथ : सैक्सुअल रियलिज्म? एम्बीवैलेंसिज ऑफ दी फ्लैश एण्ड दी (हैटरो) सैक्सुअल एक्सेस ऑफ सोशल रियलिज्म।

प्रदीप्ता मुखर्जी : रेजिस्टेंस टू मीडियारिप्रेजेंटेशनज ऑफ वूमेनज सैक्सुअलिटी इन इण्डियन सिनेमा

सत्र 4 : साइकोएनालसिस

अनूप धर : पोलिटिक्स ऑफ प्रॉप रूटस : बियोंड दी 'कन्फेशनज ऑफ दी फ्लैश' एण्ड 'दी रिप्रेसिव हाइपोथिसिस'

अरुणिमा चक्रवर्ती : सैक्स वर्क इन फैंलोगोसैंट्रिक ऑर्डर : टूवर्ड्स ए साइकोएनालटिक फ्रमेवर्क

सत्र 5 : सैक्सुअलिटी एण्ड रीजनल कल्चर

नवनीथा मारुथुर : मोबलाइजिंग दी स्पेक्ट्रल लेस्बियन : ऑन सैक्सुअलिटी एण्ड सब्जेक्टिबिटी

केतकी चौखानी : एडोलसेंटस एण्ड सैक्सुअलिटी एजुकेशन : अंडरस्टैंडिंग एडोलसेंट सैक्सुअलिटी, मैस्क्युलिनिटी, सैक्सुअल नॉलेज एण्ड रोमांस

मुरलीधरन थारायिल : जैण्डर, सैक्सुअलिटी एण्ड दी रीजन

सत्र 6 : सैक्सुअलिटी इन इण्डियन लिटरेचर : ऐनशंट टू मॉड्रन

अनिर्बान दास : ऑफ आइडेंटिटीज एण्ड अदज डिजायरस : थिंकिंग सैक्सुअलिटीज थ्रो बंगला फिक्शन

भारती अरोड़ा : नेगोशिऐटिंग स्ट्रक्चरल इनइक्वैलिटीज— दी केस ऑफ मैरिज, सैक्सुअलिटी एण्ड डूमैस्टिसिटी इन मृदुला गर्गज चित्तकोबरा

किरण केसव : बिटवीन डिजायर एण्ड पॉलिटिक्स इन तन्जय प्रकाशज फिक्शन

9. 'शिमला : हारमोनाइजिंग कलोनिअल इनहैरिटेन्स, अर्बन ऐस्थेटिक्स एण्ड मॉडर्नाइजेशन' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी (07-08 अक्टूबर 2014)

मूलाधार— ब्रिटिशकाल में भारत के विभिन्न भागों में स्थापित 'हिल स्टेशनों' के विविध पहलु विविध विषयों के शोधकर्ताओं के लिए व्यापक अध्ययन का विषय रहे हैं। ज्यादा रुझान इन कस्बों के सामाजिक तथा भौगोलिक परिदृश्य पर एक विदेशी छाप होने की विशेषता के कारण हुआ है। पहाड़ी स्टेशन विशेषकर इसलिए प्रसिद्ध हैं कि उन्हें औपनिवेशिक साम्राज्य के दौरान ग्रीष्मकालीन आश्रय स्थल होने का गौरव प्राप्त है। इन कस्बों पर ब्रतानवी छाप इस कदर है कि भारत को आजाद हुए लगभग सात दशकों बावजूद स्थानीय लोगों, योजनाकारों तथा पर्यटकों के मस्तिष्क अभी भी उस प्रभाव से ग्रसित हैं। हालांकि एक गंभीर मूलभूत अंतर्विरोध के कारण उनके अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लगते रहे हैं। बढ़ते हुए पर्यटन तथा लोगों की बढ़ती मांगों के चलते इन स्थानों की अवस्थिति की बुनियादी तथा अशांत अरक्षणीयता उनकी स्वभाविक प्रसिद्धि के बिल्कुल विपरीत है। शिमला में स्थित इन आश्रयस्थलों की ब्रतानवी तथा राजसी ठाटवाट के लिए ये अंतर्विरोध एक भयंकर चुनौती बन गये हैं।

इस संगोष्ठी में तेजी से बदलते सामाजिक-आर्थिक, राजनैतिक, आकारिक, वास्तुकला आदि हालातों के मद्देनजर शिमला में स्थित ब्रिटिशकालीन धरोहरों की ताजा स्थिति का जायजा लिया गया। साथ ही उन प्रक्रियाओं का भी पता लगाया गया जिनके कारण शिमला ने हिमाचल प्रदेश के सबसे बड़े तथा महत्वपूर्ण शहर का स्थान प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त इस संगोष्ठी में उन व्यतिरेक अवधारणाओं का अनावरण भी किया गया जिनके चलते इस शहर की स्थापना हुई थी। यहां तक कि इस कस्बे के प्रशासन तथा प्रबन्धन से संबंधित सरकारी कार्यक्रम सांस्कृतिक विभिन्नता

को समान करते हुए नजर आते हैं तथा कस्बे के सौंदर्यकरण के बारे में महत्वाकांक्षी प्रयासों के दावे किये जाते रहे हैं। क्या 'औपनिवेशिक' सभ्यता के विचार तथा उसके सही सामाजिक संकेतकों की पुष्टि करने की आवश्यकता है? या फिर हिमालय के प्राकृतिक सौंदर्य में स्थित होने के कारण यहां के पहाड़ी रीति-रिवाज में समतावादी स्पष्टवादिता है? शिमला के बारे में कौन बात करता है तथा किसे बात करने का अधिकार है? इसके अतिरिक्त अधिक संख्या में शिमला आने वाले आगंतुकों की उम्मीदों तथा प्रयोजनों को कैसे पूरा किया जा सकता है?

उप-संस्कृतियों से जुड़े वाकई कई महत्वपूर्ण अकादमिक प्रश्न हैं जो शहरी क्षेत्रों में हमेशा व्याप्त रहते हैं। हालांकि मनोवृत्तियां भी कई बार अहमियत हासिल कर लेती हैं। वे सांस्कृतिक परिपाटियों, कलाओं, वास्तुकला तथा कई अन्य रूपों के माध्यम से अभिव्यक्त हो जाती हैं। यह अभिव्यक्ति मस्तिष्क की पैदाईश है, इसलिए ढांचे तथा शिल्पकलाएं संस्कृति-निर्माण की लम्बी प्रक्रिया का एक हिस्सा होते हैं, जो लगातार बदलते रहते हैं। शहर की संरचना इसमें सिमटी विचार प्रक्रिया तथा जो परिवर्तन हुए उन्हें प्रतिबिम्बित कर देती है। कई बार जो वार्तालाप सांस्कृतिक महत्व तथा मूल्यों के बारे में अपनी राय निर्धारित करते हैं वो भी अपने आप में एक सांस्कृतिक निर्मिति होते हैं। वे तबदील हुई अथवा तबदील होने मानसिकता का परिणाम होते हैं। भवनों, सड़कों, यातायात, बाग-बगीचों तथा सार्वजनिक स्थलों के बारे में प्रायः अलग से अध्ययन किया जाता है मगर अन्य क्षेत्रों से उनके जटिल संबंध मुश्किल से रहे होंगे जिनके ऊपर उनकी अत्याधिक निर्भरता रहती है।

विद्वानों, प्रशासकों, तथा वास्तुकारों के विविध दृष्टिकोणों को जानते वक्त निर्धारित विभिन्न विशिष्टिकरणों को प्रभावित करने वाली निर्धारित बुद्धि के व्यापक क्षेत्र को समीप से देखने का एक प्रयास किया गया था। इस संगोष्ठी में जिन मूल विषयों पर चर्चा की गई उन्हें आगे सूचीबद्ध किया गया है। अन्य संगोष्ठियों से भिन्न जहां अवधारणा की टिप्पणी मात्र संकेतात्मक होती है इस संगोष्ठी की सूची अपेक्षाकृत बड़ी तथा विस्तृत है। आशा की जाती है कि संगोष्ठी में आए प्रतिभागियों द्वारा प्रस्तुतीकरण तथा योगदान मात्र विवरणात्मक नहीं होंगे अपितु उन सूक्ष्म प्रश्नों का भी जबाब मिलेगा जो एकतरफा स्थितियों का पता लगाने के लिए पूछे जाते हैं। यह तभी होता है जब विभिन्न विषयों से संबंधित वार्तालाप होते हैं तथा मुद्दों का समझने की अधिक संभावना बनती है।

प्रस्तावित विषय/नगरीकरण की अवधारणा से संबंधित सत्र

औपनिवेशिक भारत में शहरीकरण; क्षेत्रीय अथवा स्थानीय भिन्नताएं तथा अनुवर्ती विकास पर उसका प्रभाव; वर्तमान में शहरी योजनाकारों के अनुमान।

समकालीन भारत में शहरीकरण की पद्धतियां; दीर्घकालीन सामाजिक प्रक्रियाएं तथा शहरी समाजों के लिए आशय, पर्वतीय भू-भाग में स्थित कस्बों की प्रकृति तथा विशेषताएं।

औपनिवेशिक शिमला की आकारिकता तथा भवन

ब्रतानवी धरोहर : भारतीय/स्थानीय मकानों को छोड़कर उत्कृष्टता की आकारिकी का प्रतिचित्रण

सत्तात्मकढांचा : औपनिवेशिक भवन तथा उनका सामाजिक-राजनैतिक महत्व।

उपयोगिता का ढांचा : नागरिक सुविधाएं, श्रमिक धर्मशालाएं/आवास यातायात के साधन तथा बाजार।

औपनिवेशिक ढांचों तथा स्थलों का संरक्षण

अति महत्पूर्ण प्रश्न : किसका संरक्षण करें?

तकनीक, प्रौद्योगिकी; अनुकूलनीय पुनर्प्रयोग का सौंदर्यकरण; जन-स्वीकृति प्राप्त करना

संरक्षण में संस्थाओं, सरकार तथा लोगों की भूमिका;

वृत्त का अध्ययन/जीणोद्धार तथा संरक्षण के गुर सीखना।

लोकतांत्रिक कस्बे में सामाजिक परिवर्तन तथा आर्थिक आकांक्षाएं

स्वतंत्र भारत का शिमला : जनसंख्या वृद्धि, निर्माण-कार्य; होटल तथा पर्यटन; सरकारी तथा संस्थागत विकास।

शहरी सुविधाएं; विकास तथा भासन व्यवस्था।

वन, जल तथा प्राकृतिक स्थलों की सर्जना

शिमला कस्बे का वनों (वनस्पति/जीवजंतु) तथा प्राकृतिक संसाधनों पर पर्यावरणात्मक प्रभाव 'प्राकृतिक' स्थल : उद्यान, पार्क, आखेट आदि।

भविष्य : नागरिक दबाव के संदर्भ में संभावनाओं की तलाश

इतिहास के महत्वपूर्ण तत्वों तथा औपनिवेशिक अनुभवों (भले ही कष्टदायी) का संरक्षण चाहने वाला 'नवीकृत' शिमला क्या आधुनिक, नियोजित तथा सौंदर्यपरकता से भिन्न 'नये' शिमला से अलग है और क्या वह जनसंख्या के विस्फोट के अनुरूप खरा उतरेगा?

क्या आधुनिक विकल्प शिमला की औपनिवेशिक परम्परा बढ़ती हुई तथा मध्यवर्गीय आकांक्षाओं के साथ निरंतरता तथा अनुकूलता से संबंधित महत्वपूर्ण मुद्दों के परिचयन की संभावनाओं को प्रस्तुत करते हैं?

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान में 07-08 अक्टूबर 2014 को 'शिमला : हारमोनाइजिंग कलोनियल इनहैरिटेन्स, अर्बन ऐस्थेटिक्स एण्ड मॉडर्नाइजेशन' विषय पर भाषा एवं संस्कृति विभाग, हिमाचल प्रदेश के सहयोग से राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर चेतन सिंह तथा भाषा एवं संस्कृति विभाग, हिमाचल प्रदेश की अतिरिक्त मुख्य सचिव सुश्री उपमा चौधरी, भा.प्र.से. इस संगोष्ठी के संयोजक थे। प्रोफेसर चेतन सिंह ने प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा संगोष्ठी की विषय-वस्तु से भी अवगत करवाया। सुश्री उपमा चौधरी ने प्रारम्भिक टिप्पणी प्रस्तुत की।

प्रतिभागी

- श्रीमती सरोजनी जी. ठाकुर, हिमाचल प्रदेश निजी विश्वविद्यालय नियामक प्राधिकरण, शिमला
- सुश्री उपमा चौधरी, भा.प्र.से., अतिरिक्त मुख्य सचिव, भाषा एवं संस्कृति विभाग, हिमाचल प्रदेश
- प्रोफेसर सुजाता पटेल, समाजशास्त्र विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद
- श्री वेद सैगन, 23-बी, आउंध रोड़, फ्लैट नं. 5, मीनल अपार्टमेंट्स, पुणे
- डॉ. जसवी सिंह चंदेल, राजकीय महाविद्यालय जुखाला, बिलासपुर
- श्री टिकेन्द्र पंवर, उपमहापौर, नगर निगम शिमला
- अर. जैस्मीन कौर, वरिष्ठ सलाहकार, लैण्डस्केप एण्ड इन्चायरन्मेंटल प्लानिंग डिपार्टमेंट, दिल्ली विकास प्राधिकरण, नई दिल्ली
- डॉ. संजीवा पाण्डे, भा.व.से., अतिरिक्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल, हिमाचल प्रदेश, शिमला
- डॉ. रवीन्द्र कुमार धीमान, राजकीय आयुर्वेदिक स्वास्थ्य केन्द्र, न्यू शिमला

- प्रोफेसर भूपेन्द्र सिंह मरह, भूगोल विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला
- प्रोफेसर लक्ष्मण सिंह ठाकुर, इतिहास विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला
- डॉ. योगेश स्नेही, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- प्रोफेसर नारायणी गुप्ता, सलाहकार, इनटैक, दिल्ली
- सुश्री सौम्या शर्मा, मनोनीत अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- डॉ. वनीत जिस्तू, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, पंथाघाटी, शिमला।
- प्रोफेसर एस.आर. महरोत्रा, 'सेवा' अम्बेडकर चौक, चौड़ा मैदान, शिमला
- श्री एस.एन. जोशी, पंचवटी भराड़ी, शिमला

संगोष्ठी के दौरान प्रतिभागियों ने निम्नलिखित शोध-पत्र प्रस्तुत किये :-

सत्र 1 : शहरीकरण की संकल्पना

नारायणी गुप्ता : *अर्बनाइजेशन इन साउथ एशिया इन दी रेलवे एज, 1860ज-1960ज*

सुजाता पटेल : *दी कॉन्यूनड्रम ऑफ इण्डियन अर्बनिज्म, इस देयर ए विजन?*

भूपेन्द्र सिंह मरह : *'शिमला (सिमला) : नॉस्टैल्ज ऑफ हिस्ट्री एण्ड एन एनिग्मा ऑफ अर्बन प्लानिंग'*

सत्र 2 : औपनिवेशिक शिमला की आकार संरचना तथा भवन

लक्ष्मण सिंह ठाकुर : *स्टोनस एण्ड स्टाइल ऑफ राज : डिबेट्स ऑन ब्रिटिश आर्किटेक्चर इन शिमला*

रवीन्द्र कुमार धीमान : *मॉरफॉलॉजी एण्ड बिल्डिंग्स ऑफ कलोनियल शिमला*

सत्र 3 : औपनिवेशिक ढांचों तथा स्थलों का संरक्षण

सौम्य शर्मा : *कंजरवेटिंग ऑफ हिस्टॉरिक अर्बन लैण्डस्केप ऑफ शिमला*

वेद सैगन : *लर्निंग एक्सपीरियंस/डीलिंग विद गवर्नमेंट एजेंसीज : ए केस स्टडी ऑफ गेयटी बिल्डिंग रेस्टोरेशन*

सत्र 4 : वन, जल, तथा प्राकृतिक स्थलों की रचना

एस.एन. जोशी : *फॉरेस्ट, वाटर एण्ड दी क्रियेशन ऑफ 'नेचुरल स्पेसिज*

वनीत जिस्तू : *कलोनियल इम्पैक्ट ऑन दी फ्लोरा ऑफ शिमला*

सत्र 5 :

जैस्मिन कौर : *प्लानिंग ऑफ हिल्ली ऐरियाज : एन इको-सेंस्टिव अप्रोच*

संजीवा पाण्डे : *इकॉलजिकल इंटरैक्शन बिटवीन अर्बन एण्ड नेचुरल स्पेसिज ऑफ शिमला टाउन*

सत्र 6 : भविष्य : नागरिक दबाव के संदर्भ में संभावनाओं की तलाश

टिकेन्द्र पंवर : *दी फ्यूचर : आइडेंटिफाइंग पॉसिबिलिटीज इन दी कॉन्टेक्स्ट ऑफ सिविल स्ट्रैस*

10. 'दी पावर ऑफ कम्यूनिकेशन : दी मीडिया, पब्लिक स्पेस एण्ड पार्टिसिपेटरी डिमाक्रसी' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी (13-14 अक्टूबर 2014)

मूलाधार— पिछले दो दशकों से मीडिया विकास तथा उदारीकरण का क्षेत्र रहा है। मीडिया उद्योग से प्रभावित सभी बिन्दु आर्थिक विकास की दर में वृद्धि करते हैं। यह कोई चौकाने वाली बात नहीं है कि जब से मीडिया के विकास का प्रमुख कारक विज्ञापन का प्रचलन शुरू हुआ है तब से आर्थिक मंदी के दौर में भी मीडिया ने अन्य क्षेत्रों को पीछे छोड़ दिया है। तकनीकी विकास भी इस क्षेत्र के विकास के लिए पिछले दो दशकों से एक महत्वपूर्ण कारण रहा है। स्थानीय केवल ऑपरेटरों द्वारा वर्ष 1990 के शुरू में 'सी' बैंड पर सैटेलाइट प्रसारण की पहली प्रभा के अंतर्गत अप्रत्याशित कार्यक्रम प्रसारित किये गये तथा अब 'डायरेक्ट टू होम' प्रसारण की बड़ी कोशिशों तक भारतीय टेलीविजन का परिदृश्य सरकारी एकाधिकार के कड़े नियंत्रण से एक अनियंत्रित प्रसार की अवस्था में तबदील हुआ है।

इंटरनेट का बढ़ता प्रयोग अगली समर्थ व्यवस्था है। डिजिटल का प्रयोग भी बहुत यथार्थपूर्ण है। इंटरनेट का प्रयोग करने वाले की संख्या कुल जनसंख्या की अपेक्षाकृत अभी भी बहुत कम है। हालांकि सेलुलर फोन का प्रयोग करने वालों की संख्या में वृद्धि हुई है। तथा अफवाहों की राजनीति की संवृद्धि में संभाव्य नुकसान भी उसी समय सामने आ जाता है।

वर्तमान भारत में मीडिया के विकास की यह एक मुख्य दुविधा है कि मूलभूत भौतिक ढांचे का विस्तार तो कर दिया गया है, मगर उसे अमली जामा पहनाना अभी बाकि है। आधिकारिक प्रतिक्रियाओं को उत्तदायित्व में सुनिश्चित करना होगा, जिसका कि उभरते सोशल मीडिया के उभरते क्षेत्र पर विशेष प्रभाव है। यह एक ऐसी व्यवस्था है जिस पर इंटरनेट के दिग्गजों द्वारा न्यायालय के कक्षों में बैठकर बहस की जाती है। मगर वैयक्तिक प्रयोक्ता के स्तर पर सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम-2009 की धारा 66 ए सोशल मीडिया के प्रयोगकर्ताओं के लिए एक संकट की स्थिति बनी रहती है।

प्रायः आशंकाएं व्यक्त की जाती हैं कि मीडिया चैनलों की परस्पर प्रतिस्पर्धा के प्रसारित की जाने वाली सामग्री का स्तर गिर गया। लक्षण के तौर पर 'स्टिंग ऑप्रेशन' गैर-कानूनी होते हैं यदि उनमें जनहित का उद्देश्य निहित न हो। ये स्टिंग ऑप्रेशन अब कमाई का एक जरिया बन गए हैं। निजता का सम्मान तथा व्यक्तिगत मर्यादा को अब मीडिया की आचार संहिता में नजर अंदाज कर दिया जाता है।

हाल ही में कुछ ऐसी घटनाएं सामने आई हैं कि राजनीति तथा व्यापार संबंधी मीडिया कवरेज के लिए मोटी रकमों दी गईं। मात्र लाभ कमाने के लिए इस तरह मिथ्या और अप्रामाणिक सूचनाएं फैलाने से जनता में जनभावनाएं भड़क उठीं।

मीडिया द्वारा जनता की नाराजगी को बढ़ाचढ़ा कर पेश किये जाने की घटनाओं के कारण सरकार की कार्य-प्रणाली पर अत्याधिक असर पड़ा जिससे उन मुद्दों को समय रहते हल किया गया। सेवारत तथा सेवानिवृत्त अधिकारियों ने नए सोशल मीडिया की संभाव्य अस्थिरता की आलोचना की है। वर्तमान तथा भूतपूर्व प्रधानमंत्री ने भी सोशल मीडिया के प्रति सतर्क रहने की बात कही है मगर यह सुनिश्चित हो कि विचारों को व्यक्त करने की स्वतंत्रता के अधिकार का सम्मान हो तथा व्यापक राष्ट्रीय उद्देश्य की पूर्ति के लिए नए मीडिया की पहचान होनी चाहिए।

सितंबर 2008 में वैश्विक आर्थिक मंदी ने मीडिया की तकदीर में गहरा अतिक्रमण किया। आगामी महीनों में

सामाजिक दबाव में मीडिया के उद्योग की अति संवेदनशीलता को तेजी से उजागर किया। लाखों नागरिकों के जीवन मीडिया की प्रबल आवाज तथा उसकी व्यापक उपस्थिति के बावजूद भारत के प्रमुख कार्पोरेट अदाकारों ने मीडिया उद्योग का कद छोटा कर दिया। शीघ्र बिकने वाली उपभोगता वस्तुओं से संबद्ध अग्रणी अदाकारों में से एक के विज्ञापन का बजट भारत के बड़े मीडिया समूहों की कुल आय के बराबर होगा।

ऐसे में कुछ बड़े कार्पोरेट का अस्तित्व – संभवतः किसी एक छोटे का मेजबान— मीडिया क्षेत्र में पलायन कर चुका है। ऐसे परिवर्तनों की इस जटिलता के प्रति आधिकारिक प्रतिक्रिया को दौरे और आवेश से इंगित किया गया है, जो अंततः असमंजस और अकर्मण्यता में चले जाते हैं।

जिन प्रसारण ऐजेंसियों पर सरकार की पूंजी लगी हुई है उन्हें जन सेवा मीडिया में परिवर्तित करने के प्रयास डगमगा गए हैं और लाभ अर्जित करने वाले प्रभावी उद्देश्य के साथ उन नागरिकों का बहुत बड़ा समूह जिनका विज्ञापन दाताओं के साथ कुछ लेना देना नहीं है चूर-चूर हो गया है, लोक क्षेत्र में उनकी आवाज कमजोर पड़ रही है।

सरकारी मीडिया को विकास और परिवर्तन का संदेशवाहक माना जाना अब गुमनाम समझकर उसे विसार दिया गया है। हालांकि सैटेलाइट-समर्थकृत प्रसारण मीडिया को विकासात्मक उद्देश्यों के लिए प्रयोग में लाने वाले अनुभवों का अभी मूल्यांकन करने की आवश्यकता है। सरकार द्वारा प्रायोजित मीडिया की कार्यप्रणाली में अभी समय के अनुरूप परिवर्तन नहीं आया है।

एक अत्याधिक प्रजातांत्रिक तथा ज्यादा पहुंच वाला प्रसारण मीडिया रेडियो अपनी अपार संभावनाओं के रहते अविकसित रहा है क्योंकि सरकार द्वारा समाचारों तथा समसामायिक घटनाक्रमों के प्रसारण पर अपना एकाधिकारिक नियंत्रण रखा गया। मीडिया नीति पर वैविध्यपूर्ण तथा आलोचनात्मक बहस में अक्सर इसकी प्रजातांत्रिक सहभागिता के परिदृश्य को गंभीरता से नकारा जाता है। यह इसलिए होता है क्योंकि मीडिया उद्योग को चलाने वालों ने वार्तालाप तय करने के लिए अपने आप को लाभास्पद स्थिति में स्थापित कर रखा है। आम लोगों की आवाज, खासकर जो लोकतंत्र के समृद्ध दायरे से कुछ प्राप्त करने के इच्छुक हैं, अनसुनी रह गई है।

इसी विषयगत परिप्रेक्ष्य में यह संगोष्ठी आयोजित की गई। इस संगोष्ठी के अंतर्गत जिन पृष्ठभूमियों पर चर्चा की गई वे निम्न प्रकार से हैं :

- क) लोगों की समझ तथा मीडिया का बोध;
- ख) जनता की मीडिया प्रस्तुतियां – 'आंतरिक और बाहरी' समूहों; सुने तथा अनुसुने विचार;
- ग) मीडिया तथा जनता में प्रस्तुत 'विकास'
- घ) विकास प्राथमिकताओं के निर्धारण में विविध समुदायों को दिये गए मत;
- ङ) विभिन्न समुदायों को अपने मत प्रकट करने के लिए प्रदान किये साधन;
- च) प्रिंट मीडिया से पूरी तरह नियंत्रित प्रसारण क्षेत्र में 1990 से लेकर अनियंत्रित प्रसारण क्षेत्र तक तकनीकी साधनों के विभिन्न अभिमत किस प्रकार जनता में विकसित हुए।
- छ) मीडिया क्षेत्र में पारदर्शिता तथा उत्तदायित्व तय करना;
- ज) टेलीफोन को देश की अधिकांश जनता के जीवन में विलासतपूर्ण अवधारणा से लेकर उसकी सभी वर्गों के दैनिक जीवन के लिए वर्तमान उपयोगिता ;
- झ) नई संचार संभावनाओं की लाभ तथा हानियां;

- ट) निजता का अधिकार तथा वैयक्तिक प्रतिष्ठा को उत्तरदायित्व तथा जनता के सूचना अधिकार के साथ सामंजस्य स्थापित करना;
- ठ) अफवाह की राजनीति; अफवाह की हानिग्रस्त संभाव्यता तथा एक अफवाह किस प्रकार जनता के प्रति जबाबदेही का कारण बन जाती है।
- ड) राजनैतिक ढंग से व्यवस्थित की गई सूचनाओं के प्रयास कैसे सर्वदा आत्मघाती सिद्ध होते हैं जबकि यह 1975-77 की आपातकाल में या आज भी है।
- ढ) स्वतंत्र और लोकतांत्रिक वैश्विक मीडिया के लिए हम कहां का रुख करें।

इस संगोष्ठी में इतिहास के पन्नों को पलटा गया, वर्तमान वास्तविकताओं का अवलोकन किया गया तथा भविष्य में झांककर देखा गया कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में स्थिति को और बेहतर कैसे बनाया जा सकता है।

संस्थान में 'दी पावर ऑफ कम्यूनिकेशन : दी मीडिया, पब्लिक स्पेस एण्ड पार्टिसिपेटरी डिमाक्रसी' विषय पर 13-14 अक्टूबर 2014 को एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संस्थान के अध्यक्ष श्री सुकुमार मुरलीधरन इस संगोष्ठी के संयोजक थे। संगोष्ठी में संस्थान के निदेशक प्रोफेसर चेतन सिंह द्वारा स्वागत भाषण प्रस्तुत किया गया। श्री मुरलीधरन जोकि संगोष्ठी के संयोजक थे ने संगोष्ठी के मूल विषय से अवगत करवाया।

प्रतिभागी

- श्री राजेश मंधोत्रा, अमर उजाला, न्यू लैण्ड इस्टेट, शिमला
- श्री अश्वनी शर्मा, इण्डिय एक्सप्रेस, शिमला
- सुश्री समारिका कुमार, अल्टरनेटिव लॉ फोरम, इन्फैंटरी रोड़, बंगलोर
- सुश्री गीता सेशु, वरुण, कार्टर रोड़, बांद्रा (पश्चिम), मुम्बई
- डॉ. जॉन बाबू कोय्ये, अभिसारी पत्रकारिता विभाग, केन्द्रीय विश्वविद्यालय कश्मीर, जम्मू और कश्मीर
- प्रोफेसर पदमाजा शॉ, संचार एवं पत्रकारिता विभाग, ओस्मानिया विश्वविद्यालय हैदराबाद
- श्री ए.एस. पेन्नीरसेल्वन, द हिन्दू, चेन्नई
- डॉ. रबीन्द्रनाथ, मनुकोंडा, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय
- प्रोफेसर विनोद पवराला, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद
- डॉ. विश्राम ढोले, संचार अध्ययन विभाग, सवित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे
- डॉ. लॉयन कोनिग, सेंटर फार कल्चर मीडिया एण्ड गवर्नेंस, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली
- डॉ. अरविंद सिउवरमकृष्णा, ऐशियाई पत्रकारिता महाविद्यालय, मद्रास
- प्रोफेसर चिन्नमई अरुण, राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय दिल्ली, नई दिल्ली
- प्रोफेसर अभिजीत अरोड़ा, जन संचार एवं पत्रकारिता, तजुर विश्वविद्यालय, असम
- सुश्री पामेला फिलिपोज, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली
- श्री सिद्धार्थ नारायण, अल्टरनेटिव लॉ फोरम, बंगलोर

- प्रोफेसर सुबरानो चट्टर्जी, अंग्रेजी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- सुश्री एम्मू जोसेफ, 71, सेंट बीड ले आउट, कोरमंगला, बंगलोर
- श्री शुभरांशु चौधरी, 101, शाहपुर, भोपाल
- श्री भैरव आचार्य, सेंचुरी पार्क, रिचमॉड रोड, बंगलोर
- श्री परान्जॉय गुहा ठाकुराता, साउथ सिटी, गुड़गाव, हरियाणा
- प्रोफेसर विबोध पारथासारथी, जामिया मीलिया इस्लामिया, नई दिल्ली
- श्री साजन वेन्नीययुर, न्यू फ्रैंड कॉलोनी, नई दिल्ली
- प्रोफेसर उदयन मिश्रा, राष्ट्रीय अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- प्रोफेसर कुदन लाल टुटेजा, टैगोर अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- डॉ. आर. उमा महेश्वरी, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला

संगोष्ठी के दौरान प्रतिभागियों द्वारा निम्नलिखित विषयों पर अपनी प्रस्तुति दी—

सत्र 1 : दी मीडिया एज इट इज : ओनरशिप, जरनलिस्टस एज स्टेकहोल्डरस एण्ड इंटरनल मैकानिजम ऑफ अकाउंटेबिलिटी

परान्जॉय गुहा ठाकुराता : *ट्रेंड्स इन मीडिया ओनरशिप*

ए.एस. पेन्नीरसेल्वन : *इज सेल्फ-रेगुलेशन वर्किंग?*

साजन वेन्नीययुर : *दी डर्टी वक ऑफ एम्पायर : ओवेल्, डब्ल्यूडब्ल्यूआईआई एण्ड दी रूटस ऑफ पब्लिक सर्विस ब्रॉडकार्टिंग इन इण्डिया*

सुकुमार मुरलीधरन : *जरनलिजमज राइटस विदइन दी मीडिया फ्रीडम डिसकोर्स*

सत्र 2 : एसपाइरेशनल स्टेटस : दी मीडिया एज इट कुड बी

बिनोद सी. अग्रवाल : *ग्रामिसिस एण्ड परफॉर्मेंसिस ऑफ सैटेलाइट कम्युनिकेशन*

टेक्नोलॉजी फार डिवेलपमेंट इण्डिया

अरविंद सिवारामाकृष्णा : *ब्रिजिंग दी गल्फ : दी न्यूज मीडिया एण्ड दी पब्लिक*

पदमाजा भाँ : पब्लिक सर्विस ब्रॉडकार्टिंग एज ब्रिज टू द फ्यूचर

सत्र 3 : सोशल मीडिया एण्ड दी न्यू कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजीस

पामेला फिलिपोस : *रेवरबेशनस इन दी सिटी : मीडिया एग्रीगेशन एण्ड दी देल्ही गैंग रेप कवरेज*

विश्राम ढोले : *दी अनइजी रिलेशनशिप बिटवीन दी न्यू मीडिया जेनरेटिड पब्लिक स्फेयर एण्ड दी नेशन स्टेट*

रबीन्द्रनाथन एम. : *दी सैकेण्ड मशीन एज ऑफ कम्युनिकेशन टेक्नोलोजिस*

सत्र 4 : सेफगार्ड मीडिया डाइवर्सिटी

एम्मू जोसेफ : *व्हज प्लूरलिजम इज इट एनीवे?*

विबोध पारथासारथी : *डाइवर्सिटी ऑन म्यूट? : दी शिफ्टिंग प्रेजेंस ऑफ मीडिया डाइवर्सिटी इन प्रेस पॉलिसी, सी.1947-1990*

स्मारिका कुमार : *कॉन्सेंटेशन ऑफ मीडिया ओनरशिप एण्ड दी इमेजिनेशन ऑफ फ्री स्पीच : दी कम्पीटिंग क्लेमस ऑफ दी आर्टिकल 19(1)(जी)*

शुभ्रांशु चौधरी : *व्हेयर डू वी गो फॉर ए फ्री एण्ड डिमॉक्रेटिक मीडिया यूनिवर्स?*

सत्र 5 : दी मीडिया एण्ड दी पब्लिक

गीता सेशु : *मीडिया ऑबसेसनस : सर्वैलेंस, स्टेकिंग एण्ड माइनिंग दी प्राइवेट*

लॉयन कोईग : *क्लेमिंग पब्लिक स्पेस : 'ग्रासरूटस कॉमिक्स' एण्ड पारटीसिपेटरी डिमाक्रसी इन इण्डिया*

सुबारनो चट्टर्जी : *दी मीडिया, दी यूनिवर्सिटी, एण्ड दी पब्लिक स्फेयर*

विनोद पवारला : *बलर्ड विज़न : दी डिवेलपमेंट कम्प्यूनिकेशन एण्ड कम्प्युनिटी रेशो इन इण्डिया*

सत्र 6 : रीजनल कॉटेक्टस

अभिजीत बोरा : *मीडिया इन असम : ए थ्री-डाइमेंशनल व्यूप्वाइंट*

जॉन बाबू कोय्ये : *डिवेलपमेंट एज रिप्रेजेंटिड इन दी कश्मीर मीडिया*

राजेश मंधोत्रा : *मीडिया की जन अनुभूति एवं विवेक*

सत्र 7 : टूवर्डस इवॉल्विंग न्यू लीगल फाउंडेशनज

भैरव आचार्य : *रि-विजिटिंग इण्डियन डिफामेशन लॉ*

सिद्धार्थ नारायण : *कन्स्टिट्यूशनल अप्रोचिस टू फ्रीडम ऑफ स्पीच एण्ड एक्सप्रेशन : हेट*

स्पीच डॉक्साइन एण्ड दी बाउंडरीज ऑफ स्पीच इन इण्डिया

चिनमई अरुण : *बैलेंसिंग न्यूसगैदरिंग एण्ड प्राइवेट इन दी एज ऑफ सर्वैलेंस*

11. 'आइडिया ऑफ ट्रांसग्रेशन' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी (27-29 अक्टूबर 2014)

मूलाधार- सीमा के उल्लंघन की संवृति हमेशा से दिलचस्प और रहस्यात्मक रही है। दिलचस्प इसलिए क्योंकि इसकी उत्पत्ति मानवके अपने हिसाब से जीवनयापन करने की चाह से होती है। फलतः वह सरहदों को पार कर लेता है और सीमाओं का उल्लंघन करता है। उल्लंघन के नाम से ही रूकावट, अभिलाषा, जोखिम तथा साहस आदि के ख्याल जन्म लेते हैं। इससे उल्लंघन के प्रति हमारी तन्मयता झलकती है और यह उन सीमाओं से भी हमारा परिचय करवाती है जिनका आभास हमें तभी हो जाता है जब हम उनका पहली बार उल्लंघन करते हैं। वास्तव में 'सीमा पारगमन' की नौबत हमारे ऊपर लादी गई पांबदियों के कारण आती है। यह अवधारणा गूढ़ इसलिए है कि यह 'सीमा' – एक लक्ष्मण-रेखा के प्रतिबंधात्मक तथा अति विवादात्मक मत की अवधारणा के साथ जुड़ी है। समकालीन सभ्यता जहां अनिश्चितताओं (यहां तक कि पूर्व-आधुनिक सभ्यताएं भी अनिश्चितताओं से मुक्त नहीं थीं) की भरमार है, में प्रायः यह तय करने में कठिनाई आती है कि सीमाओं का दावा भौतिक है, लैंगिक है, प्राकृतिक है अथवा नैतिकता पर आधारित है। इसलिए अतिक्रमण की विषय-वस्तु अनेक सैद्धांतिक दृष्टियों से प्रश्नास्पद बनती जा रही है। अतिक्रमण की कार्यप्रणाली को समझने के लिए विभिन्न सांस्कृतिक परिपाटियों तथा ऐतिहासिक ग्रंथों का अनुसंधान किया जा रहा

है। इस संगोष्ठी का उद्देश्य सीमा के उल्लंघन के विभिन्न अविर्भावों के मद्देनज़र उसके तर्क, राजनीति तथा नैतिकता को ध्यान में रखकर परिचर्चा करना था।

उल्लंघन इस जगत में एक कृत्य है और साथ ही एक घटनाक्रम भी है। यद्यपि सोच समझकर, उद्देश्यपूर्ण तथा आयोजित उल्लंघन हमारे अन्य सामान्य सोचे-समझे कृत्यों की तरह नहीं है। उल्लंघन के कारण ही अतिक्रमण को अलग घटनाक्रम की श्रेणी में रखा जाता है जिसके अंतर्गत किसी सीमा रेखा को पार किया जाता है मगर सिर्फ साधारण नियम अथवा कानून का तोड़ा जाना उल्लंघन नहीं कहलाता। सीमा का उल्लंघन, उसे पार करने —बहादुरी के संकेत, विद्रोह, चुनौती देना, तिरस्कार की राजनीति, आंतरिक असंतोष, प्रलोभन, प्रतीकात्मक आवेग, एक साहसिक कार्य, यहां तक हर्षोन्माद आदि से नामांकित किया गया है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि प्रचलित नियम सदा एक जैसे नहीं रहेंगे। इस प्रकार कहा जा सकता है कि उल्लंघन का विचार एक सरहद अथवा सीमा तथा 'अंदर' 'बाहर' के बहुत ही कठिन मत के साथ एक तर्कपूर्ण ढंग से संबद्ध है। ऐसे में सरहद और सीमा रेखा का विचार उल्लंघन का पूर्व आपेक्षित तर्क है। इस तार्किक बंधन अथवा दोनों मतों के ढांचे को एक दूसरे रूप में खोजना अति आवश्यक है। सीमा तथा उसके उल्लंघन के विचारों के सम्पूर्ण सजातीय नेटवर्क का अन्वेषण करना भी उतना ही आवश्यक है।

'सीमा' और 'उल्लंघन' के विचारों ने लगभग सभी दार्शनिकों का ध्यान आकर्षित किया है जब वे अपने को पराये से, अस्तित्व को गैर-अस्तित्व से, ज्ञान को अज्ञान से, वास्तविकता को काल्पनिकता से तथा सार्वभौमिक को विशेष रूप से अलग करते हैं। कांत और विट्टगेंस्टाइन 'सीमा' और 'अतिक्रमण' के विचार के स्वरूप की कठोर अभिव्यक्ति करते हैं। यदि अवास्तविक प्रारंभिक ज्ञान संभव हो तो कांत ने अतिक्रमण को व्यक्त करते हुए चिंतन की सीमा को निर्धारित करने का प्रयास किया है। विट्टगेंस्टाइन ने विचार की अभिव्यक्ति के साथ 'सीमा' और उसके उल्लंघन को व्यक्त किया है। विट्टगेंस्टाइन का सुप्रसिद्ध कथन 'मेरी भाषा की सीमा से अभिप्रायः शब्द की सीमाओं से है' ने भाषा-दर्शन के क्षेत्र में तीव्र बहस को ठीक उस प्रकार जन्म दिया जैसा कि तत्वमीमांसा के क्षेत्र में कांत की आलोचना विशुद्ध तर्क में निहित है। इन दोनों अभिव्यक्तियों में 'सीमा' का परिसीमन का दैनिक प्रयोग हटा दिया है तथा सीमा एवं उसके उल्लंघन की अवधारणा के तार्किक ढांचे को प्रकट किया गया है।

'सीमा' और उसके उल्लंघन पर परिचर्चा के लिए सीमा परिसीमन तथा सीमा संभावना की स्थिति में अवधारणात्मक विभाजन बहुत महत्वपूर्ण है। सीमा की अवधारणा का एक परिसीमन, एक सरहद एक जंजीर, एक बंधन शक्ति, या फिर प्रतिबंध के रूप में हर रोज प्रयोग होता है जो किसी व्यक्ति के कार्य करने की स्वतंत्र प्रवृत्ति को भौतिक अथवा अन्य प्रकार से अवरुद्ध करती है। यह परिसीमन भौतिक, तकनीकी, पर्यावरणात्मक, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक आदि किसी भी रूप में हो सकता है। निश्चित रूप से क्योंकि 'सीमा परिसीमन' के रूप में एक मनघड़त विचार है जो सीमा के उल्लंघन की इजाजत देता है। मगर 'सीमा' के विचार का एक दार्शनिक रूप भी है जिसके अंतर्गत 'सीमा' को 'अतिक्रमण' अथवा एक प्राथमिक अवस्था के रूप में भी माना गया है और उसका एक सकारात्मक संकेतार्थ है। मस्तिष्क में ऐसे स्पष्टीकरण तथा प्रदत्त विशेष संदर्भों, जिनके अंतर्गत दार्शनिकों ने संभावना की अति उत्तम दशाओं (कांत ने ज्ञान, हैडगर ने अस्तित्व तथा विट्टगेंस्टेन ने विचार की अभिव्यक्ति) का निर्धारण किया है। इस संगोष्ठी के आयोजन मात्र उद्देश्य सीमा और उसके उल्लंघन के विचार तथा दार्शनिक चिंतनों में उसे किस प्रकार परिचालित किया है के बारे में परिचर्चा करना था।

जैस्पर, हैडगर तथा फॉकल्ट आदि दार्शनिकों द्वारा महाद्वीपीय दर्शन परंपरा में इन मतों को बड़ी गहनता से प्रतिबिम्बित किया गया है। जैस्पर ने सीमा-अवस्थाओं अथवा सरहद-स्थितियों का उल्लेख किया है, जिनका खौफ अथवा अपराध के रूप में चित्रण किया गया है जो उसके अंतर्गत मानवीय मस्तिष्क प्रतिबंधों तथा तर्कहीन संकीर्णताओं के मौजूद रूपों के साथ सामना करता है। इसके अतिरिक्त यह अपने परिसीमन को व्यापक सुरक्षा प्रदान करता है ताकि आत्म-सचेतना के नये आयामों में प्रवेश किया जा सके। ऐसी परिस्थितियां मानवीय अस्तित्व के संदेह

को उद्घाटित करती हैं, जो अक्सर दो परस्पर विरोधी अवस्थाओं के बीच होता है। ऐसी अवस्थाएं अक्सर मानवीय कमजोरी को दर्शाती हैं। ये हमें संचार तथा विचार-विमर्श करने के लिए प्रेरित करती हैं, जिसके फलस्वरूप हमारे संबंधों की बजाए हमारी विविधताएं अधिक झलकती हैं। 'उल्लंघन की भूमिका' नामक फाकल्ट का सिद्धांत लैंगिकता की केन्द्रीयता को एक धर्मनिर्पेक्ष तथा परा-उपदेशात्मक युग के रूप में महत्त्व देता है तथा उससे हमें यह भी पता चलता है कि उल्लंघन तथा सीमा ने पवित्रता और अपवित्रता की पुरानी मान्यताओं को किस प्रकार बदला है। अस्तित्व के विभिन्न चरण— सौंदर्य, नैतिकता तथा धर्म आदि जिनका किरगार्ड उल्लेख करता है, सभी सरहद पार करने से संबंधित हैं, जो साहसिक कार्य भी है और विश्वास तथा अनिश्चिता भरे भी है।

जब हमारे मन में सीमा के उल्लंघन के बारे में विचार आता है तो वह कोई चुनौती, वैधता या फिर कोई सम्मानजनक कृत्य नहीं होता है, चाहे उसे नैतिकता, सौंदर्य, राजनीतिक, सामाजिक या फिर इनमें किसी आंशिक रूप या उनके सम्मिश्रण रूप में ही क्यों न देखा जाता हो। उल्लंघन कभी आदर्शात्मक नहीं हो सकता और न ही उसमें कोई आदर्शवादी गुण समाहित होते हैं। अरस्तु के आदर्शों की भाँति उल्लंघन विशेष परिस्थितियों के परिणाम होते हैं मगर इसके अतिरिक्त किसी प्रकार के संबंधों के ज्ञांसे में न आकर हम जान सकते हैं कि हम कैसे सीमा का उल्लंघन करने पर मजबूर होते हैं जबकि अच्छाई और बुराई के प्रश्न हमारे समक्ष होते हैं। अच्छाई और बुराई, पवित्रता और अपवित्रता, निजी और सार्वजनिक, काल्पनिक और वास्तविक, समझदारी तथा नासमझी, वर्ग और जातियों के बीच सीमा रेखा खींचना राजनीति से प्रेरित कृत्य होता है। जैसा कि पूर्व में उल्लेख किया जा चुका है कि इस संगोष्ठी का मूल उद्देश्य सीमाओं और सरहदों की राजनीति जानना था और धर्म, भाषा, राष्ट्र, नैतिकता तथा सौंदर्य आदि मानवीय अस्तित्व के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करना था।

विज्ञान के क्षेत्र में सीमा के विचार से उत्पन्न अनुभूति शायद वही है जिसका तात्पर्य वर्तमान में स्थापित विज्ञान और वैज्ञानिक प्रतिमानों से है। मौजूदा वैज्ञानिक ज्ञान का संग्रह अपने आप में एक सीमा है जोकि आज वैज्ञानिक कल्पना की सीमाओं का निर्धारण करता है। गैलेलियो या आइंस्टाइन जैसे वैज्ञानिकों के नए मौलिक अविष्कार जब उल्लंघन में परिवर्तित होते हैं तो वे प्रतिमानों के बदलाव को उद्घाटित कर स्थापित सिद्धांतों तथा प्रकृति के बारे में हमारी समझ को मूल रूप से परिवर्तित कर देते हैं। कार्ल जैस्पर सीमाओं को सामर्थ्य के रूप में देखते हैं। विज्ञान की इन सीमाओं से संबंधित वार्तालाप के बारे में वे कहते हैं कि प्रत्येक सीमा उल्लंघन का वादा करती है। मगर विज्ञान की सीमाएं क्या हैं? हर्शल भी कांत की विचारधारा का समर्थन करते हैं— क्या इसकी विजय नए प्रकार के विज्ञान की अगुवाई करती है? क्या यह वस्तुनिष्ठता की नई अवधारणा प्रदान करती है? या फिर यह विजय दूसरे क्षेत्रों जैसे— धर्म और कला आदि को पार करती है? क्या हम दर्शन की ओर रुख कर रहे हैं क्योंकि जैसा कि विज्ञान के सीमा के बारे में जैस्पर कहते हैं। या फिर क्या हम दर्शन के कारण विज्ञान की तरफ रुख कर सकते हैं जैसा कि प्रत्यक्षवादी कहते हैं। यह प्रदत्त विचार कि ज्ञान की प्रत्येक शाखा स्वायत्त शिक्षण है, जिसकी सीमाओं को सख्ती के साथ परिभाषित किया गया है, क्या वह मानविकी तथा सामाजिक विज्ञानों की अंतर्विशयक है, जैसा कि परा-अंतर्विशयक पद्धति के द्वारा उसे नियम भंग करने वाला करार दिया गया है।

उल्लंघन की संवृत्ति को पवित्र-अपवित्र, अच्छाई-बुराई, सामान्य-तर्कहीन, समझ-पागलपन, तथा निजी और सार्वजनिक आदि द्वैतवाद से जोड़कर देखा जाता है। सवाल पैदा होता है कि ये द्वैतवाद क्या उपयुक्त रूप में सदा स्थिर रहेंगे या फिर स्पष्ट विभेद के रूप में प्रकट होंगे तथा उल्लंघन तदानुसार परिभाषित होगा। क्या हम जैविक अभियंत्रिकी के जटिल परिप्रेक्ष्य में अभी भी प्राकृतिक और कृत्रिम के पुराने अंतर को बनाए रख सकते हैं? लिंग परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य में पुरुष और नारी के द्वैतवाद को कैसे देखा जाए? कलंक के विचार में अंतर्निहित अनिश्चितता मानव तथा मशीन के मध्य अंतर स्पष्ट करती है। इसी प्रकार घुमंतु यायावर पद्धति जो सरहद के ख्याल से बंधी होती है, हालांकि उसका कोई अर्थ नहीं होता मगर अवस्थिति की अवधारणा को समस्यास्पद बना देती है। 'किसी की जमीन नहीं' सीमा

और सीमा का उल्लंघन की धारणा के लिए शायद यह एक अच्छी प्रतिबंधक स्थिति होती है।

उल्लंघन के बारे में ज्यादातर अध्ययनों में उल्लंघन और प्रतिबंध, उल्लंघन और भित्ति चित्रण, नियम भंग करने वाला सिनेमा, नियमों के विरुद्ध कला, उल्लंघन तथा अपराध आदि संदर्भ देखे जा सकते हैं। इन सबमें अंतर्निहित दावे हमारे युग के सभी प्रतिबंधों के बारे में प्रश्न करते हैं। प्रश्नावली की यह विधा तथा उसके परिणामस्वरूप विघात को उल्लंघन के रूप में एक साहसिक कार्य समझा जा सकता है। आज के विचार के अनुरूप सीमा के उल्लंघन को स्वतंत्रता प्राप्ति की एक परिवर्तनात्मक इकाई के रूप में देखा जाता है। इस संगोष्ठी में उन अवधारणात्मक मुद्दों को उजागरित किया गया जो सीमा के उल्लंघन की कल्पनाशीलता से संबद्ध हैं।

संस्थान में 27-29 अक्टूबर 2014 को 'आइडिया ऑफ ट्रांसग्रेशन' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। पूर्व टैगोर अध्येता प्रोफेसर शरद देशपाण्डे इस संगोष्ठी के संयोजक थे। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर चेतन सिंह ने संगोष्ठी में स्वागत भाषण प्रस्तुत किया तथा संयोजक प्रोफेसर शरद देशपाण्डे ने संगोष्ठी की मूल विषय-वस्तु से अवगत करवाया।

प्रतिभागी

- प्रोफेसर भालचंद्र निमाडे, विजय श्री दुर्गा, सी.एच.एस. सांताक्रुज, पूर्वी मुम्बई
- डॉ. मिलंद वाकन्कर, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली
- डॉ. सौम्यव्रत चौधरी, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रोफेसर प्रजीत के. बासु, दर्शन विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद
- डॉ. परवेश जंग गोले, अध्येता, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला
- प्रोफेसर सतीश सी. एकांत, अंग्रेजी विभाग, एचएनबी गढ़वाल विश्वविद्यालय, पौड़ी
- प्रोफेसर निर्मलया नारायण चक्रवर्ती, दर्शन विभाग, रबीन्द्र भारती विश्वविद्यालय, कोलकाता
- प्रोफेसर सयेद सईद, अंग्रेजी तथा विदेशी भाषायी विश्वविद्यालय, हैदराबाद
- श्री अशोक वाजपेयी, राजा संस्थापना, सफदरजंग विकास क्षेत्र, नई दिल्ली
- डॉ. अर्निबन मुखर्जी, दर्शन विभाग, पूर्वी बंगाल विश्वविद्यालय, सिलिगुड़ी
- प्रोफेसर एम. नरसिम्हा राष्ट्रीय उच्च अध्ययन संस्थान, बंगलोर
- श्री राहुल गोरे, ओपालिस आर्किटेक्ट्स, सुंदर नगर, कलिना, मुम्बई
- श्री अनमोल वेल्लानी, आदर्श गार्डन, जयनगर, बंगलोर
- प्रोफेसर शरद देशपाण्डे, टैगोर अध्येता, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला
- प्रोफेसर उदयन मिश्रा, अध्येता, राष्ट्रीय भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला
- श्री राजेश जोशी, राष्ट्रीय अध्येता, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला
- डॉ. अल्वीना शकील, अध्येता, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला
- डॉ. योगेश स्नेही, अध्येता, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला
- डॉ. सर्वचेतन कटोच, अध्येता, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला
- डॉ. ईशा शाह, अध्येता, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला

संगोष्ठी के दौरान प्रतिभागियों ने निम्नलिखित शोध-पत्र प्रस्तुत किये गये—

विशेष व्याख्यान

श्री अशोक वाजपेयी : *क्रियेटिविटी एज ट्रांसग्रेशन*

सत्र 1

प्रोफेसर भालचन्द्र निमाडे : *बिटवीन टैक्टस एण्ड कंटैक्स : ट्रांसग्रेशन एज मीडिएशन*

प्रोफेसर सतीश एकांत : *बियॉडदी सैकरेड थ्रैड : ट्रांसग्रेशन एण्ड फ्रीडम इन यू.आर. अनंत मूर्तिज संस्कारा*

सत्र 2

डॉ. मिलंद वकलकर : *यूलघन एज आरिजनरी इन्स्टिट्यूशन ऑफ दी सोशल*

सत्र 3

डॉ. अनमोल वेल्लानी : *ट्रांसग्रेसिव आर्ट एण्ड इट्स लिमिट्स*

डॉ. सौम्यव्रत चौधरी : *रिच्युअल ट्रांसग्रेशन, हिस्ट्रोरिकल इंटरवेन्शन, एण्ड ऑन्टोलजिकल एग्जिट*

सत्र 4

प्रोफेसर प्रजीत बसु : *ट्रांसग्रेशन एण्ड (टेक्नो) साइंस*

प्रोफेसर एम. नरसिम्हन : *ट्रांसग्रेशिंग दी बैरियन : ए केस स्टडी इन डिवलपमेंट बायोलजी*

सत्र 5

प्रोफेसर निर्मलया एन. चक्रवर्ती : *नॉलेज, नोन एण्ड अननोन*

डॉ. अनिर्बान मुखर्जी : *ट्रांसग्रेशिंग दी कांस्ट्रेंट्स ऑफ एक्सट्रीमज*

सत्र 6

श्री राहुल गोरे : *नारी, गाँधी एण्ड ट्रांसग्रेसिव आर्किटेक्चर*

जसवीर सिंह चंदेल : *जीआईएस बेसड रोड नेटवर्क— एनालसिस फॉर ट्रस्टि डेस्टिनेशनस : ए केस स्टडी फॉर शिमला टाउन हिमाचल प्रदेश*

सत्र 7

प्रोफेसर सयेद सईद : *फिलॉस्फी एज/ऑफ ट्रांसग्रेशन*

डॉ. परवेश जंग गोले : *फिलॉस्फी फॉर्म इट्स मार्जिनस*

12. 'डिसप्लिन, मूवमेंट्स एण्ड पॉलिसीज : दी चेंजिंग रिलेशनशिप बिटवीन साइंस, स्टेट एण्ड सोसायटी' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी (24–25 नवंबर 2014)

मूलाधार—ज्ञान के अर्जन की विभिन्न स्थितियों के फलस्वरूप संगठनात्मक बदलाव के कारण विज्ञानों में आंतरिक परिवर्तन अधिक जटिलता के साथ प्रतिपादित किये जाते हैं। उच्च स्तरीय शिक्षण तथा शोध संस्थान सरकार के दबाव

में अनेक हिस्सेदारों तथा ग्राहकों के साथ नए सहयोगपूर्ण संबंध तथा समझौते बनाते हैं जिससे प्रमुख, तथा यदाकदा मात्र एक, वैज्ञानिक अनुसंधान के समर्थक पीछे हटते नजर आते हैं। वास्तव में विज्ञान जगत, वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी विकास तथा आंतरिक गतिशीलता के साथ सरकार के संबंध ने 'विज्ञान तथा सरकार' के अध्ययन को समस्याजनक तथा विवादित बना दिया है।

इस समस्यास्पद मुद्दे पर मंथन करने के लिए भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला में वर्ष 2012 में एक दो दिवसीय कार्यशाला में विद्वानों का एक समूह एकत्रित हुआ। इस कार्यशाला का उद्देश्य विज्ञान, सरकार तथा समाज के परस्पर संबंध शोधकर्ताओं द्वारा इस संबंध के अध्ययन के लिए प्रयुक्त सिद्धांतों का निरीक्षण व अन्वेषण करना था। उस वचनबद्धता की कार्यवाही फरवरी 2014 में 'विज्ञान की सरकार' नामक संगोष्ठी शीर्षक से उभर कर सामने आई इस विषय पर आयोजित संगोष्ठी के माध्यम से दक्षिण एशिया में विज्ञान, सरकार तथा समाज के बदलते रिश्तों पर प्रकाश डाला गया। इस संगोष्ठी में प्रस्तुत किये जाने वाले अधिकांश शोध-पत्र कृषि विज्ञान तथा कृषि जैव प्रौद्योगिकी से संबद्ध थे। अपनी-अपनी विषय वस्तु के माध्यम से शोध-पत्र प्रस्तुतकर्ताओं ने यह जानने का प्रयास किया कि लोकतंत्र तथा नागरिकों के लिए सरकार संस्थागत एवं संगठनात्मक तकनीकी विज्ञान की पद्धतियों के रूपांतर से क्या अभिप्रायः है। विद्वानों ने यह जानने का प्रयास भी किया कि विज्ञानों तथा विकास की नीति निर्माण में इन परिवर्तनों का क्या महत्त्व है तथा ज्ञान वर्धन के लिए समर्पित उच्च शिक्षण संस्थानों में ये परिवर्तन किस प्रकार रंग लाते हैं।

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान में 24-25 नवम्बर 2014 को आयोजित इस संगोष्ठी में परिप्रश्नकरण तथा अनुसंधान, मुकदमें तथा अवरोध की विभिन्न स्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए परिचर्चा की गई। पांच दशक पूर्व सवालों तथा उपागमों के बारे में अभिसरण की अत्याधिक पराकाष्ठा थी। साथ ही इसके विपरीत मेटा विमर्श में विज्ञान जगत में असंतोष तथा विभेद अत्याधिक पारदर्शिता के साथ सामने आते हैं। जिस तरह राजनीतिक वैधता की भाषा में बदलाव आया है उसी प्रकार बुनियादी तौर पर विज्ञान की सामाजिक परिकल्पना में स्वयं परिवर्तन आ चुका है। इन परिवर्तनों का ज्ञान मीमांसात्मक, संस्थागत, संगठनात्मक तथा वैचारिक स्तरों पर पहचाना जा सकता है मगर उनकी परस्पर उलझन तथा अंतर संबंधों को उल्लेखित नहीं किया जा सकता।

विवादों तथा विवादित विज्ञान के अध्ययन ने विज्ञानों की विविधता को एकता के विरोध के तौर पर प्रकट किया है। इसके अतिरिक्त तकनीकी विज्ञान की अवधारणा में उसके साधनों पर अधिक दबाव तथा उसके आंतरिक उद्देश्य की प्राप्ति हेतु व्यय की विविधता तथा विभेदन को आगे बढ़ा दिया है। फलस्वरूप इन विज्ञानों के सरकार के साथ संबंध सौहार्दपूर्ण नहीं होते हैं तथा ये संबंध देश के बाहर तथा देश के भीतर विभिन्न प्रकार की नीतियां बनाते समय प्रतिबिम्बित होते हैं। इसी तरह विज्ञानों तथा तकनीकी विज्ञानों में विज्ञान नीति निर्माण की विभिन्न संस्कृतियां हैं। तकनीकी विज्ञान की अवधारणा अपने आप में विज्ञान तथा तकनीकी के विकास में किसी खास क्षण की निर्मिति होती हैं। विज्ञानों के विकास में इन दोनों अवधारणाओं का संयोग महत्पूर्ण होता है जब ज्ञान की आदर्श मानी जानी वाली कोई अवधारणा अति प्रबल होती है और दूसरी उसका शमन न करे।

कोई भी व्यक्ति यह तार्किक दावा कर सकता है कि समान विविधता वाले सामाजिक संबंधों, नीति की संस्कृति तथा निर्णय लेने में तकनीकी विज्ञान प्रयुक्त किये जा सकते हैं। इस प्रकार प्रस्तुत शोध-पत्रों ने औषधि, स्वास्थ्य, पर्यावरण तथा संचार प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अहम योगदान दिया। जिन विविधि संदर्भों में विज्ञानों को अंतःस्थापित किया गया है उन्होंने अवधारणात्मक श्रेणियों तथा भाषाओं की संभावनाओं को जन्म दिया है। इनमें आवश्यक विज्ञान, परा-अकादमिक विज्ञान, मोड-2 विज्ञान, तिहरी कुण्डली, अकादमिक पूंजीवाद, परा-सामान्य विज्ञान, सुदृढ़ विज्ञान, सभास्थलों में विज्ञान आदि प्रमुख हैं। साफ तौर पर कहा जा सकता है कि आनुवांशिक-संचार क्रांति द्वारा ही यह परिवर्तन उत्प्रेरित हुआ है जो फलतः प्रसार तथा अस्मिताओं के नए तर्कों द्वारा सरकार, राज्य से संघ राज्य में रूपांतरित होता है। अवधारणात्मक श्रेणियों के प्रसार के बावजूद ये विज्ञान के महान्तम सामाजिकरण की ओर संकेत

करते हैं। ये अपने साथ उत्तरदायित्व, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा अन्वेषण के सवाल पैदा करते हैं जो अनेक तरह से उलझा कर रख देते हैं तथापि अन्वेषण के इर्द-गिर्द प्रभावशाली परिचर्चा नियमित रूप से बाजार की नवरचना को उद्धृत करती है। इतना ही नहीं नोवॉटी ने 1950 के दशक को समाज का वैज्ञानिक युग कहा है तथा अंत के दो दशकों को विज्ञान के समाजीकरण के अंगीकृत किया है।

यह तथ्य सामने आया है कि लोकतांत्रिक बहुलतावाद की उन्नति विज्ञान की उन्नति की उत्पत्ति तथा पुनरुत्पत्ति के लिए बहुत जरूरी है। बिडम्बना है कि हम इस उपमहाद्वीप में विज्ञान की लोकतांत्रिक संस्कृति के अप्रत्याशित पतन के साक्षी हैं। विज्ञान की सामाजिक पहुंच की लोकतांत्रिकता तथा फैलाव के साथ वैज्ञानिक समुदाय की असमर्थता ने वैज्ञानिक समुदाय में सत्तावादी प्रवृत्ति को और मजबूती प्रदान की है। कई बार तो इससे उनके वैज्ञानिक विशेषज्ञ होने के वैधतापूर्ण तथा एकमात्र दावा का भी प्रदर्शन होता है। इससे विविध ज्ञानवादी अथवा सामाजिक विकल्पों के बीच विज्ञान की निर्णायक योग्यता क्षीण होती है। विज्ञान की वर्णात्मकता में केन्द्रीयकरण मूल्य-निष्पक्षता के रूप में विज्ञान की काल्पनिकता में एक सदृश भूमिका अदा करती है। इसके अतिरिक्त वैज्ञानिक अन्वेषण अथवा विवादों के समाधान का परीक्षण निर्माण कार्य में ज्ञान के प्रकृति के सामाजिक वितरण को उजागर करने में असफल रहता है। फलस्वरूप एक नई बौद्धिक सम्पदा व्यवस्था की वैधता सामने आई है। विज्ञान के प्रसार के संदर्भ में जन विवाद विज्ञान के सामाजिककरण का प्रतीक है जिससे लोकतांत्रिक मत अदृश्य हो जाते हैं तथा विज्ञान जगत में मतभेद उत्पन्न होते हैं। इस संगोष्ठी में विज्ञान के सामाजिक परिवर्तन तथा संगठनात्मक संदर्भ में गहन परिचर्चा की गई तथा यह जानने का प्रयास किया गया कि इन परिवर्तनों के कारण किस प्रकार हमारी अवधारणाएं, श्रेणियां तथा हमारे सिद्धांत गढ़े जाते हैं और ये परिवर्तन किस प्रकार प्रतिबिम्बित होते हैं।

इच्छुक प्रतिभागियों ने निम्नलिखित विषयों पर अपना योगदान दिया—

1. विज्ञानों तथा तकनीकी विज्ञानों में नीति-निर्माण की संवर्धन : स्वास्थ्य तथा औषधि, पर्यावरण, संचार तथा ऊर्जा;
2. प्रौद्योगिकी की जानकारी, मोड-2 तथा दक्षिण एशिया में विज्ञान/प्रौद्योगिकी विज्ञान के क्षेत्र में अन्य अवधारणात्मक श्रेणियों का अध्ययन तथा शोध;
3. एक 'राष्ट्र समूह' में वैज्ञानिक उत्तरदायित्व;
4. विज्ञान के सामाजिकरण का दायरा;
5. विज्ञान जगत में लोकतांत्रिक वैविधता के लिए चुनौतियां

संस्थान में 24-25 नवंबर 2014 को 'डिसप्लिन, मूवमेंट्स एण्ड पॉलिसीज : दी चेंजिंग रिलेशनशिप बिटवीन साइंस, स्टेट एण्ड सोसायटी' विषय पर यह राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली से जाकिर हुसैन शैक्षणिक अध्ययन केन्द्र, सामाजिक विज्ञानों के स्कूल के प्रोफेसर ध्रुव रैणा इस संगोष्ठी के संयोजक थे। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर चेतन सिंह ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। प्रोफेसर ध्रुव रैणा ने संगोष्ठी के मूल विषय से अवगत करवाया।

प्रतिभागी

- डॉ. अमित सेनगुप्ता, एलजीएफ, साकेत, नई दिल्ली
- श्री ओम प्रकाश, जाकिर हुसैन शैक्षणिक अध्ययन केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. नुपुर चौधरी, जिंदल ग्लोबल लॉ स्कूल, सोनापत

- डॉ. सैयुमन चट्टोपध्याय, जाकिर हुसैन शैक्षणि अध्ययन केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- सुश्री उर्मिला ऊनिकृष्णन, जाकिर हुसैन शैक्षणि अध्ययन केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रोफेसर मोहन राव, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. लियोन मॉरेनस, स्कूल ऑफ प्लानिंग एण्ड आर्किटेक्चर, दिल्ली
- प्रोफेसर ध्रुव रैणा, जाकिर हुसैन शैक्षणि अध्ययन केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. ईशा शाह, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला
- श्री सुकुमार मुरलीधरन, अध्येता, भा.उ.अ.सं., शिमला

संगोष्ठी के दौरान प्रतिभागियों ने निम्नलिखित मूल विषयों पर अपने शोध-प्रत्र प्रस्तुत किये :

सत्र-1

अमित सेनगुप्ता : *ए काउंटर हैगमॉनिक अजैण्डा फॉर हैल्थ रिसर्च*

मोहन राव : *रिप्रोडक्टिव टूरिज्म, सुरोगैसी एण्ड दी नियो-लिबरल स्टेट इन पंजाब*

शिजू सैम : *वारुगीस : साइंस, स्टेट एण्ड डिमॉक्रसी इन दी इरा ऑफ*

बायोपॉलिटिक्स— एण्डोसल्फन सर्ववाइवर एज नॉन-पब्लिक इन केरल

सत्र-2

ईशा शाह : *साइंस बेसड रिस्क असैसमेंट : रिथिंकिंग साइंटिफिक एण्ड सोशल अप्रेजल ऑफ ट्रांसजैनेक्स*

राजेश्वरी रैना : *एग्रोनोमी एण्ड एग्रेरियन अल्टरनेटिव्स इन इण्डिया : दी डिसप्लिन एज लैस — टू बी रीड*

सत्र-3

लियोन ए मोरेनस : *डिस्सिमिलेटिंग दी स्मार्ट सिटी अप्रेजल ऑफ ट्रांसजैनेक्स*

नुपुर चौधरी : *सुप्रीम कोर्ट एण्ड टैक्नॉलजी*

सुकुमार मुरलीधरन : *सिविल सोसायटी इन दी नेटवर्क स्टेट, दी टैक्नो-पॉलिटिक्स ऑफ एंटी-पॉलिटिक्स*

सत्र-4

सैयुमन चट्टोपध्याय : *फंडिंग ऑफ साइअन्स : इमरिजिंग रिलेशनशिप बिटवीन स्टेट एण्ड सोसायटी*

अरविंद : *पॉवर पॉलिटी एण्ड एंटाइटलमेंट : पोजिस्निंग दी इण्डियन साइंटिस्ट*

मिलिंद सोहोनी : *यूनिवर्सिटी एण्ड डिवेलप्मेंट अजैण्डा*

13. बीकानेर में महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर के सहयोग से 'आधुनिक भारत के "सप्तऋषि": परम्परा, परिवर्तन तथा स्वराज' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (4-6 जनवरी 2015)

मूलाधार : प्रायः यह दलील दी जाती रही है कि भारतीय परम्पराएं विचारों की अपेक्षा प्रतिमानों के रूप में फिर से आरम्भ होती हैं। उदाहरण के तौर पर जैसे कोई अनुभव, विचार तथा आचार में परस्पर सामंजस्य स्थापित कर लेता है।'

इस त्रिक योग में अनुभव न सिर्फ सकारात्मक या संवेदक विवरण प्रस्तुत करते हैं अपितु समस्त ज्ञान की प्रत्यक्ष बोध शक्ति का भी पता चलता है जो न सिर्फ दिमागी परिकल्पना पर आधारित है। विचार अथवा बौद्धिक घटक तर्कयुक्त कार्य प्रणाली को इंगित करते हैं जो ज्ञान-अनुभव के आधार पर सामने आता है। यह दूसरों के साथ बड़ी आसानी से संपर्क में आता जाता है तथा तर्क और चेतना की कसौटी की पुष्टि करता है। आचार का तात्पर्य सिर्फ सही आचरण से ही नहीं है, अपितु समाज, राजनीति, संस्कृति तथा अर्थव्यवस्था आदि के धर्मनिर्पेक्ष तथा सामयिक क्षेत्र में एक प्रभावी इकाई तथा हस्तक्षेप से भी है। विचार के विरुद्ध प्रतिमान मुख्यतः सैद्धांतिक ज्ञान की अनुकूलता के प्रतिपादन के साथ संबंधित नहीं होते हैं मगर एक जीवन को साकार रूप देने तथा अभ्यास के लिए आवश्यक होते हैं। हालांकि विचारक विचारों की पद्धति के प्रवर्तक हो सकते हैं और इसीलिए वे ज्यादा प्रभावशाली होते हैं। वे इन विचारों को प्रतिमानों के रूप में आवश्यक नहीं होते। इस प्रकार अवधारणा स्वरूप ज्ञान प्रसार के लिए प्रतिमान समाज के किसी भी स्तर से आ सकते हैं, आवश्यक नहीं कि वे प्रशिक्षित बुद्धिजीवी हों।

इस संगोष्ठी के आयोजन के पीछे यह मान्यता थी कि आधुनिक भारतीय विचार पद्धति की अपेक्षा आदर्शयुक्त प्राचीन भारतीय विचार पद्धति में ऋषि मत एक महत्वपूर्ण प्रतिमान है। मोनियर विलियम्स के अनुसार, ऋषि शब्द से अभिप्रायः ऐसे व्यक्ति को दी गई संज्ञा से है जो पवित्र मंत्रों का उच्चारण करता हो या एक प्रभावशाली कवि या साधु हो। इससे भी महत्वपूर्ण है कि भारतीय इतिहास में 'साधुओं या संतों' का स्थान ठीक उसी प्रकार है जैसा कि अन्य देशों में नायकों तथा आदरणीय वृद्ध पुरुषों का होता है (<http://www.sanskrit-lexicon.uni-koeln.de/monier/>)। भारत में सप्तऋषियों की अवधारणा एक प्राचीन मत है। हालांकि वैदिक संहिताओं में सप्त पौराणिक मनीषियों का उल्लेख नहीं है मगर बाद के ग्रंथों *जयमीनिया ब्राह्मण* (2.218-221) तथा *बृहद्अरण्यक* उपनिषद (2.2.6) आदि में इनकी गणना होने लगी। दिलचस्प है कि जिनका बाद में उल्लेख किया गया वे पूर्व के सप्तऋषियों से भिन्न हैं मगर इस नक्षत्रमण्डल का उद्घाटन तथा परिवर्तन महाभारत काल के दौरान दिखाई पड़ता है। *बृहद्अरण्यक* उपनिषद में निहित मूल सात में से केवल तीन ही नाम शेष रह गये हैं, जबकि चार नए नाम जोड़ दिये गये हैं। यह महत्वपूर्ण है कि इन मनीषियों को समाज के स्रष्टा माना जाता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि आधुनिक भारत के निर्माता विजेता अथवा सम्राट नहीं अपितु मनीषी और पैगंबर हैं। क्या यह कहना तर्कसंगत होगा कि आधुनिक भारत का निर्माण राजनेताओं, विजेताओं तथा मंत्रियों द्वारा नहीं बल्कि साधु, संतों तथा रहस्यवादियों के द्वारा हुआ है? इस संगोष्ठी में इस मत के अन्वेषण पर मंथन करने का प्रयास किया गया कि विशेषकर आधुनिक संदर्भ में भारत निर्माण में सप्तऋषियों की उनकी परिधि से संबंधित, परस्पर संबंधों तथा विचारों एवं समाज के लिए उनके अद्वितीय अथवा विशिष्ट योगदान, इससे अधिक स्वराज अथवा स्वशासन तथा राष्ट्र निर्माण में उनकी प्रत्यक्ष व परोक्ष भूमिका किस प्रकार की रही है।

इस उद्देश्य से क्रमवार निम्नलिखित छः समूह प्रस्तुत किये गये। प्रत्येक समूह में जिन्हें एक महान व्यक्तित्व की चर्चा की गई, जिन्हें मनीषी स्वरूप माना जाता है। कुंज में के अन्य सदस्य को अधीनस्थ नहीं कहा जा सकता क्योंकि वह प्रत्यक्ष तौर पर उससे संबंधित है या फिर उससे प्रभावित हुआ है। मगर जो उस महान व्यक्तित्व के समुच्चय है उसके बारे में चर्चा की जा सकती है। दिया गया समूह-3 मुख्यतः महात्मा गाँधी से संबंधित है, जिसे सप्तसमूह का केन्द्र माना जाता है, उसमें स्वभाविक रूप से अधिक संख्या है। प्रत्येक समूह में अन्य नाम भी शामिल किये गये हैं। सातवें समूह को खुली श्रेणी में रखा गया है क्योंकि सात के समूह ने कभी भी अंतिम रूप नहीं लिया है, सिर्फ संकेतात्मक ही रहा है। साथ ही यह ध्यान योग्य है कि आधुनिक भारत के निर्माता पुरुष और स्त्री दोनों हो सकते हैं। वैदिक ग्रंथों के अनुसार पुरुषों की श्रेणी में ऋषियों को रखा गया है जिसमें स्त्रियों को सम्मिलित नहीं किया गया है। इस संगोष्ठी में जीवित किसी भी गुरु का प्रचार नहीं किया गया, मात्र निम्नांकित दिवंगत महापुरुषों को सम्मिलित किया गया है।

समूह-1

श्री रामकृष्ण (1836–1886)

शारदा माँ (1853–1920), स्वामी विवेकानंद (1863–1902), एम.एस. गोलवार्कर (1906–1973)।

समूह-2

रवीन्द्रनाथ टैगोर (1861–1941)

देवेन्द्रनाथ टैगोर (1817–1905), कदांबरी देवी (1861–1884), अबनिन्द्रनाथ टैगोर (1871–1951)।

समूह-3

मोहनदास कर्मचंद गाँधी (1869–1948)

बाल गंगाधर तिलक (1856–1920), मदन मोहन मालवीय (1861–1946), गोपाल कृष्ण गोखले (1866–1950), कस्तूरबा गाँधी (1869–1944), वल्लभभाई पटेल (1875–1950), सरोजनी नायडू (1879–1950), एम.एन. रॉय (1887–1954), जवाहरलाल नेहरू (1889–1964), बी.आर. अम्बेडकर (1891–1956), विनोबा भावे (1895–1982), सुभाष चंद्र बोस (1897–1945)

समूह-4

श्री अरबिंदो (1872–1950)

दी मदर (1978–1973), दिलीप कुमार रॉय (1997–1980), सतप्रेम (1923–2007), दीन दयाल उपाध्याय (1916–1968)।

समूह-5

श्री रामानंद महर्षि (1879–1950)

श्री आत्मानंद (1983–1959), निसारगत्ता महाराज सतप्रेम (1897–1981), रमेश बालशेखर (1917–2003)।

समूह-6

जे. कृष्णामूर्ति (1895–1986)

ऐन्नी बेसेंट (1847–1933), रजनीश (1931–1990), यू.जी. कृष्णामूर्ति (1918–2007)।

समूह-7

जे. कृष्णामूर्ति (1895–1986)

लॉर्ड स्वामी नारायण (1781–1830), शिरडी के साईं बाबा (1838–1918), स्वामी शिवानंद (1887–1963), परमहंस योगेन्द्र (1893–1952), आनंदामाई माँ (1896–1982)

बीकानेर में महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर के सहयोग से 'आधुनिक भारत के "सप्तऋषि" : परम्परा, परिवर्तन तथा स्वराज' विषय पर 4–6 जनवरी 2015 को अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली से अंग्रेजी अध्ययन केन्द्र के प्रोफेसर मकरांद आर. परंजापे इस संगोष्ठी के संयोजक थे। महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर की उपकुलपति तथा भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला की शासी निकाय की अध्यक्ष प्रोफेसर चंद्रकला पाडिया तथा संस्थान के निदेशक प्रोफेसर चेतन सिंह ने संगोष्ठी में स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। संगोष्ठी के संयोजक प्रोफेसर मकरांद ने प्रारम्भिक टिप्पणी प्रस्तुत की। महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी

विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) के कुलपति प्रोफेसर कपिल कपूर ने इस संगोष्ठी में विशेष व्याख्यान प्रस्तुत किया। इस सम्मेलन की आयोजक सचिव डॉ. प्रगति सोबती ने धन्यवाद प्रस्ताव ज्ञापित किया।

प्रतिभागी

- प्रोफेसर कपिल कपूर, कुलपति, महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)
- प्रोफेसर जगबीर सिंह, भूतपूर्व प्रमुख, पंजाबी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रोफेसर श्रवण कुमार, कैंनेडियन अध्ययन केंद्र, गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
- प्रोफेसर सुधीर कुमार, संध्याकालीन अध्ययन विभाग—एमडीआरसी, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़
- डॉ. सचिदानंद मोहंती, अंग्रेजी विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद
- प्रोफेसर कैलाश बैरल, इएफएल विश्वविद्यालय, शिलॉंग परिसर, शिलॉंग
- प्रोफेसर गोदाबळ्ळषा मिश्रा, दर्शनशास्त्र विभाग, मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई
- प्रोफेसर अजीत नारायण त्रिपाठी, सेवानिवृत्त प्रोफेसर, आईटी, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- प्रोफेसर संजय श्रीवास्तव, राजनीति शास्त्र विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- डॉ. आरती निर्मल, अंग्रेजी विभाग, वसंत महिला महाविद्यालय, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- डॉ. प्रीति सिंह, राजनीति शास्त्र विभाग, वसंत महिला महाविद्यालय, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- सुश्री निष्ठा सेक्सेना, शोध विद्वान, अंग्रेजी तथा सांस्कृति अध्ययन विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़
- डॉ. प्रदीप्ता मुखर्जी विद्यासागर महिला महाविद्यालय, कोलकाता
- प्रोफेसर विभा त्रिपाठी, एआईएचसी तथा पुरातत्व विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- प्रोफेसर सुरेश कुमार अग्रवाल, अंग्रेजी विभाग, एमजीएस विश्वविद्यालय, बीकानेर
- डॉ. नमामी शंकर आचार्य अतिथि संकाय, राजकीय महाविद्यालय डुंगर, बीकानेर
- डॉ. प्रगति सोबती, अंग्रेजी विभाग, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर सुश्री संतोश के. शेखावत, अंग्रेजी विभाग, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर डॉ. नारायण सिंह राव, इतिहास विभाग, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर
- डॉ. दिव्य जोशी, राजकीय महाविद्यालय डुंगर, बीकानेर
- डॉ. सीमा शर्मा, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर
- डॉ. बेला भनोट, एस.के.डी.एल. राजकीय कन्या महाविद्यालय, रत्नागढ़
- प्रोफेसर आनंद कुमार, रिप्रोक्टिव बायोलजी विभाग, एआईआईएमएस, नई दिल्ली
- डॉ. ब्रज रतन जोशी, राजकीय महाविद्यालय डुंगर, बीकानेर
- डॉ. अनिल कुमार छंगानी, पर्यावरण विज्ञान विभाग, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर
- डॉ. नंदिता सिंघवी, राजकीय महाविद्यालय डुंगर, बीकानेर

- डॉ. अनिल कुमार, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर
- श्री उमेश शर्मा, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर
- प्रोफेसर सतीश रॉय, राजनीति विज्ञान विभाग, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी
- डॉ. अनंत गिरि, मद्रास इन्स्टिट्यूट ऑफ डिवेलपमेंट स्टडीज, चेन्नई
- डॉ. एन.के. व्यास, राजकीय भीम महाविद्यालय, राजस्थान
- डॉ. अनिन्दता एन. बल्सलेव, संस्थापक, फोरम फॉर क्रॉस कल्चरल कंजरवेशन, डेनमार्क
- डॉ. राजेश कुमार श्रीवास्तव, राजकीय डिग्री कॉलेज देहरा, हाटा, खुशीनगर, उ.प्र.
- डॉ. विक्रम झा, इतिहास विभाग, बीजेएस रामपुरिया कॉलेज बीकानेर
- डॉ. अनुराधा बैनर्जी, वसन कन्या महाविद्यालय, वाराणसी
- डॉ. मेघना शर्मा, इतिहास विभाग, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर
- प्रोफेसर एच.पी. व्यास : भूतपूर्व उपकुलपति इंजीनियरिंग कॉलेज बीकानेर

सम्मेलन के दौरान प्रतिभागियों ने निम्नलिखित मूल-विषयों पर अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किये :

पूर्ण सत्र : इण्डियाज इंटरलैक्चुअल ट्रेंडिशन : थियोरिटिकल एन्यूंसिएशनज

प्रोफेसर मकरांद परंजापे : दी (अन)नोन महात्मा : गाँधीज लास्ट डेज एण्ड दी (अन)नोन मेकिंग ऑफ इण्डिया

सत्र-1 लैंग्वेसीज ऑफ रामाकृष्णा परमहंसा एण्ड स्वामी दयानंद

प्रोफेसर श्रवण कुमार : स्वामी दयानंद एण्ड दी इण्डियन रेनांस : ए जर्नी टूवर्ड्स सेल्फ-रूल एण्ड नेशन बिल्डिंग

डॉ. राजेश कुमार श्रीवास्तव : दी इम्पैक्ट ऑफ रामाकृष्णा ऑन दी मेकर ऑफ मॉडर्न इण्डिया

डॉ. प्रदीप्ता मुखर्जी : ए लाइफ ऑफ साइलेंट प्लेयरज-शारदा देवी

डॉ. सीमा शर्मा : रेलेवेंस ऑफ स्वामी विवेकानंदज थॉट इन मेकिंग : ए सिनॉप्टिक स्टडी

डॉ नमामी शंकर आचार्य : स्वामी विवेकानंद का शैक्षणिक चिंतन और आज का भारत

सत्र-2 रिटार्विंग दी इण्डियन ट्रेंडिशन : रवीन्द्रनाथ टैगोर एण्ड फैमिली

डॉ अनुराधा बैनर्जी : रवीन्द्रनाथ टैगोर : कोहेसन ऑफ थॉट एण्ड एक्शनस

डॉ. सदानंद शाही : रवीन्द्रनाथ टैगोर और गाँधी का स्वराज (असहमतियों के बीच संवाद का आदर्श)

सत्र-3 इग्निटिंग दी सोल ऑफ नेशन : महात्मा गाँधी एण्ड हिज कंटैम्परेरीज

प्रोफेसर कैलाश बैरल : ऋषिवाद एण्ड गाँधी : ट्रेंडिशन एण्ड स्वराज

प्रोफेसर रघुवेन्द्रा प्रताप सिंह : गाँधी ऑन ट्रेंडिशन, चेंज एण्ड मॉडर्निटी इन इण्डिया : प्लूरस्टिक परस्पैक्टिव ऑन दी नेशन ऑफ 'दी अदर्स'

प्रोफेसर अजीत त्रिपाठी एण्ड डॉ. विभा त्रिपाठी : सप्तऋषिज ऑफ मॉडर्न इण्डिया : ट्रेंडिशन, चेंज एण्ड स्वराज

प्रोफसर सतीश राय : महात्मा गाँधी : भारतीय राष्ट्र निर्माण की चिंतन धाराओं का संगम

प्रोफेसर नरेश दधीचि : महात्मा गाँधी एण्ड इण्डियन हैरिटेज : इन्फ्लूएंस एण्ड इन्फ्लूएंसड

प्रोफेसर संजय श्रीवास्तव : सत्याग्रह : दी गाँधियन मैथड ऑफ कन्फ्लिक्ट रेजूलेशन एण्ड पीस

डॉ. नारायण सिंह राव : रोल ऑफ महात्मा गाँधी एण्ड नेताजी सुभाष सी. बोस टूर्वर्डस दी राइज एण्ड ग्रोथ ऑफ फेमिनाइज्ड नेशनलिज्म इन इण्डिया (1915–1947 ए.डी.)

सुश्री संतोश के. शेखावत एवं डॉ. प्रगति सोबती : अंडरस्टैंडिंग सरोजनी नायडू : परस्पैक्टिवस ऑन ट्रेडिशन, चेंज एण्ड स्वराज

डॉ. प्रीति सिंह : ए डॉयलॉग बिटवीन गाँधी 'दी आइडियालॉग' एण्ड कस्तूरबा 'दी एग्जाम्पलर' : ए रिफ्लैक्शन ऑन आश्रम लाइफ

डॉ. ब्रज रतन जोशी : महात्मा गाँधी और मनवेन्द्रनाथ राय : परम्परा, परिवर्तन तथा स्वराज

समानांतर सत्र :

डॉ. बेला भनोट : गाँधी एवं तिलक के चिंतन में 'स्वराज' का क्रियात्मक पक्ष : युग धर्म की आवश्यकता

डॉ. रशमी रॉय : दी इम्पैक्ट ऑफ महात्मा गाँधी ऑन सरोजनी नायडूज स्ट्रगल फार वूमेनज राइडस

डॉ. नंदिता सिंघवी : महात्मा गाँधी का प्रयोगात्मक नेतृत्व, स्वतंत्रता एवं नवभारत का निर्माण

डॉ. विक्रम झा : स्वराज : ए कम्पैरेटिव व्यू ऑफ तिलक एण्ड गाँधी

डॉ. निश्ता सैक्सेना : टूर्वर्डज स्वराज : सिचूएटिंग गाँधी एण्ड अम्बेडकर इन दी कंटेम्परेरी डिस्कोर्स ऑफ कल्चरल स्टडीज

डॉ. मेघना शर्मा : सोशल एक्शन प्लान एण्ड कम्युनिटी लीडरशिप इन मॉडर्न इण्डिया : विद स्पेशल रेफरेंस टू गाँधी एण्ड विनोबा भावे

डॉ. अनिल दुलर एवं श्री उमेश शर्मा : इम्पैक्ट ऑफ भगवद्गीता ऑन गाँधी एण्ड हिज कंटेम्परेरीज

सत्र-4 : ऐंटरिंग इनटू दी रीलम ऑफ डिवाइन : श्री अरबिंदो एण्ड हिज फालोअरस

प्रोफेसर सचिदानंद मोहंती : श्री अरबिंदो दी एग्जैम्पलर

प्रोफेसर सुधीर कुमार : ऑन चिटी (यूनिटी ऑफ बींग और दी स्पिरिट ऑफ द नेशन) : रिविजिटिंग दीन दयाल उपाध्यायज डिस्कोर्स ऑन कल्चर एण्ड सोसायटी

प्रोफेसर आनंद कुमार : दी कनवरजेंस ऑफ दी साइंटिफिक एण्ड स्प्रिचुअल नॉलेज : श्री अरबिंदो ऑन सा. इंटिफिक नॉलेज

डॉ. अनंत गिरि : गाँधी एण्ड श्री अरबिंदो

डॉ. विनीता चन्द्रा : मैन एण्ड सोसायटी इन दी फिलॉसफी ऑफ श्री अरबिंदो

सत्र-5 : डिसकवरिंग सेल्फ—श्री रमण महर्षि, कृष्णामूर्ति एण्ड रजनीश

प्रोफेसर गोदाबन्धु : रामाकृष्ण एण्ड रमणा : प्रोफाइलिंग दी एम्पायरिकल सोजर्न ऑफ दी सेल्फ—लेस सेल्वस

डॉ. दिव्या जोशी : *मिरीअड डाइमेंशनज ऑफ स्प्रिचूअलिटी : एन एनकाउंटर विद रमण महर्षि*

डॉ. आरती निर्मल : *ए क्वेस्ट विदइन द सोअल : मॉडर्न क्राइसिस एण्ड एजूकेशनल फिलॉसफी ऑफ जिद्दु कृष्णामूर्ति*

सत्र-6 : स्प्रिचुअल आइकॉन ऑफ इण्डिया

प्रोफेसर सुरेश कुमार अग्रवाल : *आचार्य महाप्रज्ञा : मेकिंग ऑफ 'राष्ट्र' (नोबल नेशन)*

डॉ. अनिल छंगानी तथा डॉ. प्रगति सोबती : *रोल ऑफ जंभोजी इन इन्चायरनमेंटल कंजरवेशन*

सत्र-7 : स्वराज : दी अनफिनिशड अजैण्डा

प्रोफेसर अनिन्दता बालसदेव : *व्हाई मस्ट वी कैरी फारवर्ड दी 'अनफिनिशड' प्रोजैक्ट ऑफ स्वामी विवेकानंद?*

प्रोफेसर ए.के. सिंह : *फिलॉसफी इनटू एक्शन : स्वामी विवेकानंदज आइडिअलस ऑफ रिन्यूनसिएशन एण्ड सर्विस एण्ड देयर प्रैक्टिस बाई एकनाथ रॉनाडे*

संदर्भ

1. सर्वप्रथम यह विभेद के.जे. शाह द्वारा प्रस्तुत किया गया जो कर्नाटक विश्वविद्यालय, धनवाड़ में दर्शनशास्त्र पढ़ाते थे तथा विट्टगैन्स्टेन के शिष्य थे। इस मत का प्रयोग उनकी पुत्री अनुराधा वीरावल्ली ने वर्ष 2000 में दिल्ली विश्वविद्यालय में जमा की गए अपने पीएचडी के शोध में किया गया। इस संदर्भ में राघवेन्द्र राव का अप्रकाशित शोध-पत्र *दी एग्जाम्पर वर्सेस दी आइडियलॉग : दी इश्यूज ऑफ फ्रैंड्स एण्ड फोज* भी उल्लेखनीय है। यह शोध-पत्र सर्वप्रथम भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान द्वारा नई दिल्ली में 21-22 मार्च 1996 में आयोजित संगोष्ठी *इंटरपरटेशन ऑफ गाँधी* के दौरान वितरित किया गया था। आधुनिक भारत के सप्तऋषि का विचार पहली बार भारत के प्रख्यात समकालीन दार्शनिक स्वर्गीय प्रोफेसर रामचंद्र गाँधी (1937-2007), द्वारा उद्घाटित किया गया था।
2. सतापता ब्राह्मण (14.5.2.6) में सप्तऋषियों का विवरण इस प्रकार है— गौतम, भारद्वाज, विश्वामित्र, जमदग्नि, वशिष्ठ, कश्यप तथा अत्री। महाभारत में सात के अलावा मृरिचि, अंगीरस, पुलाह, कृतु, पुलस्तय काल्पनिक ऋषियों का वर्णन भी है और उन्हें प्रजापति या प्रवर्तक भी कहा गया है। ज्योतिष शास्त्र में सप्तऋषि की अवधारणा तारामण्डल से उद्भूत है। यह भी उल्लेखनीय है कि वैदिक ऋषियों में अधिकांश स्त्रियां थीं, जिनमें रोमाशा, लोपमुद्रा, अपाला, कादरू, विस्ववारा, घोशा, जुहू, वगंभऋणि, पॉलोमी, यामी, इन्द्राणी, सवित्री तथा देवायाणी प्रमुखा हैं। मोनेर विलियम ने सुझाया है कि बाद का संदर्भ प्राचीन साधु और बुद्ध पुरुष से अवतरित है। स्वामी विवेकानंद ने ऋषियों को 'मंत्र-द्रष्टा' या 'विचार मनीषी' 'वक्ता' या 'ग्रंथ रटने वाले' नहीं (सीडब्ल्यू 3: 283)।

14. 'क्या कोई पर्याप्त न्याय सिद्धांत है?' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी (20-21 मार्च 2015)

मूलाधार— सामाजिक-राजनैतिक दर्शन के क्षेत्र में कई विवादास्पद न्याय सिद्धांत हैं तथापि उनमें से कुछ सिद्धांत बाकि सिद्धांतों की अपेक्षा हमारी सैद्धांतिक और राजनीतिक विचारधारा पर अत्याधिक प्रभाव डालते हैं। हमारे युग में मुख्य सैद्धांतिक विवाद न्याय की अवधारणाओं के बीच है जो प्रयोजन की दृष्टि से सार्वभौमिक हैं तथा रचनात्मक तौर पर ऐतिहासिक और जिन्हें ऐतिहासिक तौर पर परिभाषित किया गया है। क्रियात्मक स्तर पर दोनों ने न्याय सुनिश्चितता के लिए सीमाएं निर्धारित कर रखी हैं तथा कुछ हद तक दबाव भी डाल रखा है।

उदारवादी विशेषकर अमेरिकी राजनीतिक विचारक जॉन राल्स का न्याय सिद्धांत तार्किक सुझाव देता है कि यदि गैर-दार्शनिक प्रवृत्ति को हटा दिया जाये तो न्याय का सिद्धांत पूरे विश्व में मान्य होगा। दूसरी तरफ हमारे पास सामाजिक न्याय की जन अवधारणा है जो इस अवधारणा को उसकी ऐतिहासिक लाक्षणिकता के रूप में इसकी सार्वभौमिकता को कम आंकता है। वास्तव में ऐतिहासिक लाक्षणिकता ही सामाजिक न्याय की सार्वभौमिक अवधारणा

के लिए एक पृष्ठभूमि का निर्माण करती है मगर भारतीय संदर्भ में जन अभिमत की अवधारणा तथा इसकी पृष्ठभूमि के मध्य आवश्यक दार्शनिक संबंध को खारिज किया जाता है। यह प्रमाणिक है कि न्याय की अवधारणा सामाजिक ढांचे में फंसकर रह जाती है, जैसा कि सच्चर समिति की रिपोर्ट में यह तथ्य सामने आया है। भारत जैसे देश में सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य प्रभावी न्याय सिद्धांत को चुनौती देते हैं जो मात्र रॉल्स के सिद्धांत से संबद्ध हैं। इसके अतिरिक्त लगातार हाशिये और दीनहीन जीवन जी रहे कुछ समुदायों ने भी न्याय की सार्वभौमिक अवधारणा की सीमाओं को उजागर किया है। बाहरी कारकों का दबाव उदाहरणतः बदतर जीवन स्तर के कारण ये समूह न्याय की वैकल्पिक राजनैतिक अवधारणाओं की ओर रुख करने पर मजबूर हैं।

दूसरी ओर न्याय की उदारवादी अवधारणा समाज की कल्याणकारी योजनाओं की पद्धतियों की समीक्षा करने का अवसर भी प्रदान करती है। सरकार की इस क्षमता का मूल्यांकन उनके सफल क्रियान्वयन के लिए आवश्यक है। इस प्रकार लोकतंत्र, बहुवाद तथा संस्थागत मशीनरी एक संयुक्त प्रणाली का रूप धारण कर न्याय एक सिद्धांत के रूप में क्रियाशील हो जाता है। विरोधात्मक रूप से न्याय का एक सार्वभौमिक वितरण सिद्धांत अपने ढांचागत रास्ते विशेषकर नीति पैकेज रूप में अपने विपरीत अन्याय पैदा कर देता है। इस प्रकार अन्याय की परिस्थिति न्याय के मूल सिद्धांत के लिए एक आंतरिक दशा बनकर जाती है। न्याय की अवधारणा पर आधारित इस विचार-गोष्ठी में सार्वभौमिक तथा विशेष रूप से अनसुलझे विवादों पर चर्चा की गई और साथ ही न्याय और अन्याय के बारे में विस्तार से विमर्श किया गया।

इस प्रकार इस सामान्य समस्यास्पद अवधारणा के मद्देनज़र इस संगोष्ठी में निम्नलिखित मुद्दों पर सारगर्भित चर्चा की गई—

प्रथम— न्याय की पर्याप्त अवधारणा क्या है? क्या न्याय की एक अवधारणा हो सकती है? क्या हम एक विस्तृत न्याय की अवधारणा की कल्पना कर सकते हैं?

द्वितीय— क्या राजनीति दर्शन के क्षेत्र में खासकर वर्तमान समय में कभी न्याय की ऐसी अवधारणा रही है?

तृतीय— इसकी न्यूनतम व्याख्या की क्या सीमाएं हैं? क्या भारतीय परिप्रेक्ष्य में आज भी यह परिस्थितियां मौजूद हैं?

संस्थान में 20-21 मार्च 2015 को “क्या कोई पर्याप्त न्याय सिद्धांत है?” विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। राजनीति अध्ययन केन्द्र, स्कूल ऑफ सोशल साइंसिस, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के प्रोफेसर गोपाल गुरु तथा संस्थान की अध्येता डॉ. अल्वीना शकील इस संगोष्ठी के संयोजक थे। स्वागत भाषण संस्थान के निदेशक प्रोफेसर चेतन सिंह ने प्रस्तुत किया तथा संगोष्ठी के संयोजक प्रोफेसर गोपाल गुरु ने संगोष्ठी की मूल विषय-वस्तु से अवगत करवाया।

प्रतिभागी—

- डॉ. प्रसेनजीत बिसवास, दर्शन, नॉर्थ-ईस्ट विश्वविद्यालय, शिलाँग
- डॉ. तनवीर फज़ल, सेंटर फॉर दी स्टडी ऑफ सोशल सिस्टमस, स्कूल ऑफ सोशल साइंसिस, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रोफेसर गुरप्रीत महाजन, सेंटर फॉर पॉलिटिकल स्टडीज, स्कूल ऑफ सोशल साइंसिस, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रोफेसर प्रदीप गोखले, तिब्बतियन अध्ययन केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सारनाथ, वाराणसी
- प्रोफेसर पार्था चटर्जी, सेंटर फॉर स्टडीज इन सोशल साइंसिस, कोलकाता

- प्रोफेसर सुंदर सरोकाई, मणिपाल सेंटर फॉर फिलॉसफी एण्ड ह्यूमैनिटीज, मणिपाल विश्वविद्यालय, कर्नाटक
- प्रोफेसर सोभनलाल दत्ता गुप्ता, सेवानिवृत्त प्रोफेसर, राजनीति शास्त्र विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल
- डॉ. समीर बैनर्जी, गारदी अपार्टमेंट, टाटा सिल्क फार्म, बंगलोर
- डॉ. अर्शद आलम, सेंटर फॉर दी स्टडी ऑफ सोशल सिस्टमस, स्कूल ऑफ सोशल साइंसिस, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- प्रोफेसर अशोक आचार्य, राजनीति शास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- डॉ. पारथासारथी मोंडल, सेंटर फॉर सोशल थियोरि, स्कूल ऑफ डिवेलपमेंट स्टडीज, टाटा इन्स्टिट्यूट ऑफ सोशल साइंसिस मुम्बई
- डॉ. आर. उमा महेश्वरी, अध्येता, भा.उ.सं. शिमला
- डॉ. संजीव मुखर्जी, राजनीति शास्त्र विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय
- डॉ. मैदुल इस्लाम, राजनीति शास्त्र विभाग, प्रेजीडेंसी विश्वविद्यालय कलकत्ता
- डॉ. धनवंती नायक, स्कूल ऑफ कम्यूनिकेशन, मणिपाल विश्वविद्यालय, कर्नाटक
- प्रोफेसर गोपाल गुरु, सेंटर फॉर पॉलिटिकल स्टडीज, स्कूल ऑफ सोशल साइंसिस, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. अल्बीना शकील, अध्येता, भा.उ.अ.सं. शिमला

प्रतिभागियों द्वारा संगोष्ठी के दौरान निम्नलिखित विषय-वस्तुओं पर शोध-पत्र प्रस्तुत किये गये-

सत्र 1

प्रोफेसर पारथा चटर्जी : *आउटलाइन ऑफ ए पोस्ट-कलोनिअल थियोरि ऑफ जस्टिस*

प्रोफेसर सुन्दर सरूकाई : *रेशनेलिटी ऑफ जस्टिस*

सत्र 2

प्रोफेसर गुरप्रीत महाजन : *बियांड रॉल्स : व्हाई डू वी नीड दी एनसिएंट?*

प्रोफेसर सोभनलाल दत्ता गुप्ता : *माक्स एण्ड जस्टिस : रिव्यूइंग ए कंटेस्टेड इश्यूज*

सत्र 3

डॉ. अर्शद आलम : *जस्टिस फॉर वूमन : सच्चर कमेटी रिपोर्ट एण्ड रिजर्वेशन फॉर मुस्लिमस*

डॉ. पारथासारथी मोंडल : *'इण्डियन' सेकुलरिजम : पॉलिटिकल फिलॉसफी थ्रेटनस सोशल जस्टिस?*

सत्र 4

प्रोफेसर प्रदीप पी. गोखले : डॉ. अम्बेडकरज परस्पैक्टिव ऑन जस्टिस : *इट्स डायनामिक एण्ड डायलैक्टिकल ऐस्पैक्ट्स*

डॉ. प्रसेनजीत बिसवास : *रि-सिगनिफिकेशन एज दी मूवमेंट : गोपाल गुरुज थियोरि ऑफ एडिक्वेसी ऑफ ए थियोरि ऑफ जस्टिस*

सत्र 5

डॉ. संजीव मुखर्जी : एन अदर थियोरि ऑफ जस्टिस

डॉ. समीर बैनर्जी : एडिक्वेट जस्टिस एण्ड दी फैंकंडिटी ऑफ च्वाइस फ़ैक्टर

सत्र 6

डॉ. तनवीर फज़ल : डिक्न्स्ट्रक्टिंग आर्टिकल 341 : इम्पलिकेशनस फॉर ए थियोरि ऑफ जस्टिस

डॉ. अल्बीना शकील : वूमैनज आजादी : दी यूनिवर्सल/पार्टिकुलर पैराडॉक्स ऑफ जस्टिस

डॉ. आर. उमा महेश्वरी : 'आउटीज' ऑफ दी कंटैम्परेरी सिस्टम : अंडरस्टैंडिंग डिस्प्लेसमेंट एण्ड आडिया ऑफ जस्टिस

सत्र 7

डॉ. अशोक आचार्य : ग्लोबलाइजिंग जस्टिस अंडर नॉन-आडियल कंडीशनस

डॉ. मैदुल इस्लाम : दी एल्यूसिव यट नेसेसरी आडिया ऑफ जस्टिस

वार्तालाप का सारांश

प्रोफेसर गोपाल गुरु

घ. अध्येताओं द्वारा प्रस्तुत साप्ताहिक संगोष्ठियां

संस्थान के अध्येताओं द्वारा साप्ताहिक संगोष्ठियां प्रस्तुत की जाती हैं जिनमें संस्थान के अन्य अध्येता, सह-अध्येता तथा हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के प्राध्यापक भाग लेते हैं। ये संगोष्ठियां संस्थान के अध्येताओं की शोध परियोजनाओं पर आधारित होती हैं तथा अन्य विद्वानों के साथ औपचारिक अंतःक्रिया का अवसर प्रदान करती है। आलोच्य वर्ष 2014-15 के दौरान अध्येताओं द्वारा निम्नलिखित संगोष्ठियां प्रस्तुत की गईं :

- डॉ. शिवानी चोपड़ा हिन्दी की आरम्भिक कथाएं—अर्द्धकथानक और सरला एक विधवा की आत्म जीवनी का स्त्री दृष्टि से मूल्यांकन (3 अप्रैल 2014)
- डॉ. प्रदीप फैन्जोबम नार्थ ईस्ट क्वेश्चन : बर्थ रेंज ऑफ ए जियोग्राफीकली एण्ड साइकॉलजीकली मैरुंड रीजन (14 अप्रैल 2014)
- डॉ. एकांक्षी रे मित्रा लेटर विट्टगेंस्टेन ऑन दी प्राइमैसी ऑफ एक्शन (17 अप्रैल 2014)
- डॉ. अरुणा बोमारेड्डी ऑफ दी नैरेटिव (24 अप्रैल 2014)
- श्री अर्णव चैटर्जी इज दी पर्सनल बियाँड प्राइवेट एण्ड पब्लिक? ए कन्ट्रीब्यूशन टू सोशल थियोरी एण्ड प्रैक्टिस (01 मई 2014)
- डॉ. अनिरुधा चौधरी सिंगुलर/फिनाइट हिस्ट्री: टूवर्डस ए पोस्ट-मैटाफिजिकल फिलॉस्फी ऑफ हिस्ट्री (01 मई 2014)

- डॉ. आर. उमा महेश्वरी रीडिंग हिस्ट्री विद दी तमिल जैनस : लोकेटिंग आइडेंटिटी, मेमोरी एण्ड मार्जनलाइजेशन इन हिस्टोरियोग्राफी (08 मई 2014)
- प्रोफेसर के.जी. पॉलस टैक्सट एण्ड परफॉर्मेंस : दी इंटरप्रेटिव एण्ड नैरेटिव ट्रैडिशन ऑफ इण्डियन थियेटर (15 मई 2014)
- डॉ. ईशा शाह अफैक्टिव हिस्ट्री आफ दी गेने (22 मई 2014)
- डॉ. अलबीना शकील न्योलिबरेलिजम, मिडल क्लासिस एण्ड दी इंगलिश नॉवेल इन इण्डिया (22 मई 2014)
- डॉ. सर्वचेतन कटोच रिइमेजिंग दी नेशन : ए स्टडी ऑफ दी रिप्रेजेंटेशनस ऑफ दी नेशन इन 21^व सेंचुरी हिन्दी सिनेमा (29 मई 2014)
- डॉ. योगेश स्नेही पॉपुलर सूफी भाराइनस इन कंटेम्परेरी पंजाब : मार्जिनिलिटी, आ. इडेंटिटीज एण्ड डिसेंट (29 मई 2014)
- डॉ. राजीव कुमारकंडथ सोशल (पॉवर) हिस्ट्री (नॉलेज) एण्ड पॉपुलर मैमोरीज : दी फ्रैक्चरड हिस्ट्री ऑफ थ्यरिकुटी (05 जून, 2014)
- प्रोफेसर राधावल्लभ त्रिपाठी थियोरी एण्ड प्रैक्टिस ऑफ वेदा (डिवेट) इन इण्डियन ट्रैडिशनज ऑफ साइंटिफिक एण्ड फिलॉसफिकल डिस्कोर्स एण्ड इटस रेले. वैंस टूडे (05 जून, 2014)
- डॉ. परवेश गोले जंग रीजन एण्ड ऑटनोमी : डिसकॉर्डेंट हारमॉनी (12 जून, 2014)
- श्री राजेश जोशी कविता का नगर : स्वतंत्रोत्तर हिन्दी की नगर कविता और नगर के साथ उसके संबंध (19 जून, 2014)
- प्रोफेसर डी.एन. धनाग्रे सलैक्टिव एप्रोपरिएशन ऑफ जैण्डर डिस्कोर्स – दी महिला अघादी ऑफ दी फारमरज मूवमेंट इन महाराष्ट्र 1980 टू 1994 (26 जून, 2014)
- श्री सुकुमार मुरलीधरन डिवेलपमेंट एण्ड दी डिस्पोरशनैलिटी : रिविजिटिंग दी च्वाइस टै. क्नॉलनी क्वेश्चन (03 जुलाई, 2014)
- प्रोफेसर शरद देशपाण्डे 'कन्वर्सिंग अबाउट कन्वरसेशन' एण्ड 'कन्वर्सिंग विद टैगोर' (26 जून, 2014)
- डॉ. एन. मालेमंगनवा मितैय आर्मड फोरसिस स्पेशल पॉवरस एक्ट एण्ड प्रोटैस्ट इन मणिपुर (17 जुलाई, 2014)
- प्रोफेसर उदयन मिश्रा पार्टीशन पॉलिटिक्स एण्ड असम : अनरिजॉलब्ड इश्यूज (31 जुलाई, 2014)
- प्रोफेसर बी.डी. चट्टोपध्याय अंडरस्टैंडिंग वाल्मीकिज रामा : ए हिस्टोरियनज अप्रोच (07 जुलाई, 2014)
- डॉ. आर्यक गुहा दी लैशन ऑफ साधु कालाचंद : पैडागोजी एण्ड डैलिनक्वेंसी इन दी पोस्टकॉलनी (14 अगस्त, 2014)

- प्रोफेसर मीना अलैजैण्डर पोयट्री, लैण्डस्केप, हिस्ट्री (21 अगस्त, 2014)
- श्री अर्णव चैटर्जी हरबैरमस एण्ड सोशल वर्क एथिक्स : क्लोजिंग ए सिक्स ईयर लॉग डिबेट (29 अगस्त 2014)
- डॉ. अनिरुधा चौधरी सिंगुलर हिस्ट्री : फिनिच्यूट, टैम्परेरली एण्ड हिस्ट्रोरिसिटी इन अर्ली हैडेग्गर (04 सितंबर 2014)
- डॉ. ईशा शाह कू इज द साइंटिस्ट-सब्जेक्ट? (18 सितंबर 2014)
- डॉ. अलबीना शकील मेकिंग सेन्स ऑफ चेतन भगत (25 सितंबर 2014)
(22 मई 2014)
- डॉ. सर्वचेतन कटोच रिइमेजिंग दी नेशन : इंटरोगेटिंग दी रिसरजेंस ऑफ स्वराज इन 21st सेंचुरी हिन्दी सिनेमा (09 अक्टूबर 2014)
- डॉ. योगेश स्नेही सिचुएटिंग पॉपुलर वैनरेशन इन : (16 अक्टूबर 2014)
- डॉ. शिवानी चोपड़ा प्रेम, सुरक्षा और स्वायत्ता का सवाल : आत्मकथाओं में व्यक्त रचनात्मक जीवन (13 नवंबर 2014)
- डॉ. एकांक्षी रे मित्रा रिकॉस्टिंग लेटर विट्गेंस्टेनज एण्टी-फाउंडेशनलिस्ट अप्रोच टू एक्शन : इन टर्मस ऑफ स्पेस एण्ड टाइम (20 नवंबर 2014)
- डॉ. वर्षा गांगुली कल्चर ऑफ प्रोटैस्ट एण्ड राइट ऑफ सिटिजनस इन गुजरात : इम्पैक्ट, ट्रेंडस एण्ड चैलेंजिस (27 नवंबर 2014)
- डॉ. अरुणा बोमारेड्डी तेलगु कांशसिन्नेस (05 दिसंबर 2014)
- प्रोफेसर ए. अच्युतन ए स्टडी ऑफ दी फोक ड्रामाटिक ट्रैडिशन ऑफ इण्डिया : एण्ड दलित कांसियसनेस (05 दिसंबर, 2014)
- डॉ. राजीव कुमारकंडथ सोशल (पॉवर) हिस्ट्री (नॉलेज) एण्ड पॉपुलर मेमोरीज : दी फ्रैक्चरड हिस्ट्री ऑफ थ्यरिकुट्टी (09 दिसम्बर, 2014)
- डॉ. आर. उमा महेश्वरी रीडिंग हिस्ट्री विद दी तमिल जैनस : दी मिसिंग तमिल जैनस इन तमिल एण्ड लैंग्वेज एण्ड आइडेंटिटी डिस्कोर्स (11 दिसंबर 2014)
- सुश्री सौम्य शर्मा कंजर्विंग कल्चरल हैरिटेज ऑफ हिमाचल प्रदेश (19 मार्च 2015)
- डॉ. कौस्तव चक्रवर्ती सोसियो-कल्चरल स्टडी ऑफ दी नॉन-नॉर्मेटिव एक्सप्रेसनज इन सलैक्ट ट्राइबल फोक-लिट्रेचर ऑफ नॉर्थ बेंगाल (19 मार्च 2015)
- डॉ. एन. मालेंगंबा मैतई कन्स्ट्रक्शन ऑफ प्लान एज ए फॉर्म ऑफ ऑर्गनाइजेशन एण्ड प्रोटेस्ट अगेन्स्ट एएफएसपीए : ए स्टडी ऑफ कॉम्मेमोरेटिव मेमो. रियलज एण्ड रिचलस (24 मार्च 2015)
- श्री सुकुमार मुरलीधरन डिवेलपमेंट एण्ड डिस्प्रोपोर्शनेलिटी दी च्वाइस ऑफ टैक्नॉलजी क्वेश्चन (26 मार्च 2015)

• प्रोफेसर एम.टी. अंसारी

कंपैरेटिव इण्डियन लिट्रेचर (31 मार्च 2015)

ड. अध्येताओं से प्राप्त पाण्डुलिपियां

• प्रोफेसर प्रियमदा सरकार

एट द थ्रैसहोल्ड ऑफ लैंग्वेज एण्ड मीनिंग : अली विट्टगैस्टेन एण्ड रवीन्द्रनाथ टैगोर (01 अप्रैल 2014)

• श्री प्रदीप फेंजोमन

नॉर्थ-ईस्टक्वेश्चन : बर्थ पेंगस ऑफ ए जियोग्राफिकली एण्ड साइ. कालजिकली मैरुंड रीजन (21 अप्रैल 2014)

• डॉ. एनाक्षी मित्रा

लेटर विट्टगैस्टेन ऑन लैंग्वेज एण्ड मैथेमैटिक्स : ए नॉन-फाउंडेशनल नैरेशन (05 मई 2014)

• डॉ. अलैकजैंडरा वेंटा

डांसिंग इन द स्काई ऑफ कांसिनेस दी कन्स्ट्रक्शन (02 सितंबर 2014)

• प्रोफेसर डी.एन. धनाग्रे

पॉपुलिज्म एण्ड पॉवर-फारमरस मूवमेंट इन महाराष्ट्रा- 1980-2014 (04 सितंबर 2014)

• श्री जसवीर सिंह

इण्डियाज कन्सिट्रूशनल डिमॉक्रसी एण्ड विक्टिमस ऑफ सो. सियो-इकनॉमिक इनजस्टिस (विद स्पेशल रेफरेंस टू दी एग्रीकल्च. रल एज वर्कस इन इण्डिया) (23 सितंबर 2014)

• प्रोफेसर शरद देशपाण्डे

कन्वर्सिंग दी टैगोर : टूवर्ड्स ए रिकन्साइल्ड यूनिवर्सल एण्ड ह्यूमन प्लोरशिंग (05 नवंबर 2014)

• प्रोफेसर मीना अलैगजैंडर

ड्रीमिंग इन शिमला : लैटरस टू माई मदर (01 दिसम्बर 2014)

• डॉ. वर्षा गांगुली

कल्चर ऑफ प्रोटैस्टस एण्ड राइट्स ऑफ सिटिजन इन गुजरात : ट्रेंड्स, इम्पैक्ट एण्ड चैलेंजिस (10 दिसम्बर 2014)

• प्रोफेसर राधावल्लभ त्रिपाठी

वेदा इन थियोरी एण्ड प्रैक्टिस स्टडीज इन डिबेट्स, डॉयलॉग्स एण्ड डिस्कोर्स इन इण्डियन इंटरलैक्चुअल डिस्कोर्सिस (09 फरवरी 2015)

• डॉ. ऐनाक्षी रे मित्रा

ऑन दी क्वैस्ट फार रेफरेंस (16 फरवरी 2015)

• डॉ. अरुणा बोम्मारेड्डी

नेरेटिव ट्रैडिशनस ऑफ ए तेलगु एपिक, पलनेटिविरुला कथा (04 मार्च 2015)

• डॉ. मैदुल इस्लाम

इण्डियन मुस्लिमस इन दी ग्लोबलाइज्ड वर्ल्ड (10 मार्च 2015)

• डॉ. राजेश जोशी

कविता का शहर (30 मार्च 2015)

च. आगन्तुक प्राध्यापक

1. कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से इतिहास के प्रोफेसर के.एल. टुटेजा (1-30 अप्रैल 2014) ने निम्नलिखित व्याख्यान प्रस्तुत किए—

- लाजपत रॉयस परस्पैक्टिव ऑन कम्युनिटी एण्ड नेशन : एन इंटरप्रेशन (08 अप्रैल 2014)
 - हिन्दू डिस्कोर्स इन लेट कलोनियल पंजाब (16 अप्रैल 2014)
 - हिन्दू कांशस्मिन्स एण्ड राइटिंग ऑफ हिस्ट्री इन अर्ली ट्वेंटीअथ सेन्चरी (25 अप्रैल 2014)
2. मानव विकास तथा परिवार अध्ययन, महाराजा सयाजीराव, विश्वविद्यालय बड़ोदरा से भूतपूर्व प्रोफेसर टी.एस. सरस्वती (1-30 जून 2014) ने निम्नलिखित व्याख्यान प्रस्तुत किये—
- इकॉलजी ऑफ एडॉलसेंस इन इण्डिया : कैलेडोस्कोपिक इमेजिस (9 जून 2014)
 - कल्चर एण्ड डिवेलपमेंट : इम्पलिकेशनस फार साइकॉलजी इन इण्डिया (17 जून 2014)
 - कन्स्ट्रक्शन ऑफ लैण्डस्केपस ऑफ नॉलेज : एट मल्टी लेवल्स विद मल्टीपल मैथड्स (27 जून 2014)
3. अंतर्विषयक स्वास्थ्य विज्ञान स्कूल, पुणे विश्वविद्यालय, पुणे के प्रोफेसर तथा निदेशक प्रोफेसर भूषण पटवर्द्धन ने निम्नलिखित व्याख्यान प्रस्तुत किए—
- कॉन्सेप्ट ऑफ हैल्थ एण्ड वेलनेस (9 जुलाई 2014)
 - कॉन्सेप्ट ऑफ डिसीसिज एण्ड थैरापैटिक्स (18 जुलाई 2014)
 - इंटेग्रेटिव अप्रोचिस फॉर फ्यूचर हैल्थकेयर (23 जुलाई 2014)
4. कैलिफोर्निया स्टेट विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर, प्रोफेसर जोसेफ ने निम्नलिखित व्याख्यान प्रस्तुत किए :-
- ह्यूमन राइट्स इन क्रॉस-कल्चरल परस्पैक्टिव (24 जुलाई 2014)
 - गाँधीज रेलिजस एथिक्स एज टचस्टोन (05 अगस्त 2014)
 - हरमेन्यूटिक्स आफ्टर हीगल (12 अगस्त 2014)
5. यूनिवर्सिटी ऑफ रोम ला सैपिन्जा से अर्थशास्त्र एवं विधि विभाग से व्यावहारिक अर्थशास्त्र के प्रोफेसर, प्रोफेसर एलिजाबेट्टा बैसिल ने निम्नलिखित व्याख्यान प्रस्तुत किया—
- ए हैटरोडॉक्स एनालिसिस ऑफ कैप्टिलिज्म। इनसाइट्स फ्रॉम ए मार्केट टाउन इन साउथ इण्डिया आफ्टर दी ग्रीन रेवल्यूशन (23 सितंबर 2014)

छ. आगन्तुक विद्वान

1. पुणे से आये अतिथि अध्येता श्री अनिल जांकर ने करॉनिकलिंग दी सिटी थ्रो सिनेमा (11 अप्रैल 2014) विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।
2. चेन्नई से आये अतिथि अध्येता श्री सदानंद मेनन ने विजुअलाइजिंग आइडेंटिटी : दी कल्चर ऑफ द्रवडियन नेशनलिज्म (12 मई 2014) विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।
3. उज्जैन से आये डॉ. जी.एस. पाण्डेय ने मॉडरनिटी इन मैथमैटिक्स (16 मई 2014) विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।
4. जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से आये प्रोफेसर गोपाल गुरु ने रिप्रेजेंटेशन : नॉर्मस, एक्सेप्शन एण्ड एक्सकलूशन (16 जून 2014) विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

5. पंचकुला से आये अतिथि अध्येता प्रोफेसर एस.आर. मेहता ने *कन्फ्लिक्ट रेजूलेशन इन दी इण्डियन सिविल सोसायटी* (18 जून 2014) विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।
6. धीरूभाई अंबानी सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान, गाँधीनगर, गुजरात से प्रोफेसर बिनिता देसाई को संस्थान की स्वर्ण जयंती समारोह के आयोजनों की रूप रेखा निर्धारित करने के लिए विशेषज्ञ के तौर पर आमंत्रित किया गया था।
7. आयोवा विश्वविद्यालय यूएसए से अतिथि अध्येता के रूप में आये संस्कृत तथा धर्म के प्राध्यापक, प्रोफेसर फ्रैंडरिक एम. स्मिथ ने *इज इट पॉसिबल टू ट्रांसलेट महाभारत* (01 जुलाई 2014) विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।
8. ऑर्कियोलजी डी'ऑरियंट डी'ऑक्सीडेंट एट साइंस डेस टैक्सटस, एआरओसी-यूएमआर-8564, सीएनआरएस-ईएनएस, फ्रांस से प्रोफेसर ऑस्मण्ड बोपीराच्ची ने *डायनिसिस, दी गॉड ऑफ फर्टिलिटी एण्ड वाइन, इन इण्डिया : दी ग्रीक इंटरैक्शन विद गंधारन बुद्धिस्ट आर्ट* (30 जुलाई 2014) पर विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।
9. स्कूल ऑफ कम्यूनिकेशन, क्लीवलैण्ड स्टेट यूनिवर्सिटी, यूएसए से आये डॉ. अनूप कुमार ने *डेमिस्टीफाइंग मीडिया इफैक्ट्स : पॉलिटिक्स-मीडिया-पॉलिटिक्स साइकल एण्ड कम्प्यूटीटिव सिमबायसिस ऑन प्राइम टाइम टीवी न्यूज पैनल शोज* (11 अगस्त 2014) विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।
10. सामाजिक अध्ययन केन्द्र, कोइम्ब्रा विश्वविद्यालय, पुर्तगाल से आये प्रोफेसर जोस मैन्यूल मैनेडस ने *मीडिया, सिटिजनशिप एण्ड एक्स्ट्रीम इवेंट्स : दी पॉसिबिलिटी ऑफ अल्टरनेटिव ग्रामरस* (29 सितंबर 2014) विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।
11. 104 जीएनबी रोड, चंद्रबाला बरूआ लेन, सिल्पुखुरी, गुवाहटी से आये प्रोफेसर बीरेन्द्र नाथ दत्ता ने *एस्पैक्ट्स ऑफ कल्चरल हैरिटेज ऑफ असम फॉर्म दी एनसियंट टू दी मीडिविल टाइम्स विद स्पेशल फोकस ऑफ दी परफॉर्मिंग आर्ट्स* (12 नवंबर 2014) विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।
12. दिल्ली स्कूल ऑफ इकनॉमिक्स, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली से आई समाजशास्त्र विभाग की सहायक प्राध्यापक प्रोफेसर सुधा वासन ने *चेंजिंग रूरलिटीज इन हिमाचल प्रदेश एण्ड इम्पलिकेशनस फॉर क्लाइमेट चेंज* (21 नवंबर 2014) विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

ज. अतिथि अध्येता

1. अभिनवगुप्त शोध पुस्तकालय की निदेशक, प्रोफेसर बैटिना बूमर ने 13 मई, 2014 को *दी थर्ड आई एण्ड ओवरकमिंग डेथ : इनसाइट्स फॉर्म दी नेत्र तंत्र* विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।
2. संरक्षक एवं स्मृति ट्रस्ट तथा गाँधी हेरिटेज पोर्टल गाँधी आश्रम साब्रमती, आश्रम रोड, अहमदाबाद से आये प्रोफेसर त्रिदीप सुह्रूद ने *सबमिटिड ए रिपोर्ट टू दी इन्स्टिट्यूट ऑन दी वर्क ऑफ ट्रांसलेशन ऑफ महात्मा गाँधीज लैटरस दैट ही अंडरटुक ड्यूरिंग हिज स्टे* विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।
3. हवाई विश्वविद्यालय, यूएसए से आये प्रोफेसर अरिंदम चक्रवर्ती ने 25 जून 2014 को *दुःख : टूवर्ड्स ए मॉरल मैटाफिजिक्स ऑफ माइजरी* विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।
4. इन्स्टिट्यूट फॉर जेण्डर, रेस, सैक्सुअलिटी एण्ड सोशल जस्टिस एट दी यूनिवर्सिटी ऑफ ब्रिटिश कोलम्बिया, कनाडा से आये डॉ. सुनेहा थोबानी ने 02 जुलाई 2014 को *स्ट्रेस पॉजिशन : दी रेसिलाइनेशन ऑफ मुस्लिमज इन दी वार ऑन टैरर* विषय पर अपना व्याख्यान दिया।

5. 237ए, पॉकेट ए, मयूर विहार फेस-2, दिल्ली से आईडॉ. कंचन सी.वी. नटराजन, ने 08 अगस्त 2014 को *प्लेइंग दी मैटाफिजिकल 'गेम' : अवुदाई अकाल पंचीकरण कत्तम (दी स्क्वेयरज ऑफ पंचीकरण)* विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।
6. एसएनडीटी वूमेन यूनिवर्सिटी, मुम्बई से अर्थशास्त्र विभागी की प्रोफेसर मेधा देशपाण्डे ने 10 अक्टूबर 2014 को *डू इनकम पॉवर्टी एण्ड मल्टीडाइमेंशनल पॉवर्टी क्वाइनसाड? ए स्टडी ऑफ माइग्रेंट्स इन पुणे सिटी* विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।
7. भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला के पूर्व अध्येता तथा सेवानिवृत्त, प्रोफेसर आर.एन. मिश्रा ने 18 नवम्बर 2014 को *एसेंडेंट एसैटिक्स इन वुडलैण्ड हैबिट्स (सेंट्रल इण्डिया, 7th-13th सेन्चरी सीई)* विषय पर अपना प्रस्तुत किया।

झ. आईयूसी के अन्तर्गत आयोजित संगोष्ठियां

1. “नाट्यशास्त्र” विषय पर स्कूल (26 अगस्त से 07 सितंबर, 2014)

मूलाधार— भरत और भरतमुनि द्वारा नाट्य (नाट्य एवं रंगमंच)लिखा गया ‘नाट्यशास्त्र’ सबसे पुराना और बृहद् ग्रंथ माना जाता है। ईसा पूर्व करीब दूसरी शताब्दी में रचा गया नाट्यशास्त्र वास्तव में एक विश्वकोश प्रवृत्ति का ग्रंथ है तथा अनेक सहायक संकायों से संबद्ध है। इस ग्रंथ में संगीत तथा संगीतशास्त्र, सौंदर्य तथा वास्तुकला जैसे विषयों पर विस्तार से चर्चा की गई है। यह काव्य रूप में रचा गया है तथा 37 अध्यायों में लगभग 6000 छंद हैं। 19वीं शताब्दी में नाट्यशास्त्र की पाण्डुलिपि की खोज तथा इस रचना का प्रकाशन सौंदर्यशास्त्र तथा रंगमंच के इतिहास में एक बहुत बड़ी घटना है।

नाट्यशास्त्र ने भारत में विगत दो सहस्राब्दियों के दौरान रंगमंच, साहित्य तथा सौंदर्य सिद्धांतों के क्षेत्र में एक प्रामाणिक स्रोत ग्रंथ के रूप में कार्य किया है। बहुलवादी दृष्टिकोण के कारण बहु विवेचना का रास्ता खुला है तथा इस वजह से सिद्धांत तथा व्यवहार के बीच अन्योन्यक्रिया की व्यापक प्रक्रिया एवं भारतीय रंगमंच की विविध धाराओं के मध्य अंतःक्रिया को जन्म दिया। मूलग्रंथ ने भारतीय रंगमंच की परंपरागत पद्धति में परिवर्तन और सतता की अलग प्रक्रिया की शुरुआत की और न सिर्फ भारत की क्षेत्रीय रंगमंचीय परंपराओं में स्थायित्व प्रदान किया अपितु अन्य ऐशियाई देशों रंगमंचीय परंपराओं में भी विशेष भूमिका निभाई है। दूसरी तरफ नाट्यशास्त्र और भारत के क्षेत्रीय रंगमंचों के बीच कोई सामान्य अंतःक्रिया नहीं है। क्षेत्रीय रंगमंचीय परंपराओं ने नाट्यशास्त्र के पुनर्रचना के दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला में नाट्यशास्त्र” विषय पर 26 अगस्त से 07 सितंबर, 2014 तक एक स्कूल का आयोजन किया गया। संस्थान के राष्ट्रीय अध्येता प्रोफेसर राधावल्लभ त्रिपाठी इस स्कूल के संयोजक थे। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर पीटर रॉनल्ड डिसूजा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। डॉ. गांगेय मुखर्जी द्वारा इस स्कूल की प्रस्तावना पेश की गई। इस स्कूल के संयोजक प्रोफेसर राधावल्लभ त्रिपाठी द्वारा विषय-वस्तु पर प्रारंभिक टिप्पणी प्रस्तुत की गई।

प्रतिभागी

- प्रोफेसर, प्रोफेसर महेश चंपकलाल, रंगमंच के सेवानिवृत्त प्रोफेसर, एमएस विश्वविद्यालय बड़ौदा
- प्रोफेसर राजेन्द्र मिश्रा (से.नि. उपकुलपति), प्रोफेसर तथा विभाग प्रमुख हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय

- श्री शिवांकर पाठक, बी4/7ए, हनुमान घाट, वाराणसी (उ.प्र.)
श्री अजय कुमार सरोज, गोरख पाण्डे छात्रावास, महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र
- श्री भूमिकेश्वर सिंह, ज्ञानखण्ड, इंदिरापुरम, गाजियाबाद
- श्री अखिला विमल सी, स्कूल ऑफ आर्ट्स एण्ड ऐस्थेटिक्स, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. प्रवीण भोले, ललित कला केन्द्र, पुणे विश्वविद्यालय, पुणे
- डॉ. विद्यानंद झा, आईआईएम, कलकत्ता, जोका, डी.एच. रोड़, कोलकाता
- श्री राजेश जोशी राष्ट्रीय अध्येता, भा.उ.अ.सं. शिमला
- श्री ओम भुटकर, एसपी कॉलेज, पुणे
- श्री धर्मकीर्ति सुमंत, पुणे विश्वविद्यालय, पुणे
- श्री रवीन्द्र मुंढे, नाटक एवं फिल्म अध्ययन, म.गाँ.अं.हि.वि. वर्द्धा
- श्री मनोज मिश्रा, भारतीय रंगमंच विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़
- सुश्री सुजाता मोहन, पद्मश्री नृत्यालय, मंदावेली, चेन्नई
- सुश्री सोनल निम्बकर, सेंटर फॉर एग्जैक्ट ह्यूमैनिटीज इंटरनेशनल इन्स्टिट्यूट ऑफ इन्फार्मेशन टेक्नॉलजी, गाची बॉली, हैदराबाद
- श्री हिमांशू द्विवेदी, भारतीय रंगमंच विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़
- सुश्री पी. मैदनी होम्बल, भारतनाट्यम, इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खीरगढ़
- डॉ. ए. श्री महालक्ष्मी, चंदननगर, हैदराबाद
- सुश्री प्राची महापात्रा, ऐतिहासिक अध्ययन केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- श्री मनीश कुमार, पाण्डेचेरी विश्वविद्यालय, कालापेट पुदूचेरी
- डॉ. नीरज उपाध्याय, प्रदर्शन कला विद्यालय, पाण्डेचेरी विश्वविद्यालय, पुदूचेरी
- डॉ. शाकीर टेज़निम, प्रदर्शन कला केन्द्र, केन्द्रीय विश्वविद्यालय थारखण्ड, ब्रांबे, रांची
- डॉ. ऋषभ भारद्वाज, एमआरसी, संस्कृत विभाग, डॉ. एच.एस. गौर विश्वविद्यालय, सेगर (म.प्र.)
- प्रोफेसर के.एस. राजेन्द्रन, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली
- प्रोफेसर राधावल्लभ त्रिपाठी, अध्येता, भा.उ.अ.सं.
- डॉ. गौतम चटर्जी, अध्यक्ष अभिनवगुप्त अकादमी, वाराणसी

इस स्कूल के दौरान प्रतिभागियों द्वारा निम्नलिखित विषय-वस्तुओं पर प्रस्तुति दी गई—

- राधावल्लभ त्रिपाठी : *रीडिंग नाट्यशास्त्रा चैप्टर-1*
- राजेन्द्र मिश्रा : *स्पेशल लैक्चर ऑन एनएस*
- श्री महालक्ष्मी : *नाट्यशास्त्रा एज पंचमवेदा*

- अखिल विमल : पंचमवेदा, हैटरोजैनिटी एण्ड दी प्रोब्लमैटिक ऑफ स्पेक्टेटरशिप ऑफ असुरा एण्ड भुद्रा
- राधावल्लभ त्रिपाठी : रीडिंग नाट्यशास्त्रा चैप्टर-2,3,4
- के.एस. राजेन्द्रन : एनएस चैप्टर 8-9 एण्ड अभिनय ऑन मॉडरन स्टेज लैक्चर
- भूमिकेश सिंह : एक्सपेरिमेंटिंग विद भाषा थ्रो छाऊ

व्याख्यान-एवं-प्रदर्शन/नृत्य अभिनय

- बी.के. सिंह एवं प्रतिभा सिंह : अभिनय इन संस्कृत थियेटर- एप्लीकेशनस ऑफ छाऊ- सोनल निमकर : भारतनाट्यम
- राधावल्लभ त्रिपाठी : रीडिंग नाट्यशास्त्रा चैप्टर-6
- के.एस. राजेन्द्रन : एनएस एण्ड चैप्टर 10 एण्ड अभिनय ऑन मॉडरन स्टेज
- भूमिकेश सिंह : संस्कृत ड्रामा एण्ड रीजनल थियेटर
- राधावल्लभ त्रिपाठी : रीडिंग नाट्यशास्त्रा चैप्टर-7
- के.एस. राजेन्द्रन : नाट्यशास्त्र चैप्टर 11 एण्ड अभिनय ऑन मॉडरन स्टेज
- स्क्रीनिंग ऑफ कालीवेशवम: संस्कृत प्ले डायरेक्टड बाई पद्मभूषण केवलम एन. पान्निक्कर सीडी प्रोडक्शन
- राधावल्लभ त्रिपाठी : रीडिंग नाट्यशास्त्रा चैप्टर-13
- के.एस. राजेन्द्रन : नाट्यशास्त्र चैप्टर 12-13 एण्ड अभिनय ऑन मॉडरन स्टेज
- संगीता गुंदेचा द्वारा प्रस्तुति : दी रिलेशन ऑफ वेदपथ विद कंटेम्परेरी थियेटर एण्ड म्यूजिक इन स्पेशल रेफरेंस टू के.एन. पाणिकरज थियेटर एण्ड ध्रुपद म्यूजिक ऑफ डैंगर वाणी।
- राधावल्लभ त्रिपाठी : रीडिंग नाट्यशास्त्रा चैप्टर 14-15
- के.एस. राजेन्द्रन : नाट्यशास्त्र चैप्टर 21-25 एण्ड अभिनय ऑन मॉडरन स्टेज
- विमर्श- प्रोफेसर हरीश त्रिवेदी तथा प्रोफेसर अरिन्दम चक्रवर्ती: व्हाई शुड आई एक्ट।
- प्रवीण भोले की प्रस्तुति : कग्निटिव न्यूरोसाइंस इन अभिनय एज डिस्क्राइब्ड इन नाट्यशास्त्रा : एन इनिशाल हाईपोथैसिस

व्याख्यान-एवं-प्रदर्शन/नृत्य अभिनय

- सुजाता मोहन : भरतनाट्यम
- मैदीनी होम्बल : भरतनाट्यम
- राधावल्लभ त्रिपाठी : रीडिंग नाट्यशास्त्रा चैप्टर 16-17
- महेश चंपकलाल : संस्कृत थियेटर इन अवर टाइम्स लैक्चर
- भावस इन दी नाट्यशास्त्र : गौतम चटर्जी द्वारा व्याख्यान
- राधावल्लभ त्रिपाठी : रीडिंग नाट्यशास्त्रा चैप्टर 18-19

- संस्कृत थियेटर इन अवर टाइम्स: महेश चंपकलाल द्वारा व्याख्यान
- गौतम चटर्जी द्वारा व्याख्यान
- नाट्यशास्त्र पर गौतम चटर्जी द्वारा निर्मित फिल्म का पूर्व प्रदर्शन
- राधावल्लभ त्रिपाठी : रीडिंग नाट्यशास्त्रा चैप्टर 20,23,24
- संस्कृत थियेटर इन अवर टाइम्स: महेश चंपकलाल द्वारा व्याख्यान
- गौतम चटर्जी द्वारा व्याख्यान
- प्रवीण भोले : प्रिंसिपल ऑफ थियेटर एंथ्रोपोलजी एण्ड दी टेक्नीक ऑफ अभिनय इन संस्कृत प्लेज
- राधावल्लभ त्रिपाठी : रीडिंग नाट्यशास्त्रा चैप्टर 26, 27
- भरत गुप्त : 1 लैक्चररीडिंग ऑन म्यूजिक इन दी एनएस चैप्टर 28, 29
- राधावल्लभ त्रिपाठी : रीडिंग नाट्यशास्त्रा चैप्टर 35, 36
- भरत गुप्त : 2 लैक्चररीडिंग ऑन म्यूजिक इन दी एनएस चैप्टर 28, 29
- राधावल्लभ त्रिपाठी : रीडिंग नाट्यशास्त्रा चैप्टर
- भरत गुप्त : 3 लैक्चररीडिंग ऑन म्यूजिक इन दी एनएस चैप्टर 28, 29
- राधावल्लभ त्रिपाठी : रीडिंग नाट्यशास्त्रा चैप्टर 37
- भरत गुप्त : 4 लैक्चररीडिंग ऑन म्यूजिक इन दी एनएस चैप्टर 28

2. “गाँधी के जीवन व विचार” पर शरद स्कूल’ (01—15 दिसम्बर 2015)

पिछले तीन दशकों से विद्वानों, बुद्धिजीवियों तथा राजनीतिज्ञों, सामाजिक हित समूहों का गाँधी के जीवन तथा उनके विचारों के प्रति गहन रुझान रहा है। गाँधीजी की पुस्तकें जैसे *एन ऑटोबायोग्राफी* या *दी स्टोरी ऑफ माई एक्सपीरियंस विद ट्रुथ* एवं *हिन्द स्वराज* आदि आज भी शोध और अध्ययन की दृष्टि से प्रासंगिक हैं। इतिहासकारों, राजनैतिक सिद्धांतवादियों तथा टीकाकारों एवं सामाजिक आंदोलनों के इतिहास लेखकों द्वारा गाँधी जी के सत्याग्रह के सिद्धांत एवं उनकी व्यावहारिकता, उनके रचनात्मक कार्यों तथा उनके द्वारा संस्थापित संस्थाओं के बारे में गहन अध्ययन किया गया है। गाँधीजी के सहयोगियों तथा संभाषियों जैसे महादेव देसाई, जे.सी. कुमारप्पा, मीराबेन, सी.एफ. ऐन्ड्रयूज तथा लंजा डेल वास्तो आदि ने गाँधीजी के बारे में हमारे ज्ञान में वृद्धि की है। इन अध्ययनों और ज्ञान के फलस्वरूप गाँधीजी के जीवन के बारे में और गहन, समृद्ध और बारीक जानकारी हासिल हुई है।

इस शरद स्कूल में गाँधी जी के बारे में तथा उनके चिंतन की बौद्धिक परंपरा से अवगत करवाया गया। इस स्कूल में गाँधीजी के जीवन और उनके विचारों की एक अखण्डित जानकारी प्रदान की गई। हम प्रायः राजनीति गाँधी के बारे में जानते हैं जोकि रचनात्मक कार्य के गाँधी से बिल्कुल भिन्न है या गाँधीजी की आध्यात्मिक खोज उनकी स्वराज की इच्छा से भिन्न मानते हैं। इस शरद स्कूल में कदाचित भिन्न पद्धतियों, अभिव्यक्ति तथा रचनाओं में अंतर्निहित संबंधों को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया।

भा.उ.अ.सं. में 01 दिसम्बर से 15 दिसम्बर 2015 तक “गाँधी के जीवन व विचार” विषय पर एक शरद स्कूल का आयोजन किया। साबरमती आश्रम, संरक्षण तथा स्मृति ट्रस्ट के निदेशक तथा गांधी हेरिटेज पोर्टल अहमदाबाद के मुख्य संपादक, प्रोफेसर त्रिदीप सुहरुद इस स्कूल के संयोजक थे। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर चेतन सिंह ने स्वागत

भाषण प्रस्तुत किया जबकि पूर्व प्रोफेसर त्रिदीप सुहरूद ने प्रारम्भिक टिप्पणी प्रस्तुत की।

प्रतिभागी:

- सुश्री अमृता मोण्डल, ऐतिहासिक अध्ययन केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- श्री अंकित चड्ढा, पंत नगर समीप जंगपुरा, नई दिल्ली
- सुश्री डी जैनिफर, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- सुश्री एकता जैन, सामाजिक विज्ञानों के अध्ययन केन्द्र, सामाजिक विज्ञान स्कूल, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- सुश्री हर्शिका वर्मा, राष्ट्रीय विश्वविद्यालय जयपुर, एसएडीटीएम कैम्पस, जगतपुरा, जयपुर
- सुश्री जयंती साहू, रावेनशाह विश्वविद्यालय, कटक, उड़ीसा
- सुश्री मेघा टोडी, टोडी हाउस, ज्योति नगर, डिब्रुगढ़, आसाम
- सुश्री मृनाल पंचाल, स्कूल ऑफ आर्किटेक्चर, सीइपीटी विश्वविद्यालय, अहमदाबाद
- सुश्री मुदिता विद्रोही, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद
- सुश्री प्रियंका बैनर्जी, सामाजिक विज्ञानों के अध्ययन केन्द्र, सामाजिक विज्ञान स्कूल, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- श्री सिनो बेबी पॉल, साबरमती गाँधी संग्राहलय आश्रम, अहमदाबाद
- श्री राकेश कुमार दुबे, केन्द्रीय विश्वविद्यालय उड़ीसा, पत्रकारिता एवं जनसंचार केन्द्र
- डॉ. वर्षा गांगुली, अध्येता, भा.उ.अ.सं.
- सुश्री जया सिंह, अंग्रेजी विभाग एवं एमइएल, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, उ.प्र.
- श्री देबाशीष मित्रा, एफ.सी. महाविद्यालय, डायमंड हरबोर, पश्चिम बंगाल

3. 'कल्चरल इकोलजी ऑफ दी ब्रह्मपुत्र' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी (08-09 मार्च 2015)

मूलाधार-उत्तर-पूर्वी क्षेत्र तथा उसके पड़ोस के आधुनिक इतिहास में नदियों विशेषकर ब्रह्मपुत्र नदी की क्या भूमिका है? कैसे एक नदी आसपास के परिदृश्य के भाग्य को बनाती है? मनुष्य और अन्य जीव-जंतु व वनस्पति जगत नदी और उसके पर्यावरण के लिए किस प्रकार अनुकूल हैं। हम जानते हैं कि नदियां ही मानव समाज की नींव हैं और वे उन सभ्यताओं के विकास, खुशहाली, उत्थान एवं उनकी अवनति के लिए उत्तरदायी हैं। मानव ने अधिकतर नदियों का रुख बदल दिया है और उन पर हाइड्रोलिक परियोजनाएं संस्थापित कर दी हैं। इस संसार में मानव और नदियां एक दूसरे की सहजीवी हैं और कई बार ये संबंध विनाशकारी साबित हो जाते हैं। नदियां मानवीय सत्ता की सीमाओं का वर्णन भी करती हैं और मनुष्य द्वारा नदियों को दूषित करने की उसके कारनामों का भी बखान करती हैं। नदियां मानवीय सभ्यता के विकास के लिए यातायात सुविधा, ऊर्जा, भोजन, पेयजल, जलीय जीवनके स्थान प्रदान करती हैं और साथ ही गीत-संगीत, नृत्य विधाओं में विविध मूलभूत कार्य कर नदियां सदियों से मानवीय पीढ़ियों को एक जीवनदायनी के रूप में समृद्ध करती आ रही हैं। इसके साथ ही नदियां सांस्कृतिक विचार पद्धति को भी नयापन प्रदान करती हैं तथा बौद्धिक संबद्धता के लिए क्रियात्मक अवसर भी।

नदियां का सामाजिक जीवन भी है। नदियों तीर्थ—यात्रा के लिए भी विशेष महत्त्व है। ये हमारी सांस्कृतिक अस्मिता की प्रतीक हैं तथा भू—भागीय पहचान बनाने में भी इनकी विशेष भूमिका है। नदियां मानव के कल्पना तथा स्वप्न जगत के निर्माण में प्रेरणादायक भी हैं।

इस सम्मेलन में ब्रह्मपुत्र नदी को भारतीय इतिहास के परिप्रेक्ष्य में जानने का प्रयास किया गया तथा इतिहास, संस्कृति तथा पारिस्थितिकी की बीच जटिल संबंधों की पड़ताल की गई। उपर्युक्त प्रश्नों पर सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में गहनता से विचार किया गया। इस संगोष्ठी में नदी तथा उसकी सहायक नदियों ने सदियों से पोषित की हुई सामाजिक विविधता और अन्योन्याश्रय की बारीकियों को पहचाना गया। इतना ही नहीं इस बाढ़ नियंत्रण, विद्युत शक्ति, बांधों तथा समान अभियंत्रिकी समाधानों तथा संबंधित मसलों पर भी इस संगोष्ठी में गहन मंथन किया गया। यह भी मान्यता है कि संस्कृति एवं पारिस्थितिकी का महत्त्वपूर्ण घनिष्ठ संबंध तथा उसके बोध के मध्य भेद करना कई बार मुश्किल हो सकता है। इस संगोष्ठी में इस बात पर भी विमर्श किया गया कि प्रौद्योगिकी को समाज से दूर नहीं किया जा सकता मगर यह भविष्य और पारिस्थितिकी के मध्य केन्द्रित है। यह वास्तविकता है कि इन्हें प्रायः विभाजित करना मुश्किल हो जाता है क्योंकि शायद वे प्रारंभ से एक दूसरे से संबद्ध हैं।

भा.उ.अ.सं. द्वारा नार्थ ईस्ट स्टडीज एण्ड पॉलिसी रिसर्च सेंटर, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली तथा राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान गुवाहटी के मानविकी एवं सामाजिक विज्ञानों के विभाग के सहयोग से भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान गुवाहटी में 'कल्चरल इकॉलजी ऑफ दी ब्रह्मपुत्रा' विषय पर 8—9 मार्च 2015 को राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। नार्थ ईस्ट स्टडीज एण्ड पॉलिसी रिसर्च सेंटर, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली के निदेशक प्रोफेसर संजोय हजारिका तथा राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान गुवाहटी के मानविकी एवं सामाजिक विज्ञानों के विभाग के प्रमुख डॉ. अरुपज्योति सैकिया इस संगोष्ठी के संयोजक थे। भा.उ.अ.सं., शिमला के निदेशक प्रोफेसर चेतन सिंह ने इस संगोष्ठी में प्रारंभिक टिप्पणी प्रस्तुत की। संगोष्ठी के संयोजक प्रोफेसर संजोय हजारिका तथा सह—संयोजक डॉ. अरुपज्योति सैकिया ने संगोष्ठी की विषय—वस्तु से अवगत करवाया जबकि जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के प्रोफेसर जयंता बंधोपाध्याय तथा प्रोफेसर एमरतस ने बीज—भाषण प्रस्तुत किया।

प्रतिभागी

- डॉ. अरुपज्योति सैकिया, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, गुवाहटी
- डॉ. नवअरुण वर्मा, टेरी, भारतीय पर्यावास केन्द्र, नई दिल्ली
- सुश्री स्तुतिरेखा बसुमैत्री, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, गुवाहटी
- सुश्री मिजिक्षा डैमरी, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, गुवाहटी
- श्री हालिम हुसैन, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, गुवाहटी
- प्रोफेसर अर्चना बरूआ, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, गुवाहटी
- प्रोफेसर चंदन महांता, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, गुवाहटी
- श्री आशीश रंशन श्रीवास्तवा, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, गुवाहटी
- श्री अरिरुद्ध वी. महागांओकर, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, गुवाहटी
- प्रोफेसर संजाये हजारिका, नार्थ ईस्ट स्टडीज एण्ड पॉलिसी रिसर्च सेंटर, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली
- प्रोफेसर अबानी कुमार भगवती, गुवाहटी विश्वविद्यालय

- डॉ. नित्यानंद डेका, भूगोल विभाग, गुवाहटी विश्वविद्यालय
- डॉ. मयूर बावरी, गुवाहटी विश्वविद्यालय
- सुश्री साम्य रे, मानवीक एवं सामाजिक विज्ञान विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, गुवाहटी
- डॉ. जॉन थॉमस, मानवीक एवं सामाजिक विज्ञान विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, गुवाहटी
- श्री अरूप कुमार दत्ता, लेखक, गुवाहटी
- डॉ. ए.सी. भगवती, मानव-शास्त्र विभाग के सेवानिवृत्त प्राध्यापक, गुवाहटी विश्वविद्यालय, एवं पूर्व उपकुलपति, राजीव गाँधी विश्वविद्यालय, इटानगर
- सुश्री उपासना देवी, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, गुवाहटी
- श्री आरती कुमार राव, फोटोग्राफर, बंगलोर
- डॉ. नारायण शर्मा, प्रकृति संरक्षण संस्थापना, मैसूर
- प्रोफेसर जयंता बंदोपाध्याय, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- डॉ. मृदुस्मिता महांता, अंग्रेजी विभाग, सोनापुर महाविद्यालय, सोनापुर
- डॉ. बिभश चौधरी, अंग्रेजी विभाग, गुवाहटी विश्वविद्यालय
- डॉ. शांतना सैकिया, बहोना महाविद्यालय, जोरहट
- अधिवक्ता शॉवहिक सिद्दकी, उच्चतम न्यायालय, नई दिल्ली
- सुश्री सुपर्णा कात्यानी, एचएसएस विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, गुवाहटी

संगोष्ठी के दौरान निम्नलिखित शोध-पत्र प्रस्तुत किये गये—

सत्र-1

दी गवर्नड लाइफ ऑफ ब्रह्मपुत्रा

अधिवक्ता शॉवहिक सिद्दकी : *इकोलजी, कल्चर, डिवेलप्मेंट : ए कंटेस्टिड नेक्सस एण्ड दी रेगुलेटरी रिसपांस टू इट*

डॉ. नवारुण वर्मा : *डिस्कोर्सिस, नेरेटिव्स एण्ड परपजफुल एक्शन— केस ऑफ 'ब्रीच-मेंटीनेस' डायनामिक्स ऑफ सिस्सरकोलघोर-टेकेलिफुटा एम्बांकमेंट इन नॉर्थ बैंक ऑफ अप्पर ब्रह्मपुत्र वैली*

सत्र-2

परफॉर्मिंग दी ब्रह्मपुत्रा

डॉ. मृदुस्मिता महांता : *ए स्ट्रक्चरल एनालिसिस ऑफ दी मिथस ऑन दी ब्रह्मपुत्रा*

डॉ. सांतना सालोआ : *ब्रह्मपुत्रा इन सत्तरा लोर एण्ड सोशल प्रैक्टिस*

डॉ. बिभश चौधरी : *वर्सेसिज दी रीवरब्रह्मपुत्रा इन सत्तरा लोर एण्ड सोशल प्रैक्टिस*

ब्रह्मपुत्र नदी के सांस्कृतिक जीवन के बारे में दस्तावेज

सत्र-3

फ्रेमिंग दी ब्रह्मपुत्रा

प्रोफेसर संजोए हजारिका : *रिफ्लैक्शन जर्नी*

सुश्री आरती कुमार राव : *दी डेल्यूशन ऑफ डिसेस*

प्रोफेसर चंदन महांता : *हैल्दी ल्यूट-हैप्पी एग्जोम*

सत्र-4

ब्रह्मपुत्र के अन्य जीवन

प्रोफेसर अबानी भगवती : *दीब्रह्मपुत्रा रीवराइन ट्रेक्टस इन असम : लैण्डस्केप चेंज एण्ड इन्वायरमेंटल इश्यूज*

डॉ. नारायण शर्मा : *ओवर वन हंडरड ईयरज ऑफ सॉलिट्यूड : इकॉलजिकल हिस्ट्री ऑफ दी प्राइमेट्स, पीपल एण्ड फॉरेस्ट्स ऑफ दी होलोंगैपर गिबन सैचुअरी, अप्परब्रह्मपुत्रा वैल्ली असम*

डॉ. अरुपज्योति सैकिया : *इमेजिंगब्रह्मपुत्रा : ए रीवर इनटू दी कारटोग्राफरज ग्रिड, 1730-1794*

ज. सह-अध्येता द्वारा प्रस्तुत संगोष्ठियां

संस्थान में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की ओर से मानविकी एवं समाजिक विज्ञानों के क्षेत्र में एक अंतरविश्वविद्यालय केन्द्र (आईयूसी) भी चलायमान है। आईयूसी के अकादमिक कार्यक्रमों में तीन प्रमुख कारक हैं— (1) सह-अध्येतावृत्ति की योजना, (2) देश के विभिन्न भागों में संगोष्ठियां आयोजित करना (3) संस्थान में राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय हित से संबंधित समस्याओं पर अध्ययन सप्ताहों का आयोजन करना। इस केंद्र के अंतर्गत देश के विश्वविद्यालय तथा महाविद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों को तीन सालों में तीन बार अध्ययन के बुलाया जाता है, जो मूलतः निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु पधारते हैं—

क) अपने किसी लेख को पूर्ण करने हेतु जो किसी कारणवश अधूरा रह गया हो; ख) प्रकाशन के लिए अपने शोध-कार्य को संशोधित करने हेतु ; ग) संस्थान के पुस्तकालय के प्रयोग हेतु तथा घ) संस्थान में आये देश विदेश के अध्येताओं तथा अतिथि प्राध्यापकों व अतिथि विद्वानों के साथ अंतःक्रिया करने के लिए। ये सह-अध्येता संस्थान की नियमित अकादमिक गतिविधियों के अतिरिक्त समय-समय पर आयोजित होने वाली राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों व सम्मेलनों में भाग लेते हैं। सह-अध्येताओं से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने शोध-कार्य के अलावा संस्थान की अन्य अकादमिक गतिविधियों में भी प्रतिभागिता करें। केंद्र में अपने रहने के दौरान उन्हें अपना एक शोध-पत्र प्रस्तुत करना होता है। हालांकि यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है कि वे अपने शोध-पत्र को संस्थान द्वारा प्रकाशित जर्नलों में प्रकाशनार्थ दें अथवा नहीं। आलोच्य वर्ष के दौरान जो सह-अध्येता संस्थान में अध्ययन हेतु पधारे उनका तथा उनके द्वारा प्रस्तुत शोध-पत्रों का विवरण निम्न प्रकार से है—

अप्रैल 2014

- डॉ. रिखी राम कौण्डल (बिलासपुर) : *एक्सीलिरेशन ऑफ एग्रीकल्चरल डिवेलपमेंट फॉर इन्क्लूसिव इकॉनॉमिक ग्रोथ : इश्यूज एण्ड पॉलिसी ऑप्शनज* (24 अप्रैल 2014)
- डॉ. किशोर कुमार दास (कटक) : *ए स्टडी ऑफ बिजनेस एथिक्स थ्रो एस्पैक्ट्स ऑफ लाइफ : एन ओवरव्यू* (24 अप्रैल 2014)

- डॉ. संजय कुमार (हमीरपुर) : *साइको-कल्चरल इन्वायरन्मेंट ऑफ कुनाह खद वाटरशैड* (22 अप्रैल 2014)
- श्री जगवीर सिंह चंदेल (बिलासपुर) : *जीआईएस बेसड नेटवर्क एनालसिस फॉर टूरिस्ट डेस्टिनेशन : ए केस स्टडी फॉर शिमला सिटी, हिमाचल प्रदेश* (24 अप्रैल 2014)
- डॉ. सुबीर बिसवास (कोलकाता) : *एथिक्स इन एंथ्रोपोलोजिकल रिसर्च : रिसर्पोसिबिलिटीज टू दी पार्टिसिपेंट्स* (25 अप्रैल 2014)
- डॉ. शैल कुमारी (मुज्जफरपुर) : *भारतीय सुत्रावधि में यथार्थवाद और विश्लेषण की पद्धति का वैशिष्ट्य* (25 अप्रैल 2014)
- डॉ. अविनाश पाण्डेय (मुम्बई) : *राइट टें एजुकेशन एक्ट एण्ड दी फ्यूचर ऑफ अवर लैंग्वेजिस* (25 अप्रैल 2014)
- डॉ. रवीन्द्र महासद (पुणे): *रिफ्लेक्शन ऑफ दलित एस्थेटिक्स इन नावदेव ढसालज पोयट्री* (28 अप्रैल 2014)
- श्री मेलविन पिंटो (बंगलोर): *सबल्टरन रीडिंग ऑफ फिल्म : विद स्पेशल रेफ्रेंस टू मराठी न्यू वेव* (28 अप्रैल 2014)
- डॉ. सातप्पा लहु चव्वाण (अहमदनगर): *हिन्दी के विकास में वेब मीडिया एवं नये जनसंचार माध्यमों का योगदान* (28 अप्रैल 2014)
- डॉ. उत्तम बी. सोनकांबले (महाराष्ट्र) : *ऑप्टिमिजम इन अफ्रीका विद रेफ्रेंस टू स्मिथज मोटसवाना एण्ड फिक्शन* (29 अप्रैल 2014)
- डॉ. एस. चिन्ना रैददैह (कुप्पम): *एन्नामैहा, दी लिजेंड ऑफ संकीर्तना लिट्रेचर –ए स्टडी* (29 अप्रैल 2014)
- श्री एस. कार्थिक (तमिलनाडू) : *ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ दी प्रालोगस फो इन्फैरनो बाई दांते एण्ड डैन-बराउन* (29 अप्रैल 2014)
- डॉ. सहदेव लुहार (गुजरात) : *अल्टरनेटिव लिटरेरी कैनन : इट्स नीड एण्ड फंक्शनस इन दी प्रेजेंट* (29 अप्रैल 2014)

मई 2014

- डॉ. वी. विनोद कुमार (तमिलनाडू): *न्यू हिस्टोरिसिट रीडिंग ऑफ कांबा रामायण* (15 मई 2014)
- डॉ अक्षय के. रथ (ओड़िशा): *डोमेस्टिकेटिंग पैनल लिविदो : आनंदमान एण्ड इट एम्पायर* (15 मई 2014)
- प्रोफेसर विजय प्रकाश सिंह (लखनऊ) : *बर्मा : फरॉम दी लैण्ड ऑफ गोल्डन पगोड़ा टू लैण्ड ऑफ टायरनी* (15 मई 2014)
- डॉ. पुतुल साथे (मुम्बई) : *एथनोग्राफी ऑफ दी मार्जिनलाइज्ड सेल्फ : रीडिंग ऑफ दलित वूमेन ऑटोबायोग्राफीस* (15 मई 2014)
- डॉ. रमा कांत सिंह (ओड़िशा) : *पोरट्रेल ऑफ रिअलिजम इन लाल बेहारी डेज बंगालज पीजेंट लाइफ एण्ड फकीरमोहन सेनापतिज छा मना अट्ठा गुँठा* (19 मई 2014)
- डॉ. बी.एम. लदगोंकर (कोल्हापुर): *शेक्सपीयर, ओथेलो –राइटिंग एण्ड हिज इन्क्लाइनेशन* (19 मई 2014)
- श्री कुमार वीरेन्द्र कुमार सिंह (झारखण्ड): *आदिवासी विमर्श : अस्तित्व और अस्मिता की तलाश* (19 मई 2014)
- डॉ. अभिषेक कुमार (तमिलनाडू): *बियूटी एण्ड दी बीस्ट ऑफ फिलॉस्फी इन मार्केटिंग* (19 मई 2014)

- डॉ. अनूप कुमार मोहंती (ओड़िशा) : फॉरेस्ट ब्यूटी एण्ड ट्राइबल लाइवलीहुड (20 मई 2014)
- डॉ. नरेन्द्र के. बेहरा (ओड़िशा) : सर्कुलर माइग्रेशन : ए रिफ्लैक्शन फ्रॉम केबीके डिस्ट्रिक्ट इन ओड़िशा (20 मई 2014)
- डॉ. उमा शंकर प्रसाद पात्रा (ओड़िशा) : सुनामी ऑफ रिफॉर्म-एफडीआई इन मल्टी-ब्रांड रिटैलिंग इन इण्डिया (20 मई 2014)
- डॉ. डी. वैकटा राम (आंध्र प्रदेश) : इम्पैक्ट ऑफ दी एग्रेरियन स्ट्रगलस ऑफ दी ट्राइबल डिवेलपमेंट ऑफ तेलंगाना: ए केस स्टडी ऑफ ट्राइबलस एरियास ऑफ अदिलाबाद डिस्ट्रिक्ट ऑफ आंध्र प्रदेश (20 मई 2014)
- डॉ. अमूल्या के त्रिपाठी (ओड़िशा) : इंडो-यूएस काउंटर टैरिजम कॉपरेशन : सम रिफ्लैक्शनस (21 मई 2014)
- श्री प्रतीप चट्टोपध्याय (पश्चिम बंगाल) : पॉलिटिक्स ऑफ कन्फ्रंटेशन? : इण्डियाज पॉलिसी टू यूनाइटेड स्टेट्स एण्ड मार्क्सिस्ट (21 मई 2014)
- सुश्री जूम्यीर बसर (अरुणाचल प्रदेश) : इकिंग दी बॉडी-दी आर्ट ऑफ टट्टूइंग अमंग दी ट्राइबस इन अरुणाचल प्रदेश (21 मई 2014)
- डॉ. मुमताज बेगम (पाण्डेचरी) : इन्क्लूसिव एजूकेशन प्रैक्टिसिस इन इण्डिया (21 मई 2014)
- श्री संजय कुमार (कोलकाता) : बिल्डिंग कांस्ट्रैक्ट्स एण्ड लेवी ऑफ वैट- इज देयर एनी अल्टरनेटिव? (22 मई 2014)
- डॉ. टी.एच. वघेरा (गुजरात) : अनटचबिलिटी इन रुरल सौशाट्र एण्ड प्रोब्लमस ऑफ दलित (22 मई 2014)
- डॉ. नम्रता एम. (शंकरघट्ट) : दी ट्रांसफॉर्मेशन ऑफ जेण्डर रिलेशनस ऑफ दी राइज ऑफ रोमांटिक ड्रामा इन एनसिएंट इण्डिया (22 मई 2014)

जून 2014

- डॉ. हमदा जरीन (उत्तर प्रदेश) : स्टेटस ऑफ वूमेन इन इस्लाम : ए साइकॉलजिकल परस्पेक्टिव (16 जून 2014)
- डॉ. राजेश्वर प्रसाद यादव(लखनऊ) : मानव चेतना का अतिनैतिक यथार्थ (आचार्य रजनीश की विशेष दृष्टि में) (16 जून 2014)
- डॉ. उपासना पाण्डेय (वाराणसी) : डिवेटिंग लिबरल डिमॉक्रसी एण्ड गाँधी (16 जून 2014)
- डॉ. रणवीर सिंह (उड़ीसा) : एंटीक्वीटी ऑफ स्मोकिंग ट्रेडिशन इन वेस्टर्न उड़ीसा (19 जून 2014)
- डॉ. सुनील कुमार सिंह (हाजीपुर) : शंकर वेदांत में नैतिकता का स्थान (17 जून 2014)
- डॉ. रमेश धर द्विवेदी (वाराणसी): स्टेटस ऑफ हायर एजूकेशन इन इण्डिया : एन एनालिसिस (19 जून 2014)
- डॉ. हितेन्द्र के. पटेल (कोलकाता): हिन्दू नेशनलिजम/कम्यूनिलिजम बिफोर 'हिन्दुत्व' : सम रिफ्लैक्शन (17 जून 2014)
- डॉ. विश्वनाथ मिश्रा (वाराणसी): महात्मा गाँधी का सभ्यता विमर्श (17 जून 2014)
- श्री ज्योति पाण्डेय शर्मा (हरियाणा): रीविजिटिंग दी दरिया (रीवर) अर्बनिजम इन दी देल्ही ट्राइंगल : दी अर्बनाइजेशन ऑफ दी यमुना इन दी बादशाही शहर, भाहजहाबाद (18 जून 2014)

- डॉ. सुधा सहगल (आगरा) : रागा — डायनामिक्स एण्ड साइकोम्यूजिकोलिकल परस्पैक्टिवस : ए क्रिटिकल स्टडी विद रेफ्रेंस टू मॉर्निंग रागास (18 जून 2014)
- डॉ. आरती निर्मला (वाराणसी) : लैण्डस्केपिंग दी पास्ट एण्ड दी प्रेजेंट : नागा कान्शसिनस इन दी पॉयट्री ऑफ इस्टरन किर्रे इरालू (18 जून 2014)
- डॉ. शर्मिला छोटारे (त्रिपुरा): कल्चरल पॉलिटिक्स ऑफ पापुलर परफॉर्मेंस : स्ट्रक्चर एण्ड रिप्रेजेंटेशन ऑफ ओडिया जात्रा : ए बुक परपोजल (18 जून 2014)
- डॉ. अनिल कुमार (बिहार): दर्शन की प्रासंगिकता : वर्तमान संदर्भ में (19 जून 2014)
- डॉ. बी मदन मोहन (हरियाणा): सिरमौर क्षेत्र का सामाजिक सांस्कृतिक अध्ययन (19 जून 2014)
- सुश्री भारती अरोड़ा (पुणे): ग्लोबलाइज्ड वर्ल्ड एण्ड मॉनफुल नेशन : ए रीडिंग ऑफ अल्का सारंगीस कालीकथा : वाया बाई—पास (19 जून 2014)
- डॉ. मनबेन्दु पाठक (आगरा): फिफ्टी ईयरस आफ्टर दी 1962 डिबेट— ए क्रिटिकल एनालिसिस (19 जून 2014)
- डॉ. निर्मल कुमार स्वैन (रोहतक): टीचिंग अव्याइडिंग प्लेगियरिज (20 जून 2014)
- डॉ. दीपा कांसरा (नई दिल्ली): दी आइडिया ऑफ फरैटरनिटी इन कंटेम्परेरी लॉ एण्ड पॉलिटिक्स (20 जून 2014)
- डॉ. पी.जी. पॉल (पाण्डेचरी): डिबेलपिंग एम्प्लायबिलिटी स्किल अमंग स्टूडेंट थ्रो कम्युनिटी कॉलेजिस — अपॉरच्युनिटीस, चैलेंजिस एण्ड कन्सर्ज (20 जून 2014)
- डॉ. आर. कल्याणनारामन : ए रिट्रैल क्वीडिंग सिस्टम विद टू टाइपस ऑफ बैच अराइवल एण्ड विद सेम सर्विस टाइम डिस्ट्रीब्यूशन (20 जून 2014)

जुलाई 2014

- डॉ. पंकज पराशर (उ.प्र.): कॉम्यूनलिजम : आइडियालजी एण्ड हिस्टोरिकल कॉन्टेक्सट (16 जुलाई 2014)
- डॉ. महेन्द्र सिंह सैनी (हरियाणा): इमरजेंस ऑफ बीआरआईसीएस एण्ड ग्लोबल ऑर्डर (16 जुलाई 2014)
- डॉ. एस. रामदौस (चेन्नई): वायलेंस इन टैम्पलस ऑफ लर्निंग : रैगिंग इन इन्सिट्यूशनस ऑफ हायर लर्निंग— एन ओवरव्यू ऑफ कॉउजिस एण्ड कन्सिक्वेंसिस (16 जुलाई 2014)
- डॉ. बहादुर सिंह परमार (म.प्र.): बुंदेलखण्ड में स्वतंत्रता संग्राम का पहला दौर (16 जुलाई 2014)
- श्री पतितपावन दास (ओडिशा): कन्टेक्चुअल मॉरल जस्टिफिकेशन : ए सर्च फॉर मैथड इन मैडिकल एथिक्स (16 जुलाई 2014)

अगस्त 2014

- डॉ. जाह्नवी गोगोई नाथ (असम): स्टेट, रेलिजन एण्ड जैण्डर : चेंजिंग पैटर्न ऑफ पैट्रीऑर्की इन मीडिएवल असाम (25 अगस्त 2014)
- डॉ. विनोद कुमार विश्वकर्मा (म.प्र.): उत्तर आधुनिक समय में आदिवासी विमर्श के सामाजिक निहितार्थ (25 अगस्त 2014)
- डॉ. इंदू स्वामी (असम): रेलेवेंस ऑफ मेनस्ट्रीम इण्डियन फ़ेमिनिजम टू नॉर्थ—ईस्ट इण्डिया (25 अगस्त 2014)

सितंबर, 2014

- डॉ. विनोद कुमार (दिल्ली): बिहेवियरल फाइनांस— एन एक्सप्लेन टू सबप्राइम क्राइसिस ऑफ दी वर्ल्ड (22 सितम्बर 2014)
- डॉ. पदम कुमार जैन (म.प्र.): डायनामिक्स ऑफ इंटरपर्सनल रिलेशनस इन 'व्हेयर देयरज ए विल' (22 सितम्बर 2014)
- डॉ. निंगथॉजम आइरिना (मिजोरम) : इनफॉर्मल गवर्नेंस एण्ड कम्युनिटी इन्स्टिट्यूशन इन नॉर्थ-ईस्ट इण्डिया : इट्स पॉसिबिलिटीज एण्ड लिमिटेशन (22 सितंबर 2014)
- डॉ. सूर्याकांत नाथ (महाराष्ट्र) : इण्डिया-भूटान रिलेशनज : दी वे अहैड (22 सितम्बर 2014)
- डॉ. अनिल कुमार झा (म.प्र.): कॉन्सेप्शनज ऑफ मैरिटल क्वालिटी इन मिथिला (नॉर्थ बिहार), इण्डिया : ए स्टडी इन कल्चल जियोग्राफी (23 सितम्बर 2014)
- डॉ. उत्तरा यादव (लखनऊ) : मानवीय परिप्रेक्ष्य में गौतम बुद्ध का एक समाजराष्ट्रीय अध्ययन (दुख का कारण और निवारण : बुद्ध का आचरण दुनिया में सदाचरण) (23 सितम्बर 2014)
- डॉ. अनिर्बान मुखर्जी (सिलिगुड़ी): दी आइडिया ऑफ दी 'मिडल वे' इन माध्यमका फिलॉसफी (23 सितम्बर 2014)
- डॉ. अश्वनी कुमार (नई दिल्ली): हिन्दी पत्रिकाओं के दलित साहित्य विशेषांकों का दलित विमर्श : एक अध्ययन (24 सितम्बर 2014)
- डॉ. लक्ष्मीकांत चन्देला म.प्र.): समकालीन काव्य में लोक की धरती और जीवन (प्राकृतिक उपादानों के विशेष संदर्भ में) (24 सितम्बर 2014)
- डॉ. रावेन्द्र कुमार साहू (सतना, मध्य प्रदेश): वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में बघेली लोकगीतों की प्रासंगिकता (24 सितम्बर 2014)
- डॉ. प्रभात मित्तल (दिल्ली): इन्फॉर्मेशन फ्लोस बिटवीन दी यू.एस. एण्ड इण्डिया गोल्ड फ्यूचरस ट्रेडिंग (24 सितम्बर 2014)

अक्टूबर 2014

- डॉ. प्रेमाकुमारा जी.एस. (कर्नाटक): एनर्जी इकॉलजी एण्ड सस्टेनेबल डिवेलपमेंट : ए कम्परेटिव एनालिसिस (15 अक्टूबर 2014)
- डॉ. पायल उपाध्याय (राजस्थान): चेंजिंग परस्पेक्शन टूवर्डस मदरहुड : ए स्टडी ऑफ सुरोगेसी इन इण्डिया (15 अक्टूबर 2014)
- डॉ. सुनेत्रामित्रा (कोलकाता): प्वाइनियर टू प्रोफेशनलस : इंटरपरन्योरस ऑफ कलोनियल बंगाली थियेटर (15 अक्टूबर 2014)
- श्री रवि आर. शुक्ला (मुम्बई): पॉजिशनिंग दी दलित पॉलिटिक्स : बी.एस.पी. इन जनरल इलैक्शन ऑफ 2014 (16 अक्टूबर 2014)
- डॉ. सुरेन्द्र नायक (उ.प्र.) : रिजरवेशन : बून ऑर बेन? (16 अक्टूबर 2014)
- डॉ. अनिल कुमार विश्वकर्मा (उ.प्र.) : अभिव्यक्ति के खतरों का कवि : मुक्तिबोध (16 अक्टूबर 2014)

- डॉ. सिंधु अंधेरजानम डी. (केरल): *चेंजिंग रूरल ग्राफिक्स एण्ड फैमिनिस्ट रीडिंग्स इन ए थर्ड वर्ल्ड लोकेट : दी केस ऑफ 'आथी'* (17 अक्टूबर 2014)
- प्रोफेसर सिमरन चढढा (नई दिल्ली) : *'इन माई फादरज हाउस' : वूमेन वॉसिस एण्ड दी वार इन श्री लंका* (17 अक्टूबर 2014)
- डॉ. विजय शेशाद्री (कर्नाटक.): *रिलोकेटिंग इण्डिया : ए स्टडी ऑफ सिलेक्टड इण्डियन इंग्लिश नॉवेलस* (17 अक्टूबर 2014)

नवंबर 2014

- डॉ. बासवराज ताल्लुर (कर्नाटक): *स्प्रिचुअलाइजिंग लाइफ : ए स्टडी ऑफ दी वाचानास ऑफ एक्का महादेवी* (18 नवंबर 2014)
- डॉ. पुलक चंद्रा देवनाथ (मिजोरम): *एजुकेशन ऑफ दी कोच राजबोंगशी इन धुब्री डिस्ट्रिक्ट ऑफ असम* (18 नवंबर 2014)
- डॉ. जी.पी. कपूर (शिमला): *ट्रेंड्स ऑफ पॉपुलेशन इन इण्डिया* (18 नवंबर 2014)
- डॉ. देव पाठक (न्यू दिल्ली): *डैथ ऑफ डैथ? : ए क्रिटिकल एक्सप्लोरेशन ऑफ एन अलटरनेटिव पैराडिगम* (19 नवंबर 2014)
- प्रोफेसर डी.एस. सोमशेखर (कर्नाटक): *दी वनचेतना एट हैदर : ए यूनीक कल्चरल एण्ड इनवायरन्मेंटल एक्सपैरिमेंट* (20 नवंबर 2014)
- डॉ. श्रीकांत एस. जाधव (पुणे): *नागास एण्ड नागाराजासा* (20 नवंबर 2014)
- सुश्री रचना सेठी (नई दिल्ली): *नेगोशियेटिंग सिटी स्पेसिस : ए रीडिंग ऑफ मंजू कपूरज होम* (20 नवंबर 2014)
- श्री विक्रम भारद्वाज (मण्डी): *फोक बिलीफ एण्ड ट्रेडिशनस ऑफ दी सुपरनेचुरल : ए केस स्टडी ऑफ हिमाचल प्रदेश* (21 नवंबर 2014)
- सुश्री वर्षा रमन माल्वाडे (मुम्बई): *दशावतार : देन एण्ड नाउ* (21 नवंबर 2014)
- डॉ. शैज अहमद (राजस्थान): *जेण्डर इनेक्वालिटी इन इण्डिया : ए राइजिंग कन्सर्न* (21 नवंबर 2014)
- श्री आभा खेतरपाल (हरियाणा): *इम्पैक्ट ऑफ न्यूट्रिशन एजुकेशन ऑन दी हैल्थ एण्ड लिपिड प्रोफाइल ऑफ हाउसवाक्स*, (21 नवंबर 2014)

मार्च 2015

- डॉ. अमरेन्द्र कुमार दास (आंध्र प्रदेश) : *ग्लोबल एण्ड लोकल फ्रेमज ऑन इलालजी एण्ड सरस्टेनेबिलिटी : इंटैरोगेटिंग दी रिटोरिक ऑफ ए डेनियल एण्ड डिसेंगेजमेंट* (23 मार्च 2015)
- डॉ. रवीन्द्र सिंह (नई दिल्ली) : *पंजाब, पंजाबी सोसायटी एण्ड हिस्ट्री* (23 मार्च 2015)
- डॉ. डी.के. सिंगला (पटियाला) : *एन अप्रेजल ऑफ एडल्ट्री अंडर दी पर्सनल लॉ* (23 मार्च 2015)
- डॉ. अरुण कुमार (उत्तर प्रदेश) : *ग्लोबल प्रेजेंस ऑफ इण्डियाज मर्जर एण्ड एक्यूजिशन* (24 मार्च 2015)
- डॉ. प्रियेश सी.ए. (केरल) : *इम्पैक्ट ऑफ लैण्ड राइट्स, कम्युनिटी इनिशियेटिव्स एण्ड अपोरच्युनिटीज आन डोमेस्टिक वायलेंस— विद रेफरेंस नायर कम्युनिटी एण्ड सिरियन क्रिश्चियन ऑफ केरला* (24 मार्च 2015)

- डॉ. हरेश एच. मेहता (गुजरात) : *भावाई : ट्रैडिशनल थियेटर ऑफ गुजरात* (24 मार्च 2015)
- डॉ. शशिकांत वाई. सोनावाने 'सावन' (महाराष्ट्र) : *ए स्टडी ऑफ बुद्धिस्ट आदिवासी ऑफ भोटियाज फोक कल्चर इन एच.पी.— ए व्यू ऑफ प्राइमोरडियोलिटी, रेजिडेंस एण्ड ऑरनामेंट्स* (25 मार्च 2015)
- डॉ. नीना अरोड़ा (शिमला) : *रिविजिटिंग पार्टिशन इन सिंधी फिक्शन* (25 मार्च 2015)
- डॉ. विन्नी जैन (उत्तर प्रदेश) : *कलोनियल परसेप्शनज ऑफ वूमेन इन इण्डिया एण्ड दी नेशनलिस्ट रिसर्पोस; डिक्स्ट्रिटिंग बैकिज्म 'द्रौपदी* (25 मार्च 2015)

ट. अन्य कार्यक्रम

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष प्रोफेस वेद प्रकाश ने 07 अप्रैल 2014 को संस्थान में 'वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में भारत में उच्चतर शिक्षा' विषय पर विशेष व्याख्यान प्रस्तुत किया गया।

आनंद (गुजरात) से पधारे डॉ. फ्लैक्स पदेल ने 05 सितंबर 2014 को डॉ. उमा महेश्वरी की पुस्तक *व्हेन गोदावरी कमस : पीपलस हिस्ट्री ऑफ ए रीवर (जर्नी इन दी जोन ऑफ दी डिस्पोजैस्ड)* के विमोचन अवसर पर विशेष व्याख्यान प्रस्तुत किया गया।

दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व सहायक प्राध्यापक डॉ. भरत गुप्त ने *रिलेशनशिप बिटवीन एनसिएंट इण्डियन एण्ड ग्रीक ड्रामा* (11 सितंबर 2014) विषय पर अपना विशेष व्याख्यान प्रस्तुत किया।

भारतीय विज्ञान संस्थान बंगलोर के अवकाश प्राप्त प्रोफेसर प्रोफेसर एन. मुकुंदा ने *साइंस एण्ड दी ह्यूमन प्रेडिकामेंट* विषय पर 17 मार्च 2015 को विशेष व्याख्यान प्रस्तुत किया गया।

1. पुराने गेयटी थियेटर (गौथिक), शिमला में अवुदाई नाटक का मंचन

संस्थान के अस्तित्व के 50 वर्ष प्रारंभ होने के अवसर पर संस्थान की पूर्व अध्येता तथा दिल्ली विश्वविद्यालय में दर्शन विभाग की पूर्व प्राध्यापक डॉ. कंचन नटराजन द्वारा शोध की गई पाण्डुलिपि पर आधारित नाटक अवुदाई का हि. प्र. कला, भाषा एवं संस्कृति विभाग शिमला के सहयोग से गेयटी में मंचन किया गया। इस नाटक में अभिनय तथा निर्देशन राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, दिल्ली के कलाकारों ने किया। श्री अभिलाश पिल्लई इस नाटक के निर्देशक थे तथा श्री दिलीप भांकर, सुश्री सीमा अग्रवाल तथा श्री जिजो के मैथ्यू ने अभिनय किया।

2. कविता पाठ

संस्थान में टैगोर स्मृति व्याख्यान के अगले दिन एक कविता पाठ का आयोजन किया गया। 21 अक्टूबर 2014 को प्रोफेसर मीना अलैक्सैंडर, प्रोफेसर राधावल्लभ त्रिपाठी, श्री राजेश जोशी, प्रोफेसर सुक्रीता पॉल तथा गुलाज़ार साहब ने इस अवसर संस्थान के पूल थियेटर में अपनी कविताओं को पाठ किया।

4. प्रकाशन

संस्थान के पास अब तक लगभग 525 प्रकाशन हैं। संस्थान के प्रकाशनों का अकादमिक जगत में एक खास स्थान है। इन प्रकाशनों में संस्थान के अध्येताओं द्वारा प्रस्तुत मानोग्राम, आगन्तुक प्रोफेसरों और आगन्तुक विद्वानों द्वारा प्रस्तुत

व्याख्यान तथा संस्थान में आयोजित संगोष्ठियों की कार्यवाहियां सम्मिलित हैं। अपनी स्वयं के प्रकाशनों के अतिरिक्त संस्थान ने अन्य अग्रणी व्यावसायिक प्रकाशकों जैसे—ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, सेज़, रूटलेज, ओरियेन्ट ब्लैक्सवैन, आर्थन इंटरनेशनल के साथ सहप्रकाशन की व्यवस्था भी की है। संस्थान दो अर्ध-वार्षिक पत्रिकाओं 'समरहिल : आईआईएस रिव्यू एण्ड स्टडीज़ इन ह्यूमैनिटीज़ एण्ड सोशल साइंसिस' प्रकाशन करता है।

प्रकाशित पुस्तकें

इस प्रतिवेदन की अवधि के दौरान संस्थान द्वारा निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं —

1. डॉ. प्राची गुरजारपाध्याय कृत पुस्तक *मराठी लिट्रेरी थियोरि इन दी नाइनटीथ सेंचुरी*
2. प्रोफेसर आर.सी. प्रधानद्वारा संपादित *दी चैलेंजिंग ऑफ पोस्ट-मॉडरनिजम*
3. प्रोफेसर वी.के. वशिष्ठ कृत *रोल ऑफ महात्मा गाँधीज आइडियाज इन सोशल एण्ड पोलिटिकल मोबलाइजेशन ऑ आदिवासी ऑफ सदरन राजपुताना प्रिसली स्टेट्स (1921-48)*
4. डॉ. एम्ब्रोज पिटो एसजे कृत *फरॉम डिमाक्रेटिक साशलिज्म टू नियो-लिबरलिज्म : दी स्टोरी ऑफ इण्डियाज डिमाक्रेसी*
5. डॉ. बालकृष्ण शिराम कृत *किनशिप स्ट्रक्चरस एण्ड फास्टर रिलेशन इन इस्लामिक सोसायटी*
6. डॉ. मनीश ठाकुर कृत *दी क्वेस्ट फार इण्डियन सोशोलजी: राधाकमल मुखर्जी एण्ड अवर टाइम्स*
7. प्रोफेसर सशीज हेगड़े कृत *रिकांटेक्सचुअलाइजिंग डिस्पिलिनज थ्री लैक्चर ऑन मैथड*
8. प्रोफेसर टीआरएस शर्मा कृत *डॉयलॉगिक्स ऑफ कल्चरस इन एनसिअंट इण्डियन लिट्रेचरस*
9. डॉ. रामकमल कृत *अज्ञेय के साहित्य में मनुष्य की नियती*
10. डॉ. अर्जुन घोष कृत *फ्रीडम फरॉम प्रॉफिट: एच्यूइंग कॉपीराइट इन रेजिस्टेंस आर्ट*
11. प्रोफेसर अरिंदम चक्रवर्ती तथा प्रोफेसर सिबाजी बंदोपाध्याय द्वारा संपादित *महाभारता नाउ: नेरेशन, ऐस्थेटिक्स, एथिक्स(सह-प्रकाशन रूटलेज)*
12. डॉ. रणजीता दत्ता कृत *फरॉम हैगियोग्राफीज: रामानुज इन टैडिशन एण्ड हिस्ट्री(सह-प्रकाशन ओयूपी)*
13. डॉ. विश्वारूप सेन तथा डॉ. अभिजीत रॉय द्वारा संपादित *चैनलिंग कल्चरस: टेलिविजन स्टडी फरॉम इण्डिया(सह-प्रकाशन ओयूपी)*
14. प्रोफेसर करुणा गोस्वामी कृत *दी दशहरा ऑफ कुल्लु : हिस्ट्री एण्ड एनालसिस ऑफ ए कल्चर फिनोमेन (सह-प्रकाशन आर्थन इंटरनेशनल)*
15. डॉ. जया त्यागी कृत *कंटेस्टेशन एण्ड कम्पलायंस रिट्राइविंग वूमेनज एजेंसी फरॉम पौराणिक ट्रैडिशनज (सह-प्रकाशन ओयूपी)*
16. प्रोफेसर संध्या गोस्वामी द्वारा संपादित *दी ट्रबलड डाइवर्सिटी: पॉलिटिकल प्रोसेस इन नॉर्थईस्ट इण्डिया (सह-प्रकाशन ऑक्सफोर्ड प्रेस)*
17. डॉ. सैत्य ब्रत दास तथा डॉ. सौम्यब्रत चौधरी द्वारा संपादित *दी वेट ऑफ वायलेंस रिलिजन, लैंग्वेज एण्ड पॉलिटिक्स (सह-प्रकाशन ऑक्सफोर्ड प्रेस)*

जर्नल

1. स्टडीज इन ह्यूमैनिटीज एण्ड सोशल साइंसिस वॉ. 15, नं. 1 व 2, 2008, संपादक, डॉ. वर्षा गांगुली
2. स्टडीज इन ह्यूमैनिटीज एण्ड सोशल साइंसिस वॉ. 18, नं. 1 व 2, 2011, संपादक, डॉ. वर्षा गांगुली
3. स्टडीज इन ह्यूमैनिटीज एण्ड सोशल साइंसिस स्पेशल इश्यू "दी नेशन अनबाउंड: इण्डिया इन दी 1940ज वॉ. 20, नं. 2, 2013, अतिथि संपादक, प्रोफेसर कविता पंजाबी तथा डॉ. वी. गीथा
4. स्टडीज इन ह्यूमैनिटीज एण्ड सोशल साइंसिस वॉ. 14, नं. 1, 2007, संपादक, प्रोफेसर बी.एल. मुंगेर
5. स्टडीज इन ह्यूमैनिटीज एण्ड सोशल साइंसिस, असर्टिंग सर्टेनिटी: सेल्फ एण्ड कॉस्मोस वॉ. 20, नं. 1, 2013, संपादक, डॉ. राहुल गोबिंद
6. हिन्दी पत्रिका हिमांजलि का 9वां अंक
7. हिन्दी पत्रिका हिमांजलि का 10वां अंक

5 बिक्री एवं जनसम्पर्क अनुभाग

शिमला आने वाले पर्यटकों के लिये राष्ट्रपति निवास एक आकर्षण का केन्द्र है। गत वित्तीय वर्ष की तुलना में पर्यटकों की 8.6 प्रतिशत वृद्धि हुई है। वर्ष 2013-14 के 1,56,060 पर्यटकों की तुलना में 01 अप्रैल 2014 से 31 मार्च 2015 तक की अवधि के दौरान संस्थान में 1,69,597 पर्यटक (1,61,024 घरेलु और 8,573 विदेशी) पधारे।

आलोच्य वर्ष के दौरान 49,80,625.00 रुपये की आये पर्यटकों के प्रवेश टिकटों से हुई। जबकि वाहनों का प्रवेश से 4,60,580.00 रुपये की आये हुई। इस प्रकार वर्ष के दौरान प्रवेश टिकटों की बिक्री से कुल आय 54,41,205.00 रुपये हुई।

सोविनियर शॉप

वर्ष 2009 के अंतिम समय में संस्थान ने पुराने फायर स्टेशन और दो गैरजों का जीर्णोद्धार करके सोविनियर-कम-बुक-कॉफी शॉप को स्थापित किया। सोविनियर शॉप बहुत ही अच्छे ढंग से चल रही है। तथा संस्थान द्वारा प्रदत्त सुविधाओं को संस्थान में आने वाले आंगतुकों ने बहुत सराहना की है। सोविनियर शॉप में रखी गई वस्तुएँ पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बिन्दु है। वर्ष के दौरान सोविनियर की निम्नलिखित वस्तुएँ बेची गई : वायसरीगल लॉज की पुस्तकें (1481), टोपियाँ (456), पिक्चर पोस्टकार्ड (12816), कॉफी मग (1126), स्वेट भार्टस् (357), टी-शर्टस् (750), ग्रीटिंग कार्ड (406), कैलेंडर (125), स्कार्फ (24) तथा फ्रेम की मुख्य भवन की हुई तस्वीरें (22)। सोविनियर की बिक्री से कुल 4,32,802.00 रुपय भुद्ध लाभ हुआ।

संस्थान की बुक शॉप

आईआईएस बुक शॉप में संस्थान के प्रकाशनों के अतिरिक्त देश के अग्रणी प्रकाशकों जैसे- ऑक्सफोर्ड, ओरियेन्ट ब्लैक्सवन, सेज, मनोहर, टेलर और फ्रैंसिस, इंडस पब्लिसिंग कंपनी, आयरन बुक्स इंटरनेशनल, राजकमल प्रकाशन, साहित्य अकादमी तथा गांधी स्मारक संग्राहलय आदि की पुस्तकें हैं। वर्ष के दौरान संस्थान ने इन प्रकाशकों की 658 पुस्तकें बेची तथा इन पुस्तकों की बिक्री से कुल 77,870.00 रुपये की आये हुई। इसी प्रकार बुक शॉप में संस्थान द्वारा

प्रकाशित 1876 पुस्तकें बेची गई। जिससे 1,88,281.00 रुपये की आये हुई। इसके अतिरिक्त संस्थान ने दिनांक 25.8.2014 से 29.8.2014 तक चण्डीगढ़ में आयोजित ए.सी. जोशी पुस्तकालय पुस्तक मेले में भी भाग लिया। इस मेले में 312 पुस्तकें बेची गई, जिनसे कुल 24,800/-रुपए की आमदन हुई। साथ ही संस्थान ने दिनांक 12.02.2014 से 21.02.2014 तक 23वें विश्व पुस्तक मेले में भी भाग लिया जहां संस्थान की 750 पुस्तकें बेची गई तथा कुल 53,296/-रुपए की बिक्री हुई। अतः वर्ष के दौरान संस्थान के प्रकाशनों की कुल बिक्री से 3,99,135.00 रुपये की आय हुई।

पर्यटकों के आकर्षण के लिये कोर्ट गैलरी भी खोली गई है। हमने इसमें वायसरीगल लॉज के 40 दुर्लभ छाय चित्र लगाए हैं जिन्हें संस्थान द्वारा मिडलसैक्स विश्वविद्यालय और ब्रूड एस्टेट से प्राप्त किया गया था।

कॉफी शॉप

संस्थान ने फायर स्टेशन कैफे में मुरम्मत करके कॉफी शॉप खोली है जिसे पहले फायर स्टेशन के नाम से जाना जाता था। चाय, कॉफी, भीतल पेय, टोस्ट, सैंडविच, बिस्कुट, इडली साँबर तथा अन्य खाद्य पदार्थों को कैफे में बेचा जाता है।

कैफे की सीधा नियंत्रण फैलोज़ मैस/कैन्टीन द्वारा किया जाता है। कैफे में तीन व्यक्तियों को अनुबन्धीय आधार पर काम करने के लिए रखा गया है।

प्रतिवेदन वर्ष (अप्रैल 2014 से मार्च 2015) के दौरान कैफे का आय व्यय लेखा इस प्रकार है :

माह	आय (रु)	व्यय (रु)	व्यय पर आय की आधिक्य (रु)
अप्रैल	1,00,292.00	78,068.00	22,224.00
मई	1,54,228.00	1,06,499.00	47,729.00
जून	3,20,981.00	2,15,844.00	1,05,137.00
जुलाई	1,02,386.00	73,372.00	29,014.00
अगस्त	70,371.00	33,264.00	37,107.00
सितम्बर	56,347.00	25,907.00	30,440.00
अक्टूबर	91,572.00	63,114.00	28,458.00
नवम्बर	83,267.00	52,956.00	30,311.00
दिसम्बर	90,350.00	63,590.00	26,760.00
जनवरी	63,059.00	39,321.00	23,738.00
फरवरी	59,558.00	28,192.00	31,366.00
मार्च	94,407.00	60,961.00	33,446.00
कुल	1286818.00	841088.00	445730.00

संस्थान द्वारा कैफे में परोसी जानी वी खाद्य वस्तुओं में वृद्धि करने का प्रयास किया जा रहा है, क्योंकि यह पर्यटकों द्वारा, संस्थान के अध्येताओं, आईयूसी सह-अध्येताओं, अतिथियों और कर्मियों द्वारा सराहना की गई हैं।

6. पुस्तकालय

संस्थान के पुस्तकालय का न सिर्फ नियमित अध्येता अपितु आगंतुक प्रोफेसर, आगंतुक विद्वान, आईयूसी सह-अध्येता, परामर्शी सदस्य तथा संगोष्ठियों में आए प्रतिभागी लाभ उठाते हैं। गठित चयन समिति की सिफारिशों के आधार नियमिति

रूप से पुस्तकों व पत्र-पत्रिकाओं के नवीनतम संस्करणों की खरीद कर पुस्तकालय का आधुनिकीकरण होता रहता है।

विगत कुछ वर्षों में पुस्तकालय ने मानविकी व समाजशास्त्रों के क्षेत्र में संग्रह के नवीनीकरण हेतु अतिरिक्त प्रयास किये गए हैं। विगत अकादमिक वर्ष के दौरान पुस्तकालय में 3090 पुस्तकें उपार्जित की गईं तथा 214 मुद्रित जर्नल व पत्र-पत्रिकाएं अभिदत्त की गईं। पुस्तकालय का पूरी तरह कम्प्यूटरीकरण कर दिया गया है तथा पुराने प्रसार के स्थान पर पुस्तकालय-सामग्री को जारी व वापिस करने हेतु पूर्णतः स्वचलित प्रणाली प्रयोग में लाई गई है। पुस्तकालय की पुस्तकों की सूची को ऑनलाईन कर दिया गया है। इंटरनेट द्वारा प्रयोगकर्ता कहीं भी किसी भी समय पुस्तकालय के कैटलॉग को 24x7 के रूप में देख सकते हैं। 18 नए सदस्य सदस्यता फीस अदा कर पंजीकृत किये हैं। इसके अतिरिक्त 07 अन्य सदस्यों को लघु अवधि के लिए परामर्श के लिए पुस्तकालय की अनुमति दी गई है। वर्ष 2014-15 में 1398 आगंतुक पुस्तकालय में आए।

पुस्तकालय अच्छे उपकरणों युक्त तथा डिजिटल संसाधनों से जोड़ा गया है जिससे ज्ञान के भण्डार का 24 घण्टे लाभ उठाया जा सकता है। ई-बुक्स, ई-जर्नल, पिछले वॉल्यूम तथा मुख्य व व्यापारिक प्रकाशकों के इलेक्ट्रॉनिक अभिलेख आदि में वृद्धि हुई है। पुस्तकालय के संग्रह में विभिन्न विद्वानों द्वारा भेंट की गई 449 पुस्तकें भी सम्मिलित की गई हैं।

7. औषधालय

संस्थान में एक अच्छा औषधालय जिसमें एक आवासी चिकित्सा अधिकारी, व एक फार्मसिस्ट है, जो संस्थान के अध्येताओं सह-अध्येताओं, कर्मचारियों और उनके परिवारों को चिकित्सीय सहायता प्रदान करता है। आलोच्य वर्ष (01.4.2014 से 31.3.2015) के दौरान औषधालय में लगभग 3137 रोगियों की जांच की गई तथा उनका ईलाज किया गया। उक्त अवधि के दौरान आवासी चिकित्सा अधिकारी द्वारा 80 रोगियों को आपातकालीन स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान की गईं।

8. यौन-उत्पीड़न समिति

अधिवक्ता तथा स्त्री मामलों की विशेषज्ञ श्रीमती त्रिशा शर्मा ने 2 मई 2014 को संस्थान के पूल थियेटर में यौन-उत्पीड़न के विभिन्न पहलुओं पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। यौन-उत्पीड़न की समिति संबंधी जानकारी संस्थान की वेबसाइट पर अपलोड कर दी गई है। पद्मश्री से सम्मानित डॉ. बैटिना बौमर के स्थान पर दो डॉ. एनाक्सी मित्रा तथा सुश्री फाल्मा चौहान का समिति में शामिल किया गया। यह एक खुशी की बात है कि समिति के पास अभी तक यौन-उत्पीड़न का कोई भी मामला नहीं आया है।

9. राजभाषा

परीवीक्षा अवधि के दौरान संस्थान में राजभाषा के उत्थान तथा उसके व्यावहारिक क्रियान्वयन की दिशा निम्नलिखित कदम उठाए गए—

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकों का आयोजन—वर्ष में हर तिमाही के दौरान संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की नियमित बैठकों का आयोजन किया गया। इन बैठकों में भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अंतर्गत राजभाषा विभाग से राजभाषा हिन्दी के व्यावहारिक प्रगामी प्रयोग हेतु प्राप्त दिशा-निर्देशों के अनुपालन हेतु ठोस कदम उठाए गए।

तिमाही कार्यशालाओं का आयोजन—संस्थान में राजभाषा के प्रचार तथा उसके क्रियान्वयन के दिशा में हिन्दी की

तिमाही कार्यशालाओं का भी आयोजन किया गया। इन कार्यशालाओं में राजभाषा के व्यावहारिक प्रयोग संबंधी संस्थान के अध्येताओं तथा सह-अध्येताओं द्वारा विशेष व्याख्यान प्रस्तुत किये गये। इसके अतिरिक्त 3 फरवरी 2015 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, शिमला के सहयोग से संस्थान में एक नगर स्तरीय राजभाषा कार्यशाला का भी आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में संस्थान के अतिरिक्त शिमला स्थित केन्द्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों, उपक्रमों, बैंकों आदि के अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

हिन्दी दिवस/सप्ताह/पखवाड़ा एवं हिन्दी प्रतियोगिताएं— संस्थान में 14 सितंबर 2014 को हिन्दी दिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर संस्थान के अध्येता, सह-अध्येता, अधिकारी तथा कर्मचारी उपस्थित थे। माह के दौरान संस्थान में राजभाषा के प्रचार-प्रसार कई हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनमें संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह— हिन्दी का वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 01.12.2014 को मनाया गया। इस समारोह में संस्थान के निदेशक प्रोफेसर चेतन सिंह ने हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेताओं तथा प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों पुरस्कार प्रदान किये गये। इसके अतिरिक्त इस अवसर पर सरकारी कामकाज में मूल हिन्दी में टिप्पण/आलेखन करने की प्रोत्साहन योजना के तहत 10 अधिकारियों/कर्मचारियों को नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

10. सम्पदा का रखरखाव तथा विशेष मरम्मत कार्य

आलोच्य वर्ष के दौरान संस्थान परिसर का के.लो.नि. विभाग के सिविल और विद्युत विभागों द्वारा दैनिक रखरखाव के अतिरिक्त संस्थान की परिसर में विशेष मरम्मत कार्य भी किये गये। संस्थान द्वारा आलोच्य वर्ष में सम्पदा की मरम्मत व रखरखाव के जो मुख्य कार्य किये गये वे निम्न प्रकार से हैं :

1. संस्थान के भवन का संरक्षण तथा जीर्णोद्धार

संस्थान की ओर से राष्ट्रपति भवन के मुख्य भवन के विशेष संरक्षण तथा जीर्णोद्धार के लिए उच्चतर शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय से 56.00 करोड़ रुपए की धनराशि स्वीकृत करने का आग्रह किया गया। संस्थान मंत्रालय का आभारी है कि हाल ही में संस्थान को मंत्रालय की ओर से के.लो.नि. विभाग द्वारा तैयार डीपीआर में निहित फेस-1 के कार्य के लिए 10.00 करोड़ रुपए की अनुदान प्राप्त हो गई है।

तदनुसार के.लो.नि. विभाग को फेस-1 के तहत जीर्णोद्धार के लिए लागत आककन प्रस्तुत करने को कहा गया जिसके प्रत्युत्तर में संस्थान को 8,95,30,000.00 (आठ करोड़ पचानवे लाख तीस हजार मात्र) रुपए का प्राक्कलन प्राप्त हुआ। इस प्रकार अनुमोदन तथा वित्तीय स्वीकृति के उपरान्त के.लो.नि. विभाग को आगामी आवश्यक कार्यवाही करने हेतु 5,00,00,000.00 (पांच करोड़ मात्र) रुपए की राशि जारी की गई।

2. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग

क. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग से जन प्रवेश भवन के सामने चापाकार पथरों से बनी रेलिंग की मरम्मत करने हेतु आग्रह किया गया क्योंकि उसके नीचे भूमि काफी हद तक खिसक गई है जिसे पथर आदि वांछनीय सामग्री से भर कर ऊपर उठाना है ताकि जन प्रवेश भवन की मजबूती हो सके।

ख. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग से मुख्य भवन के दक्षिण-पश्चिम भाग बनी कंक्रीट के स्लैब को ठीक करने के लिए एक रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए भी कहा गया है क्योंकि उस स्लैब पर वर्षों पुराने घास के मैदान की मिट्टी से जल रिसाव हो रहा है, जिससे वह स्लैब खराब हो रहा है। संस्थान की योजना है कि उस

स्लैब का जीर्णोद्धार हो जाये।

ग. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा वायसरीगल लॉज, राष्ट्रपति निवास, शिमला के मुख्य भवन में स्थित टैगोर सेंटर के साथ लगली छत की मरम्मत के लिए प्रस्तुत किये गए 15,00,000/—रुपए के प्राक्कलन को संस्थान द्वारा मंजूरी प्रदान की गई।

3. के.लो.नि.वि. (सिविल) के कार्य।

क. के.लो.नि.वि. (सिविल) द्वारा मुख्य भवन के पिछली तरफ पड़े मलबे तथा पत्थरों को हटाकर उस जगह को पार्किंग हेतु बनाए जाने हेतु दिये गए 23,85,730/—रुपए के प्राक्कलन को संस्थान द्वारा मंजूरी प्रदान की गई।

ख. के.लो.नि.वि. (सिविल) द्वारा मुख्य भवन के पिछली तरफ तथा गोरखा गेट के प्रवेश द्वार एवं ऑब्जरवेटरी अतिथि गृह के रास्ते फोटो गैलरी के समीप मण्डी/रिवाल्सर पत्थरों के दिये संशोधित 36,66,670/—रुपए की राशि के प्राक्कलन को संस्थान द्वारा मंजूरी प्रदान की गई।

ग. के.लो.नि.वि. (सिविल) द्वारा स्केवयर हाल के समीप नए डंगे के निर्माण तथा संस्थान की परिसर में अन्य छुटपुट कार्यों के लिए दिये गये 22,30,800/—रुपए के प्राक्कलन संस्थान द्वारा मंजूरी प्रदान की गई।

घ. के.लो.नि.वि. (सिविल) द्वारा 18 फैमिली लाइन में सेट नं. 4,5,8,9,12 के जीर्णोद्धार तथा सुधार के लिए तथा सेट नं. 7 के बाहर सौंदर्यकरण के लिए दिये गये 22,30,800/—रुपए के प्राक्कलन संस्थान द्वारा मंजूरी प्रदान की गई।

ड. संस्थान द्वारा अपने परिसर में स्थित गैर-रिहायशी भवनों की हर आये दिन मरम्मत के लिए वर्ष 2015-16 के लिए 26,32,759/—रुपए की मंजूरी प्रदान की गई। कार्य प्रगति पर है।

च. संस्थान द्वारा परिसर में स्थित टेनिस कोर्ट की छत में हो रहे रिसाब को रोकने के लिए उसकी मरम्मत हेतु 10,00,000/— के अनुमानित व्यय की मंजूरी प्रदान की गई।

4. के.लो.नि.वि. (विद्युत) के कार्य।

क. के.लो.नि.वि. (विद्युत) द्वारा परिसर में स्थित विद्युत उपकेन्द्र से विद्युत आपूर्ति के लिए केवर तार बिछाने के लिए दिये गए 9,46,115/—रुपए के प्राक्कलन को संस्थान द्वारा मंजूरी प्रदान की गई। कार्य प्रगति पर है।

ख. संस्थान की सुरक्षा दृष्टि से लगाये जाने वाले सीसीटीवी कैमरे लगाने हेतु के.लो.नि.वि. (विद्युत) द्वारा दिये गए 63,37,636/—रुपए के प्राक्कलन को संस्थान द्वारा मंजूरी प्रदान की गई।

ग. के.लो.नि.वि. (विद्युत) द्वारा पुस्तकालय क्षेत्र में एलईडी लगाने हेतु दिये गए 11,02,361/—रुपए के प्राक्कलन को संस्थान द्वारा मंजूरी प्रदान की गई।

घ. के.लो.नि.वि. (विद्युत) द्वारा परिसर में स्थित कोरटीन हाल सेट नं. 3 तथा अनैक्सी 2 सेटों में वायरिंग/रिवायरिंग के लिए दिये गए 9,34,296/—रुपए के प्राक्कलन को संस्थान द्वारा मंजूरी प्रदान की गई।

ड. के.लो.नि.वि. (विद्युत) द्वारा परिसर में स्थित पोस्ट मास्टर फ्लैट में वायरिंग/रिवायरिंग के लिए दिये गए 3,58,557/—रुपए के प्राक्कलन को संस्थान द्वारा मंजूरी प्रदान की गई।

11. लेखा एवं बजट

क) वर्ष 2014-2015 का अनुमोदित संशोधित आंकलन तथा वर्ष 2015-2016 के लिए अनुमानित बजट इस प्रकार है—
(रुपए लाखों में)

योजना का नाम	संशोधित आंकलन 2014-2015	बजट आंकलन 2015-2016
योजनेत्तर	1066.64	1148.70
योजनागत	1700.00	2100.00

महालेखाकार, लेखा परीक्षा (केन्द्रीय), भारतीय लेखा परीक्षा एवं लेखा विभाग द्वारा वर्ष 2014-15 के परिक्षित वार्षिक लेखे अनुलङ्क-1 पर हैं।

ख) आई0यू0सी0 लेखे

मानविकी व सामाजिक विज्ञानों के लिए अन्तरविश्वविद्यालय केन्द्र (आईयूसी) स्कीम के लेखे महालेखाकार, लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), भारतीय लेखा परीक्षा एवं लेखा विभाग द्वारा किये गये हैं। वर्ष 2014-2015 का व्यय 60.27 लाख रुपए था।

मानविकी व सामाजिक विज्ञानों के लिए अन्तरविश्वविद्यालय (आईयूसी) केन्द्र योजना के वर्ष 2014-2015 परिक्षित लेखों का विवरण अनुलङ्क-2 पर हैं।

12. उद्यान

संस्थान पूर्व वायसरीगल लॉज तथा ऐतिहासिक भवन में चलायमान है जिसका एक अपना सुन्दर उद्यान है तथा जिसमें फूलों, पौधों और वृक्षों की विभिन्न प्रजातियाँ हैं। विश्व में शायद इस प्रकार के प्राकृतिक दृश्य का उद्यान एक ही है। उद्यान वर्षा पर निर्भर हैं जो इसकी सिंचाई एवं रखरखाव के लिए एकत्रित किया जाता है। बारिश के संरक्षित जल से लॉन व उद्यान के रखरखाव के लिए प्रयोग किया जाता है। आलोच्य वर्ष में निम्न कार्य किये गए—

1. संस्थान के उद्यान की नर्सरी में मौसमी पौधों का बीजारोपण किया गया। इन पौधों को संस्थान के प्रागण की क्यारियों, परिसर में स्थित अध्येताओं/अधिकारियों के आवासों जैसे स्कवेयर हाल, सिद्धार्थ विहार, आब्जरबेटरी कॉटेज, आब्जरबेटरी हाउस (अतिथि गृह), रेड स्टोन, डैलविला तथा बिलासपुर हाउस प्रत्यारोपण किया गया।
2. माह अप्रैल 2014 के दौरान नए गमलों में प्रिमुला, जैरेनियम, ऑकिड, तथा आईवी प्रत्यारोपित किये गये तथा अगस्त 2014 में जूनिपरस, फ्यूशिया, जैरेनियम, कमेनिया, मैग्नोलिया, यूफोरबिया, गुलाब, हाइड्रेंजिया, वनसेनिया रोज, रेड स्पारिया, आईवी, ड्यूरांटा, यूनिमस, रैक्स बिगोनिया आदि की कलमें लगाई गईं। इन कलमों का प्रयोग संस्थान के परिदृश्य तथा परिसर में लगाने के लिए किया जाता है। इन कलमों से बने पौधों को संस्थान उद्यान अनुभाग में बेचा भी जाता है। इसी प्रकार प्रिमुला, साइकलामेन, स्कॅजांथस, सिनेरिया, पेंजी, पैटूनिया, कैलसियोलेरिया, गोडेसिया, एंथीरहिनीम, आईस प्लांट, होलीहॉक, गैलेडिया, टैनासिटम, कैरियोप्सिस, डेलफिनिम, कैलेंडुला, लॉक्सपुर, क्रिसंथेमेअम, सैप्नेरिया, कैंडिटफ, क्लैरकिया, कॉनफ्लावर की विविध किस्में नर्सरी में तैयार की गईं तथा नवम्बर-दिसंबर 2014 के दौरान उनका क्यारियों में पौधारोपण किया गया। माह जुलाई तथा अगस्त 2014 के दौरान स्टैटिक्स, एस्टर, लोबेलिया, बिगोनिया ट्यूबरस, बिगोनिया बाडा बिंग, मिमल्स, गेंदे की विभिन्न प्रजातियां, इम्पेटिन्स, जरबरा कोलेस, गॉफेरेना,

सेलोसिया, कोचिया, बालसम, कॉस्मोस तथा जिनिया, साल्विया आदि की विभिन्न किस्में नर्सरी में उगाई गईं तथा उन्हें परिसर की क्यारियों में प्रत्यारोपित किया गया। जून 2014 में नई बीजारोपण/पौधरोपण के लिए क्यारियां बनाई गईं।

3. सिनारिया, स्काइजैथस, ऐंटीरहिनम, प्रिमूला, प्राइमरोज, पैटुनिया, पैंजी, टैनसीटम, आइस प्लांट, रेनानकुलस, कारनेशन, होलीहॉक, ल्यूपिन, कैसियोलेरिया, साइकलामेन, लाइकनेस, डेलफिनियम, जिप्सोफिला (श्वेत एवं पीत) गोडेसिया तथा बिगोनिया आदि नए पौधे उगाए गये तथा सितंबर 2014 से नवंबर 2014 तथा फरवरी-मार्च 2015 के दौरान उन्हें संस्थान के परिसर की क्यारियों में प्रत्यारोपित किये गये। नर्सरी में सिनरेरिया, स्काइजैथस बिगोनिया सिंगल, प्रिमूला (प्राइमरोज) को नए गमलों में लगाया गया। नए गमलों में प्रत्यारोपण के लिए मृदा-मिश्रण तैयार किया गया। उनमें से कुछ पौधों को भवन के अंदर सजावट के लिए बड़े गमलों में लगाया गया।
4. गेंदे, कोलेस, गोदेतिया, ऐंटीरहिनियम, पैंजी, सिलोसिया, रेनानकुलस, साल्विया, सूरजमुखी, कैलेंडुला, डांयथस आदि मौसमी पौधों के बीज क्यारियों से इकट्ठे किये गये तथा आगामी वर्ष के लिए उनका भण्डारण कर लिया गया।
5. जूनिपर, फ्यूसिया, जेरेनियम, कैमेलिया, मैगनोलिया, यूफोरबिया, गुलाब, हाइड्रेंजिया, वनसेनिया रोज, रेड स्पारिया, आइवी, प्राइवेट, ड्यूरांटा, इयोनिमस, रेक्स बिगोनिया, सप्रेसिस प्राइवेट हैडगे, चाइनीज लैटरन, हैडरा हैलिक्स आइवी, सिनरेरिया मैरितिमा, जैस्मिन आदि की कलमें नर्सरी के मिस्ट चैम्बर में रोपित की गईं, जिन्हें उद्यान के घरेलु प्रयोग में लाया जायेगा और दिसम्बर 2014 से फरवरी 2015 की अवधि के दौरान बेचा जायेगा। मिस्ट चैम्बर में बिगोनिया, मैरीगोल्ड, बलसम साइकलामेन, जूनिपर तथा अन्य पौधों की कलमें भी लगाई गईं जिन्हें पी-बैग तथा संस्थान के उद्यान में प्रत्यारोपित किया गया।
6. नर्सरी में रखे गये पौधों की नियमित रूप से सिंचाई की गई तथा मालियों द्वारा आवश्यकतानुसार पौधारोपण किया गया।
7. बारहमासी पौधों को क्यारियों में लगाने के लिए नवंबर तथा दिसंबर 2014 के दौरान क्यारियों की अच्छी तरह से खुदाई कर खाद आदि डाली गई तथा मिट्टी को नम किया गया। इस अवधि के दौरान अचैलिया, क्रिसंथेमम, गोल्डन रॉड, सनसाइन डेड्रीम, पायोनिया, नाइल लिली आदि बारहमासी/स्थायी पौधों के बहुलीकरण तथा पुनःरोपण का कार्य भी किया गया।
8. गोबर से बनी खाद खरीदी गई तथा संस्थान की परिसर में स्थित फूलों की क्यारियों में बिखेरा गया और सही ढंग से मिट्टी में मिलाया गया। इसके अलावा सर्दियों में गोबर से बनी खाद को स्केवयर हाल, आब्जरवेटरी कॉटेज, सिद्धार्थ विहार, रेड स्टोन तथा दूसरे अन्य भवनों के साथ बने बगीचों में भी डाला गया।
9. विस्टेरिया, टेकोमा, जैस्मिन आदि बेलों की छंटाई आदि की गई। सर्दी के मौसम में हाइड्रेंजिया, कारला लिली, डे लिली, अगेपैथस लिली आदि के अनचाही टहनियों की कांट-छांट कर उन्हें निकाला गया।
10. संस्थान के बगीचों का नियमित रखरखाव रखा गया, जिसमें बगीचों के रास्तों की सफाई, तथा पौधारोपण तथा लॉन में नियमित रूप से खड़पतवार, ऊपरी घास निकालने आदि का कार्य शामिल था।
11. हिमालयी बान के वृक्षों के गिरे हुए पुराने पत्तों को इकट्ठा कर उन्हें मिट्टी में मिलाया गया।

12. समीपवर्ती जंगल से सेवार घास का इकट्ठा किया गया तथा गमलों के अंदर लगाया गया ताकि उनसे पानी और मिट्टी का रिसाव न हो।
13. दिसंबर 2014 से फरवरी 2015 के बीच स्केवर हाल के टैरेस गार्डन तथा संस्थान के मुख्य भवन के पिछले हिस्से में कारपेंटर वर्कशाप के ऊपर पानी का रिसाव हो रहा था अतः वहां से लॉन की घास समेत मिट्टी को संस्थान के अतिथि गृह (ऑब्जरवेटरी हाउस) के पिछले वाले हिस्से में प्रत्यारोपित किया गया।
14. संस्थान के मुख्य भवन के इर्द-गिर्द, अध्येताओं/अधिकारियों के आवासों जैसे— रेड स्टोन, डेलविला, बिलासपुर हाउस, ऑब्जरवेटरी हाउस, ऑब्जरवेटरी, ऑब्जरवेटरी कॉटेज, स्केवर हाल, सिद्धार्थ विहार के लॉन की घास की कटाई की गई।
15. माह के दो सोमवार पीतल के गमलों को साफ किया गया तथा उद्यान अनुभाग में कार्यरत कर्मचारियों द्वारा मुख्य भवन, जन प्रवेश में रखे गए मिट्टी के गमलों का बराबर रखरखाव किया गया तथा फूल-सज्जा भी की गई।
16. संस्थान के पिछले लॉनो में बाड़ स्वरूप नए पौधे लगाए गए। इसके अतिरिक्त फैंफेटेरिया/सोविनियर शॉप के समीपवर्ती छोटी पहाड़ियों हाइड्रेंजिया, सफेद डेजी, डूरांता, जूनiper आदि के पौधे भी लगाए गए। गुलाब बाग में नए गुलाब की पौधारोपण की गई।
17. 20 अक्टूबर 2014 को संस्थान में द्वितीय रवीन्द्रनाथ स्मृति व्याख्यान आयोजित किया गया, जिसमें गुलजार साहब बतौर मुख्य अतिथि थे के दौरान आयोजित समारोह के लिए मंच पर पुष्प सज्जा का कार्य संस्थान के उद्यान अनुभाग द्वारा किया गया।
18. संगोष्ठियों/कार्यशालाओं तथा सांस्कृतिक गतिविधियों के दौरान उद्यान अनुभाग द्वारा मुख्य भवन के अन्दर फूलों की व्यवस्था (फूलदानों की मुरम्मत आदि) की गई। इसके अतिरिक्त उद्यान अनुभाग द्वारा संस्थान के प्राधिकारियों के निर्देशानुसार संस्थान में आने वाले अति विशिष्ट मेहमानों के दौरे के दौरान उन्हें भेंट करने के लिए पुष्प गुच्छ तैयार किये गये।
19. 30 मई 2014 से 01 जून, 2014 तक सेज़ द्वारा रिज मैदान पर लगाई गई पुष्प प्रदर्शनी में भाग लिया तथा इस पुष्प प्रदर्शनी में पुष्प सुसजा तथा पुष्प संग्रह में संस्थान को द्वितीय पुरस्कार मिला तथा उत्तम उद्यान के लिए संस्थान को ट्रॉफी भी प्रदान की गई।
20. उपरोक्त कार्यक्रमों हेतु उद्यान अनुभाग के मिस्ट्र चैम्बर में कई सजावटी पौधे तैयार किये गए। इन पौधों की कलमें संस्थान के परिसर तथा आसपास के भू-भाग में पौधारोपण के उद्देश्य से रोपित की गई। इन कलमों से तैयार पौधों की बिक्री भी की गई जिससे इस आलोच्य वर्ष की अवधि के दौरान उद्यान अनुभाग कुल 23,235/-रुपए (मात्र तेईस हजार दो सौ पैंतीस रुपए) की राशि अर्जित की।

13. प्रशासनिक व अन्य सूत्रपात

आलोच्य वर्ष के दौरान कुछ नई गतिविधियां प्रारम्भ की गईं, जोकि आगामी वर्ष के दौरान फलीभूत होंगी।

- क) समीक्षा वर्ष के दौरान एक बार संस्थान की फेलोशिप अवार्ड कमेटी की बैठक 04 जुलाई 2014 को हुई। एफएसी की बैठक में 9 विद्वानों को अध्येतावृत्ति प्रदान की गई। इन अध्येताओं में प्रोफेसर ए. अच्युतन, डॉ. अनंदिता मुखोपध्याय, प्रोफेसर महेश चंपकलाल, डॉ. कौस्तव चक्रवर्ती, डॉ. आव. रशीद खान, सुश्री सौम्य शर्मा, डॉ. आशुतोष कुमार, डॉ. एम.टी. अंसारी तथा डॉ. टी. ग्राहम फैरनी हैं।

- ख) प्रतिवेदन की अवधि के दौरान जो अधिकारी/कर्मचारी 25-40 वर्ष का सेवाकाल समाप्त होने के पश्चात संस्थान से सेवानिवृत्त हुए, वे इस प्रकार हैं— दिनांक 30.6.2014 को श्री निरंजन ढोंगिया, कुक, दिनांक 31.7.2014 को श्री एस.एम. मस्के, सहायक पुस्तकालय अध्यक्ष तथा श्री दीप राम चपड़ासी, दिनांक 31.8.2014 को श्री गोरख राम, गार्डन चौधरी, दिनांक 31.8.2014 को श्री यशपाल भारद्वाज, सम्पदा निरीक्षक तथा दिनांक 31.12.2014 को श्री उमा दत्त, चपड़ासी।
- ग) सहायक पुस्तकालय अध्यक्ष, गार्डन चौधरी, सचिव के निजी सचिव तथा सम्पदा निरीक्षक के खाली पदों को विभागीय पदोन्नति से भरा गया। दिनांक 04.8.2014 को श्रीमती नीरज शर्मा को सहायक पुस्तकालय अध्यक्ष पद पर जबकि दिनांक 23.01.2015 को श्री मनी राम को गार्डन चौधरी के पद पर पदोन्नत किया गया।

भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग
कार्यालय महानिदेशक—लेखा परीक्षा (केन्द्रीय) चण्डीगढ़

क्रमांक: डीडीए/सीई/एस.ए.आर./2015-16/1367

दिनांक: 22.12.2015

सेवा में,

सचिव
भारत सरकार
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
भारत सरकार
नई दिल्ली

विषय:— भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला की 31 मार्च 2015 को समाप्त वित्तीय वर्ष की अलग लेखा परीक्षण रिपोर्ट।

महोदय,

मैं भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला की 31 मार्च 2015 को समाप्त वित्तीय वर्ष की अलग लेखा परीक्षण रिपोर्ट आपकी सेवा में आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित कर रहा हूँ। कृपया इस रिपोर्ट को संसद में प्रस्तुत करने तक गोपनीय रखा जाए।

प्रस्तुति के उपरान्त कृपया उपरोक्त रिपोर्ट की पांच प्रतियां हमें भेजने का कष्ट करें।

कृपया इस पत्र की पावती अवश्य भेजें।

भवदीय

हस्ता.

प्रधान निदेशक

संलग्न: उपरोक्त

प्रतिलिपि:— 31 मार्च 2015 को समाप्त वर्ष की प्रति पृथक लेखा परीक्षा रिपोर्ट सहित निदेशक, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला को अग्रेषित की जाती है।

हस्ता./—

उप निदेशक

टिप्पणी

1. इस उप सूची में कुल (क+ख+ग+घ+ङ) अनुसूची 15 में सेवा निवृत्ति तथा सेवानिवृत्ति लाभ के अंतर्गत है।
2. ख, ग, घ तथा ङ मदों की गणना उपचय आधार पर की गई है तथा इसमें वरीयता प्राप्त बिलों को सम्मिलित किया गया है मगर 31.3.2015 को उनका भुगतान शेष है।

31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष के लिए, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला के लेखों के बारे में भारत के नियन्त्रक-महालेखा परीक्षक की पृथक लेखा परीक्षा रिपोर्ट।

1. हमने 31 मार्च, 2015 तक भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला के संलग्न तुलन-पत्र, तथा उस तिथि को समाप्त वर्ष हेतु आय एवं व्यय लेखा/प्राप्तियां एवं भुगतान लेखों की भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला के संघ सम्बन्धी विधान पत्र के साथ पठित नियन्त्रक-महालेखा परीक्षक के (कर्तव्य, शक्तियां एवं सेवा की शर्तें) अधिनियम, 1971 की धारा 20 (1) के अन्तर्गत लेखापरीक्षा कर ली है। यह लेखापरीक्षा 2013-14 से 2017-18 तक की अवधि के लिए सौंपी गई है। इन वित्तीय विवरणों का उत्तरदायित्व संस्थान के प्रबन्धन का है। हमारा उत्तरदायित्व हमारी लेखा परीक्षा पर आधारित इन वित्तीय विवरणों पर मत व्यक्त करना है।
2. इस पृथक लेखा परीक्षा प्रतिवेदन में केवल वर्गीकरण, उत्तम लेखाकरण प्रथाओं के साथ अनुरूपता, लेखाकरण सम्बन्धी मानकों और प्रकटन मानकों आदि के सम्बन्ध में केवल लेखाकरण व्यवहार पर नियन्त्रक-महालेखा परीक्षक (सीएजी) की टिप्पणियां शामिल हैं। कानून, नियमों एवं विनियमों (औचित्य एवं नियमितता) तथा दक्षता एवं निष्पादन आदि के पहलुओं के अनुपालन में वित्तीय लेन-देन पर लेखा परीक्षा अभ्युक्तियां आदि कोई हों तो निरीक्षण प्रतिवेदनों/भारत के नियन्त्रक-महा-लेखा परीक्षक के लेखा परीक्षा प्रतिवेदनों के माध्यम से अलग से सूचित की जाती है।
3. हमने भारत में सामान्य रूप से स्वीकार किए गए लेखा परीक्षण मानकों के अनुसार अपनी लेखा परीक्षा की है। इन मानकों में अपेक्षित है कि हम इस विषय में समुचित आश्वासन प्राप्त करने के लिए कि क्या वित्तीय विवरण मिथ्या विवरणों से मुक्त है, योजना बनाते हैं और लेखा परीक्षा करते हैं। लेखा परीक्षा में नमूना के आधार पर जांच करना, राशियों का समर्थन करने वाले साक्ष्यों और वित्तीय विवरणों में किए गए प्रकटन शामिल होते हैं। लेखा परीक्षा में प्रयुक्त किए गए लेखाकरण सिद्धान्तों तथा प्रबन्धन द्वारा किए गए महत्वपूर्ण अनुमानों के निर्धारण और वित्तीय विवरणों के समग्र प्रस्तुतीकरण का मूल्यांकन भी शामिल है। हम विश्वास करते हैं कि हमारी लेखा परीक्षा हमारे मत के लिए समुचित आधार प्रधान करती है।
4. अपनी लेखा परीक्षा के आधार पर हम रिपोर्ट करते हैं कि :-
 - अ. हमने अपनी सर्वोत्तम जानकारी तथा विश्वास के अनुरूप प्राप्ति एवं भुगतान तथा अनुसूची 5,9 तथा 11 तथा सामान्य भविष्य निधि लेखों को छोड़कर लेखापरीक्षा के उद्देश्यार्थ आवश्यक समस्त सूचनाएं और स्पष्टीकरण प्राप्त कर लिये हैं।
 - ब. इस प्रतिवेदन से सम्बन्धित तुलनपत्र और आय एवं व्यय लेखा/प्राप्तियां एवं भुगतान लेखा की भारत सरकार के वित्त मंत्रालय द्वारा जारी आदेश संख्या 29-4/2012-एफडी दिनांक 17 अप्रैल 2015 में निर्धारित फॉर्मेट में तैयार किया गया है।
 - स. बही-खातों का निरीक्षण करने के उपरान्त हमारी राय में भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला द्वारा लेखों का अभिलेख उपयुक्त बहियों और अन्य सम्बद्ध अभिलेखों में किया गया है।
 - द. हम आगे रिपोर्ट करते हैं कि:
- क. तुलन पत्र
 - क.1 निधि के स्रोत
 - चालू देनदारियां तथा प्रावधान (अनुसूची-3)

सेवानिवृत्ति/पैन्शन का प्रावधान— शुन्य

कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति पर पैन्शन की देनदारी के संबंध में कोई प्रावधान नहीं बनाया गया है। पैन्शन निधि के इस गैर प्रावधान के फलस्वरूप देनदारियों की न्यूनता हुई है जबकि राशि/सामान्य निधि की अतिशयोक्ति हुई है। उक्त टिप्पणी पूर्व पृथक लेखा परीक्षण रिपोर्ट में भी की गई है।

क.2 स्थिर परिसम्पत्तियां (अनुसूची-4)

स्थिर परिसम्पत्तियों को अनुदान राशि से उपार्जित किया गया है।

क.2.1 मूल्य ह्रास— 48.52 लाख रुपए

संस्थान द्वारा वित्तीय वर्ष 2014-15 से पूर्व खरीदी गई स्थिर परिसम्पत्तियों पर मूल्य ह्रास नहीं दर्शाया गया है और स्थाई परिसम्पत्तियों को वास्तविक खरीद मूल्य पर ही दर्शाया गया है। यद्यपि संस्थान ने वर्ष 2014-15 के दौरान खरीदी गई स्थिर परिसम्पत्तियों पर 48.52 लाख रुपए का मूल्य ह्रास प्रभारित किया है। वित्तीय वर्ष 2014-15 से पूर्व खरीदी गई स्थिर परिसम्पत्तियों पर मूल्य ह्रास प्रभारित नहीं करने के कारण स्थिर परिसम्पत्तियों तथा पूंजीगत निधि पर उक्त ह्रास मूल्य के समान अतियुक्ति हुई है।

क.2.2 आईसी4एचडी केन्द्र के अंतर्गत स्थाई परिसम्पत्तियों पर मूल्य ह्रास— 13.86 लाख रुपए

इस शीर्ष के अंतर्गत गणना संबंधी खामियां पाई गईं। उक्त शीर्ष के अंतर्गत 1386165.00 रुपए की बजाये 1417020.60 रुपए ह्रास मूल्य दर्शाया गया है जिसके फलस्वरूप 30855.00 रुपए (1417020.60-1386165.60) कम ह्रास मूल्य प्रभारित किया गया है। परिणामस्वरूप व्यय में 30,855.00 रुपए की न्यूनता तथा पूंजीगत निधि में अतियुक्ति हुई है।

क.3 चालू परिसम्पत्तियां (अनुसूची-7)

विविध देनदार

छः माह से अवधि के अतिरिक्त 22.62 रुपए का बकाया ऋण

उपरोक्त में 3.54 लाख रुपए का पांच वर्षों से अधिक अवधि का बकाया ऋण सम्मिलित है, इसलिए संदिग्ध वसूली तथा प्रावधान किया जाना है। इसके अतिरिक्त कर्जदारों से बकाया राशि की पुष्टि तथा डूबी रकम के लिए पर्याप्त प्रावधान की कोई व्यवस्था नहीं है। यही नहीं संस्थान द्वारा वित्तीय विवरणों में डूबी हुई रकम के बारे में कर्जदारों को अलग-अलग दर्शाया गया है। कर्जदारों का पृथक्करण अच्छा और संदेहपूर्ण जैसा कि पूर्व पृथक लेखा परीक्षण रिपोर्ट में दिया गया था को प्रमाणिक तौर पर करने की आवश्यकता है क्योंकि वे वसूली के लिए उपयुक्त नहीं दिखाई देते। यद्यपि इसका उल्लेख पिछली पृ.ले.प. रिपोर्ट में किया गया था मगर सुधार हेतु कोई कदम नहीं उठाया गया।

ख. सामान्य

ऋण, अग्रिम तथा जमा राशि (अनुसूची-8)

कर्मचारियों की दीर्घकालीन अग्रिम राशि (ब्याज धारक)

अन्य

उपरोक्त में कर्मचारियों को दी गई पिछले 5 वर्षों से लंबित पड़ी राशि सम्मिलित है जिसकी वसूली संदिग्ध है और इसके लिए प्रावधान करने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त इन बकाया राशियों की कोई पुष्टि भी नहीं है।

ग. सहायता अनुदान

उपलब्ध कुल निधि 2325.27 लाख करोड़ रूपए (योजना 1450.61 लाख रूपए, गैर योजना 874.66 लाख रूपए) विगत वर्ष की अप्रयोग शेष निधि राशि 325.53 लाख रूपए (योजना 325.53 लाख तथा गैर-योजना -11.72 लाख रूपए) तथा वित्तीय वर्ष 2014-15 के दौरान प्राप्त अनुदान राशि 1999.74 लाख रूपए (योजना 1068.97 लाख तथा गैर-योजना 886.39 लाख, ब्याज योजना 44.38 लाख रूपए); संस्थान 1550.58 लाख रूपए (534.99 लाख योजना तथा 1015.59 लाख गैर-योजना) ही व्यय कर पाया तथा 31 मार्च 2015 को अप्रयोग राशि 774.69 लाख रूपए (816.09 लाख योजना तथा -41.40 लाख गैर-योजना) शेष रह गई।

घ. प्रबंधकीय पत्र

लेखा परीक्षा में जो कमियां सामने आई हैं उन्हें एक प्रबंधकीय पत्र के माध्यम से अलग से संस्थान के प्रबंधन के ध्यान में ला दी गई है ताकि उनमें सुधार व उन्हें दुरुस्त किया जा सके।

ड. पूर्ववर्ती परिच्छेदों में हमारी अभ्युक्तियों के अनुसार हम रिपोर्ट करते हैं कि इस प्रतिवेदन से सम्बन्धित तुलनपत्र और आय एवं व्यय लेखा/प्राप्तियां एवं भुगतान लेखा, लेखा-बहियों के अनुरूप हैं।

च. हमारी राय में और हमारी सर्वोत्तम जानकारी तथा हमें दिए गए स्पष्टीकरण के अनुसार लेखाकरण नीतियां एवं लेखाओं पर टिप्पणियों के साथ पठित तथा उपर्युक्त उल्लिखित महत्वपूर्ण मामलों और इस लेखा परीक्षा प्रतिवेदन के अनुबन्ध में उल्लिखित अन्य मामलों से सम्बन्धित उक्त वित्तीय विवरण भारत में सामान्यतः स्वीकृत लेखाकरण के सिद्धांतों के अनुरूप सही एवं उचित दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं:-

1. जहां तक 31 मार्च 2015 को भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला के कार्यों के तुलन-पत्र से संबंधित है: तथा
2. जहां तक उस तिथि को समाप्त वर्ष के लिए 'घाटे' के आय एवं व्यय लेखे से संबंधित है।

भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की ओर से

हस्ता./

प्रधान निदेशक, लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)

चण्डीगढ़

स्थान: चण्डीगढ़

दिनांक: **21.12.2015**

अनुलग्नक

(1) आन्तरिक लेखा परीक्षा प्रणाली की पर्याप्तता

संस्थान के आकार तथा उसकी गतिविधियों के अनुरूप आन्तरिक लेखा परीक्षा की पर्याप्त तथा सम्येय पद्धति को अपनाया गया है। हालांकि संस्थान के अपना लेखा मैनुअल नहीं बनाया है। नकद/स्टॉक आदि का कामकाज देखने वाले कर्मचारियों से किसी प्रकार की सिक्योरिटी जमा/विश्वस्तता गारंटी नहीं ली गई है। वर्ष 2014-15 से पूर्व खरीदे गई स्थिर परिसम्पतियों पर कोई ह्रास मूल्य प्रभारित नहीं किया गया है और न ही पिछले पांच सालों से कर्जदारों की बकाया/अग्रिम राशि की कोई समीक्षा की गई है।

(2) आन्तरिक लेखा-परीक्षण प्रणाली की पर्याप्तता

पर्याप्त आन्तरिक लेखा-परीक्षण प्रणाली को अपनाया गया है तथा संस्थान की गतिविधियों तथा कार्यक्षेत्र के अनुरूप हैं तथापि संस्थान ने अपना लेखा मैनुअल नहीं बनाया है।

(3) अचल परिसम्पतियों तथा वस्तु-सूचियों की भौतिक सत्यापन प्रणाली

वर्ष के दौरान अचल परिसम्पतियों तथा वस्तु-सूचियों का भौतिक सत्यापन किया गया है। यद्यपि स्थिर परिसम्पतियों का रजिस्टर तथा वस्तु-सूचियों का रजिस्टर जीपीआर 40 व 41 में नहीं बनाया गया है।

(4) सांविधिक देयताओं की अदायगी में नियमितता।

बही खातों के अनुसार संस्थान द्वारा सभी सांविधिक देयताओं को नियमित रूप से जमा करवाया गया है।

हस्ता./—

उप निदेशक

प्रधान—निदेशक, लेखा परीक्षा (केन्द्रीय) चण्डीगढ़

संदीप लाल, आई.ए.ए.एस.

प्रधान—निदेशक,

लेखा परीक्षा (केन्द्रीय) चण्डीगढ़

क्रमांक: डीडीए/सीई/एस.ए.आर./2015-16/1368

दिनांक: 22.12.2015

प्रिय प्रोफेसर सिंह जी,

आपके संस्थान के वर्ष 2014-15 के वार्षिक लेखों के निरीक्षण के उपरांत कुछ कमियां पाई गई हैं। पृथक लेखा परीक्षण रिपोर्ट के अंतर्गत लेखों के बारे में महत्वपूर्ण टिप्पणियां पहले ही कर दी गई हैं। तथा कुछ कमियों (अनुलग्नक पर विस्तृत विवरण) को पृथक लेखा परीक्षण रिपोर्ट में सम्मिलित नहीं किया गया है, उनके सुधार तथा उन कमियों को आपके संज्ञान में लाया जाता है।

कृपया इस दिशा में सुधारात्मक निर्देश जारी करें।

भवदीय

हस्ता.

(संदीप लाल)

प्रोफेसर चेतन सिंह

निदेशक

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,

राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

प्रबंधकीय पत्र के साथ अनुलग्नक

क. सामान्य

क.1 सामान्य भविष्य निधि का निवेश

भारत सरकार के वित्त मंत्रालय द्वारा जारी अधिसूचना संख्या एफ.5(88)/2006-पीआर दिनांक 14.08.2008 के अनुसार सामान्य भविष्य निधि का निवेश नहीं किया गया है। 252.00 लाख रुपए का निवेश राष्ट्रीयकृत बैंक में स्थिर जमा में लगाया गया है। यह विषय पिछली पृ.ले.प. रिपोर्ट में उठाया गया था मगर सुधार हेतु कोई कदम नहीं उठाया गया है।

क.2 हमारे कार्यालय को भेजे गई लेखा रिपोर्ट के साथ प्राप्तियों तथा भुगतानों का लेखा संलग्न नहीं किया गया था जोकि उच्च शिक्षण संस्थानों को एक निर्धारित वित्तीय विवरण प्रपत्र में भेजनी होती है। ऐसे ही अनुसूची 5.9 तथा 11 तथा तुलन पत्र, आय तथा व्यय लेखा तथा प्राप्तियां एवं भुगतान का ब्यौरा भी इस कार्यालय को भेजे गई लेखा रिपोर्ट के साथ नहीं था।

क.3 लेखों पर टिप्पणियां (3)

छुट्टी नकदीकरण के आंकड़ों में टंकण संबंधी त्रुटि पाई गई। यह आंकड़ें 140517905.00 के स्थान पर 14051790.00 दर्शाए गए थे।

क.4 तुलन पत्र तथा आय व व्यय लेखों में आंकड़ों को नए फार्मूले के तहत समाप्त नहीं किया गया है।

हस्ता./—

उप निदेशक

**भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005**

तुलन-पत्र (31 मार्च, 2015)

राशि रूपयों में

निधि का स्रोत	अनुसूची	चालू वर्ष 2014-15	विगत वर्ष 2013-14
संग्रह/पूँजीगत निधि	1	236254642.01	228522602.66
निर्दिष्ट/निर्धारित/प्रतिबंधित निधि	2	20657552.50	44689169.00
चालू देनदारियां तथा प्रावधान	3	123740387.86	43059212.00
कुल		380652582.37	316270983.66
निधि की प्रयुक्ति	अनुसूची	चालू वर्ष	विगत वर्ष
स्थायी परिसंपत्तियां	4		
भौतिक परिसंपत्तियां		186902405.76	178003821.73
अभौतिक परिसंपत्तियां		77751.63	
चालू कार्य पूंजी			
निश्चित एवं अनुदान से निवेश	5		
दीर्घावधि			
लघु अवधि			
निवेश -अन्य	6	0.00	0.00
चालू परिसम्पत्तियां,	7	130356989.99	135097635.93
ऋण, अग्रिम जमा	8	63315435.00	3169526.00
कुल		380652582.38	316270983.66
महत्त्वपूर्ण लेखा पद्धतियां	23		
संभाव्य देनदारियां तथा लेखा-1 के बारे में टिप्पणी	24		

शिमला
30-6-2015

हस्ता./—
(राकेश कुमार सिंह)
लेखा अधिकारी

हस्ता./—
(सुनील वर्मा)
सचिव

हस्ता./—
(चेतन सिंह)
निदेशक

**भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005**

31 मार्च, 2015 को समाप्त वित्तीय वर्ष के आय व व्यय का लेखा

राशि रूपयों में

विवरण	अनुसूची	चालू वर्ष 2014-15	विगत वर्ष 2013-14
आय			
अकादमिक प्राप्तियां	9	0.00	
अनुदान एवं दान	10	141686088.14	148897406.00
आय और निवेश	11	0.00	0.00
अर्जित ब्याज	12	616527.00	
अन्य आय	13	6842872.35	11751807.10
पूर्वाधि आय	14	272640.00	0.00
पूँजीगत अनुदान को हस्तांतरित ह्रास मूल्य		4851619.50	
कुल (क)		154269746.99	160649213.10
व्यय			
स्टाफ का भुगतान तथा लाभ	15	76696652.00	83086382.00
अकादमिक व्यय	16	30442164.00	0.00
प्रशासनिक तथा सामान्य व्यय	17	13853903.00	40044320.00
यातायात व्यय	18	1263380.00	836185.00
मरम्मत और रखरखाव	19	19424071.00	27028728.00
वित्तीय लागतें	20	2895.00	5215.00
अन्य व्यय	4	4851619.50	
ह्रास मूल्य	21	3023.14	2848033.00
पूर्वाधि व्यय	22	0.00	0.00
कुल (ख)		146537707.64	153848863.00
व्यय पर आय की अधिक्य का संतुलन (क-ख)		7732039.35	6800350.10
निर्दिष्ट निधि को/से हस्तांतरण			
भवन निधि			
अन्य (निर्दिष्ट)			
अधिक्य बकाया/(घाटा) पूँजीगत निधि में हस्तांतरित		7732039.35	6800350.10
महत्वपूर्ण लेखा पद्धतियां	23		
संभाव्य देनदारियां तथा लेखा के बारे में टिप्पणी	24		

शिमला
30-6-2015

हस्ता./—
(राकेश कुमार सिंह)
लेखा अधिकारी

हस्ता./—
(सुनील वर्मा)
सचिव

हस्ता./—
(चेतन सिंह)
निदेशक

**भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005**
अनुसूची -1 संग्रह/पूँजीगत निधि

राशि रूपयों में

विवरण	चालू वर्ष 2014-15	विगत वर्ष 2013-14
वर्ष के प्रारंभ में बकाया राशि	228522602.66	221171901.56
जमा : संग्रह/पूँजीगत निधि में अंशदान		
जमा : यूजीसी से प्राप्त अनुदान, भारत सरकार तथा राज्य सरकार से पूँजीगत व्यय हेतु		
जमा : निर्धारित निधि से परिसम्पत्तियों की खरीद		
जमा : प्रायोजित परियोजनाओं, जहां मालिकाना हक संस्थान के पास है से परिसम्पत्तियों की खरीद		-
जमा : दान की गई परिसम्पत्तियां/ उपहार प्राप्त		
जमा : अन्य योजन		550351.00
जमा : आय व व्यय लेखा से हस्तांतरित व्यय पर आधिक्य आय	7732039.35	6800350.10
कुल	236254642.01	228522602.66
घटाया आय व व्यय लेखे से हस्तांतरण घाटा		
गया		
वर्ष के अंत में बकाया राशि	236254642.01	228522602.66

**भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005**

अनुसूची -2 निर्दिष्ट /निश्चित की गई /चंदा निधि /पूँजीगत अनुदान

राशि (रूपए)

विवरण	निधिवार विच्छेद						कुल	
	पूँजीगत अनुदान सहायता	निधि क.क.क.	निधि ख.ख.ख.	निधि ग.ग.ग.	चंदा निधि	चालू वर्ष	विगत वर्ष	
क क) अथशेष ख) वर्ष के दौरान जमा ग) निधि के निवेश से प्राप्त आय घ) निवेश /अग्रिम राशि से उपार्जित ब्याज ङ) बैंक बचत से प्राप्त ब्याज च) अन्य आधिक्य (विशिष्ट प्रकृति के)	12136196.00 13372976.00					12136196.00 13372976.00 0.00 0.00 0.00 0.00	0 12136196.00 0	
कुल (क)	25509172.00	0	0	0	0	25509172.00	12136196.00	
ख प्रयोगिक /निधि के उद्देश्यों के प्रति व्यय पूँजीगत व्यय आगम व्यय न्यूनतर ह्रास मूल्य	4851619.50					4851619.50		
कुल (ख)	4851619.50	0	0	0	0	4851619.50	0.00	
वर्ष के अंत में शेष बकाया राशि (क-ख) प्रस्तुतकर्ता नकद एवं बैंक शेष निवेश उपार्जित ब्याज मगर देय नहीं कुल	20657552.50					20657552.50	12136196.00	

**भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005**
अनुसूची 3 – चालू देयताएं एवं प्रावधान

राशि रूपयों में

	चालू वर्ष 2014-15	विगत वर्ष 2013-14
(क) चालू देयताएं		
1. स्टॉफ द्वारा जमा		
2. छात्रों द्वारा जमा		
3. विविध लेनदार अ) वस्तुओं और सेवाओं के लिए ब) अन्य		
4. जमा-अन्य (ईएमडी, सिक्योरिटी जमा)		
5. वैधानिक देयताएं (जीपीएफ, टीडीएस, डब्ल्यूसी, सीपीएफ, कर, जीआईएसय, एनपीएस)		
अ) अतिदेय	42653.00	42653.00
ब) अन्य		
6. अन्य चालू देयताएं		
क) वेतन	3909478.00	2932351.00
ख) प्रायोजित परियोजनाओं के तहत प्राप्तियां		
ग) प्रायोजित अध्येतावृत्तियों तथा छात्रवृत्तियों के निमित्त प्राप्तियां		
घ) अप्रयोगिक अनुदान	77468714.86	0.00
ङ) अग्रिम अनुदान		
च) अन्य निधियां		
छ) अन्य देनदारियां		
ज) कर्मचारी कल्याण संस्था	2931.00	
झ) देय टीडीएस	1348.00	
ञ) देय नई पेंशन योजना	89030.00	
ट) अनूप सर्विस स्टेशन	41793.00	
ठ) देय व्यय	4159646.00	
ड) अनिश्चित	20000.00	
कुल (क)	85735593.86	2975004.00
(ख) प्रावधान		
1. कराधान हेतु		
2. ग्रेच्युटी	23953004.00	20965400.00
3. सेवानिवृत्ति/पेंशन		0.00
4. जमा अवकाश का नकदीकरण	14051790.00	13942125.00
5. व्यापार वारंटी/दावे		
6. अन्य (विशेषतः)		
कुल (ख)	38004794.00	34907525.00
कुल (क+ख)	123740387.86	37882529.00

नोट- 6(डी) के अंतर्गत अप्रयोगिक अनुदान राशि में आगामी वर्ष की अनुदान राशि सम्मिलित होगी।

**भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005**

अनुसूची-4 सहायता अनुदान से अर्जित स्थाई परिसम्पत्तियां

विवरण	अथशेष	01.04.2014 से 30.9.2015 तक जमा	01.10.2015 के बाद जमा	कुल	मूल्य ह्रास	31.03.2015 को बट्टे में डाली गई रकम
कार्यालयी उपकरण	7742537.63	-	-	-	-	7742537.63
इलैक्ट्रॉनिक उपकरण	10123527.00	-	-	-	-	10123527.00
फर्नीचर एवं फिटिंग	6923261.75	-	-	-	-	6923261.75
वाहन	2838064.64	-	-	-	-	2838064.64
पुस्तकालय उपकरण	5926142.38	-	-	-	-	5926142.38
अन्य उपकरण	814603.20	-	-	-	-	814603.20
प्रकाशन उपकरण	839040.02	-	-	-	-	839040.02
पुस्तकालय पुस्तकें तथा पत्रिकाएं	137892532.43	-	-	-	-	137892532.43
पुस्तक योजना संसाधन	247622.12	-	-	-	-	247622.12
संसाधन पुस्तक योजना उपकरण	41087.56	-	-	-	-	41087.56
उद्यान उपकरण	145805.00	-	-	-	-	145805.00
श्रव्य दृश्य	422500.00	-	-	-	-	422500.00
भारतीय सभ्यता के अध्ययन केन्द्र की परियोजना	518442.00	-	-	-	-	518442.00
वर्ड प्रोसेसर्स	1304921.00	-	-	-	-	1304921.00
आईसी4एचडी के अंतर्गत स्थिर परिसम्पत्तियां		-	-	-	-	0.00
आईसी4एचडी के अंतर्गत इलैक्ट्रॉनिक्स परिसम्पत्तियां	1603450.00	-	-	-	-	1603450.00
पुस्तकालय पुस्तकें तथा पत्रिकाएं	103748.00	-	-	-	-	103748.00
फर्नीचर तथा फिटिंग	516537.00	-	-	-	-	516537.00
उप योग	178003821.73	-	-	-	-	178003821.73
स्थिर परिसम्पत्तियां योजना						
पुस्तकालय पुस्तकें एवं उपकरण	-	1496940.00	8026491.00	9523431.00	3306111.30	6217319.70
अध्येताओं के लिए वर्ड प्रोसेसर्स	-	24196.00	154811.00	179007.00	60960.90	118046.10
ईपीबीएक्स	-	315506.00	0.00	315506.00	47325.90	268180.10

प्रिंटर	-	9090.00	18180.00	27270.00	10908.00	16362.00
क्रॉकरी			69241.00	69241.00	5193.08	64047.93
एलईडी	-	0.00	113600.00	113600.00	5680.00	107920.00
बिस्तर			112447.00	112447.00	5622.35	106824.65
एल्यूमिनियम सीढ़ी			46000.00	46000.00	3450.00	42550.00
उप योग	-	1845732.00	8540770.00	10386502.00	3445251.53	6941250.48
गैर योजना						
पुस्तकालय पुस्तकें एवं उपकरण	-	13595.00	0.00	13595.00	8157.00	5438.00
उप योग	-	13595.00	0.00	13595.00	8157.00	5438.00
आईसी4एचडी के अंतर्गत स्थिर परिसम्पत्तियां						
आईसी4एचडी के अंतर्गत इलैक्ट्रॉनिक्स परिसम्पत्तियां	-	1977960.00	0.00	1977960.00	1186776.00	791184.00
पुस्तकालय पुस्तकें तथा पत्रिकाएं	-		664632.00	664632.00	199389.60	465242.40
खेल परिसम्पत्तियां		177500.00	0.00	177500.00	26625.00	150875.00
कार्यालयी उपकरण (हॉट केस)			43200.00	43200.00	3240.00	39960.00
फर्नीचर उपकरण			19790	19790.00	990.00	18800.00
उप योग	-	2155460.00	727622.00	2883082.00	1386165.60	1256426.40
कुल योग	178003821.73	4014787.00	9268392.00	13283179.00	4839574.13	186206936.61
अभौतिक परिसम्पत्तियां						
नेटवर्किंग सुविधा	-	70808.00	18989.00	89797.00	12045.38	77751.63
कुल		70808.00	18989.00	89797.00	12045.38	77751.63
समग्र योग	178003821.73	4085595.00	9287381.00	13372976.00	4851619.50	186284688.23
निजी निधि से उपाजित स्थिर परिसम्पत्तियां						
कारपेट	-	818199.00	0.00	818199.00	122729.85	695469.15
कुल		818199.00	0.00	818199.00	122729.85	695469.15

**भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005**

अनुसूची 6

राशि रूपयों में

	चालू वर्ष 2014-15	विगत वर्ष 2013-14
1. केन्द्र सरकार की प्रतिभूतियां		
2. राज्य सरकार की प्रतिभूतियां		
3. अन्य अनुमोदित प्रतिभूतियां		
4. शेयर		
5. ऋण पत्र तथा बॉड		
6. अन्य (निर्दिष्ट करने योग्य)		
कुल	0.00	0.00

अनुसूची 7 – चालू परिसम्पत्तियां

राशि रूपयों में

	चालू वर्ष 2014-15	विगत वर्ष 2013-14
1. स्टॉक		
अ) भण्डार एवं अतिरिक्त		
ब) खुले उपकरण		
स) प्रकाशन	4466179.31	4580949.48
ड) प्रयोगशाला केमिकल, उपभोग्य तथा शीशे की वस्तुएं		
च) भवन सामग्री		
छ) विद्युत सामग्री		
ज) स्टेशनरी		
झ) जल आपूर्ति पदार्थ		
2. विविध लेनदार		
अ) छ: माह से अधिक की अवधि के बकाया ऋण	2262148.75	2174321.75
ब) अन्य		10.00
3. चैक/ड्राफ्ट/अग्रदाय सहित शेष राशि		
अ) अनुसूचित बैंक में जमा :		
- चालू खाते में	8155512.93	21181153.70
- जमा खाते में	70652853.00	66175000.00
- बचत खाते में	11351648	40986201.00
ब) चालू खाते में गैर-अनुसूचित बैंक में जमा		
-अवधि जमा खाते		
-बचत खाते में जमा		
4. डाकघर बचत खाते में जमा		
विविध अग्रिम (आईसी4एचडी)	2963.00	
भारत सरकार से प्राप्त योग अनुदान	33188377.00	
ड्राफ्ट और आईपीओ	277308.00	
कुल	130356989.99	135097635.93

नोट— बैंक खातों का विवरण अनुलग्नक-क पर

अनुलग्नक—क

क्रमांक	विवरण	राशि रूपयों में
1.	बचत बैंक खाता	33188377.00
2.	यूजीसी खाते से अनुदान	
3.	छात्रवृत्ति खाता	
4.	विश्वविद्यालय प्राप्ति खाता	
5.	अकादमिक शुल्क प्राप्ति खाता	
6.	संयुक्त प्रवेश परीक्षा खाता	
7.	यूजीसी योजना खाता	
8.	संग्रह निधि	
9.	प्रायोजित परियोजना निधि खाता	
10.	प्रायोजित अध्येतावृत्ति खाता	
11.	दान/चंदा खाता (ईएमएफ)	
12.	यूजीसी जेआरएफ अध्येतावृत्ति खाता (ईएमएफ)	
13.	एचबीए निधि खाता (ईएमएफ)	
14.	यातायात सुविधा खाता (ईएमएफ)	
15.	यूजीसी राजीव गांधी राष्ट्रीय अध्येतावृत्ति खाता (ईएमएफ)	
16.	अकादमिक विकास निधि खाता (ईएमएफ)	
17.	जमा खाता	
18.	छात्र निधि खाता	
19.	छात्र सहायता निधि खाता	
20.	विशिष्ट योजनाओं के अंतर्गत योजना अनुदान	
21.	चालू खाता	
22.	अनुसूचित बैंकों आवधिक जमा	
	कुल	33188377.00

**भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005**

अनुसूची 8

राशि रूपयों में

ऋण, अग्रिम तथा जमा राशि	चालू वर्ष 2014-15	विगत वर्ष 2013-14
1. कर्मचारियों को भुगतान की अग्रिम राशि (गैर-ब्याज सहित)		
क) वेतन		
ख) त्योहार	124650.00	110625.00
ग) चिकित्सा अग्रिम		
घ) अन्य (निर्दिष्ट)	0.00	
ङ) डब्ल्यू.सी.ए.	25200.00	26250.00
च) प्रतिकूल जलवायु तथा हुड हेतु अग्रिम राशि	431.00	431.00
2. कर्मचारियों को दीर्घकालीन अग्रिम राशि (ब्याज सहित)		
क) वाहन ऋण	93000.00	23000.00
ख) गृह ऋण	1260.00	
ग) अन्य (निर्दिष्ट)	2506250.00	2394468.00
घ) कम्प्यूटर के लिए अग्रिम राशि	203000.00	361000.00
3. अग्रिम राशि तथा नकद अथवा वस्तु के रूप में अथवा जिसका मूल्य प्राप्त होने वाला हो		
क) पूंजीगत राशि से		
ख) आपूर्तिकर्ताओं के लिए		
ग) अन्य (के.लो.नि.वि.)	58837636.00	
आईयूसी से वसूल करने योग्य	1071340.00	
4. पूर्वदत्त व्यय		
क) बीमा		
ख) अन्य व्यय (पूर्व भुगतान किये गए ई-जर्नल)	186948.00	
ग) पूर्व चुकता वा. रखरखाव (आईसी4एचडी)	9670.00	
5. जमा		
क) दूरभाष	36200.00	36200.00
ख) पट्टा किराया		
ग) विद्युत		
घ) एआईसीटीई, यदि लागू हो		
ङ) अन्य (निर्दिष्ट)		
i) विनीत गैस एजेंसी के पास प्रतिभूति	19000.00	19000.00
ii) नगर निगम के पास प्रतिभूति	980.00	980.00
iii) ईंधन के लिए जमा	100000.00	100000.00
iv) अन्य	4633.00	4633.00
वसूली योग्य टीडीएस	95237.00	92939.00

6. आय उपार्जित: क) निश्चित बंदोबस्त निधि के निवेश से ख) अन्य निवेश से ग) ऋण और अग्रिम राशि से घ) अन्य (यथोचित साधित आय को सम्मिलित कर /रूपए)		
7. अन्य प्राप्ति योग्य क) प्रायोजित परियोजनाओं में जमा शेष ख) अध्येतावृत्ति तथा छात्रवृत्ति में जमा शेष ग) वसूली योग्य अनुदान घ) यू.जी.सी. से अन्य प्राप्ति योग्य 8. दावे प्राप्ति योग्य		
कुल	63315435.00	3169526.00

टिप्पणी— यदि चलायमान निधि को कर्मचारियों को गृह निर्माण, कम्प्यूटर तथा वाहन की खरीद हेतु अग्रिम धन के तौर पर दिया गया हो तो उक्त अग्रिम राशि निश्चित/चंदा के रूप में होगी। इस ब्याजयुक्त अग्रिम राशि का बकाया इस सूची में नहीं दर्शाया गया है।

**भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005**

अनुसूची -10 अनुदान / रियायत (अचल अनुदान प्राप्ति)

विवरण	योजना	योजना सामान्य.	योजना पूंजी	योजना सा. अ.जा.	योजना पूंजी अ.जा.	योजना पूंजी ज.जा.	यूजीसी		कुल योजना	गैर योजना	चालू वर्ष 2014-15	राशि रूपयों में
	भारत सरकार						योजना	यूजीसी		यूजीसी / भा.स.		विगत वर्ष 2013-14
अथशेष अग्रानीत जमा : वर्ष के दौरान प्राप्तियां आईसी4एचडी से गैर-योजना में हस्तांतरण गैर-योजना से आईसी4एचडी से हस्तांतरण	-8657897.00 89112401.00						0.00 0.00	आईसी4एचडी विशिष्ट योजना	33725188.00 111336232.00	-1172215.00 88638574.00	32552973.00 199974806.00	0.00 193586575.00
									-10000000.00	10000000.00	0.00	
								46992.00	46992.00	-46992.00	0.00	
	कुल	80454504.00					0.00	54653908.00	135108412.00	97419367.00	232527779.00	193586575.00
न्यूनतर: यूजीसी / भा.स. को वापसी बकाया शेष	0.00						0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
न्यूनतर: पूंजीगत व्यय (ए) के लिए उपयोग बकाया शेष	80454504.00 10476299.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	54653908.00 2883082.00	135108412.00 13359381.00	97419367.00 13595.00	232527779.00 13372976.00	193586575.00 0.00
न्यूनतर: आगम व्यय (बी) के लिए उपयोग बकाया शेष	69978205.00 28778095.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	51770826.00 11361872.00	121749031.00 40139967.00	97405772.00 101546121.14	219154803.00 141686088.14	193586575.00 161033602.00
न्यूनतर: पूंजीगत व्यय (सी) के लिए उपयोग बकाया शेष	41200110.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	40408954.00	81609064.00	-4140349.14	77468714.86	32552973.00

' इसमें बचत खातों पर ब्याज रु. 476533 और एफडीआर रु. 3962298 सम्मिलित है।

**भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005**

अनुसूची 12 – उपार्जित ब्याज

राशि रूपयों में

Particulars	चालू वर्ष 2014-15	विगत वर्ष 2013-14
1. अनुसूचित बैंकों में बचत खाता पर	18383.00	
2 ऋण पर		
क. कर्मचारी/स्टाफ	82589.00	
ख. अन्य (एफडीआर)	51555	
3. कर्जदारों तथा अन्य प्राप्तियों से		
कुल	616527.00	0.00
टिप्पणी— 1. मद संख्या 1 में निर्दिष्ट/चंदा निधि का बैंक खाते के तहत राशि अनुसूची 11 (प्रथम भाग) तथा अनुसूची 2 से संबंधित है। 2. मद 2(क) तभी लागू है यदि परिक्रामी निधि इस प्रकार के अग्रिम राशियों के लिए न बनाई गई हो।		

अनुसूची 13 – अन्य आय

विविध आय में सम्मिलित पदार्थों की राशि में मदें अलग से विनिर्दिष्ट होनी चाहिए।

क. भूमि और भवनों से आय	चालू वर्ष 2014-15	विगत वर्ष 2013-14
1. छात्रावास कक्ष का किराया	0.00	
2. लाईसेंस शुल्क	816385.00	
3. सभागार/खेल का मैदान/सुविधा केन्द्र आदि से प्राप्त किराया	0.00	
4. बिजली प्रभार की वसूली	251543.00	
5. जल प्रभार की वसूली	87857.00	
कुल	1155785.00	0.00
ख. संस्थान के प्रकाशनों की बिक्री	524538.00	
ग. आयोजनों से प्राप्त आय		
1. वार्षिक समारोह/खेल प्रतियोगिताओं के आयोजन से सकल प्राप्ति		
न्यूनतर: वार्षिक समारोह/खेल प्रतियोगिताओं के आयोजन पर प्रत्यक्ष व्यय		
2. त्योहारों से सकल प्राप्ति		
न्यूनतर: त्योहारों के आयोजनों पर प्रत्यक्ष व्यय		
3. शैक्षणिक दौरों से प्राप्त सकल प्राप्ति		
न्यूनतर: शैक्षणिक दौरों प्रत्यक्ष व्यय		
4. अन्य (निर्दिष्ट तथा पृथक दर्शाने योग्य)		
कुल	0.00	0.00
घ. अन्य		
1. परामर्श आय		
2. सूचना के अधिकार से शुल्क		
3. रॉयल्टी से प्राप्त आय		
4. आवेदन पत्रों की बिक्री (भर्ती)		

5. अन्य प्राप्तियां (टैण्डर फार्म, रद्दी आदि की बिक्री)	1005784.20	
6. बिक्री से लाभ/परिसम्पत्तियों का निपटान		
क. स्वाधिकृत परिसम्पत्तियां		
ख. निःशुल्क प्राप्त परिसम्पत्तियां		
7. संस्थानों, कल्याणकारी निकायों तथा अंतर्राष्ट्रीय संगठनों से अनुदान/दान		
8 अन्य (निर्दिष्ट)		
अतिथि गृह	414892.00	
वाहन का निजी प्रयोग	98688.00	
पौधों की बिक्री	23355.00	
पुस्तकालय सदस्यता	46200.00	
अप्रयोगिक वस्तुओं की बिक्री	37251.00	
खेल सदस्यता शुल्क	80800.00	
विविध आय	294632.00	
कुल	2001602.20	0.00
टिकट बूथ से प्राप्त सकल आय	7102723.00	
न्यूनतर टिकट बूथ का खर्च	3941775.85	
समग्र योग (क + ख + ग + घ)	6842872.35	

अनुसूची 14 – पूर्व कालिक आय

विवरण	राशि रूपयों में	
	चालू वर्ष 2014–15	विगत वर्ष 2013–14
1. अकादमिक प्राप्तियां		
2. निवेश से आय		
3. उपार्जित ब्याज		
4. अन्य	272640.00	
कुल		

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

अनुसूची -15 स्टाफ का वेतन तथा लाभ (व्यवस्थापन व्यय)

शिक्षक और गैर-शिक्षक एवं तदर्थ स्टाफ का पृथक वर्गीकरण होगा। मंहगाई भत्ते की बकाया राशि तथा वेतन वृद्धि का बकाया पृथक दर्शाया जाएगा।

राशि रूप्यो मे।

	चालू वर्ष 2014-15			विगत वर्ष 2013-14		
	योजना	गैर योजना	कुल	योजना	गैर योजना	कुल
क. वेतन एवं मजदूरी	1469026.00	44908615.00	46377641.00			0.00
ख. भत्ते तथा बोनस			0.00			0.00
ग. भविष्य निधि / नई पेंशन योजना में योगदान		562390.00	562390.00		1469256.00	0.00
घ. अन्य निधि (विशिष्ट) पेंशन निधि में योगदान			0.00		453213.00	1469256.00
ङ. कर्मचारी कल्याण व्यय			0.00		20351898.00	453213.00
च. सेवानिवृत्ति तथा सेवानिवृत्ति लाभ		8667728	8667728.00		51606.00	20351898.00
छ. एलटीसी सुविधा		146139.00	146139.00		304920.00	51606.00
ज. चिकित्सा सुविधा		294154.00	294154.00		606966.00	304920.00
झ. बच्चों का भौक्षणिक भत्ता		627535.00	627535.00		228804.00	606966.00
ञ. मानदेय		105955.00	105955.00		13187755.00	228804.00
ट. अन्य (विशिष्ट) पेंशन		19667181.00	19667181.00		129077.00	13187755.00
ठ. वर्दी		247929.00	247929.00			129077.00
कुल	1469026.00	75227626.00	76696652.00	0.00	36783495.00	36783495.00

**भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005**

अनुसूची 15 क- कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति एवं सेवानिवृत्ति लाभ

राशि रूपयों में

	पैन्शन	ग्रेच्युटी	अवकाश नकदीकरण	कुल
अथशेष		20965400.00	13942125.00	34907525.00
जमा : अन्य संगठनों से प्राप्त योगदानों का पूंजी मूल्य				
कुल (क)		20965400.00	13942125.00	34907525.00
न्यूनतर: वर्ष के दौरान वास्तविक भुगतान (ख)		4196289.00	1374170.00	5570459.00
उपलब्ध बकाया शेष (क-ख)		16769111.00	12567955.00	29337066.00
31.3.2015 को बीमाकिक मूल्यांकन (घ) के अनुसार आपेक्षित प्रावधान		23953004.00	14051790.00	38004794.00
क. चालू वर्ष के दौरान प्रावधान (घ-ग)		7183893.00	1483835.00	8667728.00
ख. नई पेन्शन में योगदान				
ग. सेवा निवृत्त कर्मचारियों को चिकित्सा खर्च की अदायगी				
घ. सेवानिवृत्ति पर होम टाउन का भुगतान				
ड. संबंधित बीमा भुगतान जमा				
कुल (क+ख+ग)		7183893.00	1483835.00	8667728.00
टिप्पणी 1. इस उप सूची में कुल (क+ख+ग+घ+ड) अनुसूची 15 में सेवानिवृत्ति तथा सेवानिवृत्ति लाभ के अंतर्गत है। 2. ख, ग, घ तथा ड मदों की गणना उपचय आधार पर की गई है तथा इसमें वरीयता प्राप्त बिलों को सम्मिलित किया गया है मगर 31.3.2015 को उनका भुगतान शेष है।				

**भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005**
अनुसूची 16 – अकादमिक व्यय

राशि रूपयों में

	चालू वर्ष 2014-15			विगत वर्ष 2013-14		
	योजना	गैर योजना	कुल	योजना	गैर योजना	कुल
क. प्रयोगशाला व्यय			0.00			0.00
ख. फील्ड संबंधी कार्य/ सम्मेलनों में प्रतिभागिता			0.00			0.00
ग. संगोष्ठियों/कार्यशालाओं पर व्यय	5532114.00	246503.00	5778617.00	3965962.00		3965962.00
घ. आगंतुक संकाय को भुगतान			0.00			0.00
ङ. परीक्षा			0.00			0.00
च. छात्र कल्याण व्यय			0.00			0.00
छ. प्रवेश व्यय			0.00			0.00
ज. दीक्षांत समारोह व्यय			0.00			0.00
झ. प्रकाशन			0.00			0.00
ञ. वजीफा/संसाधन व योग्यता छात्रवृत्ति			0.00			0.00
ट. अंशदान व्यय			0.00			0.00
i) अन्य (विशिष्ट) अध्येताओं को अध्येतावृत्ति	10022665.00	11414260.00	21436925.00			0.00
ii) अध्येताओं को राष्ट्रीय अध्येतावृत्ति	3226622.00	0.00	3226622.00			
		0.00	0.00			
कुल	18781401.00	11660763.00	30442164.00	3965962.00	0.00	3965962.00

**भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005**

अनुसूची 17 – प्रशासनिक तथा सामान्य व्यय

राशि रूपयों में

	चालू वर्ष 2014-15			विगत वर्ष 2013-14		
	योजना	गैर योजना	कुल	योजना	गैर योजना	कुल
अवसंरचना						
क. विद्युत एवं ऊर्जा	865845.00	2577354.00	3443199.00		-	-
ख. जल प्रभार	17682.00	690756.00	708438.00		4370911.00	4370911.00
ग. बीमा			0.00		-	-
घ. किराया, किराया तथा कर (सम्पत्ति कर सहित)		679189.00	679189.00		672288.00	672288.00
संचार			0.00			0.00
ड. डाक व लेखन सामग्री	309099.00	515666.00	824765.00		144096.00	144096.00
च. दूरभाष, फैक्स तथा इंटरनेट प्रभार	208793.00	270085.00	478878.00		-	-
अन्य			0.00		31862547.00	31862547.00
छ. मुद्रण एवं लेखन (उपभोग)	729562.00	743388.00	1472950.00		-	-
ज. यात्रा एवं यातायात सुविधा व्यय	656574.00	2553173.00	3209747.00		-	-
झ. आतिथ्य		34672.00	34672.00		-	-
ञ. लेखा परीक्षक मानदेय			0.00		431848.00	431848.00
ट. व्यावसायिक प्रभार		593590.00	593590.00			
ठ. विज्ञापन एवं प्रचार-प्रसार		494212.00	494212.00		-	-
ड. पत्रिकाएं एवं जर्नल			0.00		2562630.00	2562630.00
ढ. ई-संसाधन अभिदान		35589.00	35589.00		-	-
ण. अन्य (विशिष्ट)	53494.00	147085.00	200579.00		-	-
विविध व्यय	633655.00	1044440.00	1678095.00		-	-
कुल	3474704.00	10379199.00	13853903.00	0.00	40044320.00	40044320.00

**भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005**

अनुसूची 18 – यातायात संबंधी व्यय

राशि रूपयों में

विवरण	चालू वर्ष 2014-15			विगत वर्ष 2013-14		
	योजना	गैर योजना	कुल	योजना	गैर योजना	कुल
वाहन (संस्थान द्वारा खरीदे गए)						
क. चालू व्यय	116773.00	382964.00	499737.00		654692.00	654692.00
ख. मरम्मत एवं रखरखाव	544655.00	218988.00	763643.00		181493.00	181493.00
ग. बीमा व्यय			0.00			0.00
2 किराये/पट्टे पर लिए गए वाहन			0.00			0.00
क. किराये/पट्टे का व्यय			0.00			0.00
3 वाहन/टैक्सी किराया			0.00			0.00
कुल	661428.00	601952.00	1263380.00	0.00	836185.00	836185.00

अनुसूची 19 – मरम्मत एवं रखरखाव

राशि रूपयों में

विवरण	चालू वर्ष 2014-15			विगत वर्ष 2013-14		
	योजना	गैर योजना	कुल	योजना	गैर योजना	कुल
क. भवन	15479040.00	2606392.00	18085432.00	0.00	23558586.00	23558586.00
ख. फर्नीचर एवं स्थिर वस्तुएं	210900.00	32000.00	242900.00	0.00	818379.00	818379.00
ग. संयंत्र एवं मशीनरी			0.00	-	-	0.00
घ. कार्यालयी उपकरण	63468.00	3950.00	67418.00	681761.00	0.00	681761.00
ङ. कम्प्यूटर			0.00	-	-	-
च. प्रयोगशाला तथा वैज्ञानिक उपकरण			0.00	-	-	-
छ. श्रव्य-दृश्य उपकरण			0.00	-	-	-
ज. सफाई संबंधी सामान तथा सेवाएं		304333.00	304333.00	-	-	-
झ. पुस्तक जिल्दबंदी शुल्क			0.00	-	-	-
ञ. बागवानी		723988.00	723988.00	0.00	1072389.00	1072389.00
ट. सम्पदा का रखरखाव			0.00	-	-	-
1. अन्य (विशिष्ट) उपभोग्य भण्डार			0.00	0.00	897613.00	897613.00
स्थिर परिसम्पत्तियां बट्टे में			0.00	0.00	2848033.00	2848033.00
कुल	15753408.00	3670663.00	19424071.00	681761.00	29195000.00	29876761.00

**भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005**
अनुसूची 20 – रखरखाव व्यय

राशि रूपयों में

विवरण	चालू वर्ष 2014-15			विगत वर्ष 2013-14		
	योजना	गैर योजना	कुल	योजना	गैर योजना	कुल
क. बैंक प्रभार		2895.00	2895.00		5215.00	5215.00
ख. अन्य (विशिष्ट)			0.00			0.00
कुल	0.00	2895.00	2895.00	0.00	5215.00	5215.00

टिप्पणी— यदि उपर्युक्त राशि की एवज में कोई वस्तु नहीं है तो बैंक प्रभार को हटाया जा सकता है और उसकी गणना प्रशासनिक व्यय अनुसूची 17 में की जा सकती है।

अनुसूची 21 – अन्य व्यय

राशि रूपयों में

विवरण	चालू वर्ष 2014-15			विगत वर्ष 2013-14		
	योजना	गैर योजना	कुल	योजना	गैर योजना	कुल
क. डूबी तथा संदिग्ध रकम/ अग्रिम राशि का प्रावधान	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
ख. वसूल न होने बकाया बट्टे में डाली गई रकम	0.00	3023.14	3023.14	0.00	0.00	0.00
ग. अनुदान/अन्य संस्थानों/ संगठनों को रियायत	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
घ. अन्य (विशिष्ट)	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
कुल	0.00	3023.14	3023.14	0.00	0.00	0.00

टिप्पणी— अन्य व्ययों को बट्टे, प्रावधानों, विविध व्यय, निवेश की विक्री पर घाटा, स्थिर परिसम्पत्तियों पर हानि, स्थिर परिसम्पत्तियों की विक्री पर घाटा आदि में वर्गीकृत किया जाएगा और तदनुसार दर्शाया जाएगा।* 41

अनुसूची 22 – पूर्वावधिक व्यय

राशि रूपयों में

विवरण	चालू वर्ष 2014-15			विगत वर्ष 2013-14		
	योजना	गैर योजना	कुल	योजना	गैर योजना	कुल
1 संस्थापन व्यय			0.00			
2 अकादमिक व्यय			0.00			
3 प्रशासनिक व्यय			0.00			
4 यातायात व्यय			0.00			
5 मरम्मत एवं रखरखाव			0.00			
6 अन्य व्यय			0.00			
कुल	0.00	0.00	0.00	0	0	0

**भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005**

चालू देयताएं तथा प्रावधान

अध्येतावृत्ति अनुदान -	1646795.00
किराया मार्च, 2014	54903.00
किराया मार्च, 2014	116805.00
किराया मार्च, 2014	867860.00
किराया मार्च, 2014	16100.00
पुस्तकालय पुस्तकें	115124.00
नेटवर्किंग	87314.00
सा.भ.नि.	689507.00
नई पेंशन योजना	112747.00
क.क.सं.	
कुल	3707155.00

**भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005**

अनुसूची - 24

ऐसी परिसम्पतियों का विवरण निम्न प्रकार है.

परिसम्पतियां	वास्तविक मूल्य 1.4.14 रुपए	वर्ष के दौरान आधिक्य रुपए	कुल रुपए	राष्ट्रीय मूल्य ह्रास अथशेष	वर्ष के लिए राष्ट्रीय मूल्य ह्रास रुपए	कुल राष्ट्रीय मूल्य ह्रास	कुल अंकित मूल्य 31.3.15 रुपए
प्रयोगशाला उपकरण							
कम्प्यूटर							
कार्यालयी उपकरण							
फर्नीचर, फिक्सचर तथा फिटिंग							
कुल							

**भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005**

31.03.2015 को समाप्त वर्ष के लेखा की लेखा नीतियां तथा टिप्पणियां

लेखा नीतियां

(क) लेखा अवधारणाएं

वित्तीय विवरण सामान्यतः परम्परागत लागत रीति के अनुसार भारत में प्रचलित लेखा सिद्धांतों के आधार पर तैयार किये गये हैं।

सोसायटी सामान्यतः लेखा प्रणाली की उपचय पद्धति का अनुसरण करती है तथा संभूति के आधार पर आय और व्यय की महत्वपूर्ण मदों की पहचान करती है।

(ख) अचल परिसम्पत्तियां

सोसायटी की अचल परिसम्पत्तियां परम्परागत लागत पर घोषित हैं, जिनमें समस्त प्रासंगिक व्यय सम्मिलित हैं।

(ग) मूल्य ह्रास

जैसा कि भारतीय सनदी लेखाकार द्वारा जारी लेखा परीक्षण के मानक (AS.6) के अनुसार आपेक्षित है अचल सम्पत्ति पर कोई मूल्यह्रास नहीं दर्शाया गया है।

लेखा रिपोर्ट के बारे में टिप्पणियां

1. प्रथम बार समरूप लेखा मानदण्डों के अनुपालन हेतु भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा जारी नए प्रारूप में लेखे तैयार किये गए हैं।
2. इस वर्ष सामान्य भविष्य निधि लेखा के लिए पृथक तुलन पत्र तैयार की गई है जबकि विगत वर्ष के दौरान सामान्य भविष्य निधि संबंधी लेखा मुख्य तुलन पत्र में दर्शाया गया था।
3. दिनांक 31.3.2015 को ग्रेच्यूटी तथा अवकाश नकदीकरण की राशि 23953004/—रूपए दर्शायी गई है जबकि दिनांक 31.3.2014 को यह राशि 20965400/— तथा 13942125/—रूपए थी।
4. तुलन पत्र में चालू सम्पत्ति के अंतर्गत दर्शायी गई संस्थान के प्रकाशनों की राशि 3042931.53 रूपए (दिनांक 31.3.2014 को 2600931.96 रूपए) तथा सह-प्रकाशनों की राशि 1825542.00 रूपए (दिनांक 31.3.2014 को 1427357.25 रूपए) जन सम्पर्क अधिकारी द्वारा उपलब्ध करवाई गई सूचना पर आधारित है।
5. परिषद के मतानुसार चालू परिसम्पत्तियां, ऋण तथा अग्रिम राशियां आंकित मूल्य के लगभग हैं, यदि प्रयोजन की सामान्य प्रक्रिया के अनुरूप किया गया हो। सभी प्रकार की ज्ञातव्य देनदारियों का प्रावधान पर्याप्त है तथा न्योचित तौर पर आवश्यक राशि से अधिक नहीं है।
6. लेनदारों, देनदारों तथा अन्य खातों में नामे शेष तथा जमा शेष सत्यापन तथा मिलान का विषय है।
7. पांच वर्षों से अधिक अवधि से विभिन्न कर्जदारों के पास बकाया पड़ी राशि 2262148.75 वसूली के लिए उपयुक्त मानी गई है।

8. पांच वर्षों से अधिक अवधि से 2509213.00 रूपए की विविध अग्रिम राशि जिसमें 2155785.00 की बकाया राशि भी सम्मिलित है वसूली के लिए उपयुक्त मानी गई है।
9. जहां आवश्यक समझा गया विगत वर्ष के दौरान आकड़ों को चालू वर्ष के तुल्य बनाने के लिए पुनः तैयार, पुनः वर्गीकृत तथा पुनः व्यवस्थित किया गया है।
10. टिप्पणी संख्या 1 से 24 तक तलुन—पत्र का आंतरिक भाग है तथा उसे पूर्णतः सत्यापित किया गया है

लेखा परीक्षा रिपोर्ट

हमने मानविकी और सामाजिक विज्ञानों के अन्तर्विश्वविद्यालय केन्द्र (आई.यू.सी.) के तुलनपत्र के साथ उसकी प्राप्तियों व भुगतान तथा आय व व्यय का 31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष का लेखा परीक्षण किया है तथा संबंधित रिपोर्ट संलग्न कर दी है।

वित्तीय विवरणों के लिए आई.यू.सी. प्रबन्धन जिम्मेवार है। हमारी जिम्मेवारी इन वित्तीय विवरणों के आधार पर लेखा परीक्षा के पश्चात् अपनी राय व्यक्त करना है।

हमने भारत के लेखा परीक्षा के मानकों के आधार पर लेखा परीक्षण किया है जो भारत में सामान्यतः स्वीकार्य हैं। इन मानकों के आधार पर हम लेखा परीक्षण करते हैं कि क्या वित्तीय विवरणीय स्पष्ट हैं और किसी प्रकार के गलत विवरणियाँ नहीं हैं। लेखा परीक्षण के आधार पर किया जाता है, तथा वित्तीय विवरणियों में रकमों के सबूत भी लिये जाते हैं। लेखा परीक्षण में लेखा सिद्धान्तों और विस्तृत आंकलन जोकि प्रबन्धन द्वारा तैयार किये जाते हैं उसका भी परीक्षण किया जाता है तथा वित्तीय विवरणियों का मूल्यांकन भी किया जाता है। हमें विश्वास है कि हमारा लेखा परीक्षण हमारी राय को व्यक्त करने में मूल आधार होता है।

पूर्ववर्ती टिप्पणियों के आधार पर हम रिपोर्ट प्रस्तुत करते हैं:-

- 1) लेखा परीक्षण के लिए अनिवार्य सभी सूचनायें और स्पष्टीकरण हमने अपनी पूर्ण जानकारी और विश्वास के आधार पर प्राप्त कर लिये हैं।
- 2) हमारे मत तथा जानकारी के अनुसार एवं हमें दिये गये स्पष्टीकरण तथा अनुलग्नक-2 में दिये गये मानकों के आधार पर इन लेखाओं की स्पष्ट स्थिति प्रकट होती है:-
 - क) तुलनपत्र में 31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष के केन्द्र के कार्य कलाप हैं।
 - ख) आय-व्यय लेखे में उस तिथि को समाप्त हुए वर्ष में प्राप्त सहायता अनुदान से उपयोग की गई रकम का लेखा-जोखा है।
 - ग) प्राप्तियों तथा भुगतान के लेखों में उस तिथि को समाप्त हुए वर्ष का प्राप्तियाँ तथा भुगतान का लेखा-जोखा है।

शिमला
दिनांक : 14/7/2015

आर.के. कौशल एवं कंपनी
सनदी लेखाकार
आईसीएआई नं. 12233एन
(स.ले. राकेश कुमार कौशल)
एफसीए प्रॉप.
आईसीएआई एम नं. 090655

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला-171005

31.3.2015 को मानविकी व सामाजिक विज्ञानों के लिये अन्तरविश्वविद्यालय केन्द्र का तुलन पत्र

देनदारियाँ	राशि	राशि	परिसम्पत्तियाँ	राशि	राशि
पूँजी आरक्षित		7236129.00	स्थाई परिसम्पत्तियाँ		7236129.00
अंतर्शेष	6908336.00		(अनुसूची-1 के अनुसार)		
			कम्प्यूटर	1764725.00	
अंतर्शेष	6908336.00		विद्युत उपकरण	876816.00	
न्यूनतर : पुराने वाहन की कीमत	265054.00		फर्नीचर एवं फिक्स्चर	1192092.00	
अंतर्शेष	6643282.00		पुस्तकालय की पुस्तकें	2809649.00	
जमा : नए वाहन की कीमत	592847.00		नया वाहन	592847.00	
अंतर्शेष	7236129.00				
चालू देन दारियाँ		1604497.51			
अनुदान सहायता	523558.51				
आयकर	194.00				
संस्थान का खाता	71340.00				
टिकट बूथ	1000000.00		चालू परिसम्पत्तियाँ		1604497.51
लेखा परीक्षण देय शुल्क	9405.00		ऋण तथा अग्रिम (परिसम्पत्ति)	309791.00	
			भा.स्टेट बैंक (बचत खाता)	1294706.51	
कुल		8840626.51	कुल		8840626.51

शिमला
 14-7-2015

हस्ता./-
 (राकेश कुमार सिंह)
 लेखा अधिकारी

हस्ता./-
 (सुनील वर्मा)
 सचिव

हस्ता./-
 (चेतन सिंह)
 निदेशक

सनदी लेखाकार
 आईसीएआई एफआरएन 012233एन
 राकेश कुमार कौशल
 एकल स्वामित्व
 आईसीएआई एम. नं. 090655

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला-171005

31.3.2015 को मानविकी व सामाजिक विज्ञानों के लिये अन्तर-विश्वविद्यालय केन्द्र का आय-व्यय लेखा

व्यय	राशि रुपये में	आय	राशि रुपये में
सह-अध्येताओं का रखरखाव	1215800.00	अन्य आय	50588.00
सह-अध्येताओं का यात्रा भत्ता / दैनिक भत्ता	858909.00	उपयोगिता अनुदान	5363671.00
आईयूसी शोध संगोष्ठी और अध्ययन सप्ताह	613835.00	उपार्जित ब्याज	20364.00
प्रशासनिक एवं साचिविक सहायता (डाक, मैडिकल लेख सामग्री)	20592.00		
आईयूसी जर्नल के प्रकाशन पर व्यय	4741.00		
विविध प्रारसंगिक व्यय	573661.00		
दिल्ली अधितिगृह का साज-समान / रख-रखाव	579889.00		
प्रशासन कक्ष (मजदूरी वेतन एवं भत्ते)	1298870.00		
वाहनों का रख-रखाव	98299.00		
कम्प्यूटर तथा अन्य इलैक्ट्रॉनिक सुविधाएं	159720.00		
ब्याज एवं बैंक प्रभार	902.00		
लेखा परीक्षण शुल्क	9405.00		
		Total	5434623.00
जोड़			5434623.00

शिमला
14-7-2015

हस्ता. / -
(राकेश कुमार सिंह)
लेखा अधिकारी

हस्ता. / -
(सुनील वर्मा)
सचिव

हस्ता. / -
(चेतन सिंह)
निदेशक

सनदी लेखाकार
आईसीएआई एफआरएन 012233एन
राकेश कुमार कौशल
एकल स्वामित्व
आईसीएआई एम. नं. 090655

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला-171005

मानविकी और सामाजिक विज्ञानों के लिए अन्तरविश्वविद्यालय केन्द्र

स्थाई परिसम्पत्तियों की अनुसूची (31.3.2015 को समाप्त वर्ष)

क्र.	विवरण	अथशेष	वर्ष के दौरान जोड़ी गई	वर्ष के दौरान घटाई गई	अंतशेष
1	कम्प्यूटर	1764725.00	0.00	0.00	1764725.00
2	विद्युत उपकरण	876816.00	0.00	0.00	876816.00
3	फर्नीचर व स्थिर वस्तुएं	1192092.00	0.00	0.00	1192092.00
4	पुस्तकालय व पुस्तकें	2809649.00	0.00	0.00	2809649.00
5	नया वाहन	0.00	592847.00	0.00	592847.00
6	वाहन	265054.00	0.00	265054.00	0.00
	कुल योग	6908336.00	592847.00	265054.00	7236129.00

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला-171005

मानविकी और सामाजिक विज्ञानों के लिए अन्तरविश्वविद्यालय केन्द्र का प्राप्ति एवं भुगतान (31.3.2015 को समाप्त वर्ष)

प्राप्तियाँ	राशि रूपयों में	भुगतान	राशि रूपयों में
अथशेष	181496.51	पूँजीगत व्यय	
यूजीसी से प्राप्त अनुदान	6000000.00	रख-रखाव भत्ता	1215800.00
राजस्व प्राप्तियाँ		सह-अध्येताओं का यात्रा भत्ता	858909.00
विविध आय	113587.00	शोध संगोष्ठियों और अध्ययन सप्ताह	613835.00
अर्जित ब्याज	20364.00	प्रशानिक एवं साचविक सहायता (डाक, मैडिकल लेखन सामग्री)	20592.00
		आईयूसी जर्नल का प्रकाशन	4741.00
अन्य प्राप्तियाँ	62658.00	विविध प्रसंगिक व्यय	573661.00
आयकर	591480.00	प्रशासन / कक्ष (मजदूरी वेतन, मानदेय एवं भत्ते)	1298870.00
मेस प्रभार	3500000.00	वाहन का रख-रखाव	98299.00
टिकट बूथ	760000.00	कम्प्यूटर व अन्य इलेक्ट्रॉनिक्स सुविधाएं	159720.00
विविध अग्रिम राशियाँ	1000000.00	ब्याज व बैंक प्रभार	902.00
आंतरिक हस्तांतरण	63049.00	दिल्ली अतिथि गृह का मरम्मत व रखरखाव	579889.00
भा.उ.अ.सं.		अन्य भुगतान	760000.00
		विविध पेशगियाँ	62464.00
		आयकर	520140.00
		मेस प्रभार	2500000.00
		टिकट बूथ	592847.00
		नए वाहन	74210.00
		फैलोअ मेस / कैंटीन	1294706.51
		बैंक खाता	1000000.00
		आंतरिक हस्तांतरण	63049.00
		भा.उ.अ.सं.	
जोड़	12292634.51	जोड़	12292634.51

शिमला
14-7-2015

हस्ता. / -
(राकेश कुमार सिंह)
लेखा अधिकारी

हस्ता. / -
(सुनील वर्मा)
सचिव

हस्ता. / -
(चेतन सिंह)
निदेशक

सनदी लेखाकार
आईसीएआई एफआरएन 012233एन
राकेश कुमार कौशल
एकल स्वामित्व
आईसीएआई एम. नं. 090655

**भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005**

अनुलग्नक-2

31 मार्च, 2015 को समाप्त वर्ष के लेखों की लेखा नीतियां और टिप्पणियां।

लेखा पद्धति

- 1) लेखे नगद प्रणाली के आधार पर बनाये गये हैं।
- 2) सामान्य वित्तीय नियमावली के नियम 151 (4) के अनुसार मूल्यहास नहीं लिया गया है।

लेखों पर टिप्पणियां

- 3) 18,475 रुपये की पेशगी की वसूली प्रोफेसर आर.एस. मिश्रा से वर्ष 94-95 से बकाया है पेशगी के समायोजन/ वसूली के लिये प्रयास किये जा रहे हैं।
- 4) डॉ. वी.सी. थोमस से 20.3.2004 को दी गई 100000.00 रुपये पेशगी की वसूली की जानी है। पेशगी के शीघ्र समायोजन/ वसूली के लिए प्रयास किये जा रहे हैं।
- 5) निदेशक आईसीएआर नई दिल्ली को अकादमिक संसाधन अधिकारी के द्वारा 15,000.00 रुपये संगोष्ठी के लिए दिये गए थे। इसमें से 10,000.00 रुपये की राशि बकाया है। पेशगी के समायोजन/ वसूली के लिये प्रयास किये जा रहे हैं।
- 6) कुल सचिव जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली को अकादमिक संसाधन अधिकारी के द्वारा 2,75,000.00 रुपये की पेशगी 30.3.2007 को संगोष्ठी के आयोजन के लिए अकादमिक संसाधन अधिकारी द्वारा दी गई थी जिसमें से 1,80,116.00 रुपये बकाया हैं। पेशगी के समायोजन/ वसूली के लिये प्रयास किये जा रहे हैं।

शिमला
27-8-2015

हस्ता./—
(राकेश कुमार सिंह)
लेखा अधिकारी

हस्ता./—
(सुनील वर्मा)
सचिव

हस्ता./—
(चेतन सिंह)
निदेशक

सनदी लेखाकार
आईसीएआई एफआरएन 012233एन
राकेश कुमार कौशल
एकल स्वामित्व
आईसीएआई एम. न. 090655

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

वित्त समिति के सदस्यों की सूची

- | | | |
|----|---|------------|
| 1. | प्रोफेसर माधवन पलॉट
बी.-209, ग्रेटर कैलाश-1
नई दिल्ली-110048
मोबाइल: 98182-53117
ईमेल: palatmk@gmail.com | अध्यक्ष |
| 2. | रिक्त सदस्य | |
| 3. | प्रोफेसर बी.एस. चिमनी
अंतर्राष्ट्रीय विधि अध्ययन केन्द्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली-110067
दूरभाष: 011-26704375
ईमेल: bschimni@hotmail.com | सदस्य |
| 4. | श्री योगेन्द्र त्रिपाठी , भा.प्र.से.
संयुक्त सचिव एवं वित्तीय सलाहकार
माध्यम एवं उच्चतर शिक्षा विभाग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
शास्त्री भवन
नई दिल्ली-110001
दूरभाष:-011-23382696 फैक्स:- 011-23070668 | पदेन सदस्य |
| 5. | प्रोफेसर चेतन सिंह
निदेशक
भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005 | पदेन सदस्य |

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

शासी निकाय के सदस्य

1. प्रोफेसर चन्द्रकला पाडिया
अध्यक्ष, शासी निकाय, भा.उ.अ.सं.
एवं
उपकुलपति
महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय
बीकानेर- 334004
2. प्रोफेसर चेतन सिंह
निदेशक
भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005
दूरभाष : 0177-2830006 (का.) 2831275 (आ.) फ़ैक्स : 2831389, 2830995
ईमेल: directorias@gmail.com

शिक्षा व वित्त मंत्रालय से एक-एक प्रतिनिधि

1. श्री विनय शील ओबरॉय, भा.प्र.से.
सचिव
उच्चतर शिक्षा विभाग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
शास्त्री भवन, नई दिल्ली-110011
दूरभाष: 011-23386451 (का.) 26979585, फ़ैक्स 23385807, 23381355
ईमेल: secy.dhe@nic.in
2. सुश्री दर्शना एम. डबराल, भा.प्र.से.
संयुक्त सचिव एवं वित्तीय सलाहकार
उच्चतर शिक्षा विभाग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
शास्त्री भवन, नई दिल्ली-110011
दूरभाष : 011-33382696, फ़ैक्स : 011- 23070668
ईमेल: isfa.edu@gov.in

पांच संस्थागत सदस्य

1. प्रोफेसर वेद प्रकाश
अध्यक्ष
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-110002
दूरभाष: 011-23239628 (का.), फ़ैक्स : 011-23231797,
ईमेल: cm@ugc.ac.in
2. प्रोफेसर एस.के. थरॉट
अध्यक्ष
भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद
पोस्ट बाक्स न0-10528
अरुणा आसिफ अली मार्ग
नई दिल्ली-110067
दूरभाष: 011-26741679 (का.), 011-26742398 (आ.) फ़ैक्स : 011-26162516 / 26179836,
मोबाइल : 08800388332, 09811127986
ईमेल: chairman@icssr.org, thoratsukhadeo@yahoo.co.in
3. प्रोफेसर मृणाल मिरि
अध्यक्ष
भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद
36 तुगलकाबाद इन्स्टीच्यूशनल एरिया
मेहरोली बदरपुर मार्ग
नई दिल्ली-110006
टेलीफ़ैक्स : 011-29051762 / 29901503, 29901501; मोबाइल : 09013181940
फ़ैक्स : 011-29964755; ईमेल : mirimrinal@hotmail.com, chairman@icpr.in
4. डॉ. एम.ओ. गर्ग
महानिदेशक
वैज्ञानिक और अनुसंधान परिषद
रफी मार्ग, नई दिल्ली-110001
दूरभाष : 011-23710472, 23717053 (का.)
फ़ैक्स : 011-23710618
ईमेल: dgcsir@csir.res.in, dg@csir.res.in

5. प्रोफेसर येल्लाप्रागदा सुदर्शन
अध्यक्ष
भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद
35, फिरोजशाह मार्ग
नई दिल्ली-110001
दूरभाष : 011-23386033, नि.स. 23384869
फैक्स : 011-23383421
ईमेल: chairpersion@ichr.ac.in

यदि आवश्यक हो ये संस्थागत सदस्य बैठकों में अपने प्रतिनिधियों को भेज सकते हैं।

नियम 3 (ख) (1) के अन्तर्गत केन्द्रीय सरकार द्वारा नामित दो उप-कुलपति

1. रिक्त
2. रिक्त

नियम 3 (ख) (2) के अन्तर्गत केन्द्र सरकार द्वारा नामित चार सदस्य

1. प्रोफेसर माधवन पलॉट
बी.-209, ग्रेटर कैलाश-I
नई दिल्ली-110048
मो. 09818253117
ईमेल: palatmk@gmail.com
2. प्रोफेसर डी. एल. सेठ
सैंटर फॉर दी स्टडी ऑफ डिबैलिंग सोसायटीस्
29 राजपुर रोड़
दिल्ली-110054
मो. 09830171499, दूरभाष: 011-22231864
ईमेल: soha.moitra@gmail.com
3. रिक्त
4. प्रोफेसर सूजी थारु
ए-27/2, प्रथम क्रिसैन्ट रोड़
एएफओसीएचएस सैनिकपुरी
हैदराबाद-500094
ईमेल: susietharu@gmail.com

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान की सोसायटी

1. प्रोफेसर चन्द्रकला पाडिया प्रधान
अध्यक्षा, शासी निकाय, भा.उ.अ.सं.
एवं उपकुलपति
महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय
बीकानेर- 334004
2. प्रोफेसर चेतन सिंह
निदेशक
भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
राष्ट्रपति निवास, शिमला-171005
दूरभाष : 0177-2830006 (का.) 2831275 (आ.) फ़ैक्स : 2831389, 2830995
ईमेल: directorias@gmail.com

नियम 3 (क) संस्थागत सदस्य (पदेन)

1. सचिव
उच्चतर शिक्षा विभाग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
शास्त्री भवन, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 011-23386451, 23382698 (का.) 26979585,
फ़ैक्स: 011-23385807, 23381355
ईमेल: secy.dhe@nic.in,
2. सचिव,
भारत सरकार
व्यय विभाग
वित्त मंत्रालय, नार्थ ब्लॉक केन्द्रीय सचिवालय
नई दिल्ली-110001
3. संयुक्त सचिव (उच्चतर शिक्षा)
उच्चतर शिक्षा विभाग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
शास्त्री भवन, नई दिल्ली-110001,
दूरभाष: 011-23382298 फ़ैक्स: 011-23070036

4. प्रोफेसर वेद प्रकाश
अध्यक्ष
विश्वविद्यालय अनुवाद आयोग
बहादुरशाह ज़फ़र मार्ग
नई दिल्ली-110002
दूरभाष: 011-23239628 (कार्यालय) फ़ैक्स: 011-23231797
ईमेल: cm@ugc.in
5. डा. एम.ओ. गर्ग
महानिदेशक
वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद
रफी मार्ग, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 011-23710472, 23717053 (का.)
फ़ैक्स: 011-23710618
ईमेल: dgcsir@csir.res.in, dg@csir.res.in
6. प्रोफेसर एस के थरॉट
अध्यक्ष
भारतीय समाज विज्ञान अनुसंधान परिषद
पोस्ट बाक्स न0 10528
अरुणा आसिफ अली मार्ग
नई दिल्ली-110067
दूरभाष: 011-26179679 (का.) 011-255454865 / 26717146 (आ.)
फ़ैक्स :-011-26162516 / 26179836
7. प्रोफेसरवाई.एस. राव
अध्यक्ष
भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद
35 फ़िरोजशाह मार्ग, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 011-23386033, 23384869, फ़ैक्स 23383421, 23387829, मोबाइल: 9415243954
8. प्रोफेसर मृणाल मिरी
अध्यक्ष
भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद
36 तुगलकाबाद इन्स्टीच्यूशनल एरिया
मेहरोली बंदरपुर मार्ग, नई दिल्ली-110062
टैली फ़ैक्स: 011-29051762 / 26057387 (का.) फ़ैक्स 011-2242844
ईमेल: mirimrinal@hotmail.com chairman@icpr.in

9. श्री बलदेव शर्मा
अध्यक्ष
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरु भवन, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंतकुंज, नई दिल्ली-110070
दूरभाष: 011-26121880 (का.), मोबाइल : 09910052933
ईमेल: chairman@nbtindia.org.in
10. श्री विश्वनाथ तिवारी
अध्यक्ष
साहित्य अकादमी
35, फिरोजशाह मार्ग
नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 011-23386623 मोबाइल : 09810112543 फैक्स: 011-23382448, 23074160
गोरखपुर : मोबाइल- 09415691378, 0551-2335967
ईमेल: vptiwari378@hotmail.com
11. श्री शेखर सेन
अध्यक्ष
संगीत नाटक अकादमी
रवीन्द्र भवन, फिरोजशाह मार्ग
नई दिल्ली-110001
दूरभाष 011- 24116375/76 फैक्स 011- /23381621
ईमेल : chairman@sangeetnatak.gov.in
12. श्री के.के. चक्रवर्ती
अध्यक्ष
ललित कला अकादमी
फिरोजशाह मार्ग
नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 011-23387241-43
13. प्रोफेसर राघवेन्द्र गडकर
अध्यक्ष
भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी,
बहादुरशाह ज़फर मार्ग,
नई दिल्ली- 110002

14. प्रोफेसर ललित मानसिंह
उपाध्यक्ष
भारतीय सांस्कृतिक संबन्ध परिषद
7, ओ-1, ऑफ पालम मार्ग (तृतीय तल)
बसंत बिहार
नई दिल्ली-110057
ईमेल : lalitmansingh@yahoo.com
मोबाइल : 098731-91800
15. प्रोफेसर एच.एम. देसाई
अध्यक्ष, ए.आई.यू.
तथा
उप-कुलपति
धर्मसिंह देसाई विश्वविद्यालय
पोस्ट बॉक्स नं. 35, कॉलेज रोड़
नादियाद- 387001
दूरभाष : 0268-2520503 (का.) फ़ैक्स : 0268-2520501
ईमेल: vc@ddu.ac.in,
Website: <http://www/ddu/edu.in>
16. प्रोफेसर पी.वाई. राजेन्द्र कुमार
निदेशक
राष्ट्रीय पुस्तकालय
वैलवैट्टे, अलीपुर
कोलकाता-700027
दूरभाष : 033-24792968 / 24791462 (का.) : फ़ैक्स 033-24791462
ईमेल: nldirector@rediffmail.com
17. श्री वी. श्रीनिवास मुशीर-उल हसन
संयुक्त सचिव, संस्कृति मंत्रालय
एवं
महानिदेशक अभिलेखागार
राष्ट्रीय अभिलेखागार
जनपथ
नई दिल्ली-110001
दूरभाष बदलने की सम्भावना
दूरभाष:-011-23381396 ईमेल : archives@nic.in

18. श्री पी मित्रा, भा.प्र.से.
मुख्य सचिव
हिमाचल प्रदेश सरकार
हिमाचल प्रदेश सचिवालय,
शिमला-171002
दूरभाष: 0177-2621022 (का.), 2880714 (आ.) फ़ैक्स : 2621813
ईमेल: cshep@nic.in

यदि आवश्यक हो तो संस्थागत सदस्य बैठकों में अपने मनोनीत प्रतिनिधियों को भेज सकते हैं।

नियम 3 (ख) नामित सदस्य

नियम 3 (ख) (1) के अन्तर्गत केन्द्रीय सरकार द्वारा नामित भारतीय विश्वविद्यालयों के छः उप-कुलपति

1. रिक्त

2. प्रोफेसर रामाकृष्णा रामास्वामी
उप-कुलपति
हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय
डाकघर केन्द्रीय विश्वविद्यालय परिसर
हैदराबाद-400046

3. डॉ. राजन एम. वेलुकर
उपकुलपति
मुम्बई विश्वविद्यालय
एम.जी. रोड, फोर्ट
मुम्बई-400046
दूरभाष : +91 (22) 22656789 / 22650403
फ़ैक्स : +91 (22) 22673579
ई-मेल: vc@fort.mu.ac.in

4. रिक्त

5. प्रोफेसर जीएसएन राजू
उपकुलपति
आंध्र विश्वविद्यालय
विशाखापटनम, आंध्र प्रदेश
दूरभाष : 91-891-2844222, 2844333, 2755547
फ़ैक्स : 91-891-2525611 22673579
ई-मेल: vicechancellor@andhrauniversity.edu.in

6. प्रोफेसर ए. एस. बराड़
उप-कुलपति
गुरु नानक विश्वविद्यालय
अमृतसर-143001
ई-मेल: vcgndu@gmail.com

नियम 3 (ख) (2) के अन्तर्गत केन्द्र सरकार द्वारा नामित 18 से 24 शिक्षाविद

1 रिक्त

2. प्रोफेसर के. रामकृष्णा राव
35 देशपाला हिलस
विशाखापटन्नम-530003

3. प्रोफेसर माधवन पलॉट
मुख्य संपादक
नेहरू मेमोरियल ट्रस्ट
नई दिल्ली-110048
मोबाइल :0981825317
ईमेल : palatmk@gmail.com

4. प्रोफेसर डी.एल. सेठ
सैंटर फॉर दी स्टडी ऑफ डिबैलिंग सोसायटीस्
29 राजपुर रोड़
दिल्ली-110054
दूरभाष : 011-22231864 मोबाइल: 09313298815
ईमेल : dlseth@csds.in

5. रिक्त

6. प्रोफेसर अक्तर मेहन्दी
पारसी अध्ययन विभाग
निदेशक
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली-110067
मोबाइल: 9811753159
ईमेल: mahndiakhtar@yahoo.com

7. प्रोफेसर ए. आर. वास्वी
नेशनल इन्स्टिट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज
इण्डियन इन्स्टिट्यूट ऑफ साइंस कैम्पस
बंगलूरु-560012
8. प्रोफेसर गोपाल गुरु
सैन्टर फॉर पॉलिटिकल स्टडी
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
दिल्ली-110067
मोबाइल: 09811687097
ईमेल: gopalguru2001@gmail.com
9. प्रो. त्रिदीप सुह्रुद
निदेशक
साबरमती आश्रम, संरक्षण एवं यादगार न्यास
गांधी स्मारक संग्रहालय
गांधी आश्रम, अहमदाबाद-380027
मोबाइल: 9811753159
ईमेल: tridp.suhrud@gmail.com
10. प्रोफेसर प्रथा घोष
46, सतीश मुखर्जी मार्ग
कोलकता-700025
11. श्री पदमवीर सिंह, भा.प्र.से. (से.नि.)
वेस्टोनल फार्म
समीप ऐरोसिटी, विलेज बाड़ी
डॉकघर मोहाली, तहसील व जिला मोहाली
पंजाब
12. श्री सदानन्द मेनन
1, इलियट्स बीच मार्ग
चेन्नई-400090
13. श्री एस. प्रसन्ना
कवि काव्य न्यास
हेगुडू-577417
जिला शिमोगा, कर्नाटक

14. प्रोफेसर सुसेई थारु
ए-27/2, प्रथम क्रिसैन्ट रोड
एएफओसीएचएस सैनिकपुरी
हैदराबाद-500094
ईमेल: susietharu@gmail.com
15. प्रोफेसर रुकमणी भाया नायर
विभागाध्यक्ष
मानविकी विभाग
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, हॉज खास
नई दिल्ली-110067
ईमेल: rukmini.nayar@gmail.com
16. प्रोफेसर लोकेन्द्र अरम्बम
स्गोलबंद, मैनोलेन
इम्फाल- 795001
मणिपुर
17. प्रोफेसर शिव विश्वनाथन
ओ.पी. जिन्दल ग्लोबल विश्वविद्यालय
सोनीपत नेराला मार्ग
सोनीपत, हरियाणा- 131001
एन.सी.आर. नई दिल्ली, इण्डिया
ईमेल: svclds@gmail.com
18. प्रोफेसर सुन्दर सरुकाई
दर्शनशास्त्र एवं मानविकी केन्द्र, मणिपाल
मणिपाल विश्वविद्यालय
इम्फाल- 795001
ईमेल: sunder.sarukai@manipal.edu
19. प्रोफेसर संजोय हजारिका
सैफूद्दीन किचेल्थू चेयर
जामिया मिलिया इस्लामिया
पूर्व उत्तर अध्ययन केन्द्र
मौलाना मोहम्मद अली जौहर मार्ग
नई दिल्ली-110025
ईमेल: sanjoyha@gmail.com; sanjoyha@rediffmail.com

20. प्रोफेसर बी.एस. चिमनी
अंतर्राष्ट्रीय विधि अध्ययन केन्द्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली-110067
ईमेल: bschimni@hotmail.com ; bschimini@mail.jnu.ac.in
21. प्रोफेसर विजय बरुआ
स्कूल ऑफ फिलॉसफी
मानविकी एवं सामाजिक अध्ययन विभाग
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान
दिल्ली- 110067
मोबाइल : 09717049651
ईमेल: boruah@hss.iitd.ac.in
22. प्रोफेसर बैटिना बूमर
समविद्यालय अभिनवगुप्ता शोध पुस्तकालय
बी 2/114, भदौनी,
वाराणसी- 221001
ईमेल: betinabaeumar@yahoo.com
23. प्रोफेसर पुलाप्रे बालाकृष्णन्
(अर्थशास्त्री)
निदेशक
विकासशील अध्ययन केन्द्र, तिरुवनन्थापुरम
केरल- 695001

ANNUAL REPORT
2014–15

Contents

Particulars	Page
Foreword	3
Director's Note	5
Background	7
Administration	8
Fellows in Position	8-10
Academic Activities	10
A. Tagore Memorial Lecture	10-11
B. Dr. Sarvepalli Radhakrishnan Memorial Lecture	11
C. Seminar, Conferences, Symposia and Round Tables	11-65
D. Weekly Seminars by Fellows	65-68
E. Monographs Received from Fellows	68
F. Visiting Professors	69
G. Visiting Scholars	69-71
H. Guest Fellows	71
I. Seminars Under IUC Scheme	72-79
J. Seminars by Associates	80-86
K. Other Programmes	86-87
Publications	87-88
Sales and Public Relations Section	89-90
Library	90
Dispensary	91
Sexual Harassment Committee	91
Official Language	91-92
Maintenance of Estate	92-94
Accounts and Budget	94
Garden	94-97
Administrative and other Initiatives	97
Audited Statement of Accounts for the year 2014 -15 of the IAS	98-127
Audited Statement of Accounts of the Inter-University Centre for Humanities and Social Sciences (IUC)	128-133
Lists of IAS Society, Governing Body and Finance Committee	134-146

FOREWORD

I am happy and feel privileged to write Foreword for the Annual Report 2014-15 in the golden jubilee year of the Institute. Annual report, in fact, is face of an organization, as it clearly reveals the academic activities undertaken by the Institute. A mere glance on the research projects, seminars and workshops been conducted over a year, speaks amply about the excellent work being done in multifarious ranges of themes by Indian Institute of Advanced Study, Shimla. The report substantiates the Institute's repute in the field of higher research in humanities and social sciences.

These achievements would not have been possible without the generous support of Union Ministry for Human Resource Development. We also remain indebted to the Secretary and other officials of the Department of Higher Education for their active support, valuable advice and cooperation. This has resulted in a most constructive and creative partnership.

I would like to thank Professor Chetan Singh, Director and other officers of the Institute for their dedicated services to the Institute to fulfill the dreams of the founder, Dr. Sarvepalli Radhakrishnan.

I wish the Society the very best in all the endeavours in the coming years.

CHANDRAKALA PADIA

President

Indian Institute of Advanced Study Society

Rashtrapati Nivas, Shimla - 171 005

DIRECTOR'S NOTE

The Indian Institute of Advanced Study completed forty-nine years of its existence in October 2014 and stepped into its fiftieth. As the golden jubilee year approaches, there is sufficient reason for us to celebrate the considerable measure of success that has been achieved in these long years. It is an occasion to renew our commitment to pursuing the objectives enunciated by Dr S. Radhakrishnan as its core founding principles. This is also, nevertheless, a time to introspect deeply on the role of this unique institution in rapidly changing times. The vicissitudes that the Institute has confronted in the past half century have failed to weaken its resolve to pursue the ideals that its founder had articulated at its inception. Upon the strength of this resolve has been built and retained its reputation for academic excellence. Yet, this has never been easy. The hard work and commitment of a large number of outstanding scholars has contributed to this success. It is to them that the largest portion of credit must go.

The Second Rabindranath Tagore Memorial Lecture delivered in September 2014 by Gulzar Sahib was one of the important events of the past year. On this occasion he also inaugurated the new photo gallery in the Rashtrapati Nivas. These two events came to mark the beginning of the two-year long golden jubilee celebrations. The other significant academic events organized during the year are listed in the report. I am confident that most of these would meet even the most rigorous scrutiny by scholars in different disciplines.

It is the success of its core Fellowship programme in particular that contributes considerably to the Institute's reputation as an ideal place for advanced research in humanities and social sciences. The select group of residential scholars at the IIAS strongly influences, at any given point of time, its academic standing amongst other research institutions. Efforts are continuously made to select Fellows whose projects promise to explore new and original areas, and who have acquired eminence in their respective disciplines, or have exhibited potential for doing outstanding research. In the year under report, the majority of the research projects undertaken by Fellows were completed and the Institute received their final manuscript for publication. The periodic presence of several Visiting Professors, Visiting Scholars and Guest Fellows belonging to a diverse range of specializations further enriched academic interaction throughout the year.

In keeping with its mandate, a large number of seminars, conferences, workshops and study weeks were organized. We are optimistic that the results would be soon apparent in the form of outstanding publications. The proceedings of the seminars organized during the course of the forty-ninth and fiftieth year as well as the monographs submitted by the Fellows will be published under the Golden Jubilee series after they have been subjected to careful peer review. Some of the publications under this series have already appeared in print and will be officially released in the October 2015 to mark the completion of the fiftieth year of the establishment of the Institute.

The magnificent Rashtrapati Nivas and its extensive gardens and estate are integral to the character of the Indian Institute of Advanced Study. Their diligent maintenance and restoration is, therefore, a fundamental responsibility of the IIAS. During the year under report several initiatives were taken in this direction. The grounds and hill-slopes in the immediate vicinity of the Rashtrapati Nivas were strengthened and stabilized. Some of the residential buildings within the estate were renovated and accommodation available to Fellows was thus improved. I am happy to report that a number of visitors and especially the important dignitaries who visited the IIAS commented favorably and with appreciation upon the care that had been taken in this regard. The Estate and Garden staff has exerted itself greatly to make this possible. There still remains much to be done and efforts are being made to start the renovation of the most fragile part of the building which once housed the services section.

The Institute Library continued to provide all necessary resources to the Fellows and other academic visitors. Support systems such as the Guest House, Stores and Supplies and Dispensary have functioned well.

I would like to mention the supportive role played by Professor Chandrakala Padia, the Chairperson of the Governing Body and President of the Society, in many of the important decisions taken during the course of the year. Despite her own preoccupation as the head of an academic institution, she willingly provided advice that contributed towards carrying out many of the academic activities of IIAS.

The Secretary and senior officials of the Ministry of Human Resource Development have been generous in providing resources and administrative suggestions to help run the Institute efficiently. Their cooperation and support is crucial for the Institute and one hopes that this would always be forthcoming. I can only once again reiterate, as I did last year, that the cordiality that IIAS shares with the Ministry will continue in the years to come.

CHETAN SINGH
DIRECTOR

**INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA - 171 005**

ANNUAL REPORT FOR THE YEAR 2014-2015

The Indian Institute of Advanced Study Society was established on 6th October 1964, under the Societies Registration Act XXV of 1860 (Punjab Amendment) Act 1957. Located at the Rashtrapati Nivas, Shimla, the Institute is devoted to higher levels of research, primarily in the areas of Humanities and Social Sciences. The academic community at the Institute consists mainly of Fellows in residence, Visiting Professors, Visiting Scholars, and Associates etc. who pursue their individual research and interact with each other, both formally and informally. Rashtrapati Nivas itself, and the natural surroundings which constitute the estate, provides an ambience conducive to living a life of the mind and exploring the different facets of the human condition.

The Institute's Memorandum of Association offers its perspective on research which is that:

- (a) The areas of investigation should promote inter-disciplinary research;
- (b) The areas identified should have deep human significance.

The Memorandum of Association also spells out the areas of study, which are:

- (1) Social, political and economic philosophy;
- (2) Comparative Indian literature (including ancient, medieval, modern folk and tribal);
- (3) Comparative studies in philosophy and religion;
- (4) Education, culture, arts including performing arts and crafts;
- (5) Fundamental concepts and problems of Logic and Mathematics;
- (6) Fundamental concepts and problems of natural and life sciences;
- (7) Studies in environment – both natural and social;
- (8) Indian Civilisation in the context of its Asian neighbours and the world; and
- (9) Problems of contemporary India in the context of national integration and nation-building.

The Memorandum mentions that special attention should be given to:

- (a) Theme of Indian unity in diversity;
- (b) Integrality of Indian consciousness;
- (c) Philosophy of education in the Indian perspective;
- (d) Advanced concepts in natural sciences and their philosophical implications;
- (e) Indian and Asian contribution to the synthesis of science and spirituality;
- (f) Indian and human unity;
- (g) 'Companions' to Indian Literature;
- (h) Comparative studies of the Indian epics; and
- (i) Human Environment.

I. ADMINISTRATION

During the year under report, the Indian Institute of Advanced Study Society and its Governing Body were headed by Shri Gopalkrishna Gandhi, retired civil servant, diplomat, author and former Governor of West Bengal till 4th September 2014 and thereafter, Professor Chandrakala Padia, Vice-Chancellor, Maharaja Ganga Singh University, Bikaner has been nominated as Chairperson of the IIAS Governing Body and President of IIAS Society. The members of the Society and the Governing Body are eminent persons drawn from different walks of life. The Institute has a Finance Committee, which includes representatives from the Ministry of Human Resource Development, besides other members from the Society and Governing Body of the Institute to advise the Governing Body on financial matters.

The Institute is headed by a Director who is assisted by a Secretary and other officers. Professor Chetan Singh continued as Director during the period of report.

II. FELLOWS IN POSITION

The Fellowship programme is the flagship programme of the Institute. National Fellows/Fellows/Tagore Fellows reside at the Institute and pursue research on their respective research projects. Their tenure is for a maximum period of two years. At the end of their term the Fellows submit a monograph which, if found suitable for publication, is published by the Institute. They are also required to take part in seminars, discussions and deliberations during their stay at the Institute. In 2014-15, the following National Fellows/Fellows/Tagore Fellows were in position:

Sl. No. 1.	Name of Scholars 2.	Research Project 3.
1.	Professor D.N. Dhanagare (National Fellow)	<i>Populism and Power: The Farmers' Movement in Maharashtra, 1979-2010</i>
2.	Shri Rajesh Joshi (National Fellow)	<i>हिन्दी कविता में आधुनिक शहर की स्थानीयता का प्रवेश</i>
3.	Professor B.D. Chattopadhyay (National Fellow)	<i>Spaces, Peoples and Cultures: Early Indian Perspectives</i>
4.	Professor Meena Alexander	<i>A Cycle of Poems entitled fragments in August</i>
5.	Dr. Priyambada Sarkar	<i>'A Religious Point of View': Wittgenstein and Rabindranath</i>
6.	Shri Pradip Phanjoubam	<i>The North-East Question</i>
7.	Dr. Sunita Raina	<i>Making a Bioempire: The Indian Encounter with Bt Technology</i>
8.	Dr. K.G. Paulose	<i>Text and Performance-Study with Special Reference to Kutiyattam.</i>

9. Dr. Varsha Ganguly *Culture of Protests and Rights of Citizens; Trends, Impact and Challenges'*
10. Dr. Aruna Bommareddi *The Narrative Traditions of the Telugu Epic Palnaveerula Katha.*
11. Dr. Shivani Chopra *Feminism and Literary Criticism; Scope and Limitations, In Context of Women Autobiographies*
12. Dr. Enakshi Ray Mitra *On the Quest of Reference*
13. Dr. Aniruddha Chowdhury *Singular History- Toward a Post Metaphysical Philosophy of History'*
14. Shri Arnab Chatterjee *Ethics and Personalist Ethics in Social Work and other Structures of Helping [in] (Beyond Private and Public: New Perspectives on the Personal, Personalist Social Work and other Structures of Helping)*
15. Dr. Esha Shah *Social and cultural history of Science: Affective History of the Gene*
16. Dr. Sarvchetan Katoch *Reimagining the Nation: A Study of the Representations of the Nation in 21st Century Hindi Cinema'*
17. Dr. Yogesh Snehi *Popular Sufi Shrines in Contemporary Punjab: Marginality, Identities and Dissent*
18. Dr. Albeena Shakil *Neoliberalism, Middle Classes and the English Novel in India*
19. Dr. Rajeev Kumaram Kandath *Social (Power) History (Knowledge) and Popular Memories: The Fractured History of Thathrikutty*
20. Professor Radhavallabh Tripathi *Theory and Praticce of Vada (Debate) in Indian Traditions of Scientific and Philosophical Discourse and its Relevance Today*
21. Dr. Pravesh Jung Golay *Reason and Autonomy: Discordant Harmony*
22. Dr. R. Uma Maheshwari *Reading History with the Tamil Jainas: Locating Identity, Memory and Marginalisations in Historiography*
23. Shri Sukumar Muralidharan *Development and Disproportionality: Revisiting the Choice of Technology Question.*
24. Dr. Aryak Guha *Minor Matters: Cultures of Childhood in Post-independence India.*
25. Dr. N. Malemnganba Meetei *Armed Forces Special Powers Act and the Protest in Manipur.*
26. Professor Attrikkat Achuthan *A Study of the Folk Dramatic Tradition of India and Dalit Consciousness.*
27. Professor M.T. Ansari *Comparative Literature in India: A Study of the State of the Discipline.*
28. Dr. Saumya Sharma *Approach to Conservation and Restoration: Specific Focus on Cultural Heritage of Himachal Pradesh.*
29. Dr. Ashutosh Kumar *The World of Indian Indentured Migrants: Experience and Representation*

30.	Professor Mahesh Champaklal	<i>Language in Theatre, Language of Theatre (Dramatic Text Versus Performance Text in the Context of Bhasa Natak Chakra – An Analytical and Comparative Study).</i>
31.	Dr. Kaustav Chakrabarty	<i>Socio-Cultural Study of the Non-Normative Expressions in select Tribal Folk-Literature of North Bengal.</i>
32.	Dr. Anindita Mukhopadhyay	<i>Children's Games, Adults Gambits: A Modern Cultural Programme in Bengal.</i>
33.	Professor Sharad Deshpande (Tagore Fellow)	<i>A Reconciled Universal: Towards Human Flourishing.</i>
34.	Professor K.L. Tuteja (Tagore Fellow)	<i>Community and Nation in Colonial India with special reference to the Punjab</i>
35.	Professor Aniket Jaaware (Tagore Fellow)	<i>On Translation, Ignorance, and Incomprehension.</i>

III ACADEMIC ACTIVITIES

A. TAGORE MEMORIAL LECTURE

The Tagore Centre for the Study of Culture and Civilization was established at the Institute in 2012. Among the academic programmes to be organized as part of the activities of this Centre is an annual Rabindranath Tagore Memorial Lecture, to be delivered by a scholar of eminence or a public intellectual on any important theme related to the intellectual engagements around which the Tagore Centre has been established. These could include issues concerning culture, society and Tagore's overarching interest in civilizational issues pertaining to the condition of humankind.

Gulzar Sahib, the eminent writer and poet, delivered the 2nd Tagore Memorial Lecture on 20th October 2014. The speaker chose to experiment with a new format wherein he first talked about his own understanding of the writings of Tagore and his personal reaction to them. This was further developed through a conversation mode in the course of a discussion-presentation conducted before the audience between Professor Sukrita Kumar Paul and Gulzar Sahib. In the third part of the event, the noted artist and independent scholar Shri Ashok Bhowmick from Delhi discussed the paintings of Rabindranath Tagore and this was further followed by a discussion between Ashok Bhowmick and Gulzar Sahib. Professor Chandrakala Padia, Chairperson, IAS delivered the Welcome Address. Professor Chetan Singh, Director, IAS, proposed the vote of thanks.

NOTE: Commencement of the Golden Jubilee year of the IAS and Inauguration of Renovated and Expanded Photo Gallery.

On the occasion of the Rabindranath Tagore Memorial Lecture on 20 October 2014, the commencement of the Golden Jubilee celebrations of the IAS were also announced. Gulzar

Sahib inaugurated the newly renovated and expanded photo gallery at the Institute. The Hon'ble Union Minister for Human Resource Development who had expressed her willingness to be present on the occasion could not attend because of other urgent matters.

B. Dr. SARVEPALLI RADHAKRISHNAN MEMORIAL LECTURE

The Dr. Sarvepalli Radhakrishnan Memorial Lecture is one of the most important academic activities of the Institute. The 19th Dr Sarvepalli Radhakrishnan Memorial Lecture on 'Gandhi and Banaras' was delivered at the India International Centre, New Delhi on 3rd November 2014 by Professor Ramachandra Guha. Professor Chetan Singh, Director, IAS introduced the speaker and also welcomed him and the audience. Professor Chanderkala Padia, Chairperson, IAS delivered the Presidential Address. Professor Chetan Singh, Director, IAS, also proposed the Vote of Thanks.

C. SEMINARS, CONFERENCES, SYMPOSIA AND ROUND TABLES

Several seminars and conferences were organized by the Institute during this period. They are listed below along with the academic rationale that was spelt out in the concept note prepared by the respective conveners/ co-conveners. Also mentioned with each report of the seminar are the names of participants and the sessions that were organized in each seminar.

The concept note of each seminar is placed on the website of the Institute and a call for papers is announced simultaneously on the website. In addition to inviting eminent scholars who have already made significant contribution to the subject matter of the proposed seminar, an effort is thus made to reach out to interested scholars working on the concerned topic. The number of younger scholars responding to this call for papers has been quite good. With growing publicity the quality of responses has also improved considerably.

The following were the seminars organized by the Institute:

1. National Seminar on “*Vartman Sandharabh mein Dalit Asmita se Jure Sawal aur Sahitya Lekhan*” (Shri Om Prakash Valmiki ki Smriti Mein) (14-15 April 2014)

Rationale: The issue of Dalit consciousness and identity is presently at the centre-stage of debate in academics. The literature which has emerged from deliberations and debates on these issues has resulted in what we term as the Dalit literature. It is about the struggle and the fight of a section that has long been deprived of the basic rights. With modern education coming to India, several of the Dalits have taken up to education and have contributed significantly in challenging the hegemony of the upper caste and brahmanical order. Shri Om Prakash Valmiki was one such personality who through his writing has given a new dimension to Dalit discourse.

To deliberate on these issues and to revisit the contribution of Shri Valmiki, a national seminar on “*Vartman Sandharabh mein Dalit Asmita se Jure Sawal aur Sahitya Lekhan*” (Shri Om Prakash Valmiki ki Smriti Mein) was organized at IAS during 14-15 April 2014. Dr. Shivani Chopra, Fellow, IAS was the Convener of the Seminar. The participants were welcomed by Professor Chetan Singh, Director, IAS, Shimla. Dr. Shivani Chopra, Convener introduced the seminar theme.

Participants:

- Shri Rajesh Joshi, National Fellow, IAS
- Shri Leeladhar Mandloi, Bharatiya Gyanpeeth, New Delhi
- Ms. Priyanka Sonkar, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Dr. Ashwani Kumar, Motilal Nehru Evening College, Delhi University, Delhi
- Smt. Chandra Kala Valmiki, 89, Ishwar Vihar, Dehradun
- Dr. Shivani Chopra, Fellow, IAS
- Ms. Anita Bharati, AD/118 B, Shalimar Bagh, Delhi
- Professor Durga Prasad Gupta, Department of Hindi, Jamia Millia Islamia, New Delhi
- Dr. Kali Charan Snehi, Department of Hindi, Lucknow University
- Dr. Devendra Choubey, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Dr. Subhash Gatade, Sector- 15, Rohini, Delhi
- Shri S.R. Harnot, Om Bhawan, Nigam Vihar, Shimla
- Dr. Kawal Bharati, C- 260/6, Civil Lines, Rampur
- Professor Chaman Lal, Central University Punjab, Bhatinda
- Dr. Avinash Pandey, IUC Associate, IAS
- Dr. Vikram Harijan, Department of Medieval/Modern History, Allahabad University, Allahabad
- Shri Virendra Yadav, C 855, Indira Nagar, Lucknow
- Dr. Harish Mangalam, 7, Durgakmpa Society, Ahmedabad

Participants made presentations on the following theme during the Seminar:

Session-I

Dalit Lekhak Shri Om Prakash Valmiki ji ka Jivan Sangharash aur Atamkatha ‘Juthan’ ki Yatra

Dr. Kawal Bharati: *Om Prakash Valmiki aur Dalit Sahitya*

Professor Chaman Lal: *Dalit Atamkatha ki Prampara aur ‘Juthan’*

Session-II

Dalit Sahitya ka Samajshastra aur Itihas mein Abhivayakti

Professor Durga Prasad: *Vichardhara, Vimarsh aur Rajnitik Sangharash*

Dr. Vikram Harijan: *Itihas or Sahitya mein Dalit Chetna ki Abhivyakti*

Dr. Avinash Pandey: *Dalit Sahitya ki Bhasha aur Angreji*

Session- III

Dalit Kahaniyan- Galp aur Kisson se Alag

Professor Kali Charan Snehi: *Valmiki ki Kahaniyon mein Samajik Yatharth*

Professor Devendra Choubey: *Dalit Patron ka Sach aur Lekhak ka Sach*

Ms. Priyanka Sonkar: *Valmiki ki Kahaniyon mein Samajik Pratibadhata*

Session- IV

Kavi Jivan ka Sach

Shri Leeladhar Mandloi: *Dalit Kavita ka Sach*

Dr. Harish Mangalam: *Om Prakash Valmiki ki Kavitaon mein Dalit Chetna aur Pratibadhata*

Dr. Ashwani Kumar: *Dalit Kavita mein Kalpana aur Yatharth*

Session- V

Dalit Lekhan aur Asmita ke Samaksh Chunautiyan

Shri Virendra Yadav: *Dalit Saundaryashastra aur Sahitya ka Punarpath*

Dr. Anita Bharati: *Dalit Stri ki Chunautiyan*

Dr. Subhash Gatade: *Dalit Samaj ka Yatharth va Rajnitik Bhagidari*

2. Seminar on “*Border Questions in India’s North East: Intra and International Dimensions*” (22-23 April 2014)

Rationale: Even 66 years after India became a sovereign independent country, its landmass beyond Bengal, now popularly referred to as Northeast, constituting eight different states, namely, Sikkim, Arunachal Pradesh, Assam, Meghalaya, Mizoram, Nagaland, Manipur and Tripura, remains an enigma to most outside of the region. To a great extent, the region’s peculiar political geography ensures this. The region is surrounded on all sides by international borders except for an estimated 2 percent of its boundary which it shares with sub-continental India, connected by a narrow strip of land known as the Chicken’s Neck or the Siliguri Corridor that is wedged between Bangladesh and Bhutan. The width of this corridor at its narrowest points is as little as, an estimated 22 km. To the north, the Northeast is bounded by China and Bhutan, to the east Myanmar and to the south, Bangladesh.

How this political geography came to be, makes for an intriguing study in geopolitics of the late 19th and the 20th century. On one hand was the undeclared but intense rivalry between the British and the Tsarist Russia which has since come to be defined as The Great Game. It resulted in prolonged uncertainty over the status of Tibet, and therefore the northern boundary

of the Northeast. This boundary is today controversially demarcated by the McMahon Line, over which India and China fought a brief war in 1962.

Likewise, British colonial policy in Assam, after its annexation of the province in 1826, resulted in intense ethnic friction between the local Assamese speaking population and the Bengali speaking middle class Western educated population which the British encouraged to immigrate from neighbouring Sylhet province of East Bengal, in order to run the bureaucracy. This friction ultimately led to catastrophic consequences at the time of the Partition of India. These travails are little heard in the rest of India, where the idea of the 1947 Partition trauma generally evokes images of the carnages of the western sector of the India-Pakistan border. The trauma of the Partition in the east, resulting in India's loss of Sylhet territory as well as that of the Chittagong Hill Tracts, are seldom taken note of by modern Indian historians. Unfortunately, most of the vexing problems not just of Assam, but of the entire Northeast today are a direct indirect consequence of these developments.

There were other post- independence fallouts of this clash of linguistic nationalisms in Assam. In the wake of militant assertion of Assamese linguistic nationalism by the Assamese speakers to counter Bengali dominance, numerous other ethnic groups of Assam were drawn into a spiral of insecurity of their own. They perceived Assamese linguistic hegemony as a threat to their own identities. This sowed the seeds of the further splintering of Assam, and the creation of tribal hill states autonomous of Assam. The divisive forces let loose by the politics of the time have hardly been put to rest, and are today still a prominent factor behind the ethnic turmoil in Assam as in the rest of the Northeast. The Northeast today is indeed a badly fractured land.

But colonial politics could not be the only reason for all the ethnic divisions within the Northeast. In recent times, scholarship has grown around the issue of ethnic hostilities, not just in the Northeast, but in the entire South East Asia massif to which the Northeast would also belong. This region was named by the term Zomia by Willem van Schendel. James C. Scott used the concept of Zomia in *The Art of Not Being Governed: An Anarchist History of Upland Southeast Asia* to argue that the continuity of the ethnic cultures living there provides a counter-narrative to the traditional story about modernity: namely, that once people are exposed to the conveniences of modern technology and the modern state, they will assimilate. Rather, the tribes in Zomia are conscious refugees from modernity itself, choosing to live in more primitive, locally-based economies.

One of the premises of this theory is that because of the more suitable conditions for the production of agricultural surpluses in fertile river valley, state formation marked by the emergence of a centralised bureaucracy of feudal nature occurred there first. The surrounding hills, by contrast remained alien to the notion of the State. They therefore had a tendency to continually retreat from the State. This theory explores the divide and antagonism, between valley dwellers and their counterparts in the surrounding hills. Scholars have challenged this postulate, with

the argument that there have been numerous instances of hill men descending into the valleys to assimilate, and sometimes take over, the valley States. Regardless of the direction of the movement of the population of Zomia, hill-valley relations have been strained.

Then there is also the question of simpler non-State societies, waking up to the idea of the nation state, and becoming aware of their own 'statelessness'. This might be followed by an urge to consolidate their identities and ultimately form a State of their own. Arrival of the colonial State amidst them or in their vicinity, hastened this awakening. Demands for homelands by various ethnic groups, especially in the postcolonial era, then become the familiar narrative. Apart from a collision course this set up against the nation state, these newly awakened ethnic groups found that their notion of homeland often overlapped territorially with each other. The nomadic hunter-gatherer, the sedentary farming community, the shifting cultivators, all had different relations with the land that nurtured them. Therefore, their innate territoriality also differed significantly. This, quite expectedly, predicated inter-ethnic conflict scenarios. The Northeast is familiar with these stories, sometimes in extremely tragic ways.

The seminar attempted to explore the causes and dynamics of these borders with potential for deadly conflicts, and also sought a way forward. Some of the questions addressed were: Can these borders be erased or softened? Can there be shared identities? Can homelands be allowed to overlap without the need for conflict? Can the larger State reinvent itself to accommodate all these identities without any one of its component having to suffer any sense of a loss?

More pointedly, the seminar invited papers on current issues urgently related to borders and divides within the Northeast with potentials for deadly conflicts. Some of the suggested topics for papers were:

1. The contest for ethnic exclusive homelands in Assam, with special focus on crises such as that of Bodoland. Can homeland overlap without not just with each other, but also with the modern State they belong to?
2. The history and psychology behind the new demands in Meghalaya and Manipur for the reintroduction of Inner Line System, a British era administrative mechanism which segregated the hills and plains, to restrict entry and acquisition of landed property by 'outsiders' in these states.
3. The general mistrust of the people of the plains by hill men and the divide resulting from it. What are the marked features of the hill-valley divide in Manipur? Is it just about development disparity? Can there be a question as who is to blame in this equation?
4. While the generic identities of the Naga and Mizo have succeeded to a good extent, at least on the surface, why have they not in Manipur, Assam and indeed the rest of the other Northeastern states?

5. Mizoram has been often cited as a success story in resolving the problem of ethnic identity. Therefore, it is the only Northeastern state where a violent insurgency had been effectively put to rest. Within this understanding, how would the issues of dissent by the Hmars, Brus, Chakmas, Lakher and Pawis etc, as well as the plight of Chin refugees in the state, be explained?
6. Has the introduction of the 6th Schedule been the solution to the tribal unrest in Tripura? Is lack of overt violence the definition of peace?
7. In terms of ethnic diversity, no other state is more diverse than Arunachal Pradesh. Yet Arunachal Pradesh remains one of the most peaceful of the Northeastern states. Is this just a matter of splendid isolation of the many tribes from each other, as well as from the regularly administered plains, and therefore a vindication of the British colonial policy of the Bengal Inner Line Regulation of 1873?
8. Can there be anything as an inclusive identity? Can democratic citizenship, which lays a premium on rights and duties, be a substitute for community exclusive identity, or would this be 'the end of history and the last man'.

A seminar on "*Border Questions in India's North East: Intra and International Dimensions*" was organized at IAS during 22-23 April 2014. Dr. Pradip Phanjoubam, Fellow, IAS was the Convener of the seminar. Professor Chetan Singh, Director, IAS, Shimla welcomed the participants. Dr. Pradip Phanjoubam, Convener of the seminar introduced the theme of the seminar and the sessions.

Participants:

- Dr. Homen Thangjam, M.B. College, Imphal, Manipur
- Dr. Namrata Goswami, Research Fellow, Institute for Defence Studies and Analyses, New Delhi
- Mr. Anandroop Sen, Centre for Historical Studies, School of Social Sciences, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Dr. Jayanta Bhattacharya, Bureau Chief, Press Trust of India Ltd., Agartala
- Professor A.K. Agarwal, Department of Economics, Mizoram University, Mizoram
- Ms. Soibam Haripriya, Department of Sociology, Delhi School of Economics, University of Delhi
- Dr. Thangkhanlal Ngaihte, Independent Researcher, New Delhi
- Mr. Zhoto Tunyi, North Eastern Hill University, Shillong
- Professor Amar Yumnam, Economics Department, Manipur University

- Ms. Shristi Pukhrem, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Dr. Amarjit Sharma, North East India Studies Programme, School of Social Sciences, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Dr. Jorg Schendel, Independent Burma Scholar, New Delhi
- Dr. Lophro Celina Saprana, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Dr. Pradip Phanjoubam, Fellow, IAS

Presentations on the following topics were made by the participants during the seminar:

Session-I

NE Borderlands: The Frictions of Transition from Non-Historical to Historical Territory

Mr. Zhoto Tunyi and Mr. Jelle J.P. Wouters: *The Borders Within: Shifting the Gaze in the Northeast Indian Borderland*

Dr. Namrata Goswami: *The Return of History: Exclusivist Ethnic Identities and/or Cosmopolitanism in Northeast India*

Session-II

The Challenges of Building a Federal NE Identity: Melting Pot or Salad Bowl

Dr. Thangkhanelal Ngaite: *Imagining a Northeast Community: Preliminary Explorations*

Dr. Lophro Celina Saprana: *Space of Exclusion: A Case Study of Northeast India with Special Reference to Manipur*

Session-III

Ethnic Homelands and the Problem of Administering the Frontiers

Dr. Amarjit Sharma: *Habitation of Exceptions: Politics of Governing Borders and How People Respond*

Mr. Anandaroop Sen: *An Agrarian Frontier and its Outside: Boundary Formation in the North Eastern Frontier of India, Stories of Incision in Tippera*

Session- IV

Boundary Construction as Resource Management Mechanism

Dr. Jorg Schende: *Borders, Borderlands, and Border Trade around Late Konbaung Burma*

Dr. Mrinal Gohain: *Politics of Borders and Resource Management*

Session-V

Politics of Demography and Entitlements in NE

Dr. Homen Thangjam: *Demand for Inclusion of Meiteis in the ST List of India: Materiality and the Politics*

Dr. Jayanta Bhattacharya: *Politics of Demography in Tripura*

Session-VI

Blind Spots in the NE Discourse: The Invisible Peripheries Within

Ms. Soibam Haripriya: *Marginalised Within Margins*

Ms. Shristi Pukhrem: *Northeast Border Issues: Ethnic and Security Dimension*

3. Seminar on “Recent Perspectives on Himalayan Buddhism” (27-28 May 2014)

Rationale: From the mid-first century AD onwards the entire Himalayan areas witnessed many significant events in the introduction and spread of Buddhism. The entire Himalayan landscape is dotted with pictured prayer stone tablets, tiered *chortens* and the long rows of fluttering flags seen far afar atop monastic settlements. Monks, traders, pilgrims and armies of Himalayan regional kingdoms were traversing the region from early time; therefore, the region witnessed the regular transmission of ideas, commodities and technologies over the centuries. It would not be an exaggeration to point out that Buddhism has provided an emotional link among the Himalayan communities despite their distinct ethnic and linguistic identities. The primary purpose of this seminar is to know the current approaches and methods used by scholars of various disciplines to analyse different facets of Himalayan Buddhism. The major advances in social sciences and humanities have bearing on our understanding and approaches of Himalayan Buddhism. The Himalayan Buddhism is understood here as the varieties of Buddhist monastic disciplines, cultural practices, visual expressions, rituals, debates and controversies that are under current investigation among scholars for the last thirty years. The region covered would include a vast expanse of the Himalayan geographical region from Gilgit in the north-west to Arunachal Pradesh in the east: Ladakh, Himachal Pradesh, Uttarakhand, Mnga'-ris (Western Tibet), Nepal, Sikkim, Bhutan and Arunachal Pradesh. This call for papers has invited scholars to share the results of their original research on the Himalayan Buddhism. It is expected that the presenter would not simply make a restatement of views and data already known through published works but would investigate and take up unresolved problems and questions by looking afresh at the literary, archaeological, archival and oral sources from the perspectives of current advances in social sciences and humanities, including religious studies, anthropology and philosophy.

To be more precise and specific some areas of current concern on Himalayan Buddhist Studies were prioritized for the submission of abstracts and papers:

- Himalayan Buddhist landscape-- recent discoveries: texts, epigraphs, cultural relics
- Benevolent patrons and monastic establishments
- Erudite Buddhist teachers and their reasonably faithful pupils
- Age of translations and literary standards
- Emergence of schools and sub-schools
- Period of intense doctrinal debates and differences
- Standards in visual expressions and stylistic manifestations
- Himalayan Buddhism and social transformation
- Himalayan legacy in international culture of Buddhism
- Approaches, agendas and actors: issues of preserving Himalayan Buddhist heritage

A seminar on “*Recent Perspectives on Himalayan Buddhism*” was organized at IAS during 27-28 May 2014. Professor Laxman S. Thakur, Himachal Pradesh University was the Convener of the seminar. The Welcome Address was given by Professor Chetan Singh, Director, IAS, Shimla. Professor Laxman S. Thakur, Convener of the seminar introduced the theme of the seminar.

Participants:

- Professor Bimalendra Kumar, Department of Pali and Buddhist Studies, Banaras Hindu University, Varanasi
- Professor Ratan Parimoo, Retired Professor of Art History and Aesthetics, M.S. University, Baroda, Vadodara
- Professor K T S Sarao, Department of Buddhist Studies, University of Delhi, Delhi
- Dr. Neekee Chaturvedi, Department of History and Indian Culture, University of Rajasthan, Jaipur
- Dr. Vidya Sagar Negi, Centre for Buddhist Studies, Himachal Pradesh University, Shimla
- Dr. Banarsi Lal, Central University of Tibetan Studies, Sarnath, Varansi
- Professor Hira Paul Gangnegi, Department of Buddhist Studies, University of Delhi, Delhi
- Professor Laxman S. Thakur, Department of History, Himachal Pradesh University, Shimla
- Dr. Ramesh Chandra Negi, Central University of Tibetan Studies, Sarnath
- Dr. Anand Kumar Singh, Gautama Buddha University, U.P.

- Dr. Shipra R. Upadhyay, Forum on Contemporary Theory, Gujrat
- Dr. Projit Kumar Palit, Department of History, Assam University, Silchar
- Dr. Jayanti Alam, Senior ICSSR Fellow, Hyderabad
- Dr. Amrit Varsha Gandhi, Department of History, Himachal Pradesh University, Shimla

Presentations on the following themes were made by the participants during the seminar:

Session I

The Buddhist Conquest of the Himalaya

Professor S N Dube: *Early Traces of Buddhism in the Himalayas*

Dr. Banarsi Lal: *Himalayi Kshetro mein Bauddha Dharma ki Vartaman Dasha evam Disha*

Professor K T S Sarao: *The Institution of the Dalai Lama: An Examination of the Concerns of Stake Holders*

Session II

Transmission and Regional Adaptation and Oral Tradition

Professor Hira Paul Gangnegi: *The Buddhist Antiquity of the Village of Kanam in Kinnaur*

Professor Wangchuk Dorjee Negi: *Himalayan Buddhism in the Context of Ladakh*

Dr. Vidya Sagar Negi: *Kinnaur ka Rang Rig tse Bauddha Vihartatha usase judi Janashrutiya*

Session-III

Narration and Themes in Himalayan Buddhist Art

Professor Ratna Parimoo: *Kshemendra and the Pictorial Representations of Jataka Stories in Himalayan Buddhist Art*

Dr. Projit Kumar Palit: *Art and Architecture of Pemayangtse Monastery in Sikkim: A Study on Buddhist Archaeology and Tradition in Northeast India*

Session-IV

Buddhism, Ecology and Social Change

Dr. Anand Singh: *Ecology, Acculturation and Globalization: Gleaning Buddhist Communities of Ladakh*

Dr. Ramesh Chandra Negi: *Himalayi Bauddha evam Samajik Parivartana*

Dr. Shipra R Upadhyay: *Harmony in Silence: Meditation and International culture of Buddhism*

Session-V

Dr. Jayanti Alam: *The Vajrayanis in Tibetan Buddhism*

Dr. Neekee Chaturvedi: *The Himalayan Trope and Narratives to Curate Buddhism*

Dr. Amrit Varsha Gandhi: *Women as Catalysts for Socially Engaged Buddhism: A Study in Kinnaur*

Session-VI

Professor Bimalendra Kumar: *Nalanda Tradition of Buddhism and Its Uninterrupted Continuity in Tibet, Ladakh and Himachal Pradesh*

Professor Laxman S. Thakur: *Major Issues in the Preservation of Himalayan Buddhist Cultural Heritage: Some Suggestions from the Field*

4. International Symposium on “100 Years after the Simla Conference-1913-14” (06-07 June 2014)

Rationale: During the last hundred years the “Simla Conference” (06 Oct 1913-03 July 1914) has had, and continues to have, a major impact on the geo-strategic, history and sociology of the region. The Conference amongst the British, Chinese and Tibetan plenipotentiaries was convened to consider the status and boundaries of Tibet vis-à-vis China and India. On 14 April 1914, a map delineating the McMahon line as the border between India and Tibet and the Irrawaddy-Salween line between Outer and Inner Tibet was signed by the British and Tibetan representatives and was initialed, but not signed by Ivan Chen, the Chinese plenipotentiary. Subsequent efforts by the British failed to resolve this issue.

However, over the decades, many more layers have been added over the rigid and frozen positions of the parties involved. The rugged Himalayas only broken by broad valleys have tended to inhibit communications in the past. As a result the Himalayan region is complex, with several traditions prospering in isolation by themselves. The closure of border in 1959 had a significant effect on the political, economic, religious and social life of the Himalayan people.

An objective reflection on these and related issues would hopefully yield new insights and perspectives. We also now have the benefit of the experiences of negotiations among the respective parties over the years. The people in the Himalayas have lived in different political systems during these decades. The aim of the Symposium is to encourage scholarly discussions to evolve fresh approaches on the complex boundary and other related issues, which have evaded resolution. This will be done in a holistic way to include examination of the social, cultural and economic life of people living in the affected border regions. The two-day symposium at the same historic locale attempted to focus on the following broad themes:

- (a) Spaces and Boundaries.
- (b) People and Communities.
- (c) State and Geopolitics.

An International Symposium on “100 Years after the Simla Conference-1913-14” was organized in collaboration with Institute of Chinese Studies, Delhi during 06-07 June 2014 at

IIAS. Col. Virendra Sahai Verma, Institute of Chinese Studies, Delhi was the Convener of the symposium. The participants were welcomed by Professor Chetan Singh, Director, IIAS, Shimla. Professor Alka Acharya, Director, ICS proposed the vote of thanks.

Participants:

- Dr. Willem F. van Eekelen, Former Diplomat and Minister of Defence, Netherlands
- Professor Mumin Chen, Institute of Political Science, National Chung Hsing University, Taiwan
- Dr. Hemant Adlakha, Jawaharlal Nehru University, Delhi
- Mr. Atul Bhardwaj, Visiting Fellow, Institute of Chinese Studies, Delhi
- Ms. Sonia Shukla, Adjunct Fellow, Institute of Chinese Studies, Delhi
- Col. Virendra Sahai Verma, Honorary Fellow, Institute of Chinese Studies, Delhi
- Mr. Samir Sharma, Ph.D. Candidate, Centre for Political Studies, Jawaharlal Nehru University, Delhi
- Mr. Gulzar Hussain, M. Phill Candidate, Centre for Historical Studies, Jawaharlal Nehru University, Delhi
- Dr. Uttam Lal, Sikkim University, Gangtok
- Dr. Dharitri Chakravartty, Ambedkar University, Delhi
- Mr. Ravi Bhoothalingam, Honorary Fellow, Institute of Chinese Studies, Delhi
- Lt. Gen. (Rtd.) Yogender Bammi, Member of IDSA, Governing Council, Noida
- Dr. Dhriti Roy, Department of Chinese Language, Literature and Culture, Sikkim Central University, Gangtok
- Professor Alka Acharya, Director & Senior Fellow, Institute of Chinese Studies, Delhi
- Mr. M.V. Rappai, Honorary Fellow, Institute of Chinese Studies, Delhi
- Mr. Vinod C Khanna, Emeritus Fellow, Institute of Chinese Studies, Delhi
- Ms. Poonam Mathur, 8/17 Shri Ram Road, Civil Lines, Delhi
- Ms. Jayshree Borah, Research Associate, Institute of Chinese Studies, Delhi
- Ms. Nirmola Sharma, Research Associate, Institute of Chinese Studies, Delhi
- Professor Laxman S. Thakur, Department of History, Himachal Pradesh University, Shimla
- Dr. Amrit Varsha Gandhi, Department of History, Himachal Pradesh University, Shimla

Presentations on the following themes were made by the participants during the seminar:

Session-I

Dr. Willem F. van Eekelen: *The Simla Convention, Almost Aborted, Never signed but still Relevant.*

Mr. Atul Bhardwaj: *Simla Conference, 1914: British Diplomacy and Strategy*

Dr. Hemant Adlakha: *Simla, McMahon Line and South Tibet: Emerging Chinese Discourse on Fears of Losing Territory to India*

Professor Suresh Rangarajan: *Tibet and India– China Border Dispute: Towards a Peaceful Settlement*

Session-II

Gen. Yogender Bammi: *Humanising of India-China Border – The Way Ahead*

Professor Mumin Chen: *Nationalist Government's Reactions to Sino-India War and the border issue: An Analysis of ROC Diplomatic Archives 1962-1964*

Mr. Ravi Bhoothalingam: *Could Confucius Resolve the Tibet Question?*

Session- III

Col. Virendra Sahai Verma: *Delimitation of Sino-Tibet Boundary at Shimla Conference and Issue of Tibet*

Ms. Sonia Shukla: *McMahon Line: The View from the Ground*

Dr. Dhriti Roy: *Zhemengxiong as Depicted in Qing Official Documents: Exploring Sikkim's Cultural and Commercial Ties with Tibet in Light of Qing China's Perception of the sub-Himalayan Region*

Professor V.C Bhutani: *What happened to the McMahon Line 1914-1947?*

Session- IV

Mr. Samir Sharma: *An India-China Comparative Perspective on Minorities: Some Preliminary Explorations*

Mr. Gulzar Hussain: *Ladakh and the Coming of India*

Dr. Uttam Lal: *Reimagining the Himalayan Borderland: A Case Study of Himachal Sector*

Dr. Dharitri Chakravartty: *The Abors of NEFA*

Panel Discussion: For a Settled Border between India and China?

Professor Alka Acharya

Mr. Vinod Khanna

Professor Mumin Chen

Dr. Willem F. van Eekelen

Col. Virendra Sahai Verma

Mr. M V Rappai

Rapporteurs

Ms. Nirmola Sharma

Ms. Jayshree Borah

5. Seminar on “*Right to Land and its Potential for Social Transformation*” (11-13 June 2014)

Rationale: *Land rights and social transformation.*

The advent of the British in India changed the notion of land ownership – the land now belonged to the state. The policies framed by the British also continued after independence and had an impact on framing of policies regarding land, functioning of administrative machinery and land related development programmes with the State being central in all these issues. The State began to control land through legislation that recognised only individual ownership and declared all biodiversity and land without an individual title as State’s property with marginal variations in different regions.

Broadly, we see three phases and trends of policies and planning regarding use of land. First phase, during 1950 and 1980 focused on land reform agenda and land acquisition for construction of dams and other development projects. Land reform was viewed as a tool for equal distribution and poverty alleviation while land acquisition for dams was justified as ‘national development’ in the name of a public purpose. The second phase, 1981 to 2000 witnessed consolidation of power and politics of land. Procedural aspects of land governance – revision of tax, revenue, registration fee, stamp duty, land record, etc., changes in procedure for land transaction, land allocation for industrialisation along with infrastructure building and development took place. The third phase, 2001 onwards accelerated land acquisition on large-scale for massive development projects of the private sector and land given on lease for contract and corporate farming. Three acts – Forest Dweller’s Rights (Recognition) Act, 2007 (FRA), Special Economic Zone Act, 2005 (SEZ), and Land Acquisition and Rehabilitation and Resettlement (LARR) 2013, and changes in administrative functioning in some state, such as ‘single window system’ for allocation of land to the industrial units have enunciated a debate of different kind among non-State actors on land as a resource while the State and the corporate sector view it as a commodity.

The population displaced because of these policies such as small and marginal landholders (including those who benefited through land reforms and Tenancy Act, 1956), and non-owning land dependents (landless agriculture labourers, pastorals and dependents of pastoral activities)

view these policies and actions of the state in a different way. They have articulated their needs, created a critique examining the changes that have taken place at micro and macro level due to change in legal and political decisions with regard to land allocation and use. These voices are reflected through protests and advocacy processes. They have insisted on people-centric planning and policies that promote just distribution of land, its utilisation for meaningful employment, livelihood, food security, and as a means to ensure social justice.

This paradigm shift has revealed many dimensions of politics of land rights. Land and its use as a resource have created challenges in the social, economic and the political spheres. This seminar focuses on 'land rights' to understand social transformation, as social transformation that signifies changes in structure and values. This implies fundamental and phenomenal change in social institutions and their functioning. It also alters relational frames and perspectives on the promotion of equality and justice. Land as a resource has evidently become a symbol of status, wealth and power, and social transformation strategies are now part of a road map to desired development. They are a means to deal with agriculture and industrial transition and dealing with question of irreversibility in form of use and land ownership, and solutions to the problems.

Land being a subject on the concurrent list bears inherent complexities. Issues related to forest land and land belonging to the scheduled areas (SA) requires critical analysis on forest management and operational structures. Such land is largely inhabited by the scheduled tribes (tribals) with special constitutional provisions. Lack of coordination between different agencies and each having different level of authorities, most of the issue of these areas are either neglected or have become points of conflicts in different ways. Land alienation among tribals is rampant across the states in India. Second, the FRA epitomises under-performance of the law and conflicts and violation of tribals' rights to forest land on an individual and community basis.

Approaches to social transformation ensuring land rights

Political institutions aim to improve the existing situation with a combination of planning, polity and political activities. Social actors focus on the Constitution as the law of the land to derive and articulate land rights to examine land related policies and laws. Five-Year Plans are used as a blue print to development and to analyze budget allocation, utilization and its impact. In order to enunciate their needs and concerns, they adopt various means and approaches, such as budget analysis, advocacy, lobbying, protest and promoting. Despite various actors using different means, approaches and institutions for social transformation, it remains an unfulfilled vision; leaving scope for further improvement and enhancement.

Initiating transformation through law sounds progressive and promising on one hand but at the implementation level, this process raises more questions and provides several reasons for dissent and protest. In this process, the politics of law making and implementation, and its linkages with the process of planning need to be examined. There is a need to look more closely at the effectiveness of the laws and functioning of these institutions.

In the process of social transformation, the role of different actors has kept altering. For instance, in parliamentary democracy the Parliament assumes the status of a supreme law-making political institution. Many social actors have, therefore, chosen to become political leaders by winning elections. But they have realised their inability to make a dent on institutional democracy. They are neither able to 'represent' the ethos nor the demands of their communities/regions; nor deal with the process of marginalisation despite being elected representatives. Parliamentary democracy has become a distant dream for the citizens because it has turned into a 'party-cracy'. Influencing the ruling party to alter its pre-set agenda or to stop upholding capitalist ideology has proven to be a mammoth task. The elected representatives of scheduled caste and scheduled tribes and some social activists are a case in point. Similarly, intellectuals and academicians involved in policy framing recognize the limitations of the planning processes vis-à-vis its implementation and the role of vested interests—be it in governance machinery or in politics.

The seminar focused on various land policies, land laws, planning budgetary, allocation and utilization, development programmes and institutions created to facilitate land-based development along with financial aids and allocation, land issues of different state and communities, which are embedded and run through the debates and discourses on land rights. It attempted to understand different viewpoints on landownership and rights, issues of land dependents, examining strategies that have worked, limitations of policies, planning and execution, need for revisit and its relevance in present times.

Proposed sessions

1. Social Transformation through Land Rights - Concepts and Strategies
 - a. Eminent Domain, Land Rights and Social Transformation
 - b. Social Transformation Strategies for ensuring Land Rights
2. Revisiting Land Reform from Social Justice Perspective
 - a. Revisiting Land Reform and Land Rights - Overview
 - b. Problems of Land Reform and Draft National Policy on Land Reform (2013)
 - c. Revisiting Land Reform – Punjab
 - d. Revisiting Land Reform – Kerala
 - e. Looking into Scheduled Castes' Mobility through Land Reform
 - f. Change in Landholding and Caste Equations
3. Issues of Land Governance and Land Economics

- a. Updating Land Records
- b. Revisiting Land Governance
- c. Data based Analysis on Landholding, Use and question of Equality (Gender, Caste Segregated)
- d. Budget Analysis and Land Rights
- 4. Land Allocation for Industrial Development
 - a. Examining LARR 2013 from Land Rights Perspective
 - b. Land Acquisition and Violation of Land Rights
 - c. Politics of Land Acquisition, Displacement and Rehabilitation
 - d. Operationalising SEZ and Its Impact - Mangalore/Tamil Nadu
 - e. Protest against SEZ in Raigad
 - f. Displacement and Consequences on Land Rights
- 5. Land for Agriculture Development
 - a. Allocation for Contract Farming
 - b. Conceptualising Share Cropping
 - c. Role and Relevance of State Land Development Bank/Corporation
 - d. Peasant Movement and Land Rights
- 6. Tribal Landholding and Land Rights
 - a. Land Alienation among Tribals in India - Overview
 - b. FRA from Land Rights Perspective
 - c. FRA 2007 and its Impact in Different States
 - d. Situation in Scheduled Areas - Schedule VI of Indian Constitution and India
- 7. Issues of Land-Dependents
 - a. Struggle of Landless - Possession over Land - Kerala
 - b. Role and Relevance of Agriculture Union
 - c. Impact on Pastoral Activities
 - d. Policy Framework for Common Land Allocation
 - e. Land Alienation among Displaced Population

8. Transformative strategies

- a. Revisiting Bhoodan and Gramdan Movement
- b. Politics of Protests and Land Rights
- c. Tribals' Land Rights - under Schedule V and VI of Indian Constitution

A seminar on “*Right to Land and its Potential for Social Transformation*” was organized at IAS during 11-13 June 2014. Dr. Varsha Ganguly, Fellow, IAS was the Convener of the Seminar. The Welcome Address was delivered by Professor Chetan Singh, Director, IAS, Shimla. Dr. Varsha Ganguly, the Convener introduced the objectives and themes of the seminar.

Participants:

- Shri B.B. Srivastava, (Retd.) IAS
- Professor Ram Singh, Delhi School of Economics, University of Delhi
- Professor Udayon Misra, National Fellow, IAS, Shimla
- Dr. Roopam Singh, Azad Foundation, Mount Kailash, New Delhi
- Ms. Vidya Das, Agramee, Kashipur, Odisha
- Ms. Meenal Tatpati, Kalpavriksh, Shri Dutta Krupa Apts, Deccan Gymkhana, Pune
- Ms. Soma Kishore Parthasarathy, Independent Researcher, New Delhi
- Dr. R. Umamaheshwari, Fellow, IAS, Shimla
- Professor Anand Chakravarti, Institute of Social Sciences, New Delhi
- Shri Parag Cholkar, Laxminagar, Nagpur
- Dr. Ratan Khasnabis, Department of Business Managements, Calcutta University, Kolkata
- Dr. Suma Scaria, Department of Economics, Central University of Karnataka, Karnataka
- Dr. C B Damle, Retd. Associate Professor of Sociology, Snehashila, Gandhinagar, Karnataka
- Professor Peter Ronald deSouza, CSDS, Delhi
- Shri Nesar Ahmad, Budget Analysis, Rajasthan Centre, Jaipur
- Dr. Pradeep Kumar Nayak, Joint Commissioner, Gopalbandhu Academy of Administration, Bhubaneswar
- Dr. Prashant Trivedi, Giri Institute of Development Studies, Lucknow
- Professor R Vijay, University of Hyderabad, Hyderabad
- Professor Mangesh Kulkarni, University of Pune, Pune

Presentations on the following themes were made by the participants during the seminar:

Session-I

Issues of Land Dependents

Professor Anand Chakravarti: *"If We Had Land We Would Be Human": The Implications of Landlessness in a Bihar Village*

Dr. Prashant Trivedi: *Issues and Challenges of Land Dependents: The Case of Dalits in Uttar Pradesh*

Ms. Soma Parthsarathi: *Policy Framework for Common Land Allocation*

Session-II

Tribal Landholding and Land Rights

Ms. Meenal Tatpati: *Forest Rights Act in India in the context of Common Property Forest Resource: History, status and impact*

Ms. Vidhya Das: *Land Laws and Tribals' Rights to Land and Livelihoods: A Case Study of Odisha*

Dr. R. Umamaheshwari: *Reconfiguring 'Land': Ideas of River and Forest and the Polavaram National Project on Godavari*

Session-III

Social Transformation through Land Rights

Professor Mangesh Kulkarni: *Social Transformation through Land Rights: Concepts, Strategies and Outcomes*

Shri Parag Cholkar: *Revisiting Bhoodan and Gramdan in the Context of Land Rights and Social Transformation*

Session-IV

Revisiting Land Reforms from Social Justice Perspective

Dr. C B Damle: *Land Rights through Land Reforms: A Shift in the Vision and Social Transformation*

Professor Suma Scaria: *Revisiting Land Reform - Kerala Experience*

Session-V

Land for Industrial Development

Dr. Walter Fernandes (Skype): *Examining LAR&R 2013 and the Land Losers*

Professor Ram Singh: *Land acquisition and Violation of Land Rights*

Dr. Devparna Roy (Skype): *Coercive Land Grabs and the Agrarian Transition in India: Potential and Limitations of the Peasant Struggles for the 'Right to Land'*

Session-VI

Land for Agriculture Development

Professor R Vijay: *Situation of Tenancy in India: Continuities and Changes*

Professor Ratan Khasnabis: *Conceptualizing Share-cropping: Practices and Policy Changes for Ensuring Land Rights*

Dr. Roopam Singh: *Corporate Farming and Changing Identity of Land under Agriculture*

Session-IV

Issues of Land Governance and Land Economics

Dr. Pradeep Nayak: *The State and Land Records Modernisation: Issues and Challenges*

Shri B B Srivastava: *Land governance: Continuities, Changes and Challenges*

Shri Nesar Ahmad: *An Analysis of Budget Provisions for Land Rights in India*

6. Symposium on ‘Interrogating “Swaraj in Ideas”’ (21- 22 July 2014)

Rationale: On KCB’s classic lecture “Swaraj in Ideas”, we had felt that the concerns expressed as far back as 1931 are still relevant today both in terms of the philosophical questions raised, of autonomy of thought, and of the impacts of colonialism on the Indian mind. KCB’s essay raises interesting questions, here are some of them:-

1. The concern he expresses of a replacement of a real mind by a shadow mind raises the issue of what are the features of these two minds and how do we know which mind is in operation. What does each mind look like? What does the shadow mind make us do? Why is it pernicious?
2. The argument that colonialism produces an enslavement of the mind, needs to be debated in terms the processes of such enslavement? Is emancipation not also a consequence of such a historical encounter for it brought us into contact with different streams of thought in Europe.
3. His claim that he is not opposed to ideas from the outside but only to their uncritical acceptance invites us to examine the requirements of such a proper evaluation? Can such an evaluation be uninfected by the coloniser’s ideas or at least the ideas from Europe?.
4. His valorisation of our intellectual heritage. How would such a valorisation look from a gendered and a dalit lens? After all we are in a phase of intensely contested epistemologies so how does one negotiate between hostility to the externally driven enslavement and hostility to the internal suppressions and exclusions that are also our heritage?
5. His lament of our working of our educational system which perpetuates this colonisation of the mind. How do we de-toxify such an educational system?

From Swaraj in Ideas:

‘... There is however a subtler domination exercised in the sphere of ideas by one culture on another, domination all the more serious in the consequence because it is not ordinarily felt. Political subjection primarily means restraint on the outer life of a people and although it tends gradually to sink into the inner life of the soul, the fact that one is conscious of it operates against the tendency. So long as one is conscious of a restraint, it is possible to resist it or bear it as a necessary evil and to keep free in spirit. Slavery begins when one ceases to feel the evil and it deepens when the evil is accepted as a good’.

And from RT: ‘The Centre of Indian Culture’.

‘... The European Culture has come to us not only with its knowledge but with its velocity. Though our assimilation of it is imperfect and the consequent aberrations numerous, still it is rousing our intellectual life from its inertia of formal habits into glowing consciousness by the very contradiction it offers to our own mental traditions.... What i object to it the artificial arrangement by which this foreign education tends to occupy all the space of our national mind and thus kills, or hampers, the great opportunity for the creation of a new thought power by a new combination of truths. It is this which makes me urge that all the elements of our own culture have to be strengthened, not to resist the western culture, but to assimilate it, and use it for our food and not as our burden; to get mastery over this culture, and not to live at its outskirts as the hewers of texts and the drawers of book learning.

Symposium on ‘*Interrogating “Swaraj in Ideas”*’ was organized at IAS during 21-22 July 2014. Professor Peter Ronald deSouza, Centre for SDS was the Convener of the symposium. Professor Chetan Singh, Director, IAS, Shimla welcomed the participants. Professor Peter Ronald deSouza, Convener of the symposium gave the introductory Remarks.

Participants:

- Professor Gopal Guru, Centre for Political Studies, School of Social Sciences, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Professor Bijoy H. Boruah, Department of Humanities and Social Sciences, Indian Institute of Technology, Hauz Khas, New Delhi
- Shri Rajesh Joshi, National Fellow, IAS, Shimla
- Professor Sharad Deshpande, Tagore Fellow, IAS, Shimla
- Dr. Gangeya Mukherji, Department of English, Bundalkhand University, Jhansi.
- Professor Meena Alexander, National Fellow, IAS, Shimla
- Professor Nirmalangshu Mukherji, Professor of Philosophy, University of Delhi, Delhi

- Professor Rukmini Bhaya Nair, Department of Humanities , Indian Institute of Technology, Hauz Khas, New Delhi
- Dr. Manindra Nath Thakur, Centre for Political Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Dr. Sanjay Palshikar, Department of Political Science, University of Hyderabad, Hyderabad
- Professor Pralay Kanungo, Centre for Political Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Dr. Satish K. Jha, Rlae College, Delhi University, Delhi
- Professor Peter Ronald deSouza, CSDS, Delhi
- Dr. Rakesh Pandey, Centre for the Study of Developing Societies, Rajpur Road, Delhi
- Dr. Shivani Chopra, Fellow, IAS, Shimla
- Professor Arindam Chakrabarti, Guest Fellow, IAS, Shimla
- Dr. Enakshi Ray Mitra, Fellow, IAS, Shimla
- Professor Joseph Prabhu, Visiting Professor, IAS, Shimla
- Dr. Kanchana Natarajan, Guest Fellow, IAS, Shimla
- Shri Sukumar Muralidharan, Fellow, IAS, Shimla

Participants made presentations on the following theme during the symposium:

Session I

The 'Real' Mind and the 'Shadow' Mind

Presenter:

Professor Arindam Chakrabarti

Discussants:

Professor Gopal Guru

Dr. Enakshi Ray Mitra

Session-II

Theoretic and Practical Consciousness: The Meaning of Swaraj in Ideas

Presenter:

Dr. Rakesh Pandey

Discussant:

Dr. Sanjay Palshikar

Session-III

The Poet's Language: Can the muse be Colonised?

Poets:

Professor Meena Alexander

Shri Rajesh Joshi

Session-IV

Interrogating 'Swaraj in Ideas'

Presenter:

Professor Sharad Deshpande

Discussants:

Dr. Kanchana Natarajan

Dr. Manindra Singh

Session-V

Recolonization of the Public Policy Sphere

Presenter:

Professor Peter Ronald deSouza

Discussants:

Shri Sukumar Muralidharan

Professor Pralay Kanungo

Rapporteur:

Dr. Satish Jha

7. Commemorative Programme on “Remembering Dr. Sarvepalli Radhakrishnan: Teacher, Philosopher and Institution Builder” (05 September 2014)

Commemorative Programme on “Remembering Dr. Sarvepalli Radhakrishnan: Teacher, Philosopher and Institution Builder” was organized at IAS on 05 September 2014. Opening Remarks was given by Professor Chetan Singh, Director, IAS, Shimla.

Participants:

- Professor Sharad Deshpande, Tagore Fellow, IAS, Shimla
- Dr. Enakshi Mitra, Fellow, IAS, Shimla

- Shri Sukumar Muralidharan, Fellow, IAS, Shimla
- Professor Meena Alexander, National Fellow, IAS, Shimla
- Shri Rajesh Joshi, National Fellow, IAS, Shimla
- Professor K.L. Tuteja, Tagore Fellow, IAS, Shimla

Participants made presentations on the following theme during the Programme:

Professor Sharad Deshpande: *Remembering the Advaitins*

Dr. Enakshi Mitra: *Reading from Radhakrishnan's An Idealist View of Life*

Shri Sukumar Muralidharan: *Eastern Religions and Western Thought*

Poems by Professor Meena Alexander

Poems by Shri Rajesh Joshi

Professor K.L. Tuteja: *Remembering Bipan Chandra*

Open House: *Reminiscences on Teachers*

8. National Seminar on 'Sexuality and Society in India' (16-18 September 2014)

Rationale: The workshop will bring together a group of established and younger scholars to explore the variety of social and cultural meanings that gather around the term 'sexuality'. It proposes to move away from discourses around sexuality that derive either from biological reasoning or historical projects that make a direct connection between the *Kama Sutra* and contemporary Indian life. As an idea, biologism essentially argues that identities derive from a 'deep source' within the self: hence the notion, that we *express* our gendered and sexual selves, rather than *enact* it. 'Enactment' gestures at ideas of learning and performing, whereas 'expressing' embodies the notion of an essence that, notwithstanding other factors, will come to the fore and ultimately reveal itself. Further, a significant consequence of thinking about 'sexuality' as a world-unto-itself is that it tends to be simultaneously thought of as a very *narrowly confined* domain (with little to do with other spheres such as, for example, politics and economics) *as well as* something that is of *very general significance* and absolutely fundamental to the 'truth' of our being. Furthermore, because it is usually thought of as a truth – with 'truths' often being imagined as fixed and unchanging – sexual identity comes to be seen as fixed, unchanging and biologically given. While sexuality has been significant to the making of a wider public world, its role in certain *social* fields has simultaneously been downplayed through its treatment as an inner and private matter.

The workshop seeks to position sexualities within a wide range of changing social, cultural and political contexts so as to better understand its shifting and unstable meanings.

Some of the themes and issues that can be explored are:

- Understanding sexuality through historical time
- Caste, class and cultures of sexuality
- Sexuality in music, media and popular culture
- Consumer cultures and sexual cultures
- Sexuality and 'youth culture'
- Sexuality in Indian literature: ancient to modern
- Sexuality and regional cultures
- The family and sexuality
- Sexuality, NGOs and the law
- Non-heteronormative sexualities

Among other things, the workshop sought to explore *relationships* between the 'mainstream' and its others, in order that we might problematize the making of sexual norms. If cultures of sexuality are to be seen for what they are – unstable, contested, and in flux – then it is important to juxtapose different kinds of sexual claims. What are the contexts for the emergence of discourses – rights based, legal, cultural etc.– of non-heterosexual cultures India? What is the relationship between different forms of urban politics and LGBTI issues? It becomes important, then, to explore *why* it is that we talk about sexuality at this moment in time *in the ways that we do*. And further, why are histories of sexuality important to the present?

This interdisciplinary seminar encourages contributions from scholars from different disciplines working across a range of contexts, utilizing diverse methodologies to understand the contested field of sexualities. It seeks to build the grounds for an understanding of sexuality in India over the long term and also of its relationship with modernity in its different aspects.

The National Seminar on '*Sexuality and Society in India*' was organized at IAS during 16-18 September 2014. Professor Sanjay Srivastava, Institute of Economic Growth, Delhi and Dr. Rajeev Kumaramkandath, Fellow, IAS were the Conveners of the Seminar. Professor Chetan Singh welcomed the participants. Dr. Rajeev Kumaramkandath, Co-convenor of the seminar proposed the vote of thanks.

Participants:

- Ms. Kolika Mitra, Shipra Hostel, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Ms. Sayantani Sur, Centre for Studies in Social Sciences, Calcutta
- Ms. Sutanuka Bhattacharya, Tata Institute of Social Science, Hyderabad

- Ms. Arunima Chakraborty, Centre for Studies in Social Sciences, Baishnabghata Patuli Township, Kolkata
- Mr. Anirban Das, Centre for Studies in Social Sciences, Baishnabghata Patuli Township, Kolkata
- Dr. Anup Dhar, Ambedkar University, Delhi
- Professor Sanjay Srivastava, Institute of Economic Growth, Delhi
- Dr. Rajeev Kumaramkandath, Fellow, IAS, Shimla
- Dr. Pradipta Mukherjee, Vidyasagar College for Women, Sankar Ghosh Lane, Kolkata
- Dr. Kiran Keshavamurthy, Centre for Studies in Social Sciences, Baishnabghata Patuli Township, Kolkata
- Ms. Navaneetha Mokkil Maruthur, Centre for Women's Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Ms. Ketaki Chowkhani, Advanced Centre for Women's Studies, Tata Institute of Social Sciences, Mumbai
- Dr. Bharti Arora, Department of English, Jamia Millia Islamia, New Delhi
- Ms. Geetika Bapna, Department of Sociology, University of Delhi
- Dr. Arunima Deka, OKD Institute of Social Change and Development, Guwahati
- Dr. Rasheda Parveen, Department of Humanities & Social Sciences, National Institute of Technology, Odisha
- Professor Salma Ahmed Farooqui, Maulana Azad National Urdu University, Hyderabad
- Dr. Charu Gupta, Department of History, University of Delhi, Delhi
- Dr. Brinda Bose, Department of English, University of Delhi, Delhi
- Dr. Muraleedharan Tharayil, St. Aloysius College, Elthuruth, Trichur, Kerala
- Dr. Esha Shah, Fellow, IAS, Shimla

Participants made presentations on the following theme during the Seminar:

Session I

Non-Heteronormative Sexualities

Brinda Bose: *Queer Matriarchies: Hijra Intimacies and Inheritances*

Sutanuka Bhattacharya: *Of genders and the flesh: Trans-bodies as site of new (gender-sexual) possibilities*

Geethika Bapna: *Queering Marriage: Temporality, Events and Ethico-Politics*

Session-II

Understanding Sexuality through Historical Time

Rasheeda Parveen: *Changing Dimensions of Virginity and Chastity: Reading Women's Petitions in Imperial India*

Charu Gupta: *'Innocent' Victims/'Guilty' Migrants: Sexuality, Caste and Indentured Women in Colonial North India*

Salma Farooqi: *Understanding Sexuality Through Historical Time: The Art of Mughal Painting*

Sayantani Sur: *Tracing Bengali Masculinity through Advertisements in the Twentieth Century: Crises or Continuity*

Session-III

Sexuality and Culture

Arunima Deka: *Women and their Bodies- Menstruation and the Construction of Sexuality*

Rajeev Kumaramkandath: *Sexual Realism? Ambivalences and the (hetero) sexual excess of Social Realism*

Pradipta Mukherjee: *Resistance to Media Representations of Women's Sexuality in Indian Cinema*

Session IV

Psychoanalysis

Anup Dhar: *Politics of Prop Roots: Beyond the 'Confessions of the Flesh' and 'The Repressive Hypothesis'*

Arunima Chakraborty: *Sex work in Phallogocentric order: Towards a Psychoanalytic Framework*

Session-V

Sexuality and Regional Cultures

Navaneetha Maruthur: *Mobilizing the Spectral Lesbian: On Sexuality and Subjectivity*

Ketaki Chowkhani: *Adolescents and Sexuality Education: Understanding Adolescent Sexuality, Masculinity, Sexual Knowledge and Romance*

Muraleedharan Tharayil: *Gender, Sexuality and the Region*

Session-VI

Sexuality in Indian literature: Ancient to Modern

Anirban Das: *Of Identities and Other Desires: Thinking Sexualities through Bangla Fiction*

Bharti Arora: *Negotiating Structural Inequalities—The Case of Marriage, Sexuality and Domesticity in Mridula Garg's Chittobra*

Kiran Kesava: *Between Desire and Politics in Tanjai Prakash's Fiction*

9. National Seminar on '*Shimla: Harmonizing Colonial Inheritance, Urban Aesthetics and Modernization*' (07-08 October 2014)

Rationale: Various aspects of the 'hill stations' established by the British in different parts of India have been the subject of detailed study by researchers across diverse disciplines. Much of this interest has been aroused by the peculiarity of these towns as alien impositions upon the social and geographical landscape. Popular thinking about the hill stations, on the other hand, is moved more by their former privileged position as exclusive summer 'retreats' of the colonial ruling elite. So deeply entrenched is the imagined 'Britishness' in, and about, these towns that almost seven decades after independence it continues to grip the minds of residents, planners and tourists alike. However, a serious underlying contradiction has always marked their existence: the inherent and disturbing unsustainability of their location stands opposed to their obvious popularity amongst an expanding class of tourists and the escalating demands of prosperous inhabitants. For Shimla — the most British and 'imperial' of such retreats — this contradiction now threatens to become a fatal embrace.

The seminar sought to situate and examine the colonial inheritance of Shimla town amidst rapidly changing circumstances: socio-economic, political, morphological, architectural, etc. The processes that have transformed Shimla into the largest and most important city of Himachal Pradesh have simultaneously undermined and exposed the earlier exclusionist conceptions upon which it was originally established. Even as governmental functioning pertaining to the administration and management of the town appears to flatten cultural differences and the contestation that it engenders, opposing interests, aesthetics and aspirations attempt to expand their claim upon the town. Are notions of 'colonial' civility and privilege its true social indicators and therefore in need of reaffirmation? Or is the egalitarian frankness of *pahari* mores its natural Himalayan home? Who speaks, or should speak, for Shimla? Furthermore, what about the expectations and concerns of the large number of visitors coming to Shimla?

These are certainly important academic questions pertaining to sub-cultures that invariably inhabit urban spaces. However, mentalities also acquire materiality. They find expression through cultural practice, arts, architecture and numerous other forms. It needs to be borne in mind, therefore, that structures and artifacts are part of a larger process of cultural production: one that is continuous and constantly changing. The morphology of a town reflects the thought processes it envelopes within it and the changes these may have undergone. Acts of conservation that sometimes tend to pass judgment on cultural worth and values, are themselves a cultural product: the result of an altered and altering mentality. Buildings, roads, transportation, gardens and public places are most often studied separately: hardly ever in their complex relationship with other areas of concern that might have a crucial bearing upon them.

While recognizing the divergent perspectives of scholars, administrators and architects an attempt was made to look closely at the interstices delineating the broad areas of given wisdom

that dominates different specializations. The themes on which the seminar will focus are listed below. Unlike in other seminars where the list of subjects in the concept note is usually indicative, the list below seems rather large and comprehensive. But that is for a reason. It is expected that the contributions and presentations of participants will not be merely descriptive, but will ask nuanced questions that interrogate simplistic positions. It is only when a conversation between disciplines takes place that a more complete and clearer understanding of issues becomes possible.

Proposed Themes/ Sessions of the Seminar

Conceptualizing Urbanization

Urbanization in colonial India; regional or local variations and impact on subsequent growth; implications for urban planners today

Trends of urbanization in contemporary India; long-term social processes and implications for urban societies,

Nature and characteristics of towns in mountain landscapes

Morphology and Buildings of Colonial Shimla

The British inheritance: mapping the morphology of elitism and exclusion; Indian/ 'native' quarters.

Structures of authority: colonial buildings and their socio-political significance

Structures of subservience: civic services, labour hostels/ quarters, means of transportation and markets

Conserving Colonial Structures and Spaces

The crucial question: what to conserve?

Techniques, technologies; Aesthetics of adaptive reuse; winning public acceptance

Role of institutions, government and private individuals in conservation;

Case studies/ learning experiences of restoration and conservation

Social Transformation and Economic Aspirations in a Democratized Town

Shimla in independent India: population growth; construction; hotels and tourism; governmental and institutional growth.

Urban amenities; development and governance

Forests, Water and the Creation of 'Natural' Spaces

Environmental impact of Shimla town on forests (flora/fauna) and natural resources;

'Natural' spaces: gardens, parks, game

The Future: Identifying Possibilities in the Context of Civic Stress

Would a 'renewed' Shimla that seeks to preserve important elements of its history and colonial experience (however painful) necessarily stand in opposition to a modern, planned and aesthetically different 'new' Shimla that must meet the requirements of an exploding population?

Do modern alternatives offer possibilities of addressing the crucial issues of sustainability and harmonizing Shimla's colonial tradition with the aspirations of a growing and demanding middle class?

The National Seminar on '*Shimla: Harmonizing Colonial Inheritance, Urban Aesthetics and Modernization*' was organized in collaboration with Department of Language and Culture, Government of Himachal Pradesh at IAS during 07-08 October 2014. Professor Chetan Singh, Director, IAS and Ms. Upma Chawdhry, IAS, Additional Chief Secretary (Language and Culture) to the Government of Himachal Pradesh were the Conveners of the Seminar. Professor Chetan Singh welcomed the participants and introduced the seminar. Ms. Upma Chawdhry made Introductory Remarks.

Participants:

- Smt. Sarojini G. Thakur, Himachal Pradesh, Private Universities Regulatory Authority, Shimla
- Ms. Upma Chawdhry, IAS, Additional Chief Secretary, Language and Culture to the Government of Himachal
- Professor Sujata Patel, Department of Sociology, University of Hyderabad, Hyderabad
- Shri Ved Segar, 23-B, Aundh Road, Flat No. 5, Meenal Apartments, Pune
- Dr. Jagvir Singh Chandel, Govt. College College, Jukhala, Bilaspur
- Shri Tikender Panwar, Municipal Corporation, Shimla
- Ar. Jasmine Kaur, Senior Consultant, Landscape and Environmental, Planning Department, Delhi Development Authority, New Delhi
- Dr. Sanjeeva Pandey, IFS, Additional Principal Chief Conservator of Forest, Himachal Pradesh, Shimla
- Dr. Ravinder Kumar Dhiman, Govt. Ayurvedic Health Center, New Shimla
- Professor Bhupinder Singh Marh, Department of Geography, Himachal Pradesh University, Shimla
- Professor Laxman S. Thakur, Department of History, Himachal Pradesh University, Shimla

- Dr. Yogesh Snehi, Fellow, IAS, Shimla
- Professor Narayani Gupta, Consultant, INTACH, Delhi
- Ms. Saumya Sharma, Fellow Designate, IAS, Shimla
- Dr. Vaneet Jishtu, Himalayan Forest Research Institute, Panthaghati, Shimla
- Professor S.R. Mehrotra, 'Seva' Ambedkar Chowk, Chaura Maidan, Shimla
- Shri S.N. Joshi, Panchvati, Bharari, Shimla

Participants made presentations on the following theme during the Seminar:

Session I

Conceptualizing Urbanization

Narayani Gupta: *Urbanization in South Asia in the Railway Age, 1860s-1960s*

Sujata Patel: *The conundrum of Indian urbanism. Is there a vision?*

Bhupinder Singh Marh: *'Shimla (Simla): Nostalgia of History and An Enigma of Urban Planning'*

Session-II

Morphology and Buildings of Colonial Shimla

Laxman Singh Thakur: *Stones and Styles of the Raj: Debates on British Architecture in Shimla*

Ravinder Kumar Dhiman: *Morphology and Buildings of Colonial Shimla*

Session-III

Conserving Colonial Structures and Spaces

Saumya Sharma: *Conservation of Historic Urban Landscape of Shimla*

Ved Segan: *'Learning Experience/ Dealing with Government Agencies: A Case Study of Gaiety Building Restoration'*

Session-IV

Forests, Water and the Creation of 'Natural Spaces'

S.N. Joshi: *Forests, Water and the Creation of 'Natural Spaces'*

Vaneet Jishtu: *Colonial impacts on the Flora of Shimla*

Session-V

Forests, Water and the Creation of 'Natural Spaces' (Contd.)

Jasmine Kaur: *Planning of Hilly Areas: An Eco-Sensitive Approach*

Sanjeeva Pandey: *Ecological Interaction between Urban and Natural Spaces of Shimla Town*

Session-VI

The Future: Identifying Possibilities in the Context of Civic Stress

Tikender Panwar: *The Future: Identifying Possibilities in the Context of Civic Stress*

Jagvir Singh Chandel: *GIS based Road Network–Analysis for Tourist Destinations: A Case Study for Shimla Town Himachal Pradesh*

10. National Seminar on ‘The Power of Communication: The Media, Public Space and Participatory Democracy’ (13-14 October 2014)

Rationale: The media has been a growth sector over two decades and more of liberalisation. All evidence points towards the media industry having substantially outrun the overall rate of growth of the economy. This is not surprising since advertising which has been the principal driver of media growth, tends to leave behind other sectors in times of economic buoyancy. Technology has been another powerful driver of media growth over the last two decades. From the first glimmers of satellite broadcasting over the C band which enabled local cable operators to provide a menu of untold variety in the early 1990s, to the recent spurt in the ‘direct to home’ transmissions, the Indian TV scenario has been transformed from a tightly controlled government monopoly, to a state of unregulated proliferation.

A further enabling mechanism has been the rapid growth of internet access. The digital divide remains very much a reality and the numbers that are able to tap into the full potential of the internet, is still a rather small fraction of the total population. The proliferation of cellular telephony though, has made limited modes of access a reality for growing numbers. And the damage potential is at the same time manifest in the growth of the politics of rumour.

It has been a central dilemma of the recent phase of media growth in India that the physical infrastructure has expanded, but the rules of the game are yet to be agreed. The official response has been to put in place a doctrine of intermediary liability, which has had a special bearing on the emerging sector of the social media. This is a principle that is being fought in the court-rooms by well-endowed internet giants. But at the level of individual users, section 66A of the Information Technology Act -- enacted in 2009 – remains a source of peril for social media users.

There are worries often expressed that competition among media channels has fuelled a race to the bottom. ‘Sting operations’ which are by definition illegal unless they serve a strong public interest, have become a common recourse. Respect for privacy and personal reputation has become a rather loosely observed component of the code of media ethics.

Incidents in the recent past when media coverage has been directly paid for by political and business entities have fuelled public concerns about spurious and inauthentic information circulating in the public domain merely to serve profit objectives.

Episodes when the media has amplified public discontent and caused severe stress within the apparatuses of the state, have led to frequent expressions of concern. Serving and retired intelligence officials have remarked on the destabilization potential of the new social media. And current and past prime ministers have spoken of the need to be vigilant about the use of the social media, but also to ensure that the free speech right is respected and the potential of the new media in serving larger national goals is realized.

The global financial meltdown in September 2008 made deep inroads into the fortunes of the media. The months that followed sharply highlighted the vulnerability of the media industry to corporate pressures. Despite its very loud voice and its pervasive presence in the lives of several million citizens, the media industry is dwarfed by India's major corporate players. Illustratively, the advertising budget of just one among the leading players in the 'fast moving consumer goods' (FMCG) space would be of the same order of magnitude as the total revenue of India's biggest media groups.

This has been the context in which certain very large corporate entities – possibly among a host of smaller ones – have moved into the media space. The official response to this complex of changes has been marked by fits and spurts, which finally subside into indecision and inaction.

Efforts to transform the state-owned broadcasting agencies into public service media have faltered. And with commercial motives being dominant, large numbers of citizens who are of no conceivable interest to advertisers have fallen between the cracks, losing their voice within the public sphere.

Older experiments in using the official media as a vehicle for transmitting a message of development and diversity have fallen into obscurity and neglect. While the ambitious experiment of using satellite-enabled broadcast media for developmental objectives is yet to be evaluated, the state-owned media are seen to have not transformed their approach according to the times.

Radio, which could be the most democratic and accessible of broadcast media, remains underdeveloped in its potential because of a refusal by the government to surrender its monopoly over news and current affairs content over the media.

A broad-based and critical debate on media policy, which looks at its promise as a space for participatory democracy, has been sorely lacking. This is in part because media industry players have worked themselves into the vantage position of setting the terms of the discourse. The voices of civil society and in particular, of those who stand to gain the most from a broadening of democratic spaces, have remained unheard.

This is the context in which an event under the above title is proposed at the institute. The ground covered in the event could include:

- a) public understanding and perceptions of the media;
- b) media representations of the 'public' – 'in' and 'out' groups; voices heard and unheard;
- c) 'development' as represented in the media and the public space;
- d) the voice afforded to diverse communities in determining development priorities;
- e) the means afforded to diverse communities in voicing their opinion;
- f) how the technical means of getting diverse opinions into the public space have evolved: from print, to the tightly controlled broadcasting space, to the unregulated broadcast space of the 1990s onwards;
- g) securing transparency and public accountability in the media space;
- h) from the perception of the telephone as a luxury irrelevant to the lives of the majority in the country, to its current status as an irreplaceable accessory of everyday life across all categories;
- i) the plus and minus side of the ledger on the new communication possibilities;
- j) the rights to privacy and personal reputation – reconciling these with accountability and the public right to information;
- k) the politics of rumour; the damage potential of rumour and how rumour is also a means of enforcing public accountability;
- l) how efforts to politically manage information invariably prove self-defeating, whether it is in the 1975-77 Emergency or today;
- m) where do we go for a free and democratic media universe.

The event would seek to look back, look at current realities and look ahead to how things could be made better within a democratic order.

The National seminar on '*The Power of Communication: The Media, Public Space and Participatory Democracy*' was organized at IAS during 13-14 October 2014. Shri Sukumar Muralidharan, Fellow, IAS was the Convener of the Seminar. The Welcome Address was given by Professor Chetan Singh, Director, IAS, Shimla. Shri Sukumar Muralidharan, Convener of the seminar gave Introduction to the Seminar.

Participants:

- Mr. Rajesh Mandhotra, Umar Ujala, New lands Estate, Shimla
- Mr. Ashwani Sharma, Indian Express, Shimla

- Ms. Samarika Kumar, Alternative Law Forum, Infantry Road, Bangalore
- Ms. Geeta Seshu, Varun, Carter Road, Bandra (W), Mumbai
- Dr. John Babu Koyye, Department of Convergent Journalism, Central University of Kashmir, J&K
- Professor Padmaja Shaw, Department of Communication & Journalism, Osmania University, Hyderabad
- Mr. A.S. Panneerselvan, The Hindu, Chennai
- Dr. Rabindranath Manukonda, Central University of Himachal Pradesh
- Professor Vinod Pavarala, University of Hyderabad, Hyderabad
- Dr. Vishram Dhole, Department of Communication Studies, Savitribai Phule Pune University, Pune
- Dr. Lion Konig, Centre for Culture Media & Governance, Millia Islamia, New Delhi
- Dr. Arvind Siuvaramakrishnan, Asian College of Journalism, Madras
- Professor Chinmayi Arun, National Law University Delhi, New Delhi
- Professor Abhijit Bora, Mass Communication & Journalism, Tezpur University, Assam
- Ms. Pamela Philipose, Indian Council of Social Science Research, New Delhi
- Mr. Siddharth Narrain, Alternative Law Forum, Bangalore
- Professor Subarno Chattarji, Department of English, University of Delhi, Delhi
- Ms. Ammu Joseph, 71, ST Bed Layout, Koramangala, Bangalore
- Mr. Shubhranshu Choudhary, 101, Shahpura, Bhopal
- Mr. Bhairav Acharya, Century park, Richmond Road, Bangalore
- Mr. Paranjay Guha Thakurta, South City, Gurgaon, Haryana
- Professor Vibodh Parthasarathi, Jamia Millia Islamia, New Delhi
- Mr. Sajan Venniyoor, New Friends Colony, New Delhi
- Professor Udayon Misra, National Fellow, IAS, Shimla
- Professor Kundan Lal Tuteja, Tagore Fellow, IAS, Shimla
- Dr. R. Umamaheshwari, Fellow IAS, Shimla

The participants made presentations on the following theme during the seminar.

Session I

The media as it is: ownership, journalists as stakeholders and internal mechanisms of accountability

Paranjoy Guha Thakurta: *Trends in Media Ownership*

A.S. Panneerselvan: *Is Self-Regulation Working?*

Sajan Venniyoor: *The Dirty Work of Empire: Orwell, WWII and the roots of Public Service Broadcasting in India*

Sukumar Muralidharan: *Journalists' Rights Within the Media Freedom Discourse*

Session-II

Aspirational states: the media as it could be

Binod C. Agrawal: *Promises and Performances of Satellite Communication Technology for Development in India*

Arvind Sivaramakrishnan: *Bridging the Gulf: the News Media and the Public*

Padmaja Shaw: *Public Service Broadcasting As Bridge to the Future*

Session-III

Social media and the new communication technologies

Pamela Philipose: *Reverberations In The City: Media aggregation and the Delhi gang rape coverage*

Vishram Dhole: *The Uneasy Relationship Between the New Media Generated Public Sphere and the Nation State*

Rabindranathan M: *The Second Machine Age of Communication Technologies*

Session-IV

Safeguarding media diversity

Ammu Joseph: *Whose pluralism is it anyway?*

Vibodh Parthasarathi: *Diversity on Mute?: The Shifting Presence of Media Diversity in Press Policy, c.1947-1990*

Smarika Kumar: *Concentration of Media Ownership and the Imagination of Free Speech: The Competing Claims of the Article 19(1)(a) and Article 19(1)(g)*

Shubhranshu Chaudhary: *Where do we go for a free and democratic media universe?*

Session-V

The media and the public

Geeta Seshu: *Media obsessions: surveillance, stalking and mining the private*

Lion Koenig: *Claiming Public Space: 'Grassroots Comics' and Participatory Democracy in India*

Subarno Chattarji: *The media, the university, and the public sphere*

Vinod Pavarala: *Blurred Vision: Development Communication and Community Radio in India*

Session-VI

Regional contexts

Abhijit Bora: *Media In Assam: A Three-Dimensional Viewpoint*

John Babu Koyye: *Development as represented in the Kashmir media*

Rajesh Mandhotra: *Media ki jan anubhuti evam vivek*

Session-V

Towards evolving new legal foundations

Bhairav Acharya: *Re-visiting Indian defamation law*

Siddhartha Narain: *Constitutional Approaches to Freedom of Speech & Expression: Hate Speech Doctrine and the Boundaries of Speech in India*

Chinmayi Arun: *Balancing Newsgathering and Privacy in the Age of Surveillance*

11. National Seminar on 'Idea of Transgression' (27-29 October 2014)

Rationale: The phenomenon of transgression has always been both fascinating and enigmatic. It is fascinating because it stems from human longing for freedom to live life on one's own terms and the consequent urge to cross boundaries and subvert limitations. The notion of transgression also brings into play notions of resistance, will, risk, and courage. This explains our preoccupation with transgression which also involves a simultaneous recognition of limits that we affirm in the very act of crossing them. In fact, the sense of 'crossing over' comes only with the acknowledgement of the limit which provides the 'over'. The concept of transgression is enigmatic because it is conceptually tied up with the restrictive and highly contested notion of

a 'boundary'- a Lakshman-Rekha. In a contemporary culture where uncertainties abound (and even pre-modern cultures were not free from uncertainties) it is often difficult to determine where the alleged boundaries—whether physical, sexual, natural or moral—lie. Hence, the theme of transgression is increasingly becoming available for interrogation from a number of theoretical standpoints. Texts from different cultural traditions and historical periods are being scrutinized to understand the workings of transgression. This seminar intends to focus on the logic, politics, and the ethics of transgression in its diverse manifestations.

Transgression is an act and as such an event; a happening in the human world. Though deliberate, purposive, and concerted, transgression is not a happening of ordinary sort like many of our intentional acts. What makes transgression a different kind of happening is that in it a violation has occurred, some line has been crossed, but transgression is not a simple rule or law breaking either. The violation or the overstepping of a boundary is termed variously—a heroic gesture, a rebellion, defiance, the politics of affront, inner disgust, temptation, a symbolic outburst, an act of courage, and even a rupture—ensuring that the existing order of things will never be the same again. The notion of transgression is thus logically tied up with the notion of a boundary, or the limit and more importantly with the extremely difficult notions of the 'inside' and the 'outside'. The notion of boundary or the limit is thus a logical pre-requisite of transgression. It is worthwhile to explore the nature of this logical tie, or the very structuring of both the notions in terms of one another. It is also worthwhile to explore the whole network of cognates that surround the notions of limit and transgression.

The notions of 'limit' and 'transgression' have engaged almost all philosophers' attention while demarcating the self from the not-self, being from non-being, knowledge from ignorance, the real from the imaginary, and the universals from particulars. Kant and Wittgenstein offer the rigorous articulation of the way the notion of 'limit' and 'transgression' are structured in terms of one another. Kant attempts to set the limit to thinking itself by articulating the transcendental conditions if the synthetic a-priori knowledge is to be possible. Wittgenstein too speaks of the 'limit' and 'transgression' but with reference to the expression of thought. Wittgenstein's famous pronouncements that 'The limits of my language mean the limits of my world' has sparked off the intense debate in the domain of philosophy of language just as what Kant's Critique of Pure Reason did in the domain metaphysics. In both these articulations the everyday usage of 'limit' as limitation is dispelled and the logical structure of the concepts of limit and transgression is revealed.

The conceptual distinction between limit as limitation and limit as condition of possibility is of utmost importance in the twin discourse on 'limit' and 'transgression'. The everyday usage of the concept of 'limit' is in terms of a 'limitation', a 'boundary', a 'chain', a 'binding force', or a 'restriction' that constrains realization of one's freedom to act in a certain manner, physical or otherwise. The nature of this limitation may be physical, technical, environmental,

psychological and social. But precisely because the 'limit as limitation' is a synthetic notion it allows the overstepping (overcoming?) of limitation. But the notion of 'limit' has another, a more philosophical sense in which the 'limit' is understood as a 'transcendental or a-priori condition' of anything that is to be possible at all. Whereas 'the limit as limitation' has a negative connotation, 'the limit as transcendental or a-priori condition' has a positive connotation. With this clarification in mind, and given the distinctive contexts in which philosophers have set out the transcendental conditions of possibility, say of knowledge in the case of Kant, of being in the case of Heidegger, and of expression of thought in the case of Wittgenstein, this seminar intends to explore how the notions of limit and transgression operate in their philosophies.

In the Continental tradition of philosophy these notions are reflected upon very profoundly by philosophers like Jaspers, Heidegger, and Foucault. Jaspers talks about limit-situations or the boundary-situations characterized by such experiences as dread or guilt in which the human mind 'confronts the restrictions and pathological narrowness of its existing forms, and allows itself to abandon the securities of its limitedness, and so to enter new realm of self-consciousness.' Such situations reveal the ambiguity of human existence—that much of it is spent in between two opposing perspectives. Moreover since these situations expose human weakness they motivate us to communicate, to enter into a dialogue that makes our differences rather than our agreements known. Foucault's 'A Preface to Transgression' stresses the centrality of sexuality in a secular and post-enlightenment age and shows how transgression and limit has replaced the older dichotomy of the sacred and the profane. The various stages of existence that Kierkegaard talks about—*aesthetic, ethical and religious*—all involve border crossing which could very well be 'a leap' - either of faith or uncertainty.

What captures our imagination when we are confronted with the notion of 'transgression' is not any particularly privileged item such as fascination for defiance, or for radical interrogation of existing norms of validity—whether moral, *aesthetical*, political, or social or for margins and their relation to totalities. There is no archetypal transgression just as there are no archetypal virtues. Like Aristotelian virtues, transgressions are manifestly situation-specific. But given this, and without falling into the trap of relativism of any kind, we may still ask as to what exactly would constitute transgression if the bi-polarities such as good and bad are questioned? Drawing the line between the good and the evil, the sacred and the profane, the private and the public, imagination and reality, sanity and madness, classes and casts, etc. is itself a politically structured act. As stated above, one of the objectives of this seminar is to explore the politics of introducing (and defying) the boundaries and limits in the diverse fields of human existence such as religion, language, nation, morality and aesthetics.

In the domain of science the sense conveyed by the notion of boundary is perhaps what is meant by the established science and the scientific paradigm of the day. The existing corpus of scientific knowledge itself becomes a boundary that sets the limit for the scientific imagination

of the day. The new radical scientific discoveries like that of Galileo or Einstein then turn out to be the acts of 'transgression' introducing paradigm shifts that radically alter the established schemes of explanation and our understanding of nature. Karl Jaspers sees boundaries as enabling. In his discussion of the limits of science he says that every limit contains a promise of going beyond. But what are the limits of science?—the question Husserl also poses in a Kantian spirit—Does its overcoming lead to a new kind of science? Does it offer a new conception of objectivity? Or does its overcoming imply crossing over to another domain, such as religion and art? Do we turn to philosophy because of the limits of science as Jaspers would say or do we turn to science because of the limits of philosophy as the positivists would say? Given the idea that each branch of knowledge is an autonomous 'discipline' whose boundaries are defined rigorously, is interdisciplinarity among humanities and social sciences transgressive as suggested by the term 'transdisciplinarity'?

The phenomenon of transgression presupposes such dualities of sacred-profane, good-evil, normal-pathological, sane-mad, and private and public. The question is whether such dualities can ever be sustained as absolute or as clear-cut distinctions and transgression be defined accordingly. In the light of the complexities of genetic engineering can we still sustain the age-old divide between the natural and the artificial? What about the dualism between the categories of 'man' and 'woman' in the light of transgender? The implicit indeterminacy in the idea of cyborg blurs the dichotomous and determinate distinction between, 'human being' and 'machine'. In a similar vein the wandering Gypsies seem to problematize the very idea of a 'locale', a concept that grounds itself in the notion of a border, since they belong to none. Perhaps, the notion of 'no man's land' is the best limiting case for the notion of boundary and transgression.

In most of the recent studies on transgression, it is seen in such contexts as transgression and taboo, transgression and graffiti, transgressive cinema, transgressive art, transgression and crime, and so on. The underlying claim in all these is to question all the taboos of our age and this act of questioning and the consequent breaking is seen as act of courage that is termed as transgression. Transgression in today's imagination is an agency of transformation to approach freedom. This seminar intends to reflect on the conceptual issues involved in this form of imagining transgression.

The National seminar on '*Idea of Transgression*' was organized at IAS during 27-29 October 2014. Professor Sharad Deshpande, Former Tagore Fellow, IAS was the Convener of the Seminar. The Welcome Address was delivered by Professor Chetan Singh, Director, IAS, Shimla. Professor Sharad Deshpande, the Convener introduced the Seminar.

Participants:

- Professor Bhalachandra Nemade, Vijaya Shri Durga, C.H.S. Santacruz East, Mumbai

- Dr. Milind Wakankar, Department of Humanities and Social Sciences, Indian Institute of Technology Delhi
- Dr. Soumyabrata Choudhury, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Professor Prajit K. Basu, Department of Philosophy, University of Hyderabad, Hyderabad
- Professor Satish C. Aikant, Department of English, HNB Garhwal University, Pauri
- Professor Nirmalya Narayan Chakraborty, Department of Philosophy, Rabindra Bharati University, Kolkata
- Professor Syed Sayeed, English and Foreign Languages University, Hyderabad
- Shri Ashok Vajpei, Raja Foundation, Sufdarjung Development Area, New Delhi
- Dr. Anirban Mukherjee, Department of Philosophy, North Bengal University, Siliguri
- Professor M. Narasimhan, National Institute of Advanced Studies, Bangalore
- Shri Rahul Gore, Opolis Architects, Sunder Nagar, Kalina, Mumbai
- Shri Anmol Vellani, Adarsh Garden, Jayanagar, Bangalore
- Professor Sharad Deshpande, Tagore Fellow, IAS, Shimla
- Professor Udayon Misra, National Fellow, IAS, Shima
- Shri Rajesh Joshi, National Fellow, IAS, Shima
- Dr. Pravesh Jung Golay, Fellow, IAS, Shimla
- Dr. Albeena Shakil, Fellow, IAS, Shimla
- Dr. Yogesh Snehi, Fellow, IAS, Shimla
- Dr. Sarvachetan Katoch, Fellow, IAS, Shimla
- Dr. Esha Shah, Fellow, IAS, Shimla

Participants made presentations on the following theme during the seminar:

Special Lecture

Shri Ashok Vajpeyi: *Creativity as Transgression*

Session I

Professor Bhalachandra Nemade: *Between Text and Context: Transgression as Mediation*

Professor Satish Aikant: *Beyond the Sacred Thread: Transgression and Freedom in U.R. Ananth Murty's Samskāra*

Session II

Dr. Milind Wakankar: *Ullanghan as Originary Institution of the Social*

Session III

Dr. Anmol Vellani: *Transgressive Art and its Limits*

Dr. Saumyabrata Chaudhuri: *Ritual Transgression, Historical Intervention, and Ontological Exit*

Session IV

Professor Prajit Basu: *Transgression and (Techno) Science*

Professor M. Narasimhan: *Transgressing the barrier: A Case Study in Developmental Biology*

Session V

Professor Nirmalya N. Chakravarti: *Knowledge, Known, and Unknowable*

Dr. Anirban Mukherjee: *Transgressing the Constraints of Extremes*

Session VI

Shri Rahul Gore: *Nari Gandhi and Transgressive Architecture*

Session VII

Professor Sayed Syeed: *Philosophy as/of Transgression*

Dr. Pravesh Jung Golay: *Philosophy from its Margins*

12. National Seminar on ‘Disciplines, Movements and Policies: The Changing Relationship between Science, State and Society’ (24-25 November 2014)

Rationale: Internal changes within the sciences are rendered more complex by the organizational transformation at the different sites of knowledge production. Institutions of higher learning and research forge new collaborative ties and arrangements with a variety of stakeholders and clients under the pressure of a state that appears to be withdrawing as the major, and sometimes only, supporter of scientific research. In fact, the state’s relationship with the world of science, and the internal dynamic of scientific and technological evolution, has rendered the study of ‘science and state’ highly problematic and contested.

In order to engage with this problematic a group of scholars had congregated at the Indian Institute of Advanced Studies, Shimla in 2012 for a two-day workshop. The purpose was to examine and explore the relationship between science, state and society as well as the concepts and theories employed by researchers studying the relationship. The proceedings of this engagement appeared in the February 2014 issue of Seminar entitled ‘State of Science’. The contributions in this issue reflected the changing science, state and society relationship in the South. A major concern of several of these papers was the field of agricultural science and agricultural biotechnology. From their respective disciplinary perspectives, the contribution asked what the transformations in the state, institutional and organizational practice of the

technosciences meant for democracy and citizenship. They sought to understand what these changes signified for the making of policy for the sciences and development, and how these transformations were produced within institutions of higher education that sustain the system for the production of knowledge.

A seminar at the Indian Institute of Advanced Study, Shimla, between 24-25 November 2015, proposes to focus the next discussion on the several sites of interrogation and research, civil action and resistance. Five decades ago there was a greater degree of convergence on questions and approaches. In contrast, the dissatisfaction and differentiation with the world of sciences is reflected more tangibly in the metadiscourse as well. At a foundational level the social imaginary of science has itself changed, as has the language of political legitimacy. These changes can be identified at the epistemological, institutional, organizational and ideological levels; not to mention the entanglements and nested association between these levels.

The study of controversies and controversial science has revealed the diversity of the sciences as opposed to its unity. Furthermore, the greater emphasis on its instrumental side, captured in the concept of technoscience, sometimes at the expense of its intrinsic goals, has further exacerbated this diversity and differentiation. These sciences are in turn implicated in equally diverse relations with the state, and this in turn is reflected in the varied cultures of policy-making across and within nations. Likewise, there are different cultures of science policy making spread across the sciences and technosciences. The concept of technoscience itself is a product of a particular moment in the evolution of science and technology, a conjuncture both in the development of the sciences where one ideal of knowledge is overwhelmed if not suppressed by another.

A claim one could reasonably make is that the technosciences are embedded in equally diverse social relations and cultures of policy and decision-making. This call for papers solicits contributions that reflect upon this diversity in the areas of medicine, health, environment, and communication technologies. The plural contexts within which the sciences are embedded have given rise to a proliferation of conceptual categories and languages that overlap even while referring to distinct objects—mandated science, post-academic science, mode-2 science, triple helix, academic capitalism, post-normal science, social robust science, science in the agora, and so on. Clearly, this transformation has been catalyzed by the genetics-communication revolution, which in turn transforms the state as well: from a nation state into a 'network state', driven by the new logics of networks and identities. Despite the proliferation of conceptual categories, they all gesture towards a greater socialization of science which brings with it questions of accountability, social responsibility and innovation, all entangled in a variety of ways, though the dominant discussion around innovation very frequently refers to market innovation. So much so, Nowotny et al. would characterize the 1950s as an era of the scientization of society and the last two decades as marking in more ways than one, the socialization of science.

There appears to be the recognition that a culture of democratic pluralism is the very prerequisite for the production and reproduction of the culture of science. Ironically enough, speaking of matters closer home, we have been witness to a precipitous decline in the democratic culture of science in the subcontinent. The inability of the scientific community to cope with the democratization and expansion of the social reach of science has reinforced authoritarian tendencies within the scientific community, sometimes expressed in the assertion of their rightful and sole claim to scientific expertise. This undermines science's ability to adjudicate between several epistemic or social alternatives. The centring of scientific authority in the narrativization of science plays a role analogous to the imaginary of science as value-neutral. Furthermore, in the auditing of scientific innovation or resolution of controversies, there is a failure to highlight the socially distributed nature of knowledge in the making— thereby legitimating the new intellectual property regimes. As public controversies related to science proliferate—a sign of the socialization of science— one misses the voices of democracy and dissidence within the world of science. The seminar hopes to stimulate a conversation on the changing social and organizational context of science and a reflection on how our concepts, categories and theories are shaped by and mirror these changes.

Contributions from interested participants are invited on the following themes:

- Cultures of policy-making in the sciences and technosciences: health and medicine, environment, communication and energy
- Interrogating technoscience, mode-2 and other conceptual categories framing studies and research on the sciences/technosciences in South Asia:
- Scientific accountability in a 'network state'
- Dimensions of the socialization of science
- Challenges for democratic pluralism in the world of science.

The National seminar on '*Disciplines, Movements and Policies: The Changing Relationship between Science, State and Society*' was organized at IAS during 24-25 November 2014. Professor Dhruv Raina, Zakir Husain Centre for Educational Studies, School of Social Sciences, Jawaharlal Nehru University, New Delhi was the Convener of the Seminar. The Welcome Address was given by Professor Chetan Singh, Director, IAS, Shimla. Professor Dhruv Raina, the Convener introduced the Seminar.

Participants:

- Dr. Amit Sengupta, LGF, Saket, New Delhi
- Shri Om Prasad, Zakir Husain Centre for Educational Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi

- Dr. Nupur Chowdhury, Jindal Global Law School, Sonapat
- Dr. Saumen Chattopadhyay, Zakir Husain Centre for Educational Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Ms. Urmila Unnikrishnan, Zakir Husain Centre for Educational Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Professor Mohan Rao, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Dr. Leon Morenas, School of Planning & Architecture, Delhi
- Professor Dhruv Raina, Zakir Husain Centre for Educational Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Dr. Esha Shah, Fellow, IAS, Shimla
- Shri Sukumar Muralidharan, Fellow, IAS, Shimla

Participants made presentations on the following theme during the seminar:

Session I

Amit Sengupta: *A Counter Hegemonic Agenda for Health Research*

Mohan Rao: *Reproductive Tourism, Surrogacy and the Neo-Liberal State in India*

Shiju Sam Varughese: *Science, State and Democracy in the Era of Biopolitics- Endosulfan Survivors as Non-Public in Kerala*– TO BE READ

Session II

Esha Shah: *Science Based Risk Assessment: Rethinking Scientific and Social Appraisal of Transgenics*

Rajeswari Raina: *Agronomy and Agrarian Alternatives in India: The Discipline as Lens*– TO BE READ

Session III

Leon A Morenas: *Dissimilating the Smart City*

Nupur Chowdhury: *Supreme Court and Technologies*

Sukumar Muralidharan: *Civil Society in the Network State, the Techno-politics of Anti-politics*

Session IV

Saumen Chattopadhyaya: *Funding of Science: Emerging Relationship between State and Society*

13. International Conference on “Saptarashis’ of Modern India: Tradition, Change, and Svaraj” in collaboration with Maharaja Ganga Singh University, Bikaner at Bikaner (4-6 January 2015)

Rationale: It has been argued that Indian traditions renew themselves through exemplars rather than ideologues.¹ An exemplar may be described as someone who embodies a consistency between *anubhav* (experience), *vichar* (thought), and *achar* (action). Experience in this triadic unity refers not only to positive or sensory data, but direct apprehension of integral wisdom; it is not mere mental speculation. The *vichar* or intellectual component implies the rational working out of the experiential basis of knowledge so that is more easily communicated to others and conforms to norms of logic and sense. *Achar* refers not only to right conduct but effective agency and intervention in the secular and temporal sphere of society, politics, culture, or economics as the case may be. The exemplar, as opposed to the ideologue, is not concerned primarily with enunciating a coherent body of theoretical knowledge, but in embodying and practicing a certain way of life. While ideologues may be the founders of systems of ideas and therefore very influential, they do not necessarily live or practice these ideas as exemplars do. In this way of conceptualizing the transmission of knowledge, exemplars may come any strata of society; they are not necessarily trained intellectuals.

The assumption behind this seminar proposal is that modern India was fashioned by exemplars instead of ideologues. One of the most significant expression of the exemplary in the classical Indian thought is the idea of the *rishi*. According to Monier Williams, a *rishi* was “a singer of sacred hymns, an inspired poet or sage,” but more importantly, one of the “sages or saints, occupying the same position in India history as the heroes and patriarchs of other countries” (<http://www.sanskrit-lexicon.uni-koeln.de/monier/>). The concept of the Saptarishis—or the seven *rishis*²—is an ancient idea in India. Though the seven mythical sages are never

¹ This distinction was first advanced by K. J. Shah, who taught philosophy at Karnatak University, Dharwar, and was Wittgenstein’s student. His daughter, Anuradha Veeravalli, used this idea in a PhD in Philosophy at Delhi University submitted in 2000. See also Raghavendra Rao’s unpublished paper, “The Exemplar versus the Ideologue: The Issue of Friends and Foes,” circulated first at the seminar on “Interpretations of Gandhi” organized by the Indian Institute of Advanced Study in New Delhi on 21-23 March 1996. The idea of Saptarashis of Modern India was first mooted by the late Professor Ramchandra Gandhi (1937-2007), one of India’s most distinguished contemporary philosophers.

² The *Satapata Brahmana* (14.5.2.6) lists the following as the Saptarishis: Gotama, Bharadwaj, Viswamitra, Jamadagni, Vasista, Kasyapa, and Atri. In the *Mahabharata*, other *rishis* are included in the mythical seven including Marichi, Angiras, Pulaha, Kritu, Pulastya, and they called Prajapatis or founding-fathers. In Astrology, the Saptarishis form the constellation of the “Great Bear.” It is important to remember that many Vedic *rishis* were women such as Romasha, Lopamudra, Apala, Kadru, Visvavara, Ghosha, Juhu, Vagambhrini, Paulomi, Yami, Indrani, Savitri, and Devayani. There are two main senses of the word derived from the root *rsh*, “to go or flow or move” and “to see.” Monier Williams suggested the latter derivation by liking it to the ancient Irish *arsan* (as sage or wise man) and to the Sanskrit *drsh* “to see.” Swami Vivekananda called *rishis* “Mantra-drashtas” or “the seers of thought” not “talkers” or “book-swallowers” (CW 3: 283).

named in the Vedic *Samhitas*, later texts such as the *Jaiminiya Brahmana* (2.218-221) and *Brihadaranyaka Upanisad* (2.2.6) begin to enumerate them. Interestingly, it is not the same seven that recur, but the set seems to be open and changeable; by the time of the Mahabharata, only three of the original seven names of the Brihadaranyaka remain, with four new ones added. What is important is that these sages are regarded as founders of society. The makers of ancient India were thus not conquerors or kings, but sages and seers. Is it possible to argue that modern India was also founded not by politicians, conquerors, and ministers, but by sages, saints, and mystics? The proposed seminar is an attempt to explore this notion, especially to understand the making of modern India in terms of the contribution of the *Saptarishis*, those who belonged to their circle, their interrelationships with one another, and their unique or distinctive contribution to ideas and society, and what is more, their direct or indirect contribution to svaraj or self-rule and nation building.

To this end, the following six clusters in chronological order are proposed, with a prominent figure in each cluster who may be considered a rishi. The other members of the cluster need not be considered as subordinate to this figure or always directly related or influenced by him or her but as those who may be discussed in conjunction with this figure. Given M. K. Gandhi's centrality to modern India's formation, Cluster 3, which may be considered the "heart" of this set of seven, naturally has the most number of members. Each cluster can have other names added; the seventh is left as an open category because the set of seven was never meant to be final, but an indicative. It is important, similarly, to remember that the founders of modern India can be women as much as men; the category of rishi, as in Vedic texts, does not exclude women. To avoid using this forum to promote any living guru, only the deceased have been included in the list below.

Cluster 1

Sri Ramakrishna (1836-1886)

Sarada Ma (1853-1920), Swami Vivekananda (1863-1902), M. S. Golwarkar (1906-1973).

Cluster 2

Rabindranath Tagore (1861-1941)

Debendranath Tagore (1817–1905), Kadambari Devi (1861-1884), Abanindranath Tagore (1871-1951).

Cluster 3

Mohandas Karamchand Gandhi (1869-1948)

Bal Gangadhar Tilak (1856-1920), Madan Mohan Malaviya (1861-1946), Gopal Krishna Gokhale

(1866-1950) Kasturba Gandhi (1869-1944), Vallabhbhai Patel (1875-1950), Sarojini Naidu (1879-1950), M.N. Roy (1887-1954), Jawaharlal Nehru (1889-1964), B. R. Ambedkar (1891-1956), Vinoba Bhave (1895-1982), Subhas Chandra Bose (1897-1945).

Cluster 4

Sri Aurobindo (1872-1950)

The Mother (1978-1973), Dilip Kumar Roy (1897-1980), Satprem (1923-2007), Deen Dayal Upadhyaya (1916-1968).

Cluster 5

Sri Ramana Maharshi (1879-1950)

Śri Atmananda (1883-1959), Nisargatta Maharaj (1897-1981), Ramesh Balsekar (1917-2003).

Cluster 6

J. Krishnamurti (1895-1986)

Annie Besant (1847-1933), Rajneesh (1931-1990), U. G. Krishnamurti (1918-2007).

Cluster 7 (Open)

Could include such figures as Lord Swaminarayan (1781-1830), Sai Baba of Shirdi (1838-1918), Swami Sivananda (1887-1963), Paramahansa Yogananda (1893-1952), Anandamayi Ma (1896-1982).

International Conference on “*Saptarashis’ of Modern India: Tradition, Change, and Svaraj*” in collaboration with Maharaja Ganga Singh University, Bikaner at Bikaner from 4-6 January 2015. Professor Makarand R. Paranjape, Centre for English Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi was the Convener of the conference. Professor Chandrakala Padia, Vice-Chancellor, Maharaja Ganga Singh University, Bikaner & Chairperson, Governing Body, IAS and Professor Chetan Singh, Director, IAS gave the welcome address. Professor Makarand Paranjape, Convener of the conference gave introductory remarks. Special Lecture was delivered by Professor Kapil Kapoor, Chancellor, Mahatma Gandhi International Hindi University, Wardha (Maharashtra). Dr. Pragti Sobti, Organizing Secretary of the conference gave the vote of thanks.

Participants:

- Professor Kapil Kapoor, Chancellor, Mahatma Gandhi International Hindi University, Wardha (Maharashtra)
- Professor Jagbir Singh, Former Head, Department of Punjabi, University of Delhi, New Delhi
- Professor Shrawan Kumar, Centre for Canadian Studies, Gurukul Kangri University,

Haridwar

- Professor Sudhir Kumar, Department of Evening Studies-MDRC, Panjab University, Chandigarh
- Dr. Sachidanand Mohanty, Department of English, University of Hyderabad, Hyderabad
- Professor Kailash Baral, EFL University, Shillong Campus, Shillong
- Professor Godabarisha Mishra, Department of Philosophy, University of Madras, Chennai
- Professor Ajit Narayan Tripathi, Retd. Professor, IT, BHU
- Professor Sanjay Srivastava, Department of Political Science, Banaras Hindu University, Varanasi
- Dr. Arti Nirmal, Department of English, Vasanta College for Women, Banaras Hindu University, Varanasi
- Dr. Preeti Singh, Department of Political Science, Vasanta College for Women, Varanasi
- Ms. Nishtha Saxena, Research Scholar, Department of English and Cultural Studies, Panjab University, Chandigarh
- Dr. Pradipta Mukherjee, Vidyasagar College for Women, Kolkata
- Professor Vibha Tripathi, Department of AIHC & Archaeology, Banaras Hindu University, Varanasi
- Professor Suresh Kumar Agarwal, Department of English, MGS University, Bikaner
- Dr. Namami Shankar Aacharya, Guest Faculty, Govt. Dungar College, Bikaner
- Dr. Pragti Sobti, Department of English, M.G.S.U. Bikaner
- Ms. Santosh K. Shekhawat, Department of English, M.G.S.U. Bikaner
- Dr. Narayan Singh Rao, Department of History, Maharaja Ganga Singh University, Bikaner
- Dr. Divya Joshi, Govt. Dungar College, Bikaner
- Dr. Seema Sharma, Maharaja Ganga Singh University, Bikaner
- Dr. Bela Bhanot, S.K.D.L. Govt. Girls College, Ratangarh
- Professor Anand Kumar, Department Reproductive Biology, AIIMS, New Delhi
- Dr. Braj Ratan Joshi, Govt. Dungar College, Bikaner
- Dr. Anil Kumar Chhangani, Department of Environment cience, MGS University, Bikaner
- Dr. Nandita Singhvi, Govt. Dungar College, Bikaner
- Dr. Anil Kumar Dular, Maharaja Ganga Singh University, Bikaner

- Shri Umesh Sharma, MGSU, Bikaner
- Professor Satish Rai, Department of Political Science, Mahatama Gandhi Kashi Vidyapeeth, Varanasi
- Dr. Anant Giri, Madras Institute of Development Studies, Chennai
- Dr. N.K. Vyas, Govt. College Bhim, Rajasthan
- Dr. Anindita N. Balslev, Founder, Forum for Cross Cultural Conversation, Denmark
- Dr. Rajesh Kumar Srivastava, Govt. Degree College Dhara, Hata, Kushinagar, U.P.
- Dr. Vikram Jha, Department of History, BJS Rampuria college, Bikaner
- Dr. Anuradha Banerjee, Vasan Kanya Mahavidyalaya Varanasi
- Dr. Meghna Sharma, Department of History, MGSU, Bikaner
- Professor H.P. Vyas: Ex. VC, Engg. College, Bikaner

Participants made presentations on the following theme during the conference:

Plenary Session

India's Intellectual Tradition: Theoretical Enunciations

Professor Makarand Paranjape: *The (Un) Known Mahatama: Gandhi's Last Days and the (Un) Making of India*

Session I

Legacies of Ramakrishna Paramhansa and Swami Dayanand

Professor Shrawan Kumar: *Swami Dayand and the Indian Renaissance: A Journey Towards Self-rule and Nation Building*

Dr. Rajesh Kumar Srivastava: *The Impact of Ramakrishna on the Makers of Modern India*

Dr. Pradipta Mukherjee: *A Life of Silent Prayers- Sarada Devi*

Dr. Seema Sharma: *Relevance of Swami Vivekananda's thought in Making of Modern India: A Synoptic Study*

Dr. Namami Shankar Acharya: *Swami Vivekananda ka Shekshnik Chintan aur Aaj ka Bharat*

Session II

Retrieving the Indian Tradition: Rabindranath Tagore & Family

Dr. Anuradha Banerjee: *Rabindra Nath Tagore: Cohesion of Thought & Actions*

Dr. Sadanand Shahi: *Rabindranath Tagore aur Gandhi ka Swarajaya (Asahmatiyon ke Beech Samwad ka Adarsh)*

Session III

Igniting the Soul of Nation: Mahatma Gandhi & His Contemporaries

Professor Kailash Baral: *Risivad and Gandhi: Tradition and Swaraj*

Professor Raghvendra Pratap Singh: *Gandhi on Tradition, Change and Modernity in India: Pluralistic Perspective on the Notion of 'the other'*

Professor Ajit Tripathi & Dr. Vibha Tripathi: *Saptarishis of Modern India: Tradition, Change and Swaraj*

Professor Satish Rai: *Mahatama Gandhi: Bhartiya Rashtra Nirman ki Chintan Dharayon ka Sangam*

Professor Naresh Dadhich: *Mahatama Gandhi and Indian Heritage: Influence and Influenced*

Professor Sanjay Srivastava: *Satyagarh: The Gandhian Method of Conflict Resolution and Peace*

Dr. Narayan Singh Rao: *Role of Mahatama Gandhi and Netaji Subhash C. Bose towards the Rise and Growth of Feminized Nationalism in India (1915-1947 A.D.)*

Ms. Santosh K. Shekhawat & Dr. Pragti Sobti: *Understanding Sarojini Naidu: Perspectives on Tradition, Change and Swaraj*

Dr. Preeti Singh: *A Dialouge between Gandhi "the Ideologue" and Kasturba 'the Exemplar': A Reflection on Ashram Life*

Dr. Braj Ratan Joshi: *Mahatama Gandhi aur Manavendranath Rai: Parampara, Parivartan and Swaraj*

Parallel Session

Dr. Bela Bhanot: *Gandhi evam Tilak ke Chintan mein 'Swaraj' ka Kriyatmab Paksh: Yug Dharam ki Avashyakta*

Dr. Rashmi Rai: *The Impact of Mahatama Gandhi on Sarojini Naidu's Struggle for Women's Rights*

Dr. Nandita Singhvi: *Mahatama Gandhi ka Prayogatmak Nretitava, Swatantrata evam Navbharat ka Nirman*

Dr. Vikram Jha: *Swaraj: A Comparative View of Tilak and Gandhi*

Dr. Nishtha Saxena: *Towards Swaraj: Situating Gandhi and Ambedkar in the Contemporary Discourses of Cultural Studies*

Dr. Meghna Sharma: *Social Action Plan and Community Leadership in Modern India: With Special Reference to Gandhi and Vinoba Bhave*

Dr. Anil Dular and Shri Umesh Sharma: *Impact of Bhagavadgita on Gandhi and his Contemporaries*

Session IV

Entering into the Realm of Divine: Sri Aurobindo and His Followers

Professor Sachidanand Mohanty: *Sri Aurobindo the Exemplar*

Professor Sudhir Kumar: *On Chiti (Unity of Being or the Spirit of the Nation): Revisiting Deen Dayal Upadhyaya's Discourses on Culture and Society*

Professor Anand Kumar: *The Convergence of the Scientific and Spiritual Knowledge: Sri Aurobindo on Scientific Knowledge*

Dr. Anant Giri: *Gandhi and Sri Aurobindo*

Dr. Vinita Chandra: *Man and Society in the Philosophy of Sri Aurobindo*

Session V

Discovering Self- Shri Ramanna Maharishi, Krishnamurti and Rajnish

Professor Godabarisha Mishra: *Ramakrishna and Ramanna: Profiling the Empirical Sojourn of the Self-less Selves*

Dr. Divya Joshi: *Myriad Dimensions of Spirituality: An Encounter with Raman Maharshi*

Dr. Arti Nirmal: *A Quest within the Soul: Modern Crisis and the Educational Philosophy of Jiddu Krishnamurthi*

Session VI

Spiritual Icons of India

Professor Suresh Kumar Agarwal: *Acharya Mahapragya: Making of 'Raashtra' (Noble Nation)*

Dr. Anil Chhangani & Dr. Pragti Sobti: *Role of Jambhoji in Environmental Conservation*

Session VII

Svaraj: The Unfinished Agenda

Professor Anindita Balslev: *Why Must We Carry Forward the 'Unfinished' Project of Swami Vivekanand?*

Professor A.K. Singh: *Philosophy into Action: Swami Vivekanand's Ideals of Renunciation and Service and Their Practise by Eknath Ranade*

14. National Seminar on "Is There an Adequate Theory of Justice?" (20-21 March 2015)

Rationale: There exist several contesting theories of justice in the field of socio-political philosophy, though some have a more dominant presence in our theoretical and political imagination than others. The main theoretical contention, as it has evolved in our times, is between conceptions of justice that are universal in scope and those that are contextually historical and hence defined by historical particularity. At the operative level, both have shown limitations in ensuring justice and also involve certain overlaps.

The liberal and more particularly, the Rawlsian theory of justice, arguably suggests that justice can be universally applicable, specifically in its de-ontological thrust. On the other hand, we have the public conceptions of social justice that reduce the universality of the concept to

its historical specificity. In fact, historical specificity decides, or provides an epistemic ground for the universal conception of social justice. But the public imagination, particularly in the Indian context, distorts this necessary ontological relation between the concept and its epistemic ground. The concept of justice is implicated into sociological concreteness that is evident, for example, in Sachar Committee recommendations. Such socio-cultural particulars in societies like India pose challenges to the dominant theory of justice that is singularly associated with Rawls. Further, the continuous process of marginalization and deprivation of some communities has exposed the limits of universal conceptions of justice. The pressure of existential conditions, for example, ever worsening quality of life, is forcing these groups to bring alternate political conceptions of justice to the fore.

On the other side of the spectrum, the liberal conception of justice also offers an opportunity to evaluate the mode of the distribution of social welfarism. The need to evaluate the distributive stamina of the government makes it necessary to provide for the conditions of its successful articulation. Thus, democracy, pluralism and institutional mechanism become the constitutive condition within which justice as a principle becomes operative. Paradoxically, justice as a universal principle of distribution, however, on its way to its concretization, particularly in the form of policy package, generates its own adversary-injustice. The condition of injustice, thus, becomes internal to the very principle of justice. The discourse on justice lands up into the un-resolvable tension between the universal and the particular on the one hand, and justice and injustice on the other.

It is in this general problematic, that the seminar seeks to address the following issues:

First, what is an adequate conception of justice? Can there be one? Can we imagine an expansive conception of justice?

Second, did we ever have such conception of justice in the field of political philosophy particularly in modern times?

Third, what are the conditions for its minimum articulation? Do we have these conditions present in the Indian context?

A National Seminar on “*Is There An Adequate Theory of Justice?*” was organized at IIAS during 20-21 March 2015. Professor Gopal Guru, Centre for Political Studies, School of Social Sciences, Jawaharlal Nehru University, New Delhi and Dr. Albeena Shakil, Fellow, IIAS were the Conveners of the seminar. The welcome address was given by Professor Chetan Singh, Director, IIAS. Professor Gopal Guru, Convener of the seminar gave the introductory remarks.

Participants:

- Dr. Prasenjit Biswas, Department of Philosophy, North-Eastern Hill University, Shillong
- Dr. Tanweer Fazal, Centre for the Study of Social Systems, School of Social Sciences,

Jawaharlal Nehru University, New Delhi

- Professor Gurpreet Mahajan, Centre for Political Studies, School of Social Sciences, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Professor Pradeep Gokhale, Central University of Tibetan Studies, Sarnath, Varanasi
- Professor Partha Chatterjee, Centre for Studies in Social Sciences, Kolkata
- Professor Sundar Sarukkai, Manipal Centre for Philosophy & Humanities, Manipal University, Karnataka
- Professor Sobhanlal Datta Gupta, Retd. Professor, Department of Political Science, University of Calcutta, West Bengal
- Dr. Samir Banerjee, Garadi Apartment, Tata Silk Farm, Bangalore
- Dr. Arshad Alam, Centre for the Study of Social Systems, School of Social Sciences, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Professor Ashok Acharya, Department of Political Science, University of Delhi, Delhi
- Dr. Parthasarathi Mondal, Centre for Social Theory, School of Development Studies, Tata Institute of Social Sciences, Mumbai
- Dr. R. Uma Maheshwari, Fellow, IAS
- Dr. Sanjeeb Mukherjee, Department of Political Science, University of Calcutta, Kolkata
- Dr. Maidul Islam, Department of Political Science, Presidency University, Kolkata
- Dr. Dhanwanti Nayak, School of Communication, Manipal University, Karnataka
- Professor Gopal Guru, Centre for Political Studies, School of Social Sciences, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Dr. Albeena Shakil, Fellow, IAS

Participants made presentations on the following themes during the seminar:

Session I

Professor Partha Chatterjee: *Outline of a Post-colonial Theory of Justice*

Professor Sundar Sarukkai: *Rationality of Justice*

Session II

Professor Gurpreet Mahajan: *Beyond Rawls: Why do we need the Ancients?*

Professor Sobhanlal Datta Gupta: *Marx and Justice: Reviewing a Contested Issue*

Session III

Dr. Arshad Alam: *Justice for Whom: Sachar Committee Report and Reservation for Muslims*

Dr. Parthasarathi Mondal: *'Indian' Secularism: Political Philosophy Threatens Social Justice?*

Session IV

Professor Pradeep P. Gokhale: *Dr. Ambedkar's perspective on Justice: Its Dynamic and Dialectical Aspects*

Dr. Prasenjit Biswas: *Re-Signification as the Moment: Gopal Guru's Theory of 'Adequacy of a Theory of Justice'*

Session V

Dr. Sanjeeb Mukherjee: *An Other Theory of Justice*

Dr. Samir Banerjee: *Adequate justice and the fecundity of choice factor*

Session VI

Dr. Tanweer Fazal: *Deconstructing Article 341: Implications for a theory of justice*

Dr. Albeena Shakil: *Women's Aazadi: The Universal/Particular Paradox of Justice*

Dr. R. Uma Maheshwari: *'Oustees' of the Contemporary System: Understanding Displacement and Idea of Justice*

Session VII

Dr. Ashok Acharya: *Globalizing Justice under Non-Ideal Conditions*

Dr. Maidul Islam: *The Elusive yet Necessary Idea of Justice*

Summary of Discussion

Professor Gopal Guru

D. WEEKLY SEMINARS BY FELLOWS

The Fellows of the Institute presented weekly seminars which are open to other scholars at the Institute, Associates of the Inter-University Centre and faculty of Himachal Pradesh University. These seminars are related to the themes of the projects undertaken by the Fellows of the Institute and provide an opportunity for formal interaction among the scholars. During the period under report, the following weekly seminars were given by the Fellows:

- Dr. Shivani Chopra: *Hindi ki Arambhik Atamkathayen-Ardhkathanak aur Sarla ek Vidhva ki Atamjivni ka Stri Drishti se Mulyankan* (3 April 2014)
- Dr. Pradip Phanjoubam: *Northeast Question: Birth Pangs of a Geographically and Psychologically Marooned Region* (10 April 2014)
- Dr. Enakshi Ray Mitra: *Later Wittgenstein on the Primacy of Actions* (17 April 2014)

- Dr. Aruna Bommareddi: *Of the Narrative* (24 April 2014)
- Shri Arnab Chatterjee: *Is the Personal beyond Private and Public? A Contribution to Social Theory and Practice* (01 May 2014)
- Dr. Aniruddha Chowdhary: *Singular/Finite History: Towards a Post-Metaphysical Philosophy of History* (01 May 2014)
- Dr. R. Uma Maheshwari: *Reading History with the Tamil Jainas: Locating Identity, Memory and Marginalisations in Historiography* (08 May 2014)
- Professor K.G. Paulose: *Text and Performance: The Interpretative and Narrative Traditions of Indian Theatre* (15 May 2014)
- Dr. Esha Shah: *Affective History of the Gene* (22 May 2014)
- Dr. Albeena Shakil: *Neoliberalism, Middle Classes and the English Novel in India* (22 May 2014)
- Dr. Sarvchetan Katoch: *Reimagining the Nation: A Study of the Representations of the Nation in 21st Century Hindi Cinema* (29 May 2014)
- Dr. Yogesh Snehi: *Popular Sufi Shrines in Contemporary Punjab: Marginality, Identities and Dissent* (29 May 2014)
- Dr. Rajeev Kumaramkandath: *Social (Power) History (Knowledge) and Popular Memories: The Fractured History of Thathrikutty* (05 June 2014)
- Professor Radhavallabh Tripathi: *Theory and Practice of Vada (Debate) in Indian Traditions of Scientific and Philosophical Discourse and its Relevance Today* (05 June 2014)
- Dr. Pravesh Golay Jung: *Reason and Autonomy: Discordant Harmony* (12 June 2014)
- Shri Rajesh Joshi: *Kavita ka Nagar: Swatantrottar Hindi ki Nagar Kavita aur Nagar ke Sath uske Sambandh* (19 June 2014)
- Professor D.N. Dhanagare: *Selective Appropriation of Gender Discourse – The Mahila Aghadi of the Farmers' Movement in Maharashtra 1980 to 1994* (26 June 2014)
- Shri Sukumar Muralidharan: *Development and Disproportionality: Revisiting the Choice of Technology Question* (03 July 2014)
- Professor Sharad Deshpande: *“Conversing about Conversation” and “Conversing with Tagore”* (10 July 2014)
- Dr. N. Malemnganba Meetei: *Armed Forces Special Powers Act and the Protest in Manipur* (17 July 2014)
- Professor Udayon Misra: *Partition Politics and Assam: Unresolved Issues* (31 July 2014)

- Professor B. D. Chattopadhyaya: *Understanding Valmiki's Rama: A Historian's Approach* (07 August 2014)
- Dr. Aryak Guha *The Lesson of Sadhu Kalachand: Pedagogy and Delinquency in the Postcolony* (14 August 2014)
- Professor Meena Alexander: *Poetry, Landscape, History* (21 August 2014)
- Shri Arnab Chatterjee: *Harbermas and Social Work Ethics: Closing a Six Year Long Debate* (29 August 2014)
- Dr. Aniruddha Chowdhury: *Singular History: Finitude, Temporality and Historicity In Early Heidegger* (04 September 2014)
- Dr. Esha Shah: *Who is the Scientist-Subject?* (18 September 2014)
- Dr. Albeena Shakil: *Making Sense of Chetan Bhagat* (25 September 2014)
- Dr. Sarvchetan Katoch: *Re-Imagining the Nation: Interrogating the Resurgence of Swaraj in 21st Century Hindi Cinema* (09 October 2014)
- Dr. Yogesh Snehi: *Situating Popular Veneration in Punjab* (16 October 2014)
- Dr. Shivani Chopra: *Prem, Surksha aur Swayatata ka Swal: Atamkathayon mein Vyakt Rachanatmak Jivan* (13 November 2014)
- Dr. Enakshi Ray Mitra: *Recasting Later Wittgenstein's Anti-foundationalist Approach to Actions: In Terms of Space and Time* (20 November 2014)
- Dr. Varsha Ganguly: *Culture of Protest and Rights of Citizens in Gujarat: Impact, Trends and Challenges* (27 November 2014)
- Dr. Aruna Bommareddi: *Telugu Consciousness* (04 December 2014)
- Professor Attirikkat Achuthan: *A Study of the Folk Dramatic Tradition of India and Dalit Consciousness* (05 December 2014)
- Dr. Rajeev Kumaramkandath: *Social (Power) History (Knowledge) and Popular Memories: The Fractured History of Thathrikkutty* (09 December 2014)
- Dr. R. Uma Maheshwari: *Reading History with the Tamil Jainas: the Missing Tamil Jainas in Tamil and Language and Identity Discourses* (11 December 2014)
- Ms. Saumya Sharma: *Conserving Cultural Heritage of Himachal Pradesh* (19 March 2015)
- Dr. Kaustav Chakraborty: *Socio-cultural Study of the Non-Normative Expressions in Select Tribal Folk-literature of North Bengal* (19 March 2015)
- Dr. N. Malemnganba Meetei: *Construction of Pain as a Form of Organisation and Protest against AFSPA: A Study of Commemorative Memorials and Rituals* (24 March 2015)

- Shri Sukumar Muralidharan: *Development and Disproportionality: Revisiting the Choice of Technology Question* (26 March 2015)
- Professor M.T. Ansari: *Comparative Indian Literature* (31 March 2015)

E. MONOGRAPHS RECEIVED FROM FELLOWS:

- Professor Priyambada Sarkar: *At the Threshold of Language and Meaning: Early Wittgenstein and Rabindranath Tagore* (01 April 2014)
- Shri Pradip Phanjoubam, *Northeast Question: Birth Pangs of a Geographically and Psychologically Marooned Region* (21 April 2014)
- Dr. Enakshi Mitra, *Later Wittgenstein on Language and Mathematics: A Non-Foundational Narration* (05 May 2014)
- Dr. Alkesandra Wenta: *Dancing in the Sky of Consciousness the Construction of the Ritual Body in Medical Cidambaram* (02 September 2014)
- Professor D N Dhanagare: *Populism and Power- Farmers' Movement in Maharashtra-1980-2014* (04 September 2014)
- Shri Jasvir Singh: *India's Constitutional Democracy and the Victims of Socio-Economic Injustice (with special reference to the Agricultural wage Workers in India)* (23 September 2014)
- Professor Sharad Deshpande: *Conversing with Tagore: Towards a Reconciled Universal and Human Flourishing* (05 November 2014)
- Professor Meena Alexander: *Dreaming in Shimla: Letters to My Mother* (01 December 2014)
- Dr. Varsha Ganguly: *Culture of Protests and Rights of Citizens in Gujrat: Trends, Impact and Challenges* (10 December 2014)
- Professor Radhavallabh Tripathi: *Vada in Theory and Practice Studies in Debates, Dialogues and Discussions in Indian Intellectual Discourses* (09 February 2015)
- Dr. Enakshi Ray Mitra: *On The Quest For Reference* (16 February 2015)
- Dr. Aruna Bommarreddi: *Narrative Traditions of a Telugu Epic, Palnativeerula Katha* (04 March 2015)
- Dr. Maidul Islam: *Indian Muslims in the Globalized World* (10 March 2015)
- Shri Rajesh Joshi: *Kavita ka Shahar* (30 March 2015)

F. VISITING PROFESSORS

1. Professor K. L. Tuteja, former Professor of History, Kurukshetra University gave following lectures:
 - *Lajpat Rai's Perspective on Community and Nation: An Interpretation* (08 April 2014)
 - *Hindu' Discourse in Late Colonial Punjab* (16 April 2014)
 - *Hindu Consciousness and Writing of History in Early Twentieth Century* (25 April 2014)
2. Professor T S Saraswathi, former Professor, Human Development and Family Studies, Maharaja Sayajirao, University of Baroda gave following lectures:
 - *Ecology of adolescence in India: Kaleidoscopic images* (09 June 2014)
 - *Culture and development: Implications for psychology in India* on 17 June 2014
 - *Construction of Landscapes of Knowledge: At Multi Levels with Multiple Methods* (27 June 2014)
3. Professor Bhushan Patwardhan, Professor and Director, Interdisciplinary School of Health Sciences, University of Pune, Pune gave following lectures:
 - Concepts of health and wellness (09 July 2014)
 - Concepts of diseases and therapeutics (18 July 2014)
 - Integrative approaches for future healthcare (23 July 2014)
4. Professor Joseph Prabhu, Professor of Philosophy, California State University, LA gave following lectures:
 - Human Rights in Cross-Cultural Perspective (24 July 2014)
 - Gandhi's Religious Ethics as Touchstone (05 August 2014)
 - Hermeneutics After Hegel (12 August 2014)
5. Professor Elisabetta Basile, Professor of Applied Economics, Department of Economics and Law, University of Rome La Sapienza gave following lecture:
 - *A Heterodox Analysis of Capitalism. Insights from a Market Town in South India after the Green Revolution* (23 September 2014)

G. VISITING SCHOLARS

1. Shri Anil Zankar, Pune delivered a lecture on:
 - *Chronicling the City Through Cinema* (11 April 2014)

2. Shri Sadanand Menon, Chennai delivered a lecture on:
 - *Visualising Identity: The Cultural Politics of Dravidian Nationalism* (12 May 2014)
3. Dr. G.S. Pandey, Ujjain delivered a lecture on:
 - *Modernity in Mathematics* (16 May 2014)
4. Professor Gopal Guru, Jawaharlal Nehru University, New Delhi delivered a lecture on:
 - *Representation: Norms, Exception and Exclusion* (16 June 2014)
5. Professor S.R. Mehta, Panchkula delivered a lecture on:
 - *Conflict Resolution in the Indian Civil Society* (18 June 2014)
6. Professor Binita Desai, Dhirubhai Ambani Institute of Information Technology, Gandhi Nagar, Gujarat. Professor Desai was invited to the Institute for providing specialized concepts on the design requirements of the IIAS Golden Jubilee celebrations.
7. Professor Frederick M. Smith, Professor of Sanskrit and Classical Indian Religions, University of Iowa, U.S.A. delivered lecture on:
 - *Is it Possible to Translate the Mahabharata?* (01 July 2014)
8. Professor Osmund Bopearachchi, CNR's-ENS. UMR8546, Archaeologies d'Orient et d'Occident, 45 rue d'ulm, 75005, Paris, France delivered lecture on:
 - *Dionysius, the God of Fertility and Wine, in India: the Greek Interaction with Gandhâran Buddhist Art* (30 July 2014)
9. Dr. Anup Kumar, School of Communication, Cleveland State University, USA delivered lecture on:
 - *Demystifying Media Effects: Politics-Media-Politics Cycle and Competitive Symbiosis on Prime Time TV News Panel Shows* (11 August 2014)
10. Professor José Manuel Mendes, Centre for Social Studies, University of Coimbra, Portugal delivered lecture on:
 - *'Media, Citizenship and Extreme Events: the Possibility of Alternative Grammars'* (29 September 2014)
11. Professor Birendra Nath Datta Professor Birendra Nath Datta, 104 GNB Road, Chandrabala Baruah Lane, Silpukhuri, Guwahati delivered lecture on:
 - *'Aspects of the Cultural Heritage of Assam from the Ancient to the Medieval Times with Special Focus on the Performing Arts'* (12 November 2014)
13. Dr. Sudha Vasan, Associate Professor, Department of Sociology, Delhi School of Economics, University of Delhi, Delhi delivered lecture on:

- *'Changing Ruralities in Himachal Pradesh and Implications for Climate Change'* (21 November 2014)

H. GUEST FELLOWS:

1. Professor Bettina Baeumer, Director, Abhinavagupta Research Library, Varanasi delivered a lecture on:
 - *The Third Eye and Overcoming Death: Insights from the Netra Tantra* (13 May 2014)
2. Professor Tridip Suhrud, Preservation & Memorial Trust and Chief Editor, Gandhi Heritage Portal Gandhi Ashram, Sabarmati, Ashram Road, Ahmedabad
 - Submitted a report to the Institute on the work of translation of Mahatma Gandhi's letters that he undertook during his stay.
3. Professor Arindam Chakrabarti, University of Hawaii, USA. He delivered a lecture on:
 - *Duhkha: Towards a Moral Metaphysics of Misery* (25 June 2014)
4. Dr. Sunera Thobani, Institute for Gender, Race, Sexuality and Social Justice at the University of British Columbia, Canada delivered a lecture on:
 - *Stress Position: The Racialization of Muslims in the War on Terror* (02 July 2014)
5. Dr. Kanchana C.V. Natarajan, 237A, Pocket A, Mayur Vihar, Phase II, Delhi delivered lecture on:
 - *Playing the Metaphysical "Game": Avudai Akkal Panchikarana Kattam (the squares of Panchikarana)* (08 August 2014)
6. Professor Medha Deshpande, Department of Economics, SNDT Women University, Mumbai delivered lecture on:
 - *Do Income Poverty and Multidimensional Poverty Coincide? A Study of Migrants in Pune City* (10 October 2014)
7. Professor R. N. Misra, Retired Professor and a Former Fellow of the Institute delivered lecture on:
 - *'Ascendant Ascetics in Woodland Habitats (Central India, 7th-13 Century CE)'* (18 November 2014)

I. SEMINARS ORGNISED UNDER IUC SCHEME

1. School on the “Natyasastra” from 26 August to 07 September 2014

Rationale: Nāṭyaśāstra, ascribed to Bharata or Bharatamuni is the oldest and the most voluminous treatise on nāṭya (Dramaturgy and Theatre). Compiled around the second century BC, the Nāṭyaśāstra is a work of truly encyclopedic nature, and also deals with various allied disciplines and a wide range of subjects like music and musicology, aesthetics and architecture etc. It is composed in verse-form and comprises around 6,000 stanzas in 37 chapters. The discovery of the manuscripts of the Nāṭyaśāstra and the subsequent publication of the text during the nineteenth century has been one of the most important events in the history of aesthetics and theatre.

The Nāṭyaśāstra has served as an authentic source book for the traditions of performing and literary arts and aesthetic theories in India for the past two millennia. With a pluralistic approach that has offered scope for multiple interpretations, it also gave rise to a dynamic process of interplay between theory and practice, and to interaction between diverse streams of Indian theatre. The text has also initiated a unique process of continuity and change in traditional Indian forms of theatre and has helped in the sustenance of regional theatric traditions not only in India, but in the theatric traditions of other Asian countries as well. On the other hand, the interaction between the Nāṭyaśāstra and regional theatres of India has not simply been a one way affair. The regional theatric traditions, it is very likely, have contributed considerably towards restructuring of the text of the Nāṭyaśāstra.

School on the “*Natyasastra*” was organized at IAS during 26 August to 07 September 2014. Professor Radhavallabh Tripathi, National Fellow, IAS was the Convener of the school. The Welcome Address was given by Professor Chetan Singh, Director, IAS, Shimla. Professor Radhavallabh Tripathi, Convener of the school gave Introduction Introductory Remarks.

Participants:

- Professor Mahesh Champaklal, Retired Professor of Drama, MS University of Baroda
- Professor Rajendra Mishra, (Ex. V.C.) Professor & Head, Himachal Pradesh University
- Mr. Shivankar Pathak, B4/7A, Hanuman Ghat, Varanasi (U.P.)
- Mr. Ajay Kumar Saroj, Gorakh Pandey Hostel, *Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya*, wardha, Maharashtra
- Mr. Bhumikeshwar Singh, Gyankhand, Indirapuram, Ghaziabad
- Ms. Akhila Vimal C, School of Arts and Aesthetics, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Dr. Praveen Bhole, Lalit Kala Kendra, University of Pune, Pune

- Dr. Vidyanand Jha, IIM, Calcutta, Joka, D.H. Road, Kolkata
- Professor Rajesh Joshi, National Fellow, IAS
- Mr. Om Bhutkar, SP College, Pune
- Mr. Dharmakirti Sumant, Pune University, Pune
- Mr. Ravindra Mundhe, Dramatics & Films Studies, MGAHY Wardha
- Mr. Manoj Mishra, Department of Indian Theatre, Panjab University, Chandigarh
- Ms. Sujata Mohan, Padmashree Nrithyalaya, Mandaveli, Chennai
- Ms. Sonal Nimbkar, Centre for Exact Humanities International Institute of Information Technology, Gachibowli, Hyderabad
- Mr. Himanshu Dwivedi, Department of Indian Theatre, Panjab University, Chandigarh
- Ms. P. Medini Hombal, Bharatanatyam, Indira Kala Sangit Vishwavidyalaya, Khairagarh
- Dr. A. Sri Mahalakshmi, Chandanagar, Hyderabad
- Ms. Pratichi Mahapatra, Centre for Historical Studies, Jawaharlal Nehru University New Delhi
- Mr. Manish Kumar, Pondicherry University, Kalapet Puducherry
- Dr. Neeraj Upadhyay, School & Department of Performing Arts, Pondicherry University, Puducherry
- Dr. Shakir Tesnim, Centre for Performing Arts, Central University of Tharkhand, Brambe, Ranchi
- Dr. Rishabh Bharadwaj, MRC, Department of Sanskrit, Dr. H.S. Gaur University, Sager (M.P.)
- Professor K.S. Rajendran, Formerly National School of Drama, New Delhi
- Professor Radhavallabh Tripathi, Fellow, IAS
- Dr. Gautam Chatterjee, President, Abhinavagupta Academy, Mahmusganj, Varanasi

Participants made presentations on the following theme during the School:

- Radhavallabh Tripathi: *Reading NS Chapter I*
- Rajendra Mishra: *Special Lecture on NS*
- Sri Mahalashmi: *Nāṭyaśāstra as Pañcamaveda*
- Akhil Vimal: *Pañcamaveda, heterogeneity and the problematic of spectatorship of Asura*

and Śūdras

- Radhavallabh Tripathi: Reading NS Chapter II, III & V
- KS Rajendran: *NS Chapter VIII-IX and Abhinaya on Modern Stage Lecture*
- Bhumikesh Singh: *Experimenting with Bhasa through Chhau*

Lecture-cum-Demonstrations/dance performances

- B.K. Singh and Pratibha Singh: *Abhinaya in Sanskrit Theatre – Applications of Chhau* – Sonal Nimkar: *Bharatanatyam*
- Radhavallabh Tripathi: *Reading NS Chapter VI*
- KS Rajendran: *NS and Chapter X and Abhinaya on Modern Stage*
- Bhumikesh Singh: *Sanskrit Drama and Regional Theatres*
- Radhavallabh Tripathi: *Reading NS Chapter VII*
- KS Rajendran: *NS Chapter XI and Abhinaya on Modern Stage*
- Screening of Kalivesham: Sanskrit Play directed by Padmabhushan Kavalam N. Pannikar CD production
- Radhavallabh Tripathi: *Reading NS Chapter XIII*
- KS Rajendran: *NS Chapter XII-XIII and Abhinaya on Modern Stage*
- Presentation by Sangeeta Gundecha: The relation of *Vedpath* with contemporary Theatre & Music in special reference to K.N. Panikkar's theatre and Dhrupad music of Dagar Vani
- Radhavallabh Tripathi: *Reading NS Chapter XIV-XV*
- KS Rajendran: *NS Chapter XXI, XXV and Abhinaya on Modern Stage*
- Presentation by Praveen Bhole: *Cognitive Neuroscience in Abhinaya as described in Natyashastra: An Initial Hypothesis*

Lecture-cum- Demonstrations/dance performances

- Sujata Mohan: *Bharatanatyam*
- Medini Hombal: *Bharatanatyam*
- Radhavallabh Tripathi: *Reading NS Chapter XVI-XVII*
- Mahesh Champaklal: *Sanskrit Theatre in Our Times Lecture*
- Bhavas in the *Natyashastra*: Lecture by Gautam Chatterji

- Radhavallabh Tripathi: *Reading NS Chapter XVIII, IXX*
- Sanskrit Theatre in Our Times: Lecture by Mahesh Champaklal
- Lecture by Gautam Chatterji
- Preview of the Film on *Natyashastra* produced by Gautam Chatterjee
- Radhavallabh Tripathi: *Reading NS Chapter XX, XXIII, XXIV*
- Sanskrit Theatre in Our Times: Lecture by Mahesh Champaklal
- Lecture by Gautam Chatterji
- Praveen Bhole: *Principles of Theatre Anthropology and the technique of Abhinaya in Sanskrit plays*
- Radhavallabh Tripathi: *Reading NS Chapter XXVI-XXVII*
- Bharat Gupt: *I Lecture on Music in the NS: Reading Chapter XXVIII- XXXIV*
- Radhavallabh Tripathi: *Reading NS Chapter XXXV- XXXVI*
- Bharat Gupt: *II Lecture on Music in the NS: Reading Chapter XXVIII-XXXIV*
- Radhavallabh Tripathi: *Reading NS Chapter*
- Bharat Gupt: *III Lecture on Music in the NS: Reading Chapter XXVIII-XXXIV*
- Radhavallabh Tripathi: *Reading NS Chapter XXXVII*
- Bharat Gupt: *IV Lecture on Music in the NS: Reading Chapter XXVIII*

2. A Winter School on “Life and Thought of Gandhī” (01-15 December 2014)

Rationale: Over the last three decades the scholastic, intellectual, political and social interests in Gandhiji’s life and thought has acquired a new urgency and depth. Gandhiji’s writings like *An Autobiography Or The Story of My Experiments with Truth* and *Hind Swaraj* have been subject of minute textual, philosophical and literary studies. The theory and practice of Satyagraha, constructive work and the institutions that Gandhiji established have come to be studied by historians, political theorists and commentators and chroniclers of social movements. Lives of Gandhiji’s associates and interlocutors like Mahadev Desai, J C Kumarrapa, Mirabehn, C F Andrews and Lanza Del Vasto have added to our understanding of Gandhiji. As a result of these studies our understanding of *Gandhiana* has emerged deeper, richer and nuanced.

The Winter School seeks to acquaint the participant to this variegated intellectual tradition of thinking of and about Gandhiji. The School would seek to provide a non-fragmentary understanding of Gandhiji’s life and thought. Quite often we have come to look at political Gandhi as quite distinct from the Gandhi of the constructive work or see Gandhiji’s spiritual quest as

distinct from his quest for Swaraj. The School would try to unravel the underlying relationship between seemingly disparate practices, utterances and writings.

A Winter School on “*Life and Thought of Gandhi*” was organized at IAS from 01 December to 15 December 2014. Professor Tridip Suhrud, Director, Sabarmati Ashram, Preservation and Memorial Trust and Chief Editor, Gandhi Heritage Portal, Gandhi Ashram, Ahmedabad was the Convener of the School. Professor Chetan Singh, Director, IAS gave the welcome address and Professor Tridip Suhrud gave introductory remarks.

Participants:

- Ms. Amrita Mondal, Centre for Historical Studies, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Shri Ankit Chadha, Pant Nagar near Jangpura, New Delhi
- Ms. D. Jennifer, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Ms. Ektaa Jain, Centre for the Study of Social Sciences, School of Social Sciences, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Ms. Harshika Varma, Jaipur National University, SADTM Campus, Jagatpura, Jaipur
- Ms. Jayanti Sahoo, Ravenshaw University, Cuttack, Odisha
- Ms. Megha Todi, Todi House, Jyoti Nagar, Dibrugarh, Assam
- Ms. Mrunal Panchal, School of Architecture, CEPT University, Ahmedabad
- Ms. Mudita Vidrohi, Gujarat Vidyapith, Ahmedabad
- Ms. Priyanka Banerjee, Centre for Political Studies, School of Social Sciences, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Shri Shyno Baby Paul, Sabarmati Gandhi Sangralaya Ashram, Ahmedabad
- Shri Rakesh Kumar Dubey, Central University of Orissa, Centre for Journalism & Mass Communication
- Dr. Varsha Ganguly, Fellow, IAS
- Ms. Jaya Singh, Department of English and MEL, University of Allahabad, U.P.
- Mr. Debashish Mitra, F.C. College, Diamond Harbour, West Bengal

3. National Seminar on “Cultural Ecology of the Brahmaputra” (08-09 March 2015)

Rationale: What is the role of rivers and especially the Brahmaputra in the modern history of the North-eastern region and its neighbourhood? How does a river shape destiny of a surrounding landscape? How do humans and non-humans adapt to a river and its environment? We know that rivers have been essential to the foundation, growth, prosperity, development of human societies

and the rise and ebb of civilisations everywhere around the world. Humans have considerably altered rivers and created their own hydraulic regimes. Humans and rivers across the world form a symbiotic—and sometimes mutually destructive—relationship. Rivers also illustrate the limits of human authority and that their capacity to inspire humans is as strong as humans' ability to pollute them. Rivers perform a variety of fundamental functions for the human civilisations, providing transport, energy, food, drinking water, a place for aquatic life as well as music, song, and dance forms which have enriched generations over the centuries and provided livelihoods, renewed cultural thought and practice as well as provided creative opportunities for intellectual engagement.

Rivers also have a social life. A river acts as a site of pilgrimage, becomes a symbol of cultural identity, and acts as a marker of territorial identity. Rivers have inspired humans to imagine and dream.

The conference examines the place of Brahmaputra in the history of India and explores the complex links between history, culture, and ecology. It looks at the above questions from a deep, cultural perspective – recognising the nuances of social diversity, and interdependence that the river and its tributaries might have nurtured over centuries. Not something that is too instrumentalist, technology driven and restricts itself entirely to issues like flood control, power, dams and similar 'engineering solutions' and the responses thereof. The crucial entwining of culture and ecology, and a recognition that it might be sometimes difficult to distinguish between the two, is key. While technology cannot be wished away, it is on the meshing of future and ecology that the conference seeks to focus. In reality that often it is not possible to divide the latter for they are perhaps joined at birth.

The National Seminar on "*Cultural Ecology of the Brahmaputra*" was organized on 08-09 March 2015 by the IIAS at IIT Gauhati in collaboration with Centre for North East Studies and Policy Research (CNESPR), Jamia Milia Islamia, New Delhi and Department of Humanities and Social Sciences, Indian Institute of Technology, Guwahati. Professor Sanjoy Hazarika, Director, Centre for North East Studies and Policy Research, Jamia Millia Islamia, New Delhi and Dr. Arupjyoti Saikia, Head, Department of Humanities and Social Sciences, Indian Institute of Technology, Guwahati were the Conveners of the seminar. The opening remarks were given by Professor Chetan Singh, Director, IIAS, Shimla. Professor Sanjoy Hazarika, Convener of the seminar and Dr. Arupjyoti Saikia, Co-convener of the seminar introduced the theme of the seminar. Professor Jayanta Bandyopadhyay, Professor Emeritus, Jawaharlal Nehru University delivered the keynote address.

Participants:

- Dr. Arupjyoti Saikia, Indian Institute of Technology, Guwahati
- Dr. Navarun Varma, TERI, India Habitat Centre, New Delhi
- Ms. Stutirekha Basumatary, Indian Institute of Technology, Guwahati
- Ms. Mizinksha Daimari, Indian Institute of Technology, Guwahati
- Mr. Halim Hussain, Indian Institute of Technology, Guwahati
- Professor Archana Barua, Indian Institute of Technology, Guwahati
- Professor Chandan Mahanta, Indian Institute of Technology, Guwahati
- Mr. Asheesh Ranshan Srivastava, Indian Institute of Technology, Guwahati
- Mr. Anirudha V. Mahagaonkar, Indian Institute of Technology, Guwahati
- Professor Sanjoy Hazarika, Centre for North East Studies & Policy Research, Jamia Millia Islamia, New Delhi
- Professor Abani Kumar Bhagabati, Guwahati University
- Dr. Nityananda Deka, Department of Geography, Guwahati University
- Dr. Mayur Bawri, Guwahati University
- Ms. Sawmya Ray, Department of Humanities & Social Sciences, Indian Institute of Technology, Guwahati
- Dr. John Thomas, Department of Humanities & Social Sciences, Indian Institute of Technology, Guwahati
- Mr. Arup Kumar Dutta, Writer, Guwahati
- Dr. A.C. Bhagabati, Retired Professor of Anthropology, Guwahati University and Ex- VC Rajiv Gandhi University, Itanagar
- Ms. Upasana Devi, Indian Institute of Technology, Guwahati
- Ms. Arati Kumar Rao, Photographer, Bangalore
- Dr. Narayan Sharma, Nature Conservation Foundation, Mysore
- Professor Jayanta Bandyopadhyay, Jawaharlal Nehru University, New Delhi
- Dr. Mridusmita Mahanta, Department of English, Sonapur College, Sonapur
- Dr. Bibhash Choudhury, Department of English, Guwahati University, Guwahati
- Dr. Shantana Saikia, Bahona College, Jorhat
- Adv. Shawahiq Siddiqui, Supreme Court of India, New Delhi
- Ms. Suparana Katyaini, Department of HSS, Indian Institute of Technology, Guwahati

Participants made presentations on the following themes during the seminar:

Session I

The Governed Life of Brahmaputra

Adv. Shawahiq Siddiqui: *Ecology, Culture, Development: A Contested Nexus and the Regulatory Response to it*

Dr. Navarun Verma: *Discourses, Narratives and Purposeful Action- Case of 'Breach-Maintainance' Dynamics of Sissirkolghor-Tekeliphuta Embankment in North Bank of Upper Brahmaputra Valley*

Session II

Performing the Brahmaputra

Dr. Mridusmita Mahanta: *A Structural Analysis of the Myths on the Brahmaputra from Kalika Purana*

Dr. Santana Saolao: *Brahmaputra in Sattra Lore and Social Practice*

Dr. Bibhash Choudhury: *Verses the River Wrought: Brahmaputra in Modern Assamese Poetry*

Documentary on the Cultural Life of the Brahmaputra

Session III

Framing the Brahmaputra

Professor Sanjoy Hazarika: *Reflections, Journeys*

Ms. Arti Kumar Rao: *The Delusion of Dykes*

Professor Chandan Mahanta: *Healthy Luit-Happy Axom*

Session IV

The Other Lives of Brahmaputra

Professor Abani Bhagabati: *The Brahmaputra Riverine Tracts in Assam: Landscape Change and Environmental Issues*

Dr. Narayan Sharma: *Over One Hundred Years of Solitude: Ecological History of the Primates, People and Forests of the Hollongapar Gibbon Sanctuary, Upper Brahmaputra Valley, Assam*

Dr. Arupjyoti Saikia: *Imagining Brahmaputra: A River into the Cartographer's Grid, 1730s-1794*

J. SEMINARS BY ASSOCIATES

The IIAS acts as the Inter-University Centre (IUC) for Humanities and Social Sciences on behalf of the University Grants Commission. The Centre invites serving teachers from the Universities and colleges in the country to spend three months for three consecutive years at the Centre to: (a) complete a piece of writing that they might at the time be engaged in; (b) revise their doctoral work for publication; (c) make use of the library facilities of the Institute; and (d) interact with Fellows of the Institute and Visiting Professors and Visiting Scholars from India and abroad who come to the Institute. The Associates also take part in the seminars and conferences, both national and international, which are among the regular activities of the Institute. Apart from their own work, the Associates are also expected to participate in all the academic activities of the Institute. They are required to give at least one presentation during their stay at the Centre. It is, however, optional for Associates to submit their research paper to the Institute for publication in the Institute's journals. The Associates who visited the Institute during the period under report gave their presentations as follows:

April

- Dr. Rikhi R. Kondal (Bilaspur): *Acceleration of Agricultural Development for Inclusive Economic Growth: Issues and Policy Options* (24 April 2014)
- Dr. Kishore Kumar Das (Cuttack): *A Study of Business Ethics through Different Aspects of Life: An Overview* (24 April 2014)
- Dr. Sanjay Kumar (Hamirpur): *Physico-Cultural Environment of Kunah Khad Watershed* (24 April 2014)
- Shri Jagvir Singh Chandel (Bilaspur): *GIS Based Network Analysis for Tourist Destinations: A Case Study for Shimla City, Himachal Pradesh* (24 April 2014)
- Dr. Subir Biswas (Kolkata): *Ethics in Anthropological Research: Responsibilities to the Participants* (25 April 2014)
- Dr. Shail Kumari (Muzaffarpur): *Bhartiya Sutradhar mein Yatharthvad aur Vishleshan ki Padhti ka Veshishtya* (25 April 2014)
- Dr. Avinash Pandey (Mumbai): *Right to Education Act (RTE) & the Future of Our Languages* (25 April 2014)
- Dr. Ravindra Mhasade (Pune): *Reflection of Dalit Aesthetics in Namdeo Dhasal's Poetry* (28 April 2014)
- Shri Melwyn Pinto (Bangalore): *Subaltern Reading of Film: With Special Reference to Marathi New Wave* (28 April 2014)
- Dr. Satappa Lahu Chavan (Ahmednagar): *Hindi ke Vikas mein Web Media evam Naye Jansanchar Madhyam ka Yogdan* (28 April 2014)

- Dr. Uttam B Sonkamble (Maharashtra): *Optimism in Africa with Reference to Smith's Motswana and Fiction: A Reinterpretation* (29 April 2014)
- Dr. S. Chinna Reddaiah (Kuppam): *Annamaiah, The Legend of Sankeerthana Literature- A Study* (29 April 2014)
- Mr. S. Karthick (Tamil Nadu): *A Comparative Study of the Prologues fo Inferno by Dante and Dan-Brown* (29 April 2014)
- Dr. Sahdev Luhar (Gujarat): *Alternative Literary Canon: Its Need and Functions in the Present Times* (29 April 2014)

May

- Dr .V. Vinod Kumar (Tamilnadu): *New Historicist Reading of Kamba Ramayan* (15 May 2014)
- Dr. Akshaya K. Rath (Odisha): *Domesticating Penal Libido: Andaman and it Empire* (15 May 2014)
- Professor Vijay Prakash Singh (Lucknow): *Burma: From the Land of Golden Pagoda to a Land of Tyranny* (15 May 2014)
- Dr. Putul Sathe (Mumbai): *Ethnography of the Marginalized Self: Reading of Dalit Women Autobiographies* (15 May 2014)
- Mr. Rama Kanta Singh (Odisha): *Portrayal of Realism in Lal Behari Day's Bengal Peasant Life and Fakirmohan Senapati's Chha Mana Attha Guntha* (19 May 2014)
- Dr. B. M. Ladgaonkar (Kolhapur) : *Shakespeare, Othello- Writing and His Inclination* (19 May 2014)
- Mr. Kumar Virendra Singh (Jharkhand): *Adivasi Vimarsh: Astitva aur Asmita ki Talash* (19 May 2014)
- Dr. Abhisek Kumar (Tamil Nadu): *Beauty and the Beast of Philosophy in Marketing* (19 May 2014)
- Dr. Anup Kumar Mohanty (Odisha): *Forest Policy & Tribal Livelihood* (20 May 2014)
- Dr. Narendra K Behera (Odisha): *Circular Migration: A Reflection from KBK Districts in Odisha* (20 May 2014)
- Dr. Uma Sankar Prasad Patra (Orissa): *Tsunami of Reform- FDI in Multi- Brand Retailing in India* (20 May 2014)
- Dr. D. Venkata Ram (Andhra Pradesh): *Impact of the Agrarian Struggles on the Tribal Development of Telengana: A Case Study of Tribals Areas of Adilabad District of A.P.* (20 May 2014)

- Dr. Amulya K Tripathy (Odisha): *Indo-US Counter Terrorism Cooperation: Some Reflections* (21 May 2014)
- Mr. Pratip Chattopadhyaya (West Bengal): *Politics of Confrontation?: India's Policy to United States and Marxist Political Parties* (21 May 2014)
- Ms. Jummyr Basar (Arunachal Pradesh): *Inking the Body-The Art of Tattooing among the Tribes in Arunachal Pradesh* (21 May 2014)
- Dr. Mumtaz Begum (Pondicherry): *Inclusive Education Practices in India* (21 May 2014)
- Mr. Sanjay Kumar (Kolkata): *Building Contracts and Levy of VAT- Is There Any Alternative?* (22 May 2014)
- Dr. T.H. Vaghera (Gujarat): *Untouchability in Rural Saurashtra and Problems of Dalits* (22 May 2014)
- Dr. Namrata M (Shankaraghatta): *The Transformation of Gender Relations and the Rise of Romantic Drama in Ancient India* (22 May 2014)

June

- Dr. Hamda Zarin (U.P.): *Status of Women in Islam: A Psychological Perspective* (16 June 2014)
- Dr. Rajeshwar Prasad Yadav (Lucknow): *Manav Chetna ka Atinaitik Yatharth (Acharya Rajneesh ki Vishesh Dristi mein)* (16 June 2014)
- Dr. Upasana Pandey (Varanasi): *Debating Liberal Democracy and Gandhi* (16 June 2014)
- Shri Ranvir Singh (Orissa): *Antiquity of Smoking Tradition in Western Orissa: An Archaeological Investigation* (16 June 2014)
- Dr. Sunil Kumar Singh (Hajipur): *Shaankar Vedant mein Natikta ka Sthan* (17 June 2014)
- Dr. Ramesh Dhar Dwivedi (Varanasi): *Status of Higher Education in India: An Analysis* (17 June 2014)
- Dr. Hitendra K. Patel (Kolkata): *Hindu Nationalism/ Communalism before 'Hindutva': Some Reflections* (17 June 2014)
- Dr. Vishwanath Mishra (Varanasi): *Mahatma Gandhi ka Sabhyata Vimarsh* (17 June 2014)
- Dr. Jyoti Pandey Sharma ((Haryana): *Revisiting the Darya (River) Urbanism in the Delhi Triangle: The Urbanization of the Yamuna in the Badshahi Shahar, Shahjahanabad* (18 June 2014)
- Dr. Sudha Sahgal (Agra): *Raga- Dynamics and Psychomusicological Perspectives: A Critical Study with Reference to Morining Ragas* (18 June 2014)

- Dr. Arti Nirmal (Varanasi): *Landscaping the Past and the Present: Naga Consciousness in the Poetry of Easterine Kire Iralu* (18 June 2014)
- Dr. Sharmila Chhotaray (Tripura): *Cultural Politics of Popular Performance: Structure & Representation of Odia Jatra: A Book Proposal* (18 June 2014)
- Dr. Anil Kumar (Bihar): *Darshan ki Prasangikta: Vartman Sandarabh mein* (19 June 2014)
- Dr. B. Madan Mohan (Haryana): *Sirmour Kshetra ka Samajik Sanskritik Adhayayan* (19 June 2014)
- Ms. Bharti Arora (New Delhi): *Globlised world and Mournful Nation: A Reading of Alka Saraogi's Kalikatha: Via by-Pass* (19 June 2014)
- Dr. Manbendu Pathak (Pune): *Fifty Years after the 1962 Debacle- A Critical Analysis* (19 June 2014)
- Dr. Nirmal Kumar Swain (Rohtak): *Teaching Avoiding Plagiarism* (20 June 2014)
- Dr. Deepa Kansra (New Delhi): *The Idea of Fraternity in Contemporary Law and Politics* (20 June 2014)
- Dr. P.G. Arul (Pondicherry): *Developing Employability Skill among Students through Community Colleges- Opportunities, Challenges & Concerns* (20 June 2014)
- Dr. R. Kalyanaraman: *A Retrial Queueing System with two Types of Batch Arrivals and with Same Service time Distribution* (20 June 2014)

July

- Dr. Pankaj Parashar (U.P.): *Communalism: Ideology & Historical Context* (16 July 2014)
- Dr. Mahendra Singh Saini (Haryana): *Emergence of BRICS and Global Order* (16 July 2014)
- Dr. S. Ramdoss (Chennai): *Violence in Temples of Learning: Ragging in Institutions of Higher Education- An Overview of Causes and Consequences* (16 July 2014)
- Dr. Bahadur Singh Parmar (M.P.): *Bundelkhand mein Swatantrata Sangram ka Pahla Daur* (16 July 2014)
- Shri Patitapaban Das (Odisha): *Contextual Moral Justification: A Search for Method in Medical Ethics* (16 July 2014)

August

- Dr. Jahnabi Gogoi Nath (Assam): *State, Religion and Gender: Changing Pattern of Patriarchy in Medieval Assam* (25 August 2014)
- Dr. Vinod Kumar Vishwakarma (M.P.): *Uttar Aadunik Samaya mein Adivasi Vimarsh ke Samajik Nihitharth* (25 August 2014)

- Dr. Indu Swami (Assam): *Relevance of Mainstream Indian Feminism to North-East India* (25 August 2014)

September

- Dr. Vinod Kumar (Delhi): *Behavioural Finance- An Explanation to Subprime Crisis of the World* (22 September 2014)
- Dr. Padam Kumar Jain (M.P.): *Dynamics of Interpersonal Relations in 'Where There's A Will'* (22 September 2014)
- Dr. Ningthoujam Irina (Mizoram): *Informal Governance and Community Institution in North-East India: Its Possibilities and Limitation* (22 September 2014)
- Dr. Suryakant Nath (Maharashtra.): *India-Bhutan Relations: The Way Ahead* (22 September 2014)
- Dr. Anil Kumar Jha (M.P.): *Conceptions of Marital Quality in Mithila (North Bihar), India: A Study in Cultural Geography* (23 September 2014)
- Dr. J.S. Dubey (M.P.): *Osho ki Tarkana Padhati* (23 September 2014)
- Dr. Uttara Yadav (Lucknow): *Manaviya Priprekshya mein Gautam Buddha ka ek Samajshashtriya Adhayan (Dukha ka Karan aur Nivaran: Buddha ka Aacharan Dunia mein Sadacharan)* (23 September 2014)
- Dr. Anirban Mukherjee (Siliguri): *The Idea of the 'Middle Way' in Madhyamaka Philosophy* (23 September 2014)
- Dr. Ashwani Kumar (New Delhi): *Hindi Patrikayon ke 'Dalit Sahitya Visheshankon' ka Dalit Vimarsh: Ek Adhayan* (24 September 2014)
- Dr. Laxmikant Chandela (M.P.): *Samkalin Kavita mein Lok ki Dharti aur Jivan (Prakritik Upadanon ke Vishesh Sandharbh mein)* (24 September 2014)
- Dr. Ravendra Kumar Sahu (M.P.): *Vashvikaran ke Pariprekshya mein 'Bagheli Lokgeeton' ki Prasangikta* (24 September 2014)
- Dr. Prabhat Mittal (Delhi): *Information flows between the U.S. and India Gold Futures Trading* (24 September 2014)

October

- Dr. Premakumara G.S. (Karnataka): *Energy Ecology and Sustainable Development: A Comparative Analysis* (15 October 2014)
- Dr. Payal Upadhyay (Rajasthan): *Changing Perception towards Motherhood: A Study of Surrogacy in India* (15 October 2014)

- Dr. Sunetra Mitra (Kolkata): *Pioneers to Professionals: Entrepreneurs of Colonial Bengali Theatre* (15 October 2014)
- Shri Ravi R. Shukla (Mumbai): *Positioning the Dalit Politics: BSP In General Elections of 2014* (16 October 2014)
- Dr. D. Surender Naik (U.P.): *Reservation: Boon or Bane?* (16 October 2014)
- Dr. Anil Kumar Vishwakarma (U.P.): *Abhivyakti ke Khatron Ka Kavi: Muktibodh* (16 October 2014)
- Dr. Sindu Antherjanam. D (Kerala): *Changing Rural Graphics and Feminist Readings in a Third World Locate: The Case of 'Aathi* (17 October 2014)
- Professor Simran Chadha (New Delhi): *'In My Father's House': Women Voices & the War in Sri Lanka* (17 October 2014)
- Dr. Vijay Sheshadri (Karnataka): *Re/Locating India: A Reading of Select Indian English Novels* (17 October 2014)

November

- Dr. Basavaraj S. Tallur (Karnataka): *God as Lover: A Study of Selected Vachanas of Akkamahadevi* (18 November 2014)
- Dr. Pulak Chandra Devnath (Mizoram): *Education of the Koch Rajbongshi in Dhubri District of Assam* (18 November 2014)
- Dr. G.P. Kapoor (Shimla): *Trends of Population in India* (18 November 2014)
- Dr. Dev Pathak (New Delhi): *Death of Death?: A Critical Exploration of An Alternative Paradigm* (19 November 2014)
- Dr. D.S. Somashekhar (Karnataka): *The Vanachetana at Heddur: A Unique Cultural & Environmental Experiment* (20 November 2014)
- Dr. Shreekant S. Jadhav (Pune): *Nagas & Nagarajas* (20 November 2014)
- Ms. Rachna Sethi (New Delhi): *Negotiating City Spaces: A Reading of Manju Kapur's Home* (20 November 2014)
- Mr. Vikram Bhardwaj (Mandi): *Folk Belief and Traditions of the Supernatural: A Case Study of Himachal Pradesh* (21 November 2014)
- Ms. Varsha Raman Malwade (Mumbai): *Dashaavatar: Then & Now* (21 November 2014)
- Dr. Shaizy Ahmed (Rajasthan): *Gender Inequality in India: A Rising Concern* (21 November 2014)
- Dr. Abha Khetarpal (Haryana): *Impact of Nutrition Education on the Health and Lipid Profile of Housewives* (21 November 2014)

March

- Dr. Amarendra Kumar Dash (Andhra Pradesh): *Gobal and Local Frames on Ecology and Sustainability: Interrogating the Rhetoric of a Denial and Disengagement* (23 March 2015)
- Dr. Ravinder Singh (New Delh): *Punjab. Punjabi Society and History* (23 March 2015)
- Dr. D.K. Singla (Patiala): *An Appraisal of Adultery under the Personal Law* (23 March 2015)
- Dr. Arun Kumar (U.P.): *Global Presence of India's Merger and Acquisition* (24 March 2015)
- Dr. Priyesh C.A. (Kerala): *Impacts of Land Rights, Community Initiatives and Opportunities on Domestic Violence – With Reference Nair Community and Syrian Christians of Kerala* (24 March 2015)
- Dr. Haresh H. Mehta (Gujarat): *Bhavai: Traditional Theatre of Gujarat* (24 March 2015)
- Dr. Shashikant Y. Sonawane 'Saawan' (Maharashtra): *A Study of Buddhist Adiwasi of Bhotia's folk culture in HP – In view of Primordiolity, Residence and Ornaments* (25 March 2015)
- Dr. Neena Arora (Shimla): *Revisiting Partition in Sindhi Fiction* (25 March 2015)
- Dr. Vinny Jain (U.P.): *Colonial Perceptions of Women in India and the Nationalist Response; Deconstructing Bankim's "Draupadi"* (25 March 2015)

K. OTHER PROGRAMMES

Professor Ved Prakash, Chairman, University Grants Commission delivered a special lecture on 'Higher Education in India in the Context of Globalization' on 7th April 2014 at the Institute.

Special lecture by Dr. Felix Padel from Anand (Gujarat), on the occasion of book release function of Dr. R. Uma Maheshwari book "*When Godavari Comes: People's History of a River (Journeys in the Zone of the Dispossessed)*" on 05 September 2014.

Dr. Bharat Gupt, (Former, Associate Professor), University of Delhi delivered lecture on "*Relationship between Ancient Indian and Greek Drama*" (11 September 2014)

Professor N. Mukunda, Professor Emeritus, Indian Institute of Science, Bangalore delivered a Special lecture on "*Science and the Human Predicament*" (17 March 2015)

1. Play: 'Avudai' at Old Gaiety (Gothic) Theatre, Shimla

At the beginning of the 50 year celebrations, and as part of its endeavor to reach out to the people of the town in which the Institute is located, a play based on a monograph researched at the IAS by Dr Kanchana Natarajan (Former Fellow, Department of Philosophy, Delhi University) was organized in Gaiety Theatre, Shimla in collaboration with the Department of Art, Languages

and Culture of the Government of Himachal Pradesh. The Director of the play and the actors were from the National School of Drama, New Delhi. Shri Abhilash Pillai was the Director of the Play and Shri Dilip Shankar, Ms. Seema Agrawal and Mr. Jijo K Mathew were the performers.

2. Poetry Reading Session

A poetry reading session was organized at the Institute on the day following the Tagore Memorial Lecture. Professor Meena Alexander, Professor Radhavallabh Tripathi, Shri Rajesh Joshi, Professor Sukrita Paul Kumar and Gulzar Sahib participated in the session and read their poems at the Pool Theatre (21 October 2014).

IV. PUBLICATIONS

The Institute has more than 525 publications to its credit. Through these publications, the Institute has acquired a status of its own in the academic world. The books published include monographs submitted by the Fellows, lectures by Visiting Professors, Visiting Scholars and proceedings of the seminars held at the Institute. The Institute has adopted a multi-pronged strategy for publications – it publishes on its own and has co-publication programme with leading publishers including Oxford University Press, SAGE, Orient Blackswan, Routledge, Aryan International etc. The Institute also brings out two bi-annual journals – Studies in Humanities and Social Sciences and Summerhill IIAS Review and a Hindi Journal Himanjali.

I. BOOKS PUBLISHED

The following publications were brought out during the period of report:

1. *Bringing Modernity Home: Marathi Literary Theory in the Nineteenth Century* by Dr. Prachi Gurjarpadhye
2. *The Challenges of Post Modernism* edited by Professor R.C. Pradhan
3. *Role of Mahatma Gandhi's Ideas in Social and Political Mobilization of Adivasis of Southern Rajputana Princely States (1921-48)* by Professor V.K. Vashishtha
4. *From Democratic Socialism to Neo-Liberalism: The Story of India's Democracy* by Dr. Ambrose Pinto SJ
5. *Kinship Structures and Foster Relations in Islamic Society: Milk Kinship Allegiance in the Mughal World* by Dr. Balkrishan Shivram
6. *The Quest for Indian Sociology: Radhakamal Mukherjee and Our Times* by Dr. Manish Thakur
7. *Recontextualizing Disciplines Three Lectures on Method* by Professor Sasheej Hegde

8. *Dialogics of Cultures in Ancient Indian Literatures* by Professor TRS Sharma
9. *Ageya ki Sahitya Mein Manushya Ki Niyati* by Dr. Ram Kamal Rai
10. *Freedom from Profit: Eschewing Copyright in Resistance Art* by Dr. Arjun Ghosh
11. *Mahabharata Now: Narration, Aesthetics, Ethics* edited by Professor Arindam Chakrabarti and Professor Sibaji Bandyopadhyay (Co-published with Routledge)
12. *From Hagiographies to Biographies: Ramanuja in Tradition and History* by Dr. Ranjeeta Dutta (Co-published with OUP)
13. *Channeling Cultures: Television Studies from India* edited by Dr. Biswarup Sen and Dr.. Abhijit Roy (Co-published with OUP)
14. *The Dussehra of Kulu: History and Analysis of a Cultural Phenomenon* by Professor Karuna Goswami (Co-published with Aryan Books International)
15. *Contestation and Compliance: Retrieving Women's 'Agency' from Pauranic Traditions* by Dr. Jaya Tyagi (Co-published with OUP)
16. *Troubled Diversity: The Political Process in Northeast India* edited by Professor Sandhya Goswami (Co-published with Oxford University Press)
17. *The Weight of Violence Religion, Language and Politics* edited by Dr. Saitya Brata Das and Dr. Soumyabrata Choudhury (Co-published with Oxford University Press)

II. JOURNALS

1. *Studies in Humanities and Social Sciences* Vol. XV, No. 1&2, 2008 Editor: Dr. Varsha Ganguly
2. *Studies in Humanities and Social Sciences* Vol. XVIII, No. 1&2, 2011 Editor: Dr. Varsha Ganguly
3. *Studies in Humanities and Social Sciences Special issue* "The Nation Unbound: India in the 1940s" Vol. XX, No. 2, 2013, Guest Editors: Professor Kavita Panjabi & Dr. V. Geetha
4. *Studies in Humanities and Social Sciences* Vol. XIV, No.1, 2007, General Editor: Professor B.L. Munekar
5. *Studies in Humanities and Social Sciences*, 'Ascertaining Certainty: Self and Cosmos' Vol. XX, No.1, 2013, Editor: Dr. Rahul Govind
6. Hindi Magazine *Himanjali* 9th edition
7. Hindi Magazine *Himanjali* 10th edition

V. SALES AND PUBLIC RELATIONS SECTION

The Rashtrapati Nivas is a center of attraction for the tourists visiting Shimla. As compared to the last financial year the number of tourists has increased by 8.6 per cent. During the period from 1 April 2014 to 31 March 2015 the Institute received 1, 69,597 tourists (1,61,024 domestic and 8,573 foreigners) as against 1, 56,060 tourists during 2013-14.

The income from the sale of entry tickets from tourists in the year of report has been Rs. 49,80,625.00 while tickets for entry of vehicles has been to the tune of Rs.4,60,580.00. Thus the total income from the sale of entry tickets during the year was Rs. 54,41,205.00.

Souvenir Shop: It was in the later part of the year 2009 that the Institute renovated the old fire station and two garages into a Souvenir-cum-book-cum-coffee shop. The Souvenir shop is running well and the facilities created by the Institute are very much appreciated by the visitors to the Institute. Souvenir items placed in the shop are also source of attraction for the visitors. During the period following souvenir items were sold: Booklet on the Viceregal Lodge (1481), Caps (456), Picture post cards (12816), Coffee mugs (1126), Sweat shirts (357), T-shirts (750), Greeting cards (406), Scarfs (24), and Calendars (125). The net profit from the sale of souvenirs was Rs.4, 32,802.00.

IIAS Book Shop: The IIAS book shop stock books from leading national and International publishers of the country such as Oxford, Orient Blackswan, Sage, Manohar, Taylor and Francis, Indus Publishing Company, Aryan Books International, Rajkamal Prakashan, Sahitya Akademi and Gandhi Smarak Sangrahalaya etc., besides having Institute's own publications. The Institute sold 658 books of these publishers during the period and the net income from the sale of books was Rs.77,870.00. Similarly the book shop has sold 999 books published by the Institute and has earned a sum of Rs.1, 32,758.00. In addition to this the Institute has sold 1876 books published by the Institute to out-station clients during the period and has earned Rs. 1, 88,281.00. Besides this, the Institute has also participated in A.C Joshi Library Book Fair, held at Chandigarh w.e.f 25-08-2014 to 29 -08-2014. The Institute has sold 312 books and net amount from the sale of books is Rs. 24, 800.00 (Rupees Twenty Four Thousand Eight Hundred Only) and also participated in 23rd World Book Fair held at New Delhi w.e.f 12-02-2015 to 21-02-2015. The Institute has sold 750 Books and net amount from the sale of books is Rs.53,296.00. Thus, the total sale of IIAS publications during this period was Rs. 3,99,135.00.

The Court Gallery is also an added attraction for the tourists. We have displayed about 40 rare photographs of Viceregal Lodge which were received by the Institute from Middlesex University and the Bowood Estate.

COFFEE SHOP

The Institute has started a Coffee Shop in its renovated building that housed the Fire Station. *Tea, Coffee, Snacks, Cold Drinks, Toasts, Sandwiches, Biscuits, Idli Sambhar* and other eatables are being served in the Café.

The Café is under the direct control and supervision of the Fellows' Mess/Canteen. Three persons have been engaged in the Café on contract basis.

Income and Expenditure Statement during the period under Report (April 2014 to March 2015) of the Café is as follows:

Months	Income (Rs.)	Expenditure (Rs.)	Excess of Income over expenditure (Rs.)
April	1,00,292.00	78,068.00	22,224.00
May	1,54,228.00	1,06,499.00	47,729.00
June	3,20,981.00	2,15,844.00	1,05,137.00
July	1,02,386.00	73,372.00	29,014.00
August	70,371.00	33,264.00	37,107.00
September	56,347.00	25,907.00	30,440.00
October	91,572.00	63,114.00	28,458.00
November	83,267.00	52,956.00	30,311.00
December	90,350.00	63,590.00	26,760.00
January	63,059.00	39,321.00	23,738.00
February	59,558.00	28,192.00	31,366.00
March	94,407.00	60,961.00	33,446.00
Total	1286818.00	841088.00	445730.00

The Institute has also been making efforts to increase the items to be served in the Café since it has been cheerfully accepted by the Tourists, Fellows, IUC Associates, Guests and the Employees of the Institute.

VI. LIBRARY

The Library of the Institute caters to the needs not only of its regular fellows but also invites the visiting Professors, Visiting Scholars, IUC Associates, consulting members and seminar participants etc. from all over the country. The Library regularly keeps its collection updated by purchasing the latest books and periodicals as per the recommendations of the selection committee constituted for the purpose.

For the last several years, the library has putting extra efforts to build up and update its collection in the area of Social Sciences and Humanities. During the last academic year, the

library acquired 3090 books and subscribed to 214 printed journals and periodicals. The library is fully computerized and the traditional circulation system has been replaced with a fully automated issue and returned system of library materials. Library catalogue is online. By using the internet, users can access library catalogue 24x7 hours from anywhere at any time. The library has enrolled 18 external members by charging membership fees; besides these 07 members were also allowed to consult library material for short periods, besides 1398 walk in users visited the library in 2014-15.

Library has developed a well-equipped and interconnected Digital Resource Centre which has round the clock access to a wealth of knowledge in digital form. It has access to a number of electronic resources, e.g. E-Books, E-Journals, Back volumes and electronic archives of major primary and commercial publishers. Library has received 449 books as a gift from different scholars which has been added into library collection.

VII. DISPENSARY

The Institute houses a well equipped dispensary with a Pharmacist for dispensing the medicines and a Resident Medical Officer who looks after the healthcare needs of Fellows, Associates and other residents of the Institute including employees and their families. About 3137 patients attended the dispensary during the period from 01.04.2014 to 31.03.2015. About 80 emergency visits were made by the R.M.O. during the said period.

VIII. SEXUAL HARASSMENT COMMITTEE

Ms. Trisha Sharma –an advocate and expert on Women’s issues, delivered a talk on various aspects of Sexual Harassment on 2nd of May 2014 in the Pool Theatre at the Institute.

Information regarding Sexual Harassment Committee has been uploaded on the website of the Institute.

Two new members Padamshree Dr. Bettina Baumer, who replaced Dr. Enakshi Mitra and Ms. Falma Chauhan from NGO have joined the committee.

Committee is happy to record that there was no complaint till date.

IX. OFFICIAL LANGUAGE

During the year under report following Initiatives were taken to promote and implementation of Official Language at the Institute:

Quarterly meetings of Official Language Implementation Committee: During the year regular quarterly meetings of Official Language Implementation Committee of the Institute were

organised and steps were taken to follow the guidelines of Department of Official Language, MHRD, Government of India regarding practical implementation of Hindi in official work.

Quarterly Workshops: The Institute organised quarterly workshops to promote and implementation of official language. Special lectures were delivered by the fellows and associates of the Institute. Furthermore, a collective workshop was organised at town level on 03 February 2015 with the collaboration of Town Official Language Implementation Committee, Shimla in which officers/ officials of various central government departments participated.

Hindi Divas/Week/Fortnight and Hindi Competition: The Institute celebrated Hindi Divas on 14 November 2014. The Fellows, Associates and officers/official of the Institute were present on this occasion. The Institute organised various Hindi competitions also in the month of November 2014. The Officials of the Institute participated with great enthusiasm.

Annual Prize Distribution: Annual Rajbhasha prize distribution function was held on 01-12-2014, and prizes were distributed by the Director of the Institute to the winners and participants of Hindi competitions. In addition under Incentive scheme for noting/drafting originally done in Hindi cash awards were also given to ten officers/officials of the Institute.

X. MAINTENANCE OF ESTATE

During the period under report, both wings of the CPWD, Civil as well as Electrical continued to attend the day-to-day maintenance work of the Institute. The major works that the Institute did during this period for the maintenance and upkeep of the Estate are given below:-

1. Conservation and Restoration of IAS Building.

The Institute has approached the Ministry of Human Resource Development, Higher Education with a request to provide and sanction the amount of Rs.56.00 Crore for special repair and restoration and conservation work of R.P. Nivas building. The Institute is thankful to the Ministry of HRD because recently Institute has received a grant of Rs.10.00 crore for restoration and conservation work of Phase-I as mentioned in the DPR prepared by the CPWD (Civil) for the purpose.

Accordingly, the CPWD (Civil) was requested to submit the cost estimate for the restoration work of Phase-I of R. P. Nivas, Shimla which has been received by the Institute amounting to Rs. 8,95,30,000.00 (Rupees eight crore, ninety five lacs, thirty thousand only). After according approval and financial sanctions the amount of Rs.5,00,00,000.00 (Rupees Five crore only) has been released to the CPWD (Civil) for further necessary action.

2. Archaeological Survey of India (ASI).

- a) The ASI has been requested to complete repair and restoration work pertaining to the arch shaped stone railing opposite to the Public Entry building at the Institute,

as the base land has slid a lot which should be uplifted by filling the required material to strengthen the structure of the Public entry building.

- b) The ASI has also been requested to submit its report regarding strengthening of the concrete slab in South-Western part of the main building as the slab has decayed due to seepage of water because green lawn has been maintained by laying mud on the slab since many years before. The Institute plan to restore the slab.
- c) The Institute has approved the estimate of Rs. 15,00,000/- submitted by ASI estimate cost for the work strengthening of roof adjoining to the Tagore Centre Corridor, Viceregal Lodge, R.P. Nivas, Shimla.

4. CPWD (CIVIL) WORKS.

- a) The Institute has approved the estimate of Rs. 23,85,730/- submitted by CPWD (Civil) for provision of disposal of melba and laying of stone floors for parking at the back side of the Main Building, R.P. Nivas, Shimla. The work is in progress.
- b) The Institute has approved the estimate of Rs. 36,66,670/- submitted by CPWD (Civil) for revised estimate of laying of Mandi/Riwalser stone at back side of Main Building and increasing of height of entrance of Gorkha Gate and provision of Shed to DG Set at back side and widening of stair steps near photo gallery on the way to Observatory Guest House, R.P. Nivas, Shmila. The work is in progress.
- c) The Institute has approved the estimate of Rs. 22,30,800/- submitted by CPWD (Civil) for provision of new retaining wall near Squire's Hall and other miscellaneous repair work for IAS, Shimla. The work is in progress.
- d) The Institute has approved the estimate of Rs. 18,01,070/- submitted by CPWD (Civil) Repair renovation and up gradation of 5 Nos. set 4,5,8,9,12 & outside aesthetic improvement of 7 sets for employees of IAS, 18 Family Line, Shimla. The work is in progress.
- e) The Institute has approved the estimate of Rs. 26,32,759/- A/R & M/O Non-Residence Building at IAS, R.P. Nivas, Shimla day to day maintenance for year 2015-16. The work is in progress.
- f) The Institute has approved the estimate of Rs. 10,00,000/- estimate cost for the work repair of roof of prevent leakage/seepage for the Tennis Court, IAS, R.P. Nivas, Shimla.

5. CPWD (Electrical Works)

- a) The Institute has approved the estimates submitted by CPWD (Elect.) of Rs. 9,46,115/- for cable laying for power supply from sub-station to IAS, R.P. Nivas, Shimla. The work is in progress.

- b) The Institute has approved the estimates submitted by CPWD (Elect.) of Rs. 63,37,636/- providing and installation CCTV Security system at R.P. Nivas, Shimla.
- c) The Institute has approved the estimates submitted by CPWD (Elect.) of Rs. 11,02,361/- for provision of LED Fixture in the Library area at IIAS, R.P. Nivas, Shimla.
- d) The Institute has approved the estimates submitted by CPWD (Elect.) of Rs. 9,34,296/- provision of wiring/re-wiring of Courteen Hall 3 sets, R.P. Nivas and Courteen Hall Annexe 2 sets.
- e) The Institute has approved the estimates submitted by CPWD (Elect.) of Rs. 3,58,557/- wiring/rewiring of Post Master Flat, IIAS, Shimla.

XI. ACCOUNTS AND BUDGET

- A)** The approved Revised Estimates for the year 2014-2015 and Budget Estimates for the year 2015-2016 are as under:

Name of Scheme	Revised Estimates 2014-2015	Budget Estimates 2015-2016
	(Rupees in lakh)	
Non-Plan	1066.64	1148.70
Plan	1700.00	2100.00

The accounts of the Institute for the year 2014-2015 duly audited by the Office of the Director General of Audit (Central), Indian Audit and Accounts Department, Chandigarh are enclosed as **Annexure – I**.

B) IUC ACCOUNTS

The Accounts of the Inter-University Centre for Humanities and Social Sciences (IUC) Scheme are audited by a firm of Chartered Accountants M/s Rakesh Kumar Kaushal & Co., Shimla. The expenditure for the year 2014-2015 was Rs. 60.27 lakhs.

The Audited Statement of Accounts of the Inter-University Centre (IUC) Scheme for the year 2014-2015 is placed below as **Annexure – II**.

XII. GARDEN

The IIAS is housed in the erstwhile Viceregal Lodge, a heritage building and has a very beautiful garden with a variety of flowers, shrubs and trees. This is perhaps one of the highest

landscape gardens in the world. The garden is dependent on rain water, which is harvested for its maintenance. Harvested rain water is being used for the maintenance of lawn and gardens as well. The following works were done during this period of time:

1. Seeds for seasonal plants were sown in the nursery of the gardens of the Institute for transplanting them into the planting beds in and around the campus of the Institute and also in the official/fellows residences viz. Squire's Hall, Siddhartha Vihar, Observatory cottage, Observatory house (Guest House) Red Stone, Delvile, Bilaspur House.
2. In the month of April 2014, primula, geranium, orchids and ivy were transplanted into new pots and Hydrangea, Euonymus, Tecoma, Buddleia, junipers, chinar, jasmine and other cuttings were raised in the mist chamber were transplanted in P-bags for sale as well as for use in the gardens of the Institute during August 2014. During this period seeds of annuals like statice, aster, lobelia, begonia tuberosa, Begonia Bada Bing, mimulus, different varieties of marigold, impatiens, gerbera, coleus, gompherena, celosia, kochia, balsam, different varieties of cosmos, different varieties of zinnia, salvia etc. were raised in the nursery and were transplanted to the planting beds in the premises of the Institute in the months of July- August 2014. Planting beds were prepared for transplanting planting new seedlings/ Saplings in the month of June 2014.
3. New seeds of cineraria, schizanthus, *Antirrhinum*, primula, primrose, petunia, pansy, tanacetum, ice plant, ranunculus, carnation, hollyhock, lupin, calceolaria, cyclamen, lychnis, delphinium, gypsophilla (white and pink), godesia and begonia were raised and are being transplanted to the planting beds in the premises of the Institute during September 2014 to November 2014 and also in the month of February-March 2015. In Nursery, cineraria, schizanthus, begonia single, *Primula* (primrose) were transplanted into new pots. Soil mixture was also prepared for these plants to be transplanted in new pots. Some of these seedlings have been transplanted into larger pots for indoor displays.
4. Seeds of the seasonal plants like marigold, coleus, godetia, antirrhinum, pansy, celosia, ranunculus, salvia, sunflower, calendula, dianthus, etc. were collected from the planting beds and were stored in the section for use in the next season.
5. The cuttings of junipers, fuchsia, geranium, camellia, magnolia, euphorbia, roses, hydrangea, vancenia rose, red spirea, ivy, private, duranta, euonymus, leaf cuttings of some varieties of rex-begonia, cupressus, private hedge, Chinese lantern, euonymus, heder helix ivy, cineraria maritima, jasmine etc. were raised in the mist chamber of the nursery to be used for the domestic use of the gardens as well as for the sale during the period from December 2014 to February 2015. begonia, marigold, balsam, cyclamen, juniper and other cuttings raised in the mist chamber were transplanted in P-bags for sale as well as for use in the gardens of the Institute.

6. Regular irrigation of the nursery pots and other sapling is being done by the garden staff daily/ as and when required.
7. Deep ploughing, mulching and other cultural practices were done in the month of November and December 2014 before transplanting of the annuals in the planting beds. During this period, cultural practices like multiplication and replanting of perennial/permanent plants like achillea, chrysanthemum, golden rod, sunshine daydream, peonies, lily of nile, caryopsis, phlox, etc. was done.
8. Farm yard manure was purchased and was distributed and mixed in the planting beds all along the premises of the Institute. In addition to this farm yard manure was also distributed in garden area of the Squire's Hall, Observatory Cottage, Siddhartha Vihar, Red Stone, and other buildings of the Institute during winter months.
9. Pruning and training of the climbers like whisteria, tecoma, jasmine etc. was done. Unwanted parts of hydrangea, Carla lily, day lily, agapanthus lily etc. were also removed Institute during winter season.
10. Regular maintenance of the gardens of the Institute which include cleaning of garden pathways, removal of weeds/ overgrown grasses in and around the plantation beds and Lawns was done on regular basis. Regular de-weeding in the planting beds and lawns is done on regular basis.
11. Old fallen and dead leaves of Himalayan oak trees are collected for preparing the soil mixture.
12. Moss grass is collected for the nearby forest area to be used in earthen pots to conserve water and also to prevent soil erosion from the pots.
13. Due to leakage from Terrace Gardens at Squire's Hall and portion above the workshop of the Institute at the back of the building, the lawns were transplanted from these sites to the back side of the main guest House of the Institute (Observatory House) during the period from December 2014 to February 2015. Thus new lawn was created at the back of the guest house.
14. Lawn mowing of the lawns around the Institute, Guest House and other official/fellows residences viz. Squire's Hall, Siddhartha Vihar, Observatory cottage, Observatory house (Guest House), Red Stone, Delville, Bilaspur House was done on regular basis.
15. The brass pots are cleaned with brasso twice in a month on Monday. Maintenance of earthen pots in the main building, public entry and other flower decorations are done by the garden staff every day.
16. New plants as hedge were planted in the back lawns of the Institute. In addition to this, new plants of hydrangea, white daisy, duranta, junipers were planted in small hills near the café/ souvenir shop. New plantation of roses has been done in the Rose Garden.

17. The Institute had organized the 2nd Rabindranath Tagore Memorial Lecture on 20th October 2014. Gulzar Sahib was the chief Guest of this Lecture. All the flower arrangements and bouquet preparation was done by the gardens of the Institute.
18. Flower arrangements (maintenance of flower pots and floral decoration etc.) inside the building, during seminars/ symposium/ during cultural activities is being done by the Garden section. Flower bouquets are prepared by the gardens for VIP visiting the Institute as per the directions by the authorities of the Institute.
19. The garden section also participated in the Flower Show organized by the SAGES, in the Ridge Shimla from 30 May to 1 June 2014. The Garden section has won second prize in the Stalls and we have also won the running trophy for the best Gardens.
20. Large numbers of ornamental plants/shrubs are propagated in the mist chamber for the purpose of use in the Institute as mentioned above. These cuttings are used for the use in the garden section of the Institute for meeting the requirement of the landscaping and avenue plantation along the premises of the Institute. The plants raised from these cuttings are also used for sale in the nursery of the garden section of the Institute. The garden section has earned Rs. 23,235/- (rupees twenty three thousand two hundred thirty five only) from the sale of the planting material during the period mentioned above.

XIII. ADMINISTRATIVE AND OTHER INITIATIVES

During the year under report we have initiated a couple of new initiatives which will fructify during the on-going year.

1. During the period of report the Fellowship Award Committee met once on 04th July 2014. In the meeting, the FAC recommended 9 scholars for the award of Fellowship. They include Professor A. Achuthan, Dr. Anindita Mukhopadhyay, Professor Mahesh Champaklal, Dr. Kaustav Chakraborty, Dr. Ab. Rashid Khan, Ms. Saumya Sharma, Dr. Ashutosh Kumar, Dr. Musaliyarveetil Tharayil Ansari and Dr. Tadd Graham Fernee.
2. During the period under report the following officials of the Institute retired after attaining the age of superannuation after rendering 25-40 years of services at the Institute. These are Shri Niranjana Dhungia, Cook on 30.06.2014, Shri S.M. Maske, Assistant Librarian on 31.07.2014, Shri Deep Ram, Peon on 31.07.2014, Shri Gorakh Ram, Garden Chowdhary on 31.08.2014, Shri Y.P. Bhardwaj, Estate Supervisor on 31.12.2014, Shri Uma Dutt, Peon on 31.03.2015.
3. The vacancies of the Assistant Librarian, Garden Chowdhary Private Secretary to the Secretary and Estate Supervisor-1 were filled through departmental promotion. Smt. Neeraj Sharma joined as Assistant Librarian on 4/8/2014 and Shri Mani Ram joined as Garden Chowdhary on 23/01/2015.

**INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT (CENTRAL),
CHANDIGARH-160017**

NO.: P.D.A (C) K.Vaa/SARS/2015-16/136

Dated: 22/12/2015

To

The Secretary
Department of Education
Ministry of Human Resource Development
Government of India
New Delhi

Subject: Separate Audit Report on the annual accounts of Indian Institute of Advanced Study, Shimla for the year ended 31 March 2015

Sir,

I enclose a copy of the Separate Audit Report on the annual accounts of Indian Institute of Advanced Study, Shimla for the year ended 31 March 2015 to be placed before both the Houses of Parliament. The report may be kept confidential till its presentation in the Parliament.

Kindly send us five copies of the above report after its presentation.

Please acknowledge receipt of this letter.

Yours faithfully,

Sd/-

Principal Director

Encls: As above

Copy forwarded to Director, Indian Institute of Advanced Study, Shimla along with Separate Audit Report for the year ended 31 March 2015 for information please.

Sd/-

Deputy Director

Separate Audit Report of the Comptroller & Auditor General of India on the Accounts of Indian Institute of Advanced Study, Shimla, for the year ended 31 March, 2015.

1. We have audited the Balance Sheet of Indian Institute of Advanced Study, Shimla, as at 31 March 2015 and Income & Expenditure Account for the year ended on that date under Section 20(1) of the Comptroller & Auditor General's (Duties, Powers & Conditions of Service) Act, 1971. The audit has been re-entrusted from 2013-14 to 2017-18. These financial statements are the responsibility of the Institute's management. Our responsibility is to express an opinion on these financial statements based on our audit.
2. This Separate Audit Report contains the comments of the Comptroller & Auditor General of India (CAG) on the accounting treatment only with regard to classification, conformity with the best accounting practices, accounting standards and disclosure norms, etc. Audit observations on financial transactions with regard to compliance with the Law, Rules & Regulations (Propriety and Regularity) and efficiency-cum-performance aspects, etc., if any, are reported through Inspection Reports/ CAG's Audit Reports separately.
3. We have conducted our audit in accordance with auditing standards generally accepted in India. These standards require that we plan and perform the audit to obtain reasonable assurance about whether the financial statements are free from material mis-statements. An audit includes examining, on a test basis, evidences supporting the amounts and disclosure in the financial statements. An audit also includes assessing the accounting principles used and significant estimates made by management, as well as evaluating the overall presentation of financial statements. We believe that our audit provided a reasonable basis for our opinion.
4. Based on our audit, we report that:
 - i) We have obtained all the information and explanations except Receipts & Payments Account and Schedule 5, 9 and 11 and Accounts of General Provident Fund, which to the best of our knowledge and belief were necessary for the purpose of our audit;
 - ii) The Balance Sheet and Income and Expenditure Account dealt with by this Report have been drawn up in the format prescribed by the Ministry of Human Resourced Development, Government of India vides order No. 29-4/2012-FD dated 17 April 2015.
 - iii) In our opinion, proper books of accounts and other relevant records have been maintained by the Indian Institute of Advanced Study, Shimla in so far as it appears from our examination of such books.
 - iv) We further report that:

A. Balance Sheet

A.1 Current Liabilities and provisions (Schedule-3)

Provision for Superannuation pension: Nil

Provision for liability towards pension on superannuation of employees has not been made. Non provision of pension fund has resulted in understatement of liabilities as well as overstatement of corpus/general fund. The amount could not be qualified in audit. This was also pointed out in previous SAR but no remedial action was taken.

A.2 Fixed Assets (Schedule-4)

Fixed Assets acquired out of Grant-in-aid

A.2.1 Depreciation: Rs.48.52 lakh

The Institute has not provided depreciation on the Fixed Assets which have been purchased prior to the financial year 2014-15 and the fixed assets have been taken/ booked on actual cost of acquisition. Although the Institute has charged depreciation of Rs.48.52 lakh on the assets purchased during the financial year 2014-15 Non charging of depreciation on Fixed Assets purchased prior to the financial year 2014-15 resulted in overstatement of fixed Assets as well as overstatement of Capital Fund to the extent of Depreciation on the Fixed assets.

A.2.2 Depreciation on Fixed Assets under IC4HD: Rs.13.86 lakh

There is totaling error under this head. The depreciation under this head comes to Rs.1417020.60 instead of Rs.1386165.60 which results in short charging of depreciation by Rs.30855/- (Rs.1417020.60 minus Rs.1386165.60). This resulted in understatement of expenditure and overstatement of capital fund by Rs.30,855/-.

A.3 Current Assets (Schedule-7)

Sundry Debtors

Debts Outstanding for a period exceeding more than six months Rs.22.62 lakh

Above includes debtors amounting to Rs.3.54 lakh which were outstanding for a period more than five years and were, therefore, doubtful or recovery and a provision needs to be made. Further there is no system of confirmation of balances from debtors and providing adequate provision for bad debts. Also the Institute is not maintaining party wise breakup of debtors depicted in the financial statements. The segregation of debtors as good and doubtful as pointed out in previous SARs needs to be done in an authentic way because these do not seem good for recovery. This was also pointed out in previous SAR but no corrective action was taken.

B. General

Loans, Advanced & Deposits (Schedule 8)

Long Term Advances to employees (interest bearing)

Others

Above included advances to employees pending for more than 5 years which were doubtful of recovery for which a provision needs to be made. Further there is no system of confirmation of these balanced.

C. Grant-in-aid

Out of the total available funds of Rs.2325.27 lakh (Plan: Rs.1450.61 lakh, Non-Plan: Rs.874.66 lakh) including unspent balance of Rs.325.53¹ lakh (Plan: Rs.337.25 lakh, Non-Plan: Rs.(-) 11.72 lakh) of the previous year and grant received during the year 2014-15 Rs.1999.74 lakh (Plan: Rs.1068.97 lakh, Non-Plan: Rs.886.39 lakh, Interest Plan:Rs44.38 lakh); the Institute could utilize a sum of Rs.1550.58 lakh (Plan: Rs.534.99 lakh, Non-Plan: Rs.1015.59 lakh) leaving a closing balance of Rs.774.69 lakh (Plan: Rs.816.09 lakh, Non-Plan: Rs.(-) 41.40 lakh) as of March, 2015.

D. Management letter

Deficiencies which have not been included in the Audit report have been brought to the notice of the Institute's management through a management letter issued separately for remedial/corrective action.

- v) Subject to our observations in the preceding paragraphs, we report that the Balance Sheet and Income and Expenditure Account dealt with by this report are in agreement with the books of accounts.
- vi) In our opinion and to the best of our information and according to the explanations given to us, the said financial statements read together with the Accounting Policies and Notes on Account, and subject to the significant matters stated above and other matters mentioned in Annexure to this Audit Report give a true and fair view in conformity with accounting principles generally accepted in India:

¹ As per the SAR for the year 2013-14 and the Utilisation Certificate furnished by the Institute the closing balance of Grant-in-aid as on 31 March 2014 was Rs.921.80 lakh (Plan: Rs.874.10 lakh, Non-Plan: Rs47.70 lakh) whereas in the Accounts for the year 2014-15 the opening balance of Grant-in-aid has been shown as 325.53 lakh (Plan: Rs.337.25 lakh, Non-Plan: Rs (-) 11.72 lakh). The difference of Rs.596.27 lakh is due to change in policy of the Institute in respect of Grant in Aid. The Institute has adopted the Cash system of accounting till 31st March, 2013 and w.e.f. financial year 2013-14, the Institute adopted Merchandise system of accounting.

- a. In so far as it related to the Balance Sheet, of the state of affairs of the Indian Institute of Advanced Study, Shimla as at 31st March, 2015; and
- b. In so far as it relates to income & Expenditure Account, of the Surplus for the year ended on that date.

For and on behalf of the C& AG of India

Sd/-

**Principal Director of Audit (Central),
Chandigarh**

Place: Chandigarh

Date: 21.12.2015

ANNEXURE TO AUDIT REPORT

1. Adequacy on Internal Control System

Internal control system is considered adequate and commensurate with size and activities of the Institute for areas seen in audit except that the Institute has not prepared Accounting Manual, no security deposit/fidelity guarantee was obtained from the employee handling cash/stock, no depreciation was charged on Fixed Assets purchased prior to the year 2014-15 and no review of outstanding debtors/Advances which were more than five years old was made.

2. Adequacy of Internal Audit System

The Internal Audit system is considered adequate and commensurate with size and activities of the Institute except that the Institute has not prepared its Internal Audit Manual.

3. Physical verification of Fixed Assets/Inventory

Physical verification of Fixed Assets and Inventories had been conducted during the year. However, Register of Fixed Assets and Register of inventories had not been maintained as per Form GFR 40 & 41.

4. Regularity in payment of Statutory Dues

As per books of accounts, the Institute was regular in depositing statutory dues

Sd/-
Deputy Director

**PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT (CENTRAL)
CHANDIGARH**

SANDEEP LALL, IAAS

DO No: PDA/CE/SAR/2015-16/1368

Dated: 22/12/15

Dear Shri Singh

While conducting the audit of annual accounts of your Institute for the year ended 31 March 2015 certain deficiencies were noticed. Significant audit comments in respect of the same have already been reported through the Separate Audit Report on the accounts of the Institute. However, certain deficiencies which have not been included in the Separate Audit Report (as detailed in the annexure) are being brought to your notice for remedial/corrective action.

Kindly issue instructions for taking corrective measures in this regard.

With regards

Yours sincerely

Sd/-

(SANDEEP LALL)

Shri Chetan Singh
Director
Indian Institute of Advanced Study
Rashtrapati Nivas
Shimla-5 (Himachal Pradesh)

ANNEXURE TO THE MANAGEMENT LETTER

A. General:

A.1 Investment of General Provident Fund

Investments of General Provident Fund were not made as per the pattern prescribed by the Government of India, Ministry of Finance view notification no.F.No.5(88)2006-PR dated 14.08.2008 and all the investment amounting to Rs.252.00 lakh was made in Fixed Deposits with Nationalized Bank. This issue was also pointed in the previous SAR but no corrective steps were taken.

A.2 Receipts and Payments Account was not attached with the Accounts supplied to this office in contravention to the Format of Financial Statements for Central Higher Educational Institutions. Similarly, Schedules 5,6 and 11 and Balance Sheet, Income & Expenditure Accounts and Receipts & Payments Account in respect of General Provident Fund Account were also not enclosed with the Accounts submitted to this office.

A.3 Notes to Accounts (3)

There is typography error in figures of leave encashment which should have been written as Rs.14051790.00 instead of Rs.140517905.00.

A.4 Figures in the balance sheet and income & expenditure accounts have not been rounded off as prescribed in the new format of Accounts.

Sd/-

Deputy Director

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY, SHIMLA
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5
BALANCE SHEET AS ON 31st March 2015

Amount in Rupees

SOURCES OF FUNDS	Schedule	Current Year, 2014-15	Previous Year, 2013-14
CORPUS/CAPITAL FUND	1	236254642.01	228522602.66
DESIGNATED/ EARMARKED / ENDOWMENT FUNDS	2	20657552.50	44689169.00
CURRENT LIABILITIES & PROVISIONS	3	123740387.86	43059212.00
TOTAL		380652582.37	316270983.66
APPLICATION OF FUNDS	Schedule	Current Year	Previous Year
FIXED ASSETS	4		
Tangible Assets		186902405.76	178003821.73
Intangible Assets		77751.63	
Capital Works-In-Progress			
INVESTMENTS FROM EARMARKED / ENDOWMENT FUNDS	5		
Long Term			
Short Term			
INVESTMENTS - OTHERS	6	0.00	0.00
CURRENT ASSETS	7	130356989.99	135097635.93
LOANS, ADVANCES & DEPOSITS	8	63315435.00	3169526.00
TOTAL		380652582.38	316270983.66
SIGNIFICANT ACCOUNTING POLICIES	23		
CONTINGENT LIABILITIES AND NOTES TO ACCOUNTS 1	24		

Shimla
30-5-2014

sd/-
(Rakesh Kumar Singh)
Accounts Officer

sd/-
(Suneel Verma)
Secretary

sd/-
(Chetan Singh)
Director

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5
INCOME AND EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED, 31ST MARCH 2015

Amount in Rupees

Particulars	Schedule	Current Year, 2014-15	Previous Year, 2013-14
INCOME			
Academic Receipts	9	0.00	
Grants / Subsidies	10	141686088.14	148897406.00
Income from investments	11	0.00	0.00
Interest earned	12	616527.00	
Other Income	13	6842872.35	11751807.10
Prior Period Income	14	272640.00	0.00
Depreciation transfer to capital grant in aid		4851619.50	
TOTAL (A)		154269746.99	160649213.10
EXPENDITURE			
Staff Payments & Benefits (Establishment expenses)	15	76696652.00	83086382.00
Academic Expenses	16	30442164.00	0.00
Administrative and General Expenses	17	13853903.00	40044320.00
Transportation Expenses	18	1263380.00	836185.00
Repairs & Maintenance	19	19424071.00	27028728.00
Finance costs	20	2895.00	5215.00
Depreciation	4	4851619.50	
Other Expenses	21	3023.14	2848033.00
Prior Period Expenses	22	0.00	0.00
TOTAL (B)		146537707.64	153848863.00
Balance being excess of Income over Expenditure (A-B)		7732039.35	6800350.10
Transfer to / from Designated Fund Building fund Others (specify)			
Balance Being Surplus / (Deficit) Carried to Capital Fund		7732039.35	6800350.10
Significant Accounting Policies	23		
Contingent Liabilities and Notes to Accounts	24		

Shimla
30-5-2014

sd/-
(Rakesh Kumar Singh)
Accounts Officer

sd/-
(Suneel Verma)
Secretary

sd/-
(Chetan Singh)
Director

**INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5
SCHEDULE -1 CORPUS/CAPITAL FUND**

Amount in Rupees

Particulars		Current Year, 2014-15	Previous Year, 2013-14
	Balance at the beginning of the year	228522602.66	221171901.56
Add:	Contributions towards Corpus/Capital Fund		
Add:	Grants from UGC, Government of India and State Government to the extent utilized for capital expenditure		
Add:	Assets Purchased out of Earmarked Funds		
Add:	Assets Purchased out of Sponsored Projects, where ownership vests in the institution		-
Add:	Assets Donated/Gifts Received		
Add:	Other Additions		550351.00
Add:	Excess of Income over expenditure transferred from the Income & Expenditure Account	7732039.35	6800350.10
Total		236254642.01	228522602.66
(Deduct)	Deficit transferred from the Income & expenditure Account		
Balance at the year end		236254642.01	228522602.66

**INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5
SCHEDULE 2 - DESIGNATED/ EARMARKED / ENDOWMENT FUNDS/CAPITAL GRANT**

Particulars	Fund wise Breakup					Amount in Rupees	
	Capital Grant in aid	Fund AAA	Fund BBB	Fund CCC	Endowment Funds	Current Year	Total Previous Year
A.							
a) Opening balance	12136196.00					12136196.00	0
b) Additions during the year	13372976.00					13372976.00	12136196.00
c) Income from investments made of the funds						0.00	0
d) Accrued Interest on investments/Advances						0.00	
e) Interest on Savings Bank a/c						0.00	
f) Other additions (Specify nature)						0.00	
Total (A)	25509172.00	0	0	0	0	25509172.00	12136196.00
B.							
Utilisation/Expenditure towards objectives of funds							
ii) Capital Expenditure							
ii) Revenue Expenditure	4851619.50					4851619.50	
Less Depreciation							
Total (B)	4851619.50	0	0	0	0	4851619.50	0.00
Closing balance at the year end (A - B)	20657552.50					20657552.50	12136196.00
Represented by							
Cash And Bank Balances							
Investments							
Interest accrued but not due							
Total							

**INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5
SCHEDULE 3- CURRENT LIABILITIES & PROVISIONS**

Amount in Rupees

	Current Year, 2014-15	Previous Year, 2013-14
A. CURRENT LIABILITIES		
1. Deposits from staff		
2. Deposits from students		
3. Sundry Creditors a) For Goods & Services b) Others		
4. Deposit-Others (including EMD, Security Deposit)		
5. Statutory Liabilities (GPF, TDS, WC TAX, CPF, GIS, NPS):		
a) Overdue	42653.00	42653.00
b) Others		
6. Other Current Liabilities		
a) Salaries	3909478.00	2932351.00
b) Receipts against sponsored projects		
c) Receipts against sponsored fellowships & scholarships		
d) Unutilised Grants	77468714.86	0.00
e) Grants in advance		
f) Other funds		
g) Other liabilities		
h) KKS	2931.00	
I) TDS payable	1348.00	
j) NPS payable	89030.00	
k) Anup service Station	41793.00	
l) Expenses Payable	4159646.00	
m) suspense	20000.00	
A Total	85735593.86	2975004.00
B. PROVISIONS		
1. For Taxation		
2. Gratuity	23953004.00	20965400.00
3. Superannuation Pension		0.00
4. Accumulated Leave Encashment	14051790.00	13942125.00
5. Trade Warranties/Claims		
6. Others (Specify)		
Total (B)	38004794.00	34907525.00
Total (A+ B)	123740387.86	37882529.00

Note: Unutilized grants 6 (d) will include grants received in advance for next year. 6

**INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5**

SCHEDULE 4: FIXED ASSETS ACQUIRED OUT OF GRANT IN AID

Particular	Opening Balance 01.04.14	Additions upto 01.04.2014 to 30.09.2015	Additions after 01.10.2014	Total	Depreciation for the Year	Written Down value on 31.03.2015
Office Equipment	7742537.63	-	-	-	-	7742537.63
Electronic Equipment	10123527.00	-	-	-	-	10123527.00
Furniture & Fittings	6923261.75	-	-	-	-	6923261.75
Vehicles	2838064.64	-	-	-	-	2838064.64
Library Equipment	5926142.38	-	-	-	-	5926142.38
Other Equipment	814603.20	-	-	-	-	814603.20
Publication Equipment	839040.02	-	-	-	-	839040.02
Library Books & Periodical	137892532.43	-	-	-	-	137892532.43
Source Book Scheme	247622.12	-	-	-	-	247622.12
Equipment Source Book Scheme	41087.56	-	-	-	-	41087.56
Garden Equipment	145805.00	-	-	-	-	145805.00
Audio Visual	422500.00	-	-	-	-	422500.00
Project towards the centre for the study of Indian Civilization	518442.00	-	-	-	-	518442.00
Word Processrs	1304921.00	-	-	-	-	1304921.00
Fixed Assets under IC4HD		-	-	-	-	0.00
Electronic Assets under IC4HD	1603450.00	-	-	-	-	1603450.00
Library Books & Periodical	103748.00	-	-	-	-	103748.00
Furniture & Fittings	516537.00	-	-	-	-	516537.00
Sub-Total	178003821.73	-	-	-	-	178003821.73
Fixed assets Plan						
Library Books and Equipments	-	1496940.00	8026491.00	9523431.00	3306111.30	6217319.70
Word processors for Fellows	-	24196.00	154811.00	179007.00	60960.90	118046.10
EPBX	-	315506.00	0.00	315506.00	47325.90	268180.10

Printer		-	9090.00	18180.00	27270.00	10908.00	16362.00
Crockery		-		69241.00	69241.00	5193.08	64047.93
LED		-	0.00	113600.00	113600.00	5680.00	107920.00
Bed				112447.00	112447.00	5622.35	106824.65
Aluminum ladder				46000.00	46000.00	3450.00	42550.00
Sub-Total		-	1845732.00	8540770.00	10386502.00	3445251.53	6941250.48
Non- Plan							
Library Books and Equipments		-	13595.00	0.00	13595.00	8157.00	5438.00
Sub-Total		-	13595.00	0.00	13595.00	8157.00	5438.00
Fixed Assets under IC4HD							
Electronic Assets under IC4HD		-	1977960.00	0.00	1977960.00	1186776.00	791184.00
Library Books & Periodical		-		664632.00	664632.00	199389.60	465242.40
Sports assets			177500.00	0.00	177500.00	26625.00	150875.00
Office equipment (hot cases)				43200.00	43200.00	3240.00	39960.00
furniture (equipment)				19790	19790.00	990.00	18800.00
Sub-Total		-	2155460.00	727622.00	2883082.00	1386165.60	1256426.40
Total		178003821.73	4014787.00	9268392.00	13283179.00	4839574.13	186206936.61
Intangible assets							
Networking Facility		-	70808.00	18989.00	89797.00	12045.38	77751.63
Total			70808.00	18989.00	89797.00	12045.38	77751.63
Grand Total		178003821.73	4085595.00	9287381.00	13372976.00	4851619.50	186284688.23
Fixed Assets acquired out of own funds							
Carpets		-	818199.00	0.00	818199.00	122729.85	695469.15
Total			818199.00	0.00	818199.00	122729.85	695469.15

**INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5**

SCHEDULE 6 - INVESTMENTS - OTHERS

Amount in Rupees

	Current Year, 2014-15	Previous Year, 2013-14
1. In Central Government Securities		
2. In State Government Securities		
3. Other approved Securities		
4. Shares		
5. Debentures and Bonds		
6. Others (to be specified)		
TOTAL	0.00	0.00

SCHEDULE 7-CURRENT ASSETS

Amount in Rupees

	Current Year, 2014-15	Previous Year, 2013-14
1. Stock:		
a) Stores and Spares		
b) Loose Tools		
c) Publications	4466179.31	4580949.48
d) Laboratory chemicals, consumables and glass ware		
e) Building Material		
f) Electrical Material		
g) Stationery		
h) Water supply material		
2. Sundry Debtors		
a) Debts Outstanding for a period exceeding six months(cosidered goods)	2262148.75	2174321.75
b) Others		
3. Cash and Bank Balances		10.00
a) With Scheduled Banks:		
- In Current Accounts	8155512.93	21181153.70
- In term deposit Accounts	70652853.00	66175000.00
-In Savings Accounts	11351648	40986201.00
b) With non-Scheduled Banks:		
- In term deposit Accounts		
- In Savings Accounts		
4. Post Office- Savinas Accounts		
Misc advance(IC4HD)	2963.00	
Grant receivable form GOI	33188377.00	
Drafts and IPO in hand	277308.00	
TOTAL	130356989.99	135097635.93

Note: Annexure A shows the details of Bank Accounts

ANNEXURE “A”

	Amount in Rupees
I. Savings Bank Accounts	
1. Grants from UGC A/c	33188377.00
2. University Receipts A/c	
3. Scholarship A/c	
4. Academic Fee Receipt A/c	
5. Development (Plan) A/c	
6. Combined Entrance Exams(CBT) A/c	
7. UGC Plan Fellowship A/c	
8. Corpus Fund A/c (EMF)	
9. Sponsored Projects Fund A/c	
10. Sponsored Fellowship A/c ‘	
11. Endowments Chair A/c (EMF)	
12. UGC JRF Fellowship A/c (EMF)	
13. HBA Fund A/c (EMF)	
14. Conveyance A/c (EMF)	
15. UGC Rajiv Gandhi National Fellowship A/c (EMF)	
16. Academic Development Fund A/c (EMF)	
17. Deposit A/c	
18. Student Fund A/c	
19. Student Aid Fund A/c	
20. Plan Grants for specific schemes	
II. Current Account	
III. Term Deposits with Schedule Banks	
Total	33188377.00

**INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5
SCHEDULE 8 - LOANS. ADVANCES & DEPOSITS**

	Amount in Rupees	
	Current Year, 2014-15	Previous Year, 2013-14
1. Advances to employees: (Non-interest bearing)		
a) Salary		
b) Festival	124650.00	110625.00
c) Medical Advance		
d) Other (to be specified)	0.00	
i) WCA	25200.00	26250.00
ii) Bad Climate and Flood Advanced	431.00	431.00
2. Long Term Advances to employees: (Interest bearing)		
a) Vehicle loan	93000.00	23000.00
b) Home loan	1260.00	
c) Others (to be specified)	2506250.00	2394468.00
Computer Advance	203000.00	361000.00
3. Advances and other amounts recoverable in cash or in kind or for value to be received:		
a) On Capital Account .		
b) to Suppliers		
c) Others (to CPWD)	58837636.00	
Recoverble from IUC	1071340.00	
4. Prepaid Expenses		
a) Insurance		
b) Other expenses(Prepaid e-journal subscription)	186948.00	
c) Prepaid AMC(ic4hd)	9670.00	
5. Deposits		
a) Telephone	36200.00	36200.00
b) Lease Rent		
c) Electricity		
d) AICTE, if applicable		
e) Others (to be specified)		
i) Security with Vineet Gas Agency	19000.00	19000.00
ii) Security with Municipal Corporation	980.00	980.00
iii) Deposit for fuel	100000.00	100000.00
iv) Others	4633.00	4633.00
TDS recoverable	95237.00	92939.00
6. Income Accrued:		
a) On Investments from Earmarked/ Endowment Funds		
b) On Investments-Others		
c) On Loans and Advances		
d) Others (includes income due unrealized)		

7. Other - Current assets receivable from UGC/sponsored projects a) Debit balances in Sponsored Projects b) Debit balances in Sponsored Fellowships & Scholarships c) Grants Receivable d) Other receivables from UGC 8. Claims Receivable		
TOTAL	63315435.00	3169526.00

Note: 1. If revolving funds have been created for House Building, Computer and Vehicle advances to employees, the advances will appear as part of Earmarked/endowment Funds. The balance against these interest -bearing advances will not appear in this schedule.

**INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5**

SCHEDULE 10 - GRANTS / SUBSIDIES (IRREVOCABLE GRANTS RECEIVED)

Particulars	Plan								Amount in Rupees		
		Plan General	Plan Capital	Plan General SC	Plan Gen ST	Plan Capital SC	Plan Capital ST	Total Plan	Non Plan	Current Year, 2014-15	Previous Year, 2013-14
	Govt. of India								UGC/GOI		
										Total	Total
Balance B/F	-8657897.00							33725188.00	-1172215.00	32552973.00	0.00
Add: Receipts during the year	89112401.00							111336232.00	88638574.00	199974806.00	193586575.00
Transfer from IC4HD to Non-Plan								-10000000.00	10000000.00	0.00	
Transfer from Non-Plan to IC4HD								46992.00	-46992.00	0.00	
Total	80454504.00							135108412.00	97419367.00	232527779.00	193586575.00
Less: Refund to UGC /GOI	0.00							0.00	0.00	0.00	0.00
Balance	80454504.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	135108412.00	97419367.00	232527779.00	193586575.00
Less: Utilised for Capital expenditure (A)	10476299.00							13359381.00	13595.00	13372976.00	0.00
Balance	69978205.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	121749031.00	97405772.00	219154803.00	193586575.00
Less: utilized for Revenue Expenditure (B)	28778095.00							40139967.00	101546121.14	141686088.14	161033602.00
Balance C/F (C)	41200110.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	81609064.00	-4140349.14	77468714.86	32552973.00

* It includes interest on Saving Accounts of Rs. 476533 and FDR of Rs. 3962298.

**INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5
SCHEDULE 12: INTEREST EARNED**

Particulars	Amount in Rupees	
	Current Year, 2014-15	Previous Year, 2013-14
1. On Savings Accounts with scheduled banks	18383.00	
2 On Loans		
a. Employees/Staff	82589.00	
b. Others(FDR)	51555	
3. On Debtors and Other Receivables		
Total	616527.00	0.00
Note: 1. The amount against item 1, in respect of Bank Accounts of Earmarked/Endowment Funds is dealt with in Schedule 11 (First Part) and Schedule 2.		
2, Item 2(a) is applicable only if Revolving funds have not been constituted for such advances.		

SCHEDULE 13: OTHER INCOME

Items of material amounts included in Miscellaneous Income should be separately disclosed.

A. Income from Land & Buildings	Amount in Rupees	
	Current Year, 2014-15	Previous Year, 2013-14
1. Hostel Room Rent	0.00	
2, License fee	816385.00	
3. Hire Charges of Auditorium/Play ground/Convention Centre, etc	0.00	
4. Electricity charges recovered	251543.00	
5. Water charges recovered .	87857.00	
Total	1155785.00	0.00
B. Sale of Institute's publications	524538.00	
C. Income from holding events		
1. Gross Receipts from annual function/ sports carnival		
Less: Direct expenditure incurred on the annual function/ sports carnival		
2. Gross Receipts from fetes		
Less: Direct expenditure incurred on the fetes		
3, Gross Receipts for educational tours		
Less: Direct expenditure incurred on the tours		
4. Others (to be specified and separately disclosed)		
Total	0.00	0.00
D. Others		
1. Income from consultancy		
2. RTI fees		
3. Income from Royalty		
4. Sale of application form (recruitment)		
5. Misc. receipts (Sale of tender form, waste paper, etc.)	1005784.20	
6. Profit on Sale/disposal of Assets		
a) Owned assets		
b) Assets received free of cost		

7. Grants/Donations from Institutions, Welfare Bodies and International Organizations		
8. Others (specify)		
<i>Guest House</i>	414892.00	
<i>Pvt use of vehicle</i>	98688.00	
<i>sale of plant</i>	23355.00	
<i>liabrary membership</i>	46200.00	
<i>Sale of unsuable items</i>	37251.00	
<i>Sports membership fee</i>	80800.00	
<i>Misellaneous income</i>	294632.00	
Total	2001602.20	0.00
Gross Income from Ticket Booth	7102723.00	
Less Expenses from Ticket Booth	3941775.85	
Grand Total (A+B+C+D)	6842872.35	

SCHEDULE 14: PRIOR PERIOD INCOME

Particulars	Amount in Rupees	
	Current Year, 2014-15	Previous Year, 2013-14
1. Academic Receipts		
2. Income from Investments		
3. Interest earned		
4. Other Income	272640.00	
Total		

**INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5
SCHEDULE 15 - STAFF PAYMENTS & BENEFITS (ESTABLISHMENT EXPENSES)**

These shall be classified separately for teaching and non-teaching staff; adhoc staff, o Arrears of DA, Salary arrears due to increment shall be shown separately

	Current Year, 2014-15			Previous Year, 2013-14		
	Plan	Non Plan	Total	Plan	Non Plan	Total
a) Salaries and Wages	1469026.00	44908615.00	46377641.00			0.00
b) Allowances and Bonus			0.00			0.00
c) Contribution to Provident Fund/NPS		562390.00	562390.00			0.00
d) Contribution to Other Fund (specify) Pension Fund			0.00		1469256.00	1469256.00
e) Staff Welfare Expenses			0.00		453213.00	453213.00
f) Retirement and Terminal Benefits		8667728	8667728.00		20351898.00	20351898.00
g) LTC facility		146139.00	146139.00		51606.00	51606.00
h) Medical facility		294154.00	294154.00		304920.00	304920.00
i) Children Education Allowance		627535.00	627535.00		606966.00	606966.00
j) Honorarium		105955.00	105955.00		228804.00	228804.00
1) Others (specify) Pension		19667181.00	19667181.00		13187755.00	13187755.00
Liveries		247929.00	247929.00		129077.00	129077.00
TOTAL	1469026.00	75227626.00	76696652.00	0.00	36783495.00	36783495.00

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5
SCHEDULE 15 A - EMPLOYEES RETIREMENT AND TERMINAL BENEFITS

Amount in Rupees

	Pension	Gratuity	Leave Encashment	Total
Opening Balance as on		20965400.00	13942125.00	34907525.00
Addition: Capitalized value of Contributions Received from other Organizations				
Total (a)		20965400.00	13942125.00	34907525.00
Less: Actual Payment during the Year (b)		4196289.00	1374170.00	5570459.00
Balance Available on 31.03 c (a-b)		16769111.00	12567955.00	29337066.00
Provision required on 31.03 as per Actuarial Valuation (d)		23953004.00	14051790.00	38004794.00
A. Provision to be made in the Current year (d-c)		7183893.00	1483835.00	8667728.00
B. Contribution to New Pension Scheme				
C. Medical Reimbursement to Retired Employees				
D. Travel to Hometown on Retirement				
E. Deposit Linked Insurance Payment				
Total (A+B+C+D+E)		7183893.00	1483835.00	8667728.00
Note: 1. The total (A+B+C+D+E) in this sub schedule will be set against Retirement and Terminal Benefits in Schedule 15. 2. Items B,C,D&E will be accounted on accrual basis and will include bills preferred but outstanding for payment on 31/3.				

**INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5
SCHEDULE 16 - ACADEMIC EXPENSES**

Amount in Rupees

	Current Year, 2014-15			Previous Year, 2013-14		
	Plan	Non Plan	Total	Plan	Non Plan	Total
a) Laboratory expenses			0.00			0.00
b) Field work/Participation in Conferences			0.00			0.00
c) Expenses on Seminars/ Workshops	5532114.00	246503.00	5778617.00	3965962.00		3965962.00
d) Payment to visiting faculty			0.00			0.00
e) Examination			0.00			0.00
f) Student Welfare expenses			0.00			0.00
g) Admission expenses			0.00			0.00
h) Convocation expenses			0.00			0.00
i) Publications			0.00			0.00
j) Stipend/means-cum-merit scholarship			0.00			0.00
k) Subscription Expenses			0.00			0.00
i) Others (specify) Fellowship to fellows	10022665.00	11414260.00	21436925.00			0.00
ii) National fellowship to fellow	3226622.00	0.00	3226622.00			
		0.00	0.00			
TOTAL	18781401.00	11660763.00	30442164.00	3965962.00	0.00	3965962.00

**INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5
SCHEDULE 17 - ADMINISTRATIVE AND GENERAL EXPENSES**

	Current Year, 2014-15			Previous Year, 2013-14		
	Plan	Non Plan	Total	Plan	Non Plan	Total
A Infrastructure						
a) Electricity and power	865845.00	2577354.00	3443199.00		-	-
b) Water charges	17682.00	690756.00	708438.00		4370911.00	4370911.00
c) Insurance			0.00		-	-
d) Rent, Rates and Taxes {including property tax)		679189.00	679189.00		672288.00	672288.00
B Communication			0.00			0.00
e) Postage and Stationery	309099.00	515666.00	824765.00		144096.00	144096.00
f) Telephone, Fax and Internet Charges	208793.00	270085.00	478878.00		-	-
C Others			0.00		31862547.00	31862547.00
g) Printing and Stationery (consumption)	729562.00	743388.00	1472950.00		-	-
h) Travelling and Conveyance Expenses	656574.00	2553173.00	3209747.00		-	-
i) Hospitality		34672.00	34672.00		-	-
j) Auditors Remuneration			0.00		431848.00	431848.00
k) Professional Charges		593590.00	593590.00			
1) Advertisement and Publicity		494212.00	494212.00		-	-
m) Magazines & Journals			0.00		2562630.00	2562630.00
m1) E-resource subscription		35589.00	35589.00		-	-
n) Others (specify)Medicine	53494.00	147085.00	200579.00		-	-
Misc Expenditure	633655.00	1044440.00	1678095.00		-	-
TOTAL	3474704.00	10379199.00	13853903.00	0.00	40044320.00	40044320.00

**INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5
SCHEDULE 18-TRANSPORTATION EXPENSES**

Amount in Rupees

Particulars	Current Year, 2014-15			Previous Year, 2013-14		
	Plan	Non Plan	Total	Plan	Non Plan	Total
1 Vehicles (owned by institution)						
a) Running expenses	116773.00	382964.00	499737.00		654692.00	654692.00
b) Repairs & maintenance	544655.00	218988.00	763643.00		181493.00	181493.00
c) Insurance expenses			0.00			0.00
2 Vehicles taken on rent/ lease			0.00			0.00
a) Rent/lease expenses			0.00			0.00
3 Vehicle (Taxi) hiring expenses			0.00			0.00
Total	661428.00	601952.00	1263380.00	0.00	836185.00	836185.00

SCHEDULE 19 - REPAIRS & MAINTENANCE

Amount in Rupees

Particulars	Current Year, 2014-15			Previous Year, 2013-14		
	Plan	Non Plan	Total	Plan	Non Plan	Total
a) Buildings	15479040.00	2606392.00	18085432.00	0.00	23558586.00	23558586.00
b) Furniture & Fixtures	210900.00	32000.00	242900.00	0.00	818379.00	818379.00
c) Plant & Machinery			0.00	-	-	0.00
d) Office Equipment	63468.00	3950.00	67418.00	681761.00	0.00	681761.00
e) Computers			0.00	-	-	-
f) Laboratory & Scientific equipment			0.00	-	-	-
g) Audio Visual equipment			0.00	-	-	-
h) Cleaning Material & Services		304333.00	304333.00	-	-	-
i) Book binding charges			0.00	-	-	-
j) Gardening		723988.00	723988.00	0.00	1072389.00	1072389.00
k) Estate Maintenance			0.00	-	-	-
1) Others (Specify)			0.00	0.00	897613.00	897613.00
Consumable store						
Fixed assets written off			0.00	0.00	2848033.00	2848033.00
Total	15753408.00	3670663.00	19424071.00	681761.00	29195000.00	29876761.00

**INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5
SCHEDULE 20 - FINANCE COSTS**

Amount in Rupees

Particulars	Current Year, 2014-15			Previous Year, 2013-14		
	Plan	Non Plan	Total	Plan	Non Plan	Total
a) Bank charges		2895.00	2895.00		5215.00	5215.00
b) Others (specify)			0.00			0.00
Total	0.00	2895.00	2895.00	0.00	5215.00	5215.00

Note:- If the amount is not material, the head Bank charges could be omitted and these could be accounted as Administrative expenses in Schedule 17.

SCHEDULE 21 - OTHER EXPENSES

Amount in Rupees

Particulars	Current Year, 2014-15			Previous Year, 2013-14		
	Plan	Non Plan	Total	Plan	Non Plan	Total
a) Provision for Bad and Doubtful Debts/Advances	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
b) Irrecoverable Balances Written - off	0.00	3023.14	3023.14	0.00	0.00	0.00
c) Grants/Subsidies to other institutions/ organizations	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
d) Others (specify)	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
Total	0.00	3023.14	3023.14	0.00	0.00	0.00

Note:- Other expenses shall be classified as writes - off, provisions, miscellaneous expenses, loss on sale of investments, loss of fixed assets and loss on sale of fixed assets etc and disclosed accordingly. ' * 41

SCHEDULE 22: PRIOR PERIOD EXPENSES

Amount in Rupees

Particulars	Current Year, 2014-15			Previous Year, 2013-14		
	Plan	Non Plan	Total	Plan	Non Plan	Total
1 Establishment expenses			0.00			
2 Academic expenses			0.00			
3 Administrative expenses			0.00			
4 Transportation expenses			0.00			
5 Repairs & Maintenance			0.00			
6 Other expenses			0.00			
Total	0.00	0.00	0.00	0	0	0

**INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5
Current Liabilities and Provisions**

Fellowship Grant	-do-	1646795.00
Rent	March, 2014	54903.00
Professional fee		116805.00
Other expenses payable		867860.00
GIS		16100.00
Library Books and Equipments		115124.00
Networking		87314.00
GPF		689507.00
NPS		112747.00
KKS		
Total		3707155.00

**INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-5
SCHEDULE 24**

The details of such assets are:

Assets	Original Cost as on 1.4.14 Rs.	Additions during the year Rs	Total Rs.	Notional Depreciation Opening Balance	Notional Depreciation for the Year Rs.	Total Notional Depreciation	Total Book value on 31.3.15 Rs.
Laboratory Equipment							
Computers							
Office equipment							
Furniture, Fixtures & Fittings							
Total							

**INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA -171 005**

**ACCOUNTING POLICIES AND NOTES TO ACCOUNTS FOR THE YEAR
ENDING 31.03.2015**

ACCOUNTING POLICIES

(a) Accounting Concepts

The financial statements have been prepared under the historical cost convention in accordance with the generally accepted accounting principles as applicable in India.

The Society generally follows accrual system of accounting and recognizes significant items of Income and Expenditure on accrual basis.

(b) Fixed Assets

The Fixed Assets of the Society are stated at historical cost and includes all the incidental expenses.

(c) Depreciation

No Depreciation on opening balances of fixed assets have been provided as required by the Accounting Standard (AS-6) issued by the Institute of Chartered Accountants of India. However, depreciation on addition in fixed assets for the year have been provided in accordance with Income Tax Rules 1962. Depreciation have been transferred to capital Grant in Aid.

NOTES TO ACCOUNTS

1. The accounts have been prepared for the first time in new format supplied by the Ministry of Human Resource Development (Government of India) in compliance with Uniform Accounting Standard.
2. Separate Balance Sheet has been prepared for General Provident Fund Account.
3. Provision of Gratuity and Leave encashment as on 31.03.2015 is Rs. 23953004.00 (as at 31.03.2014 Rs. 20965400) and Rs. 140517905.00 (as at 31.03.2014 Rs. 13942125 respectively).
4. Institute's Publication amounting to Rs. 2640636.77 (as at 31.03.2014 Rs. 3042931.53.00) and publication with Co-publishers of Rs. 1825542.54 (as at 31.03.2014 Rs. 1427357.25.00) as shown in the balance sheet under "Current Assets" is based on the information supplied by the Sales and Public Relation Officer (SPRO).
5. In the opinion of the Board the current Assets, Loans and Advances are approximately of the value stated, if realized in the ordinary course of business. The provision of all the known liabilities is adequate and not excess of the amount considered reasonably necessary.
6. Debit and Credit balances in the accounts of Creditors, Debtors and Others are subject to confirmation and reconciliation.
7. Sundry debtors Rs. 2262148.75 include Rs. 354215.75 which are outstanding from recovery for more than five years, however these are considered good for recovery.
8. Miscellaneous advance Rs. 2509213.00 include Rs. 2155785.00 which are outstanding from recovery for more than five years, however these are considered good for recovery.
9. Previous year figures have been re-worked, re-grouped and rearranged, wherever considered necessary to make them comparable with those of current year.
10. Note No. 1 to 24 is integral part of balance and have been duly authenticated.

Shimla
30-5-2014

sd/-
(Rakesh Kumar Singh)
Accounts Officer

sd/-
(Suneel Verma)
Secretary

sd/-
(Chetan Singh)
Director

AUDITORS' REPORT

We have audited the "Balance Sheet" of Inter University Centre for Humanities and Social Sciences (UGC), Shimla as at 31 March, 2015 and also their 'Receipt & Payment Account' & Income & Expenditure Account" for the year ended on that date, annexed hereto and report that: -

These financial statements are the responsibility of the UGC's Management. Our responsibility is to express an opinion on these financial statements based on our audit.

We conducted our audit in accordance with auditing standards generally accepted in India. Those standards require that we plan and perform the audit to obtain reasonable assurance about whether the financial statements are free of material misstatement. An audit includes examining, on a test basis, evidence supporting the amounts and disclosures in the financial statements. An audit also includes assessing; the accounting principles used and significant estimates made by the management, as well as evaluating the overall financial statements presentation. We believe that our audit provides a reasonable basis for our opinion.

Subject to foregoing remark we report that: -

1. We have obtained all the information and explanation which to the best of our knowledge and belief were necessary for the purpose of audit.
2. In our opinion and to the best of our information and according to explanation given to us the said accounts read with the notes contained in Schedule 2, give a true and fair view:-
 - (a) In the case of the Balance Sheet, of the state of affairs of the Centre as at 31st March, 2015.
 - (b) In the Case of Income and Expenditure Account, of the amount utilized from Grant-in-Aid for the year ended on that date.
 - (c) In case of Receipt and Payment Account, of the amount received and payments made during the year ended on the date.

Shimla

Dated: 14/07/15

For R.K. Kaushal & Co.,

Chartered Accountants

ICAI FRN012233N

Sd/-

(CA. Rakesh Kumar Kaushal)

FCA, Prop.

ICAI M.No. 090655

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY, SHIMLA
Inter University Center for Humanities & Social Sciences(UGC) Balance Sheet as on 31.March.2015

Liabilities	Amount	Amount	Assets	Amount	Amount
Capital Reserve		7236129.00	Fixed Assets		7236129.00
Opening Balance	6908336.00		(As per schedule 1 attached)		
Closing Balance	6908336.00		Computer	1764725.00	
Less:Cost of old vehicle	265054.00		Electrical Equipment	876816.00	
Closing Balance	6643282.00		Furniture & Fixtures	1192092.00	
Add:Cost of new vehicle	592847.00		Liabrary Books	2809649.00	
Closing Balance	7236129.00		New Vehicle	592847.00	
Current Liabilities		1604497.51			
Grant-in-Aid	523558.51				
Income Tax	194.00				
IIAS A/C	71340.00				
Ticket Booth	1000000.00				
Professional Fee payable	9405.00				
			Current Assets		1604497.51
			Loans & Advances (Asset)	309791.00	
			State Bank of India (Saving A/C)	1294706.51	
Total		8840626.51	Total		8840626.51

Shimla
14-7-2015

sd/-
(Rakesh Kumar Singh)
Accounts Officer

sd/-
(Suneel Verma)
Secretary

sd/-
(Chetan Singh)
Director

As per our report of even date

For R.K.Kaushal & Co.
Chartered Accountants

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY, SHIMLA

Income & Expenditure of Inter University Center for Humanities & Social Sciences(UGC) For the year
Ending 31.March.2015

EXPENDITURE	AMOUNT		INCOME	AMOUNT
Maintenances Allowances			Misc Income	50588.00
T.A to Associates	1215800.00		Grant in Aid Utilisation	5363671.00
Research Seminar /Studyweek/workshop	858909.00		Interest Received	20364.00
Admim.& Secretal Support of Postage ,Medical, Publication Exp.on the Issue of IUC Journal	613835.00			
Misc.Contigent Exp.	20592.00			
Maintance ,Furnishing of Delhi Guest House	4741.00			
Admin. Unit Wages OTA,TaDa /Honorarium	573661.00			
Maintence of IUC Vehicle of POL	579889.00			
Computer Facilities and Other Electronics	1298870.00			
Interest and Bank Charges	98299.00			
Professional Fee	159720.00			
	902.00			
	9405.00	5434623.00		
Total		5434623.00	Total	5434623.00

Shimla 14-7-2015	sd/- (Rakesh Kumar Singh) Accounts Officer	sd/- (Suneel Verma) Secretary
	sd/- (Chetan Singh) Director	

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY, SHIMLA
Inter University Center for Humanities & Social Sciences(UGC)

Schedule fo Fixed assets as at 31.March.2015

S.No	Item	Opening Balance	Addition during the year	Deletion during the year	Closing Balance
1	Computer	1764725.00	0.00	0.00	1764725.00
2	Electrical Equipment	876816.00	0.00	0.00	876816.00
3	Furniture & Fixtures	1192092.00	0.00	0.00	1192092.00
4	Liabrary Books	2809649.00	0.00	0.00	2809649.00
5	New Vehicle	0.00	592847.00	0.00	592847.00
6	Vehicle	265054.00	0.00	265054.00	0.00
	Grand Total	6908336.00	592847.00	265054.00	7236129.00

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY, SHIMLA
Inter University Center for Humanities & Social Sciences(UGC) Receipts and Payment for the year
01 April 2014 to 31 March 2015

Receipts		Payments	
	Amount		Amount
Opening Balance	181496.51	Revenue expenditure	1215800.00
UGC Grant in Aid Received	6000000.00	Maintenances Allowances	858909.00
Revenue Receipts		T.A to Associates	613835.00
161 Misc Income	113587.00	Research Seminar /Studyweek/workshop	20592.00
Interest Received	20364.00	Admim.& Secretal Support of Postage ,Medical,	
		PUBLICATION Exp.on the Issue of IUC Journal	4741.00
Other Receipts		Misc.Contigent Exp.	573661.00
Income Tax	62658.00	Admin. Unit Wages OTA,TA/Da /Honorarium	1298870.00
Mess Charges	591480.00	Maintenance of IUC Vehicle of POL	98299.00
Ticket Booth	3500000.00	Computer Facilities and Other Electronics	159720.00
Misc. Advances	760000.00	Interest and Bank Charges	902.00
Internal Transfer	1000000.00	Maintance ,Furnishing of Delhi Guest House	579889.00
IIAS	63049.00	Other Payment	
		Misc Advances	760000.00
		Income Tax	62464.00
		Mess Charges	520140.00
		Ticket Booth	2500000.00
		new vehicles	592847.00
		Fellow Mess/canteen	74210.00
		Bank Account	1294706.51
		Internal Transfer	1000000.00
		IIAS	63049.00
Total	12292634.51	Total	12292634.51

Shimla 14-7-2015	sd/- (Rakesh Kumar Singh) Accounts Officer	sd/- (Suneel Verma) Secretary
	sd/- (Chetan Singh) Director	

**INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA - 171 005 (H.P)**

SCHEDULE- 2

ACCOUNTING POLICIES AND NOTES TO ACCOUNTS FOR THE YEAR ENDING
31.03.2015

ACCOUNTING POLICIES

1. Accounts have been maintained on accrual system of accounting.
2. Depreciation on assets is not being charged in view of the Rule 151 (4) of General Financial Rules.

NOTES TO ACCOUNTS

3. Advance of Rs. 18,475 recoverable from Professor R.S. Mishra is long outstanding since 94-95. Steps are being taken to adjust/recover the same at the earliest.
4. Advance of Rs. 1,00,000 is recoverable from Dr.V.C. Thomas since 20.03.2004. Steps are being taken to adjust/recover the same at the earliest.
5. An advance of Rs. 15000 was paid to Director ICAR New Delhi through ARO for seminar. Out of above Rs. 10,000 is still outstanding. Steps are being taken to adjust/recover this amount.
6. An advance of Rs.2,75,000 was paid to Registrar, Jawaharlal Nehru University, New Delhi on 30.03.2007 through ARO for organizing seminar and amount of Rs. 1,80,116 is outstanding . Efforts are being made to adjust/recover this amount.

Shimla
27-8-2015

sd/-
(Rakesh Kumar Singh)
Accounts Officer

sd/-
(Suneel Verma)
Secretary

sd/-
(Chetan Singh)
Director

**INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005**

LIST OF MEMBERS OF THE FINANCE COMMITTEE

- | | |
|--|-------------------|
| 1. Professor Madhavan Palat
B – 209, Greater Kailash – I
New Delhi – 110 048
M: 98182 53117
E-mail: palatmk@gmail.com | Chairman |
| 2. Vacant | Member |
| 3. Professor B.S. Chimni
Centre for International Legal Study
Jawaharlal Nehru University
New Delhi – 110 067
E-mail: bschimni@hotmail.com ; Ph: 011-26704375 | Member |
| 4. Shri Yogendra Tripathi, IAS
Joint Secretary & Financial Adviser
Department of Secondary & Higher Education
Ministry of Human Resource Development
Shastri Bhavan
New Delhi - 110 001
Tel: 011-23382696, Fax- 011-23070668 | Ex-Officio Member |
| 5. Professor Chetan Singh
Director
Indian Institute of Advanced Study
Rashtrapati Nivas, Shimla – 171005 | Ex-Officio Member |

* * * * *

**INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005**

MEMBERS OF THE GOVERNING BODY

1. **Professor Chandrakala Padia** Chairperson
Chairperson, Governing Body, IIAS
&
Vice-Chancellor,
Maharaja Ganga Singh University,
Bikaner - 334004

2. **Professor Chetan Singh**
Director
Indian Institute of Advanced Study
Rashtrapati Nivas, Shimla-171005
Telephone: 0177-2830006(O) 2831275 (R), Fax: 2831389, 2830995
E-mail: directoiias@gmail.com; profcsingh@gmail.com

A representative each of the Ministries of Education & Finance.

1. **Shri Vinay Sheel Oberoi, IAS,**
Secretary,
Department of Higher Education,
Ministry of Human Resource Development,
Shastri Bhavan,
New Delhi -110 001.
Tel: 011-23386451, 23382698(O) 26979585, Fax: 23385807, 23381355
E-mail: secy.dhe@nic.in

2. Ms. Darshana M Dabral
Joint Secretary & Financial Adviser
Department of Secondary & Higher Education
Ministry of Human Resource Development
120-C, Shastri Bhavan,
New Delhi - 110 001
Tel: 011-23382696, Fax- 011-23070668, E-mail: jsfa.edu@gov.in

Five Institutional Members

1. Professor Ved Prakash
Chairman,
University Grants Commission,
Bahadurshah Zafar Marg,
New Delhi – 110 002.
Tel: (011) 23239628 (O) Fax: 011-23231797, E-mail: cm@ugc.ac.in
2. Professor S.K. Thorat
Chairman
Indian Council of Social Science Research,
Post Box No.10528,
Aruna Asaf Ali Marg,
New Delhi – 110 067
Phone: 011-26741679 (O), 011-26742398 (R); Mobile: 08800388332, 09811127986
Fax: 011-26162516/26179836
E-mail : chairman@icssr.org , thoratsukhadeo@yahoo.co.in
3. Professor Mrinal Miri
Chairman,
Indian Council of Philosophical Research
36, Tughlakabad Institutional Area,
Mehrauli Badarpur Road,
New Delhi – 110 062.
Tele fax: 011-29051762/29901503, 29901501; Mobile 09013181940
Fax: 011-29964755; E-mail mirimrinal@hotmail.com; chairman@icpr.in
4. Dr. M.O. Garg,
Director-General,
Council of Scientific & Industrial Research,
Rafi Marg,
New Delhi – 110 001.
Tel: 011- 23710472, 23717053 (O),
Fax: 011- 23710618 (O),
E-mail: dgcsir@csir.res.in, dg@csir.res.in

5. Professor Yellapragada Sudershan Rao,
Chairman,
Indian Council of Historical Research,
35, Ferozeshah Road,
New Delhi – 110 001.
Telephone: 011- 23386033, PS: 23384869
Fax: 23383421, E-mail: chairperson@ichr.ac.in

These Institutional members may, if necessary, be represented, at the meetings, by their nominees.

Two Vice-Chancellors from category 3(b)(i) of the Members of Society nominated by the Central Government.

1. Vacant
2. Vacant

Four persons from Category 3(b)(ii) of the Members of the Society nominated by the Government of India

1. Professor Madhavan Palat
B – 209, Greater Kailash – I
New Delhi – 110 048
M: 98182 53117, E-mail: palatmk@gmail.com
2. Professor D.L. Sheth
Centre for the Study of Developing Societies
29, Rajpur Road, Delhi – 110 054
Tel: 011 – 2223 1864, M: 09313298815
E-mail: soha.moitra@gmail.com
3. Vacant
4. Professor Susie Tharu
A – 27/2, 1st Crescent Road
AFOCHS, Sanikpuri
Hyderabad – 500 094
E-mail: susietharu@gmail.com

**INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
RASHTRAPATI NIVAS, SHIMLA-171005**

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY SOCIETY

1. Professor Chandrakala Padia President
Chairperson, Governing Body, IIAS
&
Vice-Chancellor,
Maharaja Ganga Singh University,
Bikaner - 334004

2. Professor Chetan Singh
Director
Indian Institute of Advanced Study
Rashtrapati Nivas
Shimla-171005
Telephone: 0177-2830006(O) 2831275 ®, Fax: 2831389, 2830995
E-mail: director@iias.org

Rule 3(a) Institutional Members (Ex-Officio)

1.
The Secretary
Department of Higher Education
Ministry of Human Resource Development
Shastri Bhavan
New Delhi - 110 001
Tel: 011-23386451, 23382698 (O) 26979585,
Fax: 011-23385807, 23381355; E-mail: secy.dhe@nic.in

2. The Secretary
Government of India
Department of Expenditure
Ministry of Finance
North Block, Central Secretariat
New Delhi – 110 001

3. The Joint Secretary (Higher Education)
Department of Higher Education
Ministry of Human Resource Development
Shastri Bhavan
New Delhi – 110 001
Tel: 011-23382298 Fax: 011-23070036
4. Professor Ved Prakash
Chairman
University Grants Commission
Bahadurshah Zafar Marg
New Delhi – 110 002
Tel: (011) 23239628 (O) Fax: 011-23231797, E-mail: cm@ugc.in
5. Dr. M.O. Garg
Director-General,
Council of Scientific & Industrial Research,
Anusandhan Bhawan,
2; Rafi Ahmed Kidwai Marg,
New Delhi – 110 001.
Tel: 011- 23710472, 23717053 (O), Fax: 011- 23710618 (O),
E-mail: dgcsir@csir.res.in, dg@csir.res.in
6. Professor S.K. Thorat
Chairman
Indian Council of Social Science Research
Post Box No.10528
Aruna Asaf Ali Marg
New Delhi – 110 067
Tel: Phone: 011-26179679 (O), 011-255454865/26717146 (R)
Fax: 011-26162516/26179836
7. Professor Y.S. Rao
Chairperson
Indian Council of Historical Research
35, Ferozeshah Road
New Delhi – 110 001

Tel: 011-23386033, 23384869, Fax: 23383421, 23387829,
Mobile 9415243954

8. Professor Mrinal Miri
Chairman
Indian Council of Philosophical Research
36, Tughlakabad Institutional Area
Mehrauli Badarpur Road
New Delhi – 110 062
Tele fax: 011-29901503/, 29901501; Mobile 09013181940
Fax: 011-29964755; E-mail mirimrinal@hotmail.com; chairman@icpr.in
9. Shri Baldev Sharma
Chairman
National Book Trust, India
5, Nehru Bhavan
Institutional Area, Phase – II
Vasant Kunj,
New Delhi – 110 070
Phone: 011-26121880 (office), Mobile: 09910052933
E-mail: chairman@nbtindia.org.in
10. Professor Viswanath Prasad Tiwari
President
Sahitya Akademi
Rabindra Bhavan
35, Ferozeshah Road
New Delhi – 110 001
Phone: 011-23386623; M.: 9810139991; Fax: 011-23382428, 011-23074168
Gorakhpur (M: 09415691378, 0551-2335967); E-mail: vptiwari378@hotmail.com
11. Shri Shekhar Sen,
Chairman,
Sangeet Natak Akademi,
Rabindra Bhavan
Ferozeshah Road
New Delhi – 110 001
Phone: 011-24116375/76 Fax: 011-23381621; E-mail: chairman@sangeetnatak.gov.in

12. Dr. K.K. Chakravarty
Chairman
Lalit Kala Akademi, Rabindra Bhavan,
35, Ferozeshah Road,
New Delhi – 110 001
Tel: 011- 23387241 - 43
13. Professor Raghavendra Gadagkar
Chairman
Indian National Science Academy, New Delhi
Bahadur Shah Zafar Marg
New Delhi – 11 0002
14. Shri Lalit Mansingh,
Vice-President,
Indian Council for Culture Relations,
N-38, Panchsheel Park,
New Delhi – 110 017.
E-mail: lalitmansingh@yahoo.com.
Mobile: 098731-91800
15. Dr. H.M. Desai
President, AIU
&
Vice – Chancellor
Dharmsinh Desai University
Post Box No. 35, College Road
Nadiad - 387001
Phone No. : 0268-2520503 (O), Fax: 0268-2520501
E-mail: vc@ddu.ac.in , Website: <http://www/ddu.ac.in>
16. Professor P.Y. Rajendra Kumar
Director
National Library
Belvedere, Alipore
Kolkata – 700 027
Tel: 033-24792968/ 24791462(O); Fax: 033- 24791462
E-mail: nldirector@rediffmail.com

17. Shri V. Srinivas,
Joint Secretary Ministry of Culture (GOI)
&
Director-General of Archives
National Archives of India
Janpath, New Delhi – 110 001
Tel: 011-23381396, E-mail: archives@nic.in
18. Shri P. Mitra, I.A.S.,
Chief Secretary,
Government of Himachal Pradesh
H.P. Secretariat
Shimla (H.P.) - 171 002
Tel: 0177-2621022 (O), 2880714 (R) Fax: 2621813
E-mail: cs_hp@nic.in

These Institutional members may, if necessary, be represented, at the meetings, by their nominees.

Rule 3(b) Nominated Member

Rule 3(b)(i) Six Vice-Chancellors of Indian Universities nominated by Central Government.

1. Vacant.
2. Professor Ramakrishna Ramaswamy
Vice-Chancellor
Hyderabad Central University
P.O. Central University Campus
Hyderabad – 400 046
3. Dr. Rajan M. Welukar
Vice-Chancellor
University of Mumbai
M.G. Road, Fort,
Mumbai - 400 032.
Tel:- +91 (22) 2265 6789/ 2265 0403
Fax:- +91 (22) 2267 3579
Email: vc@fort.mu.ac.in

4. Vacant.
5. Professor GSN Raju
Vice-Chancellor
Andhra University
Visakhapatnam - 530 003
Andhra Pradesh, India
Phone: 91-891-2844222, 2844333, 2755547 (O); Fax : 91-891-2525611
E-Mail: vicechancellor@andhrauniversity.edu.in
6. Professor Ajaib Singh Brar
Vice-Chancellor
Guru Nanak Dev University
Amritsar- 143001
E-mail: vcgndu@gmail.com

Rule 3(b)(ii) 18-24 Educationists nominated by the Central Government

1. Vacant
2. Professor K. Ramakrishna Rao
35 Daspalla Hills,
Visakhapatnam – 530 003
3. Professor Madhavan Palat
B – 209, Greater Kailash – I
New Delhi – 110 048
M: 98182 53117
E-mail: palatmk@gmail.com
4. Professor D.L. Sheth
Centre for the Study of Developing Societies
29, Rajpur Road
Delhi – 110 054
Tel: 011-2223 1864; E-mail: dlseth@csds.in
M: 0-9313298815

5. Vacant
6. Professor Akhtar Mehdi
Department of Persian Studies
Jawaharlal Nehru University
New Delhi – 110067
E-mail: mahdiakhtar @yahoo.com ; Mobile: 09811753159
7. Professor A.R. Vasvi
National Institute of Advanced Studies,
Indian Institute of Science Campus,
Bangalore – 560 012
8. Professor Gopal Guru
Centre for Political Studies
Jawaharlal Nehru University
New Delhi - 110067
Phone: 09811687097
E-mail: gopalguru2001@gmail.com
9. Professor Tridip Suhrud
Director
Sabarmati Ashram Preservation and Memorial Trust
Gandhi Smark Sangrahalaya
Gandhi Ashram
Ahmedabad – 380 027
E-mail: tridip.suhrud@gmail.com
10. Professor Partha Ghosh
46, Satish Mukherjee Road
Kolkata – 700025
11. Shri Padamvir Singh, IAS (Retd.)
Westonel Farm,
Near Aerocity, Village Barri,
P.O. Mohali, Tehsil & Distt. Mohali,
Punjab

12. Shri Sadanand Menon
1, Elliots Beach Road
CHENNAI – 400090
13. Shri S. Prasanna
Kavi Kavya Trust
Heggudu – 577 417
District Shimoga, Karnataka
14. Professor Susie Tharu
A-27/2, 1st Crescent Road
AFOCHS, Sanikpuri
Hyderabad – 500 046
E-mail: susietharu@gmail.com
15. Professor Rukmini Bhaya Nair
Head of the Department,
Department of Humanities,
Indian Institute of Technology, Hauz Khas,
New Delhi – 110067
E-mail: rukmini.nayar@gmail.com
16. Professor Lokendra Arambam
Sagolband, Meinolane,
Imphal – 795001, Manipur
17. Professor Shiv Vishvanathan
O.P. Jindal Global University
Sonipat Narela Road
Sonipat, Haryana – 131 001
NCR of Delhi, India
E-mail: svcsds@gmail.com
18. Professor Sundar Sarukkai
Director
Manipal Centre for Philosophy and Humanities
Manipal University, Manipal- 576104
Phone: 0820-2923111, E-mail: sundar.sarukkai@manipal.edu

19. Professor Sanjoy Hazarika
Saifuddin Kitchelew Chair
Jamia Millia Islamia
Centre for North East Studies
Mulana Mohammad Ali Jauhar Marg
New Delhi 110025
E-mail: sanjoyha@gmail.com; sanjoyha@rediffmail.com
20. Professor B.S. Chimni
Department of Law
Jawaharlal Nehru University
New Delhi – 110 067
E-mail: bschimni@hotmail.com ; bschimni@mail.jnu.ac.in
21. Professor Bijoy Boruah
School of Philosophy
Department of Humanities and Social Sciences
Indian Institute of Technology
Delhi - 110067
Mobile: 09717049651; E-mail: boruah@hss.iitd.ac.in
22. Professor Bettina Baumer
Samvidyalaya Abhinavgupta Research Library
B2/114, Bhadaini, Varanasi – 221001
E-mail: bettinabaeumer@yahoo.com
23. Professor Pulapre Balakrishnan
(Economist)
Director
Centre for Developing Studies
Thiruvananthapuram, (Kerala)- 695001